भूतनाथ

पहला भाग

बाबू देवकीनन्दन खत्री

भूतनाथ

पहला भाग

बाबू देवकीनन्दन खत्री

bpb
भारत पुस्तक भण्डार

www.bharatpustak.com
bharatpustak.bhandar@gmail.com

पहला भाग

1

मेरे पिता ने तो मेरा नाम गदाधर सिंह रखा था और बहुत दिनों तक मैं इसी नाम से प्रसिद्ध भी था परन्तु समय पड़ने पर मैंने अपना नाम भूतनाथ रख लिया था और इस समय यही नाम बहुत प्रसिद्ध हो रहा है। आज मैं श्रीमान् महाराज सुरेन्द्रसिंह जी की आज्ञानुसार अपनी जीवनी लिखने बैठा हूँ, परन्तु मैं इस जीवनी को वास्तव में जीवनी के ढंग और नियम पर न लिख कर उपन्यास के ढंग पर लिखूँगा, क्योंकि यद्यपि लोगों का कथन यही है, ''तेरी जीवनी से लोगों को नसीहत होगी'' परन्तु ऐबों और भयानक घटनाओं से भरी हुई मेरी नीरस जीवनी कदाचित् लोगों को रुचिकर न हो, इस खयाल से जीवनी का रास्ता छोड़ इस लेख को उपन्यास के रूप में लाकर रस पैदा करना ही मुझे आवश्यक जान पड़ा, प्रेमी पाठक महाशय यही समझें कि किसी दूसरे ही आदमी ने भूतनाथ का हाल लिखा है, स्वयं भूतनाथ ने नहीं, अथवा इसका लेखक कोई और ही है।

जेठ का महीना और शुक्ल-पक्ष की चतुर्दशी का दिन है। यद्यपि रात पहर-भर से कुछ ज्यादा हो चुकी है और आँखों में ठंडक पहुँचाने वाले चन्द्रदेव भी दर्शन दे रहे हैं परन्तु दिन भर की धूप और लू की बदौलत गरम भई हुई जमीन, मकानों की छतें और दीवारें अभी तक अच्छी तरह ठंडी नहीं हुई, अब भी कभी-कभी सहारा दे देने वाले हवा के झपटे में गर्मी पड़ती है और बदन से पसीना निकल रहा है, बाग में सैर करने वाले शौकीनों को भी पंखे की जरूरत है, और जंगल में भटकने वाले मुसाफिरों को भी पेड़ों की आड़ बुरी मालूम पड़ती है।

ऐसे समय में मिर्जापुर से बाईस कोस दक्खिन की तरफ हट कर छोटी-सी पहाड़ी के ऊपर जिस पर बड़े-बड़े घने पेड़ों की कमी तो नहीं है। मगर इस समय पत्तों की कमी के सबब से जिसकी खूबसूरती नष्ट हो गई है, एक पत्थर की चट्टान पर हम ढाल-तलवार तथा तीर-कमान लगाए हुए दो आदमियों को बैठे देखते हैं जिनमें से एक औरत और दूसरा मर्द है। औरत की उम्र चौदह या पन्द्रह वर्ष की होगी मगर मर्द की उम्र बीस वर्ष से कम मालूम नहीं होती। यद्यपि इन दोनों की पोशाक मामूली सादी और बिलकुल ही साधारण ढंग की है मगर सूरत-शक्ल से यही जान पड़ता है कि ये दोनों साधारण व्यक्ति नहीं हैं बल्कि किसी अमीर बहादुर और क्षत्रीय खानदान के होनहार हैं। जिस तरह मर्द चपकन, पायजामा, कमरबंद और मुड़ासे से अपनी सूरत मर्दाने ढंग की बना रखी है। यकायक सरसरी निगाह देख कर कोई यह नहीं कह सकता कि यह औरत है, मगर हम खूब जानते हैं कि यह कमसिन औरत नौजवान लड़की है जिसकी खूबसूरती मर्दानी पोशाक पहिरने पर ही यकताई का दावा करती है, मगर जिसकी शर्मीली आँखें कह देती हैं कि इसमें ढिठाई और दबंगता बिलकुल नहीं है, चेहरे पर गर्द पड़ी है, सुस्त होकर पत्थर की चट्टान पर बैठ गए हैं, तथा रात्रि का समय भी है, इसलिए यहाँ पर इन दोनों की खूबसूरती तथा नखशिख का वर्णन करके हम शृंगार रस पैदा करना उचित नहीं समझकर केवल इतना ही कह देना काफी समझते हैं कि ये दोनों सौ-दो सौ खूबसूरतों में खूबसूरत हैं। इन दोनों की अवस्था इनकी बातचीत से जानी जाएगी अस्तु आइए और छिपकर सुनिए कि इन दोनों में क्या बातें हो रही हैं।

औरत : वास्तव में हम लोग बहुत दूर निकल आए।

मर्दः अब हमें किसी का डर भी नहीं है।

औरत : है तो ऐसा ही परन्तु घोड़ों की तरफ से जरा-सा खुटका होता है, क्योंकि हम दोनों के मरे हुए घोड़े अगर कोई जान-पहिचान का आदमी देख लेगा तो जरूर इसी प्रांत में हम लोगों को खोजेगा।

मर्दःफिर भी कोई चिंता नहीं, क्योंकि उन घोड़ों को भी हम लोग कम-से-कम दो कोस पीछे छोड़ आए हैं।

औरत : बेचारे घोड़े अगर मर न जाते तो हम लोग और भी कुछ दूर आगे निकल गए होते।

मर्द : यह गर्मी का जमाना, इतने कड़ाके की धूप और इस तेजी के साथ इतना लंबा सफर करने पर भी घोड़े जिंदा रह जाएँ तो बड़े ताज्जुब की बात है!!

औरत : ठीक है, अच्छा यह बताइए कि अब हम लोगों को क्या करना होगा?

मर्दः इसके सिवाय और किसी बात की जरूरत नहीं है कि हम लोग किसी दूसरे राज्य की सरहद में जा पहुँचे। ऐसा हो जाने पर फिर हमें किसी का डर न रहेगा, क्योंकि हम लोग किसी का खून करके नहीं भागे हैं, न किसी की चोरी की है, और न किसी के साथ अन्याय या अधर्म करके भागे हैं, बल्कि एक अन्यायी हकिम के हाथ से अपना धर्म बचाने के लिए भागे हैं। ऐसी अवस्था में किसी न्यायी राजा के राज्य में पहुँच जाते ही हमारा कल्याण होगा।

औरत : निःसन्देह ऐसा ही है, फिर आपने क्या विचार किया, किसके राज्य में जाने का इरादा है?

मर्दः मुझे तो राजा सुरेन्द्रसिंह का राज्य बहुत ही पसन्द है, वह राजा धर्मात्मा और न्यायी है तथा उनका राज्य भी बहुत दूर नहीं है, यहाँ से केवल तीन ही चार कोस और आगे निकल चलने पर उनकी सरहद में पहुँच जाएँगे।

औरत : वाह वाह! तो इससे बढ़कर और क्या बात हो सकती है! आप यहाँ क्यों अटके हुए हैं? आगे बढ़ कर चलिए, जहाँ इतनी तकलीफ उठाई वहाँ थोड़ी ही सही।

मर्द : मैं भी इसी खयाल में हूँ मगर अपने नौकरों का इंतजार कर रहा हूँ क्योंकि उन्हें अपने से मिलने के लिए यही ठिकाना बताया हुआ है।

औरत : जब राजा सुरेन्द्रसिंह की सरहद इतनी नजदीक है और रास्ता आपका देखा हुआ है तो ऐसी अवस्था में यहाँ ठहरकर नौकरों का इंतजार करना मेरी राय में तो ठीक नहीं है।

मर्द : तुम्हारा कहना कठिन है और नौगढ़ का रास्ता भी मेरा देखा हुआ है परन्तु रात का समय है और इस तरफ का जंगल बहुत ही घना और भयानक है तथा रास्ता भी पथरीला और पेचीदा है, संभव है कि रास्ता भूल जाऊँ और किसी दूसरी ही तरफ जा निकलूँ। यदि मैं अकेला होता तो कोई गम न था मगर तुमको साथ लेकर रात्रि के समय भयानक जानवरों से भरे हुए ऐसे घने जंगल में घुसना उचित नहीं जान पड़ता। मगर देखो तो सही (गर्दन उठाकर और गौर से नीचे की तरफ देखकर) वे शायद हमारे ही आदमी तो आ रहे हैं! मगर गिनती में कम मालूम होते हैं।

औरत : **(गौर से देख कर)** ये तो केवल तीन ही चार आदमी हैं, शायद कोई और हों।

मर्द : देखो ये लोग भी इसी पहाड़ी के ऊपर चले आ रहे हैं, अगर ये कोई और हैं तो यहाँ आकर तुम्हें देख लेना अच्छा न होगा! इसलिए मैं जरा आगे बढ़कर देखता हूँ कि कौन हैं।

इतना कहकर वह नौजवान उठ खड़ा हुआ और उसी तरफ बढ़ा जिधर से वे लोग आ रहे थे। कुछ ही दूर आगे बढ़ने और पहाड़ी से नीचे उतरने पर उन लोगों का सामना हो गया। यद्यपि रात का समय था और केवल चाँदनी ही का सहारा था, तथापि सामना होते ही एक ने दूसरे को पहचान लिया। हमारे नौजवान को मालूम हो गया कि ये हमारे दुश्मन के आदमी हैं और उन लोगों को निश्चय हो गया कि हमारे मालिक को इसी नौजवान के गिरफ्तारी की जरूरत है।

ये लोग जो दूर से गिनती में तीन-चार मालूम पड़ते थे वास्तव में छः आदमी थे जो हर तरह से मजबूत और लड़ाई के दुरुस्त थे। ढाल-तलवार के अलावे सभों के कमर में खंजर और हाथ में नेजा था, उन सभों में से एक ने आगे बढ़कर नौजवान से कहा, ''बड़ी खुशी की बात है कि आप स्वयम् हम लोगों के सामने चले आए। कल से हम लोग आपकी खोज में परेशान हो रहे हैं बल्कि सच तो यों है कि ईश्वर ही ने हम लोगों को यहाँ तक पहुँचा दिया और यहाँ आपका

सामना हो गया। क्षमा कीजिएगा, आप हमारे अफसर और हाकिम रह चुके हैं इसलिए हम लोग आपके साथ बेअदबी नहीं करना चाहते मगर क्या करें मालिक के हुक्म से लाचार हैं, जिसका नमक खाते हैं। इस बात को हम लोग खूब जानते हैं कि आप बिलकुल बेकसूर हैं और आप पर व्यर्थ ही जुल्म किया जा रहा है, परन्तु..

नौजवान : ठीक है, ठीक है, मेरे प्यारे गुलाबसिंह! मैं तुम्हें अभी तक वैसा ही समझता हूँ और प्यार करता हूँ क्योंकि तुम वास्तव में नेक हो और मुझसे मुहब्बत रखते हो। तुम बेशक् मुझे गिरफ्तार करने के लिए आये हो और मालिक के नमक का हक अदा किया चाहते हो, अस्तु मैं खुशी से तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम मुझे गिरफ्तार करके अपने मालिक के पास ले चलो, परन्तु क्षत्रियों का धर्म निबाहने के लिए मैं गिरफ्तार न होकर तुमसे लड़ाई अवश्य करूँगा, इसी तरह तुम्हें भी मेरा मुलाहिजा न करना चाहिए।

गुलाबसिंह : ठीक है, बेशक् ऐसा ही चाहिए, परन्तु **(कुछ सोच कर)** मेरा हाथ आपके ऊपर कदापि न उठेगा! मुझे अपने जालिम मालिक की तरफ से बदनामी उठाना मंजूर है परन्तु आप ऐसे बहादुर और धर्मात्मा के आगे लज्जित होना स्वीकार नहीं है। हाँ मैं अपने साथियों को ऐसा करने के लिए मजबूर न करूँगा, ये लोग जो चाहें करें।

यह सुनते ही गुलाबसिंह के साथियों में से एक आदमी बोल उठा, "नहीं नहीं, कदापि नहीं, हम लोग आपके विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकते और आपकी ही आज्ञा पालन अपना धर्म समझते हैं। सज्जनों और धर्मात्माओं की आज्ञा पालने का नतीजा कभी बुरा नहीं होता!"

इसके साथ ही गुलाबसिंह के बाकी साथी भी बोल उठे, "बेशक् ऐसा ही है, बेशक् ऐसा ही है!"

गुलाबसिंह : **(प्रसन्नता से)** ईश्वर की कृपा है कि मेरे साथी लोग भी मेरी इच्छानुसार चलने के लिए तैयार हैं। **(नौजवान से)** अब आप ही आज्ञा कीजिए कि हम लोग क्या करें? क्योंकि अब भी मैं अपने को आपका दास ही समझता हूँ।

नौजवान : मेरे प्यारे गुलाबसिंह, शाबाश! इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हारे ऐसे नेक और बहादुर आदमी का साथ बड़े भाग्य से होता है। मैं तुम्हें अपने आधीन पाकर बहुत ही प्रसन्न था और अब भी ही इच्छा रहती है कि ईश्वर तुम्हें मेरा साथी बनाये, मगर क्या करूँ, लाचार हूँ, क्योंकि आज मेरा वह समय नहीं है। आज मुसीबत के फंदे में फँस जाने से मैं इस योग्य नहीं रहा कि तुम्हारे ऐसे बहादुरों का साथ...**(लंबी साँस लेकर)** अस्तु ईश्वर की मर्जी, जो कुछ वह करता है अच्छा ही करता है, कदाचित् इसमें भी मेरी कुछ भलाई ही होगी। **(कुछ सोच कर)** मैं तुम्हें क्या बताऊँ कि क्या करो? तुम्हारे मालिक ने बेशक् धोखा खाया कि मेरी गिरफ्तारी के लिए तुम्हें भेजा, इतने दिनों तक साथ रहने पर भी उसने तुम्हें और मुझे नहीं पहिचाना। मुझे इस समय कुछ भी नहीं सूझता कि तुम्हें क्या नसीहत करूँ और किस तरह उस दुष्ट का नमक खाने से तुम्हें रोकूँ!

गुलाबसिंह : **(कुछ सोच कर)** खैर कोई चिंता नहीं, जो होगा देखा जाएगा। इस समय मैं आपका साथ कदापि न छोड़ूँगा और इस मुसीबत में आपको अकेले भी न रहने दूँगा, जो कुछ आप पर बीतेगी उसे मैं भी सहूँगा। **(अपने साथियों से)** भाइयो, अब तुम लोग जहाँ चाहे जाओ और जो मुनासिब समझो करो, मैं तो आज इनके दुःख-सुख का साथी बनता हूँ। यद्यपि ये **(नौजवान)** उम्र में मुझसे बहुत छोटा है परन्तु मैं इन्हें अपना पिता समझता हूँ और पिता ही की तरह इन्हें मानता हूँ, अस्तु जो कुछ पुत्र का धर्म है मैं उसे निबाहूँगा। मैं इनको गिरफ्तार करने की आशा पाकर बहुत प्रसन्न था और यही सोचे हुए था कि इस बहाने से इन्हें ढूँढ़ निकालूँगा और सामना होने पर इनकी सेवा स्वीकार करूँगा।

गुलाबसिंह की बातें सुनकर उसके साथियों ने जवाब दिया, "ठीक है, जो कुछ उचित था आपने किया परन्तु आप हम लोगों का तिरस्कार क्यों कर रहे हैं? क्या हम लोग आपकी सेवा करने योग्य नहीं हैं? या हम लोगों को आप बेईमान समझते हैं?"

गुलाबसिंह : नहीं-नहीं, ऐसा कदापि नहीं है, मगर बात यह है कि जो कोई मुसीबत में पड़ा हो उसका साथ देने वाले को भी मुसीबत झेलनी पड़ती है, अस्तु मुझ पर तो जो कुछ बीतेगी उसे झेल लूँगा, तुम लोगों को जान-बूझकर क्यों मुसीबत

में डालूँ! इसी खयाल से कहता हूँ कि जहाँ जी में आवे जाओ और जो कुछ मुनासिब समझो करो।

गुलाबसिंह के साथी : नहीं-नहीं, ऐसा कदापि न होगा और हम लोग आपका साथ कभी न छोड़ेंगे। आप आज्ञा दें कि अब हम लोग क्या करें।

गुलाबसिंह : **(कुछ सोच कर)** अच्छा, अगर तुम लोग हमारा साथ देना ही चाहते हो तो जो कुछ हम चाहते हैं उसे करो। यहाँ से इसी समय चले जाओ। **(नौजवान की तरफ बता कर)** इनके मकान में जिसे राजा साहब ने जब्त कर लिया है रात के समय जिस तरह संभव हो घुसकर जहाँ तक दौलत हाथ लगे और उठा सको निकाल कर ले आओ और पिपलिया घाटी में जहाँ का पता तुम लोगों को मालूम है हमसे मिलो, अगर वहाँ, हमसे मुलाकात न हो तो टिक कर हमारा इंतजार करो।

गुलाबसिंह की बात सुनकर उसके साथियों ने "जो आज्ञा" कह कर सलाम किया और वहाँ से चले गए। उनके जाने के बाद गुलाबसिंह ने नौजवान से कहा, "इस समय इन लोगों को विदा कर देना ही मैंने उचित जाना। यद्यपि ये लोग मेरे साथ रहने में प्रसन्नता प्रकट करते हैं परन्तु कुछ टेढ़ा काम लेकर जाँच कर लेना जरूरी है।"

नौजवान : ठीक है तुम्हारे ऐसे होशियार आदमी के लिए यह कोई नई बात नहीं है।

गुलाबसिंह : अच्छा अब यह बताइए कि आपको मुझ पर विश्वास है या नहीं? या इस विषय में आपको कुछ जाँच करने की आवश्यकता है?

नौजवान : नहीं-नहीं, मुझे कुछ जाँच करने की जरूरत नहीं है, मुझे तुम पर पूरा-पूरा विश्वास और भरोसा है, मैं तुमसे मिल कर बहुत ही प्रसन्न हुआ, ऐसी अवस्था में यकायक सामना हो जाने पर मुझे किसी तरह का खुटका नहीं हुआ था।

गुलाबसिंह : ईश्वर आपका मंगल करे, अब कृपा कर यह बताइए कि आप मुझे अकेले क्यों दिखाई देते हैं और अब आपका इरादा क्या है?

नौजवान : मैं अकेला नहीं हूँ, मेरी स्त्री भी मेरे साथ है **(हाथ का इशारा करके)** इस पहाड़ी के ऊपर उसे अकेला छोड़ आया हूँ। हम दोनों आदमी वहाँ बैठे अपने नौकरों का इंतजार कर रहे थे कि यकायक तुम लोगों पर निगाह पड़ी, अस्तु उसे उसी जगह छोड़ कर तुम लोगों का पता लगाने के लिए मैं नीचे उतर आया था, अब तुम मेरे साथ वहाँ चलो और उससे मिलो, वह तुम्हें देखकर बहुत ही प्रसन्न होगी। इस आफत में भी वह तुम्हें बराबर याद करती रही।

गुलाबसिंह : चलिए, शीघ्र चलिए।

गुलाबसिंह को साथ लेकर नौजवान उस तरफ रवाना हुआ जहाँ अपनी स्त्री को अकेला छोड़ आया था।

गुलाबसिंह क्षत्री खानदान का एक बहादुर और ताकतवर आदमी था, वह बहुत ही नेक, रहमदिल और धर्म का सच्चा पक्षपाती था, साथ-ही-साथ वह बदमाशों की चालबाजियों को खूब समझता था और अच्छे लोगों में से बेईमानों और दग़ाबाजों को छाँट निकालने में भी विचित्र कारीगर था। वह उस नौजवान और उसकी स्त्री से सच्ची मुहब्बत और हमदर्दी रखता था, जिसका बहुत बड़ा सबब यह था कि उस स्त्री के पिता ने बहुत संकट के समय में गुलाबसिंह की सच्ची सहायता की थी और गुलाबसिंह को लड़के की तरह मानता था।

इस जगह पर हम इस नौजवान और इसकी सुशीला स्त्री का नाम खोल देना उचित समझते हैं। मगर इस बात को अभी न खोलेंगे कि दोनों कौन हैं और इनके इस तरह बेसरोसामान भागने का सबब क्या है।

नौजवान का नाम प्रभाकर सिंह और स्त्री का नाम इंदुमति। प्रभाकर सिंह की शादी इंदुमति के साथ भये हुए आज एक

वर्ष और सात महीने हो चुके हैं।

प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह बातचीत करते हुए इंदुमति की तरफ रवाना हुए और बहुत जल्द वहाँ जा पहुँचे इंदुमति चिंता-निमग्न बैठी हुई अपने पति का इंतजार कर रही थी। पति को देखकर वह प्रसन्नता के साथ उठ बैठी और जब उसने गुलाबसिंह को पहिचाना तो बहुत खुश होकर बोली

इंदुमति : मैं पहिले ही कहती थी कि गुलाबसिंह को हम लोगों के विषय में बड़ी चिंता होगी और वे जरूर हमारी सुध लेंगे।

गुलाबसिंह : बेशक् ऐसा ही है। इसीलिए जिस समय राजा साहब ने आप लोगों की गिरफ्तारी का काम मेरे सुपुर्द किया तो मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ और..

गुलाबसिंह अपनी बात पूरी न करने पाये थे कि लगभग चालीस-पचास गज की दूरी पर से सीटी बजने की आवाज आई जिसे सुनते ही तीनों चौंक पड़े और उसी तरफ देखने लगे। बेचारी इंदु को दुश्मन का खयाल आया गया और वह डरी हुई आवाज में बोली, ''यहाँ तक भाग आने पर भी हम लोगों का खुटका न गया, इसी से मैं कहती थी कि जहाँ तक जल्द हो सके नौगढ़ की सरहद में हमें पहुँच जाना चाहिए!''

गुलाबसिंह : **(इंदु से)** डरो मत, हम दोनों क्षत्रियों के रहते किसकी मजाल है कि तुम्हें किसी तरह की तकलीफ पहुँचा सके। इसके अतिरिक्त इस बात को भी समझारखो कि आज दिन सिवाय उस बेईमान राजा के और कोई तुम्हारा दुश्मन नहीं है और उसकी तरफ से इस काम के लिए मैं ही भेजा गया हूँ, ऐसी अवस्था में किसी वास्तविक दुश्मन का ध्यान लगाना वृथा है, हाँ चोर-डाकू में से यदि कोई हो तो मैं कह सकता।

इंदुमति : खैर पेड़ों की आड़ में तो हो जाइए।

गुलाबसिंह : हाँ इसके लिए कोई हर्ज नहीं।

इतने ही में पुनः सीटी की आवाज आई, मगर अबकी दफे की आवाज कुछ अजीब ढंग की थी। मालूम न होता था कि कोई बँधे हुए इशारे के साथ झिरनी को आवाज देकर सीटी बुला रहा है। इस आवाज को सुनकर गुलाबसिंह हँस पड़ा और इंदु तथा प्रभाकर सिंह की तरफ देख के बोला, ''बस मालूम हो गया, डरने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि यह मेरे एक दोस्त की बजाई हुई सीटी है, मैं अभी जरूरी बातों से छुट्टी पाकर थोड़ी ही देर में आप लोगों से कहने वाला था कि यहाँ मेरे एक दोस्त का मकान है जिससे मिलकर आप बहुत प्रसन्न होंगे, और उनसे आपको सहायता भी पूरी-पूरी मिल सकती है। मैं अब इस सीटी का जवाब देता हूँ। बहुत अच्छा जो अकस्मात् वे खुद यहाँ आ पहुँचे। मालूम होता है कि मेरा यहाँ आना उन्हें मालूम हो गया!''

इतना कहकर गुलाबसिंह ने भी कुछ अजीब ढंग की सीटी बजाई अर्थात् उस सीटी का जवाब दिया।

प्रभाकर सिंह : भला अपने इस अनूठे दोस्त का नाम तो बता दो?

गुलाबसिंह : आजकल इन्होंने अपना नाम भूतनाथ रख छोड़ा है।

प्रभाकर सिंह : **(कुछ सोच कर)** यह नाम तो कई दफे मेरे कानों में पड़ चुका है और एक दफे ऐसा भी सुन चुका हूँ कि इस नाम का एक आदमी बड़ा ही भयानक है जिसके रहन-सहन का किसी को कुछ पता नहीं चलता।

गुलाबसिंह : ठीक है, आपने ऐसा ही सुना होगा, परन्तु यह केवल दुष्टों और पापियों के लिए भयानक है।

गुलाबसिंह इससे ज्यादा कुछ कहने न पाया था कि सीटी बजाने वाला अर्थात् भूतनाथ वहाँ आ पहुँचा। प्रभाकर सिंह को

सलाम करने के बाद भूतनाथ गुलाबसिंह के गले मिला और इसके बाद चारों आदमी पत्थर की चट्टानों पर बैठकर इस तरह बातचीत करने लगे :

गुलाबसिंह : **(भूतनाथ से)** यहाँ यकायक आपका इस तरह आ पहुँचना बड़े आश्चर्य की बात है!!

भूतनाथ : आश्चर्य काहे का है! यहाँ तो मेरा ठिकाना ही ठहरा, या यों कहिए कि यह दिन-रात का मेरा रास्ता ही है।

गुलाबसिंह : ठीक है, मगर फिर भी आपका घर यहाँ से आधे घंटे की दूरी पर होगा ऐसी अवस्था में क्या जरूरी है कि आप दिन-रात इसी पहाड़ी पर दिखाई दें?

भूतनाथ : **(हँसकर)** हाँ सो तो सच है, मगर आप जो यहाँ आ पहुँचे तो फिर क्या किया जाय, आखिर मुलाकात करना भी तो जरूरी ठहरा!

गुलाबसिंह : **(हँसी के साथ)** बस तो सीधे यही क्यों नहीं कहते कि मेरा यहाँ आना आपको मालूम हो गया।

भूतनाथ : बेशक् आपका आना मुझे मालूम हो गया बल्कि और भी कई बातें मालूम हुई हैं जिनसे आप लोगों को हाशियार कर देना जरूरी है। **(प्रभाकर सिंह की तरफ देख कर)** अभी तक दुश्मनों से आपका पीछा नहीं छूटा, खाली गुलाबसिंह ही आपकी गिरफ्तारी के लिए नहीं भेजे गये बल्कि इनको भेजने के बाद आपके राजा साहब ने और भी बहुत से आदमी आप लोगों को पकड़ने के लिये भेजे जो इस समय इस पहाड़ी के इधर-उधर आ गये हैं और आपके आदमियों को भी उन लोगों ने गिरफ्तार कर लिया है जिनका शायद आप इंतजार करते होंगे।

प्रभाकर सिंह : **(ताज्जुब में आकर)** आपकी जुबानी बहुत-सी बातें मालूम हुईं! मुझे इन सबकी कुछ भी खबर न थी। आप तो इस तरह बयान कर रहे हैं जैसे कोई जादूगर आइने के अन्दर जमाने भर की हालत देख-देख कर सभा में बयान करता हो!

गुलाबसिंह : यही तो इनमें एक अनूठी बात है जिससे बड़े-बड़े नामी ऐयार दंग रहा करते हैं। इनसे किसी भेद का छिपा रहना बहुत ही कठिन है। **(भूतनाथ से)** अच्छा तो मेरे प्यारे दोस्त, मैं प्रभाकर सिंह और इंदुमति को आपके सुपुर्द करता हूँ। जिससे इनका कल्याण हो सो कीजिए। यह बात आपसे छिपी हुई नहीं है कि मैं इन्हें कैसा मानता हूँ।

भूतनाथ : मैं सब जानता हूँ और इसीलिए यहाँ आया भी हूँ, परन्तु अब विशेष बातचीत करने का मौका नहीं, आप ठहरिए और मेरे पीछे आइए।

प्रभाकर सिंह : **(उठते हुए)** मुझे अपने लिए कुछ भी फिक्र नहीं है, केवल बेचारी इंदु के लिए मुझे नामर्दों की तरह भागने की और अदने-अदने आदमियों से छिपकर चलने...

भूतनाथ : **(बात काटकर)** मैं खूब जानता हूँ, मगर क्या कीजिएगा, समय पर सब कुछ करना पड़ता है, आँख रहते भी टटोलना पड़ता है!

सब कोई उठकर भूतनाथ के पीछे-पीछे रवाना हुए।

जो कुछ हाल हम ऊपर बयान कर चुके हैं इसमें कई घंटे गुजर गये।

पिछले पहर की रात बीत रही है, चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, इन चारों के पैरों के तले दबने वाले सूखे पत्तों की चरमराहट के सिवाय और किसी तरह की आवाज सुनाई नहीं देती। भूतनाथ इन तीनों को साथ लिए हुए एक अनूठे और अनजान रास्ते से बात-की-बात में पहाड़ी के नीचे उतर आया और इसके बाद दक्षिण की तरफ जाने लगा। जंगल-ही-जंगल लगभग आधा कोस के जाने के बाद ये लोग पुनः एक पहाड़ के नीचे पहुँचे। इस जगह का जंगल बहुत

ही घना तथा रास्ता घूमघुमौवा और पथरीला था। भूतनाथ इस तरह घूमता और चक्कर देता हुआ पेचीली पगडंडियों पर जाने लगा कि कोई अनजान आदमी उसकी नकल नहीं कर सकता था, अथवा यों समझना चाहिए कि एक-दो दफे का जानकार आदमी भी धोखे में आकर भटक सकता था, किसी अनजान का जाना तो बहुत ही कठिन बात है।

कुछ ऊपर चढ़ने के बाद घूमता-फिरता भूतनाथ एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ पत्थरों के बड़े-बड़े ढोकों के अन्दर छिपी हुई एक गुफा थी। इन तीनों के लिए हुए भूतनाथ उस गुफा के अन्दर घुसा। आगे-आगे भूतनाथ, उसके पीछे गुलाबसिंह, उसके बाद इंदुमति और सबसे पीछे प्रभाकर सिंह जाने लगे। कुछ दूर गुफा के अन्दर जाने के बाद भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुए में से समान निकाल कर मोमबत्ती जलाई और उसकी रोशनी के सहारे अपने साथियों को ले जाने लगा। लगभग पचीस गज के जाने के बाद एक चौमुहानी मिली अर्थात् जहाँ से एक रास्ता सीधी तरफ चला गया था, दूसरा बाईं तरफ, और तीसरी सुरंग दाहिनी तरफ चली गई थी, तथा चौथा रास्ता वह था जिधर से ये लोग आये थे। यहाँ तक तो रास्ता खुलासा था मगर आने का रास्ता बहुत ही बारीक और तंग था जिसमें दो आदमी बराबर से मिलकर नहीं चल सकते थे।

यहाँ पर आकर भूतनाथ अटक गया और मोमबत्ती की रोशनी में आगे की दोनों सुरंगों को बताकर अपने साथियों से बोला, ''हमारे मकान में जाने वाले को इस दाहिनी तरफ वाली सुरंग में घुसना चाहिए। सामने अथवा बाईं तरफ वाली सुरंग में जाने वाला किसी तरह जीता नहीं बच सकता है।''

इतना कहकर भूतनाथ दाहिनी तरफ वाली सुरंग में घुसा और कुछ दूर जाने के बाद उसने मोमबत्ती बुझा दी।

लगभग दो सौ कदम चले जाने के बाद यह सुरंग खतम हुई और उसका दूसरा मुहाना नजर आया। सबके पहले भूतनाथ सुरंग से बाहर हुआ, उसके बाद गुलाबसिंह और उसके पीछे इंदुमति रवाना हुई, मगर प्रभाकर सिंह न निकले तीन आदमी घूम कर उनका इंतजार करने लगे कि शायद पीछे रह गए हों मगर कुछ देर इंतजार करने पर भी वे नजर न आये। इंदुमति का कलेजा उछलने लगा, उसकी दाहिनी भुजा फड़क उठी और आँखों में आँसू डबडबा आये। भूतनाथ ने इंदुमति और गुलाबसिंह को कहा, ''तुम जरा इसी जगह दम लो, मैं सुरंग में घुस कर प्रभाकर सिंह का पता लगाता हूँ।'' इतना कहकर भूतनाथ पुनः उसी सुरंग में घुस गया।

2

प्रभाकर सिंह पीछे-पीछे चले आते थे, यकायक कैसे और कहाँ गायब हो गये? क्या उस सुरंग में कोई दुश्मन छिपा हुआ था जिसने उन्हें पकड़ लिया? या उन्होंने खुद हमें धोखा देकर हमारा साथ छोड़ दिया? इत्यादि तरह-तरह की बातें सोचती हुई इंदु बहुत ही परेशान हुई, मगर इस आशा ने कि अभी-अभी भूतनाथ उनका पता लगा के सुरंग से लौटाता ही होगा, उसे बहुत कुछ सम्हाला और वह एकदम सुरंग की तरफ टकटकी लगाये खड़ी देखती रही, परन्तु थोड़ी ही देर में उसकी यह आशा भी जाती रही जब उसने भूतनाथ को अकेले ही लौटते देखा और दुःख के साथ भूतनाथ ने बयान किया कि "उनसे मुलाकात नहीं हुई! मेरी समझ में नहीं आता कि क्या भेद है और उन्होंने हमारा साथ क्यों छोड़ा? क्योंकि अगर किसी छिपे हुए दुश्मन ने हमला किया होता तो कुछ मुँह से आवाज तो आई होती या चिल्लाते तो सही'!

गुलाबसिंह : नहीं भूतनाथ, ऐसा तो नहीं हो सकता। प्रभाकर सिंह पर हम भागने का इलजाम तो नहीं लगा सकते।

भूतनाथ : जी तो मेरा भी नहीं चाहता कि उनके विषय में मैं ऐसा कहूँ परन्तु घटना ऐसी विचित्र हो गई कि मैं किसी तरफ अपनी राय पक्की कर नहीं सकता। हाँ इंदुमति कदाचित् इस विषय में कुछ कह सकती हों!

इतना कह कर भूतनाथ ने इंदु की तरफ देखा मगर इंदु ने कुछ जवाब न दिया, सिर झुकाये जमीन को देखती रही, मानो उसने कुछ सुना ही नहीं! अबकी दफे गुलाबसिंह ने उसे संबोधन किया जिससे वह चौंकी और एकदम फूट-फूट कर रोने और कहने लगी, "बस मेरे लिए दुनिया इतनी ही थी। मालूम हो गया कि मेरा बदकिस्मती मेरा साथ न छोड़ेगी। मैं व्यर्थ ही आशा में पड़ कर दुखी हुई और उन्हें भी दुःख दिया। मेरे ही लिए उन्हें इतना कष्ट भोगना पड़ा और मुझ अभागिन के ही कारण उन्हें जंगल की खाक छाननी पड़ी। हाय, क्या अब मैं पुनः इस दुनिया में रहकर उनके दर्शन कर सकती हूँ? क्यों न इसी समय अपने दुखांत नाटक का अंतिम पर्दा गिरा कर निश्चिन्त हो जाऊँ?"

इत्यादि इसी ढंग की बातें करती हुई इंदु प्रलापवास्था को लाँघकर बेहोश हो गई और जमीन पर गिर पड़ी।

गुलाबसिंह और भूतनाथ को उसके विषय में बड़ी चिंता हुई और वे लोग उसे होश में लाकर समझाने-बुझाने तथा शान्त करने की चिंता करने लगे।

भूतनाथ का यह स्थान कुछ विचित्र ढंग का था। इसमें भूतनाथ की कोई कारीगरी न थी, इसे प्रकृति ही ने कुछ अनूठा और सुन्दर बनाया हुआ था। इसके विषय में अगर भूतनाथ की कुछ कारीगरी थी तो केवल इतनी ही कि उसने इसे खोज निकाला था, जिसका रास्ता बहुत ही कठिन और भयानक था। जिस जगह इंदुमति, भूतनाथ और गुलाबसिंह खड़े हैं वहाँ से दिन के समय यदि आप आँख उठाकर चारों तरफ देखिए तो आपको मालूम होगा कि लगभग चौदह या पन्द्रह बिगहे के चौरस जमीन, चारों तरफ के ऊँचे-ऊँचे और सरसब्ज पहाड़ों से सुन्दर और सुहावने सरोवर के जल की तरह घिरी हुई है। जिस तरह चारों तरफ के पहाड़ों पर खुशरंग फूल-पत्ती की बहुतायत दिखाई दे रही है उसी तरह यह जमीन भी नरम घास की बदौलत सब्ज मखमली फर्श का नमूना बन रही है और जगह-जगह पर पहाड़ से गिरे हुए छोटे-छोटे चश्मे भी बह रहे हैं। यद्यपि आजकल पहाड़ों के लिये सरसब्जी का मौसम नहीं है मगर यहाँ पर कुछ ऐसी कुदरती तरावट है कि जिसके सबब से 'पतझड़ के मौसम का कुछ पता नहीं लगता, यों समझ सकते हैं कि बरसात के मौसम में आजकल से कहीं बढ़-चढ़कर खुबी, खूबसूरती और सरसब्जी नजर आती होगी।

इस स्थान में किसी तरह की इमारत बनी हुई न थी मगर चारों तरफ के पहाड़ों में सुन्दर और सुहावनी गुफाओं और कंदराओं की इतनी बहुतायत थी कि हजारों आदमी बड़ी खुशी और आराम के साथ यहाँ गुजारा कर सकते थे। इन्हीं गुफाओं में भूतनाथ तथा उसके तीस-चालीस संगी-साथियों का डेरा था और इन्हीं गुफाओं में उसके जरूरत की सब चीजें और हर्बे इत्यादि रहा करते थे, तथा उसके पास जो कुछ दौलत थी वह भी कहीं इन्हीं जगहों में होगी, जिसका ठीक-ठीक पता उसके साथियों को भी न था। भूतनाथ का कथन ऐसे-ऐसे कई स्थान उसके कब्जे में हैं और इस बात का कोई निश्चय नहीं है कि कब या कितने दिनों तक यह किस स्थान में अपना डेरा रखता या रखेगा।

सुबह की सफेदी अच्छी तरह फैल चुकी थी अब भूतनाथ और गुलाबसिंह के उद्योग से इंदुमति होश में आई। यद्यपि वह खुद इस खोह के बाहर होकर प्रभाकर सिंह की खोज में जान तक देने के लिए तैयार थी और ऐसा करने के लिए वह जिद्द भी कर रही थी मगर भूतनाथ और गुलाबसिंह ने उसे बहुत समझा-बुझाकर ऐसा करने से बाज रखा और वादा किया कि बहुत जल्दी उनका पता लगाकर उनके दुश्मनों को नीचा दिखाएँगे।

ये सब बातें हो ही रही थीं कि भूतनाथ के आदमी गुफाओं और कंदराओं में से निकलकर वहाँ आ पहुँचे जिन्हें भूतनाथ ने अपनी ऐयारी भाषा में कुछ समझा-बुझाकर बिदा किया। इसके बाद एक स्वच्छ और प्रशस्त गुफा में जो उसके डेरे के बगल में थी इंदुमति का डेरा दिलाकर और गुलाबसिंह को उसके पास छोड़कर वह भी उन दोनों से बिदा हुआ और अपने एक शागिर्द को साथ लेकर उसी सुरंग की राह अपनी इस दिलचस्प पहाड़ी के बाहर हो गया।

1जब भूतनाथ सुरंग के बाहर हुआ तो सूर्य भगवान उदय हो चुके थे। उसे जरूरी कामों अथवा नहाने-धोने, खाने-पीने की कुछ भी फिक्र न थी, वह केवल प्रभाकर सिंह का पता लगाने की धुन में था।

यह वह जमाना था जब चुनार की गद्दी पर महाराज शिवदत्त को बैठे दो वर्ष का समय बीत चुका था। उसकी ऐयाशी की चर्चा घर-घर में फैल रही थी और बहुत से नालायक तथा लुच्चे शोहदे उसकी जात से फायदा उठा रहे थे। उधर जमानिया में दारोगा साहब की बदौलत तरह-तरह के साजिशें हो रही थीं और उनकी कमेटी का दौरदौरा खूब अच्छी तरह तरक्की कर रहा था[1] अस्तु इस समय खड़े होकर सोचते हुए भूतनाथ का ध्यान एक दफे जमानिया की तरफ और फिर दूसरी दफे चुनारगढ़ की तरफ गया।

सुरंग से बाहर निकल एक घने पेड़ के नीचे भूतनाथ बैठ गया और उसने अपने शागिर्द से, जिसका नाम भोलासिंह था, कहा

भूतनाथ : भोलासिंह, मुझे इस बात का शक होता है कि किसी दुश्मन ने इस खोह का रास्ता देख लिया और मौका पाकर उसने प्रभाकर सिंह को पकड़ लिया।

भोलासिंह : मगर गुरुजी, मेरे चित्त में तो यह बात नहीं बैठती। क्या प्रभाकर सिंह इतने कमजोर थे कि आपके पीछे आते समय एक आदमी ने उन्हें पकड़ लिया और उनके मुँह से आवाज तक न निकली? इसके अतिरिक्त यह तो संभव ही न था कि बहुत से आदमी आपके पीछे-पीछे आते और आपको आहट भी न मिलती।

भूतनाथ : तुम्हारा कहना ठीक है और इन्हीं बातों को सोचकर मैं कह रहा हूँ कि दुश्मन के आने का शक होता है, यह नहीं कहता कि निश्चय होता है अस्तु जो कुछ हो, मैं प्रभाकर सिंह का पता लगाने के लिए जाता हूँ और तुमको इसी जगह छोड़कर ताकीद कर जाता हूँ कि जब तक मैं लौट कर न आऊँ तब तक सूरत बदले हुए यहाँ पर रहो और चारों तरफ घूम-फिर कर टोह लो कि किसी दुश्मन ने इस सुरंग का पता तो नहीं लगा लिया है। अगर ऐसा हुआ होगा तो कोई-न-कोई यहाँ आता-जाता तुम्हें जरूर दिखाई देगा। यदि कोई जरूरत पड़े तो तुम निःसन्देह अपने डेरे पर **(सुरंग के अंदर)** चले जाना, मैं इसके लिए तुम्हें मना नहीं करता मगर जो कुछ मेरा मतलब है उसे तुम जरूर अक्षछी तरह समझ गए होंगे।

भोलासिंह : जी हाँ मैं अच्छी तरह समझ गया, जहाँ तक हो सकेगा मैं इस काम को होशियारी के साथ करूँगा, आप जहाँ इच्छा हो जाइए और इस तरफ से बेफिक्र रहिए।

भूतनाथ : अच्छा तो अब मैं जाता हूँ।

इतना कहकर भूतनाथ भोलासिंह से विदा हुआ और उसी घूमघुमौवे रास्ते से होता हुआ पहाड़ी के नीचे उतर आया, और इधर भोलासिंह देहाती ब्राह्मण की सूरत बना जंगल में इधर-उधर घूमने लगा।

ठीक दोपहर का समय था। धूप खूब कड़ाके की पड़ रही थी और गर्म-गर्म लू के झपेटे बदन का झुलसा रहे थे। ऐसे समय में भूतनाथ का शागिर्द भोलासिंह गर्मी से परेशान होकर एक घने पेड़ के नीचे बैठा आराम कर रहा था। यह स्थान यद्यपि उस सुरंग से लगभग दो-ढाई सौ दम की दूरी पर होगा परन्तु यहाँ से घूमघुमौवे रास्ते और जंगली पेड़ों तथा लताओं की झाड़ियों के कारण बहुत ध्यान देने पर भी उस सुरंग का मुहाना दिखाई नहीं देता था। भोलासिंह बैठा कुछ सोच रहा था कि यकायक उसके कान में कुछ आदमियों के बोलने की आहट मालूम हुई।

हमारे पाठकों में से जो महाशय जंगल की हवा खा चुके या पहाड़ों की सैर कर चुके हैं उन्हें यह बात जरूर मालूम होगी कि जंगल में सन्नाटे के समय मुसाफिरों के बातचीत करते हुए चलने की आहट बहुत दूर-दूर तक के लोगों को मिल जाती है, यहाँ तक कि आध कोस की दूरी पर यदि दो-चार आदमी बातचीत करते हुए जाते हों तो ऐसा मालूम होगा कि थोड़ी दूर पर आदमी बातें कर रहे हैं परन्तु शब्द साफ-साफ सुनाई न देंगे, साथ ही इसके इस बात का पता लगाना भी जरा कठिन होगा कि ये बातचीत करते हुए जाने वाले आदमी किधर और कितनी दूर होंगे। अस्तु जब भोलासिंह को कुछ आदमियों के बोलने की आहट मालूम हुई तो ठीक-ठीक पता लगाने और जाँच करने की नीयत से वह उस पेड़ के ऊपर चढ़ गया और चारों तरफ गौर से देखने लगा मगर कुछ पता न लगा और न कोई आदमी ही दिखाई पड़ा। लाचार वह पेड़ के नीचे उतर आया और उसी आहट की सीध पर खूब गौर करता हुआ उत्तर की तरफ चल पड़ा जिधर के जंगली पेड़ बहुत घने और गुंजान थे।

कुछ दूर तक चले जाने पर भी भोलासिंह को किसी आदमी का तो पता न लगा मगर एक छोटे से पेड़ के नीचे बेहोश प्रभाकर सिंह पड़े जरूर दिखाई दिए यद्यपि उसने आज रात के समय प्रभाकर सिंह को देखा न था क्योंकि उस घाटी में जहाँ भूतनाथ का डेरा था पहुँचने के पहिले ही वह गायब हो चुके थे, परन्तु प्रभाकर सिंह एक अमीर बहादुर और नामी आदमी थे इसलिए भोलासिंह उन्हें पहिचानता जरूरत था और कई दफे ऐयारी की धुन में शहर में घूमते हुए उसने प्रभाकर सिंह को देखा भी था। इसके अतिरिक्त आज भूतनाथ ने उसे यह भी बता दिया था कि जिस समय प्रभाकर सिंह हमारे साथ से गायब हुए हैं उस समय उनकी पोशाक़ फलाने ढंग की थी तथा उनके पास अमुक हर्बे थे। इन सब कारणों से भोलासिंह को उनके पहिचानने में किसी तरह की कोई दिक्क्त नहीं हुई और वह उन्हें ऐसी अवस्था में पड़े हुए देखते ही चौंक पड़ा। वह उनके पास बैठ गया और गौर से देखने लगा कि क्या उन्हें किसी तरह की चोट आई है या कोई आदमी जान से मार कर छोड़ गया है। किसी तरह की चोट का पता तो न लगा मगर इतना मालूम हो गया कि मरे नहीं हैं बल्कि बेहोश पड़े हैं।

भोलासिंह ने अपने ऐयारी के बटुए में से लखलखा निकाला और सुँघाने लगा थोड़ी ही देर में प्रभाकर सिंह होश में आ गए ओर उन्होंने अपने सामने एक देहाती ब्राह्मण को बैठा देखा।

प्रभाकर सिंह : आप कौन हैं? कृपा कर अपना परिचय दीजिए। मैं आपका बड़ा ही कृतज्ञ हूँ क्योंकि आज निःसन्देह आपने मेरी जान बचाई।

भोलासिंह : मैं एक गरीब देहाती ब्राह्मण हूँ। इस राह से जा रहा था कि यकायक आपको इस तरह पड़े हुए देखा, फिर जो कुछ बन सका किया।

प्रभाकर सिंह : **(सिर हिलाकर)** नहीं, कदापि नहीं, आप ब्राह्मण भले ही हों परन्तु देहाती और गरीब नही हो सकते, आप जरूर कोई ऐयार हैं।

भोलासिंह : यह शक आपको कैसे हुआ?

प्रभाकर सिंह : यद्यपि मैं ऐयारी नहीं जानता परन्तु ऐसे मौके पर आपको पहिचान लेना कोई कठिन काम न था क्योंकि आपको बहुत उम्दा लखलखा सुँघाकर मेरी बेहोशी दूर की है जिसकी खुशबू अभी तक मेरे दिमाग में गूँज रही है। क्या कोई आदमी जो ऐयारी नहीं जानता हो ऐसा लखलखा बना सकता है? आप ही बताइए!

भोलासिंह : आपका कहना ठीक है मगर मैं..

प्रभाकर सिंह : **(बात काट कर)** नहीं-नहीं, इसमें कुछ सोचने और बात बनाने की जरूरत नहीं है, मैं आपसे मिलकर बड़ा प्रसन्न हुआ क्योंकि मुझे निश्चय है कि आप जरूर मेरे दोस्त भूतनाथ के ऐयार हैं जिनसे सिवाय भलाई के बुराई की आशा हो ही नहीं सकती।

भोलासिंह : **(कुछ सोच कर)** बात तो बेशक् ऐसी ही है, मैं जरूर भूतनाथ का ऐयार हूँ और वे आपका पता लगाने के लिए गए हैं, मगर यह तो बताइए कि आप यकायक गायब क्यों हो गए और आपकी ऐसी दशा किसने की है?

प्रभाकर सिंह : मैं यह सब हाल तुमसे बयान करूँगा और यह भी बताऊँगा कि क्योंकर मेरी जान बच गई, मगर इस समय नहीं क्योंकि दुश्मनों के हाथ से तकलीफ उठाने के कारण मैं बहुत ही कमजोर हो रहा हूँ और जब मुझमें ज्यादा बात करने की ताकत नहीं है, अस्तु जिस तरह हो सके मुझे अपने डेरे पर ले चलो, वहाँ सब कुछ सुन लेना और उसी समय इंदुमति तथा गुलाबसिंह को भी मेरा हाल मालूम हो जाएगा। यद्यपि मुझमें चलने की ताकत नहीं है मगर तुम्हारे मोढ़े का सहारा लेकर धीरे-धीरे वहाँ तक पहुँच ही जाऊँगा।

भोलासिंह : अच्छी बात है, मैं तो आपको अपनी पीठ पर लादकर भी ले जाव सकता हूँ।

प्रभाकर सिंह : ठीक है मगर इसकी कोई जरूरत नहीं है, अच्छा अब आप अपना नाम तो बता दो।

भोलासिंह : मेरा नाम भोलासिंह है।

इतना कहकर भोलासिंह उठ खड़ा हुआ और उसने हाथ का सहारा देकर प्रभाकरसिंह को उठाया। वह बहुत ही सुस्त और कमजोर मालूम हो रहे थे इसलिये भोलासिंह उन्हें टेकाता और सहारा देता हुआ बड़ी कठिनता से सुरंग के मुहाने पर ले आया। वहाँ पर प्रभाकर सिंह ने बैठकर कुछ देर तक सुस्ताने की इच्छा प्रकट की अस्तु उन्हें बैठाकर भोलासिंह भी उनके पास बैठ गया। इस समय दिन पहर भर के लगभग रह गया होगा। आह, यहाँ पर भोलासिंह ने बेढब धोखा खाया। यह जो प्रभाकर सिंह उसके साथ भूतनाथ की घाटी में जा रहे हैं वह वास्तव में प्रभाकर सिंह नहीं है बल्कि उनके दुश्मनों में से एक ऐयार है जिसका खुलासा हाल आगे के किसी बयान में मालूम होगा, यह उसे तथा भूतनाथ और उसके ऐयारों को धोखा दिया चाहता है और इंदुमति पर कब्जा कर लेने की धुन में है यद्यपि भोलासिंह भी ऐयार और बुद्धिमान हैं मगर साथ ही इसके उसे भांग का बहुत शौक है। सुबह, दोपहर और शाम तीनों वक्त छाने बिना उसका जी नहीं मानता। इतने पर भी बस नहीं, कभी-कभी वह नशे को कमी समझ कर दो-चार दम गाँजे के भी लगा लिया करता है और यही सबब है कि वह कभी-कभी बेढब धोखा खा जाता है। मगर यह ऐयार भी बड़ा ही मक्कार है जो उसके साथ जा रहा है, देखना चाहिए दोनों में क्योंकर निपटती है। भोलासिंह तो खुश है कि हमने प्रभाकर सिंह को खोज निकाला, और वह ऐयार सोचता है कि अब इंदुमति पर कब्जा करना कौन बड़ी बात है?

कुछ देर के बाद दोनों आदमी उठ खड़े हुए और भोलासिंह उस नकली प्रभाकर सिंह को साथ लिए सुरंग के अन्दर चला गया।

3

बेचारी इंदुमति बड़े ही संकट में पड़ गई है। प्रभाकर सिंह का इस तरह यकायक गायब हो जाना उसके लिए बड़ा ही दुःखदायी हुआ इस समय उसके आगे दुनिया अँधकार हो रही है। उसे कहीं भी किसी तरह का सहारा नहीं सूझता। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आता कि अब उसका भविष्य कैसा होगा। उसे न तो तनोबदन की सुध है और न नहाने-धोने की फिक्र, वह सिर झुकाए अपने प्यारे पति की चिंता में डूबी हुई है। गुलाबसिंह उसके पास बैठे हुए तरह-तरह की बातों से उसे संतोष दिलाना चाहते हैं मगर किसी तरह भी उसके चित्त को शान्ति नहीं होती और वह अपने मन की दो-चार बातें कह कर चुप हो जाती है! हाँ जब-जब उसके कान में ये शब्द पड़ जाते हैं कि 'भूतनाथ का उद्योग कदापि वृथा नहीं हो सकता, वह जरूर प्रभाकर सिंह को खोज निकालेंगे और यह अपने साथ लेकर ही आवेंगे' तब-तब वह चौंक पड़ती है। आशा के फेर में पड़ कर उसका ध्यान सुरंग के मुहाने की तरफ जा पड़ता है और कुछ देर के लिए उधर की टकटकी बँध जाती है।

इस बीच में इंदु ने कई दफे गुलाबसिंह से कहा, "तुम मुझे साथ लेकर इस सुरंग के बाहर निकलो, मैं खुद मर्दाना भेष बनाकर उसका पता लगाऊँगी।" मगर गुलाबसिंह ने ऐसा करना स्वीकार न किया जिससे उसका चित्त और भी दुखी हो गया और उसने रोते ही कलपते बची हुई रात और अगला दिन बिता दिया। अन्त में दिन बीत जाने पर संध्या के समय जब सूर्य अस्त हो रहे थे लाचार होकर गुलाबसिंह ने इंदु से वादा किया कि अच्छा अगर कल तक भूतनाथ लौटकर न आ जाएँगे तो मैं तुम्हें साथ लेकर सुरंग के बाहर निकल चलूँगा और फिर जैसा तुम कहोगी वैसा ही करूँगा।

गुलाबसिंह के इस वादे से इंदु को थोड़ी-सी ढाढस मिल गई और उसने साहस करके अपने को सम्हाला। इसके बाद गुलाबसिंह से बोली कि 'इस समय तो मैं स्नान इत्यादि कुछ भी नहीं करूँगी, हाँ यदि तुम आज्ञा दो तो मैं थोड़ी देर के लिए नीचे उतर कर मैदान में टहलूँ और दिल बहलाऊँ'। गुलाबसिंह ने उसकी इस बात को भी गनीमत समझा और घूमने-फिरने की इजाजत दे दी।

इंदुमति का घूमने-फिरने के लिए गुलाबसिंह से आज्ञा ले लेना केवल इसी अभिप्राय से न था कि वह अपना दिल बहलावे बल्कि उसका असल मतलब यह था कि वह अकेले में बैठकर या घूम-फिर कर इस विषय पर विचार करे कि अब उसे क्या करना चाहिए क्योंकि गुलाबसिंह की समझाने-बुझाने वाली बातों से दुखी हो गई थी। उसका हरदम पास बैठे रह कर दिलासा देना या ढाँढस बँधाना उसे बहुत बुरा मालूम हुआ और इस बहाने से उसने अपना पीछा छुड़ाया।

उदास और पति की जुदाई से व्याकुल इंदुमति गुलाबसिंह के पास से उठी और धीरे-धीरे चलकर नीचे वाले सरसब्ज मैदान में पहुँचकर टहलने लगी। उधर गुलाबसिंह भी दिन भर का भूखा-प्यासा था। अतः जरी कामों से निपटने और कुछ खाने-पीने की फिक्र में लगा।

धीरे-धीरे घूमती-फिरती इंदुमति उस सुरंग के मुहाने के पास आ पहुँची जो यहाँ आने-जाने का रास्ता था और पहाड़ी के साथ एक पत्थर की साफ चट्टान पर बैठकर सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए। उसका मुँह सुरंग की तरफ था और इस आशा से बराबर उसी तरफ देख रही थी कि प्रभाकर सिंह को लिए हुए भूतनाथ अब आता ही होगा। उसी समय नकली प्रभाकर सिंह को लिए हुए भोलासिंह वहाँ आ पहुँचा और सुरंग के बाहर निकलते ही इंदु की निगाह उन पर पड़ी तथा उन दोनों ने भी इंदु को देखा।

इस समय भोलासिंह अपनी असली सूरत में था और उसे भूतनाथ के साथ जाते हुए इंदु ने देखा भी था इसलिए वह जानती थी कि वह भूतनाथ का ऐयार है अस्तु निगाह पड़ते ही उसे विश्वास हो गया कि भूतनाथ ने मेरे पति को भोलासिंह के साथ वहाँ भेज दिया है और पीछे-पीछे भूतनाथ खुद भी आता होगा।

नकली प्रभाकर सिंह और भोलासिंह सुरंग से निकल कर पाँच कदम आगे न बढ़े होंगे कि प्रभाकर सिंह को देखते ही इंदुमति पागलों की तरह दौड़ती हुई उनके पास पहुँची और उनके पैरों पर गिर पड़ी।

हाय, बेचारी इंदु को क्या खबर थी कि यह वास्तव में मेरा पति नहीं बल्कि कोई मक्कार उसकी सूरत बना मुझे धोखा देने के लिए यहाँ आया है। तिस पर भोलासिंह के साथ रहने से उसे इस बात पर शक करने का मौका भी न मिला। वह उसे अपना पति समझकर उसके पैरों पर गिर पड़ी और वियोग के दुःख को दूर करती हुई प्रसन्नता ने उसे गद्गद् कर दिया। कंठ रुद्ध हो जाने के कारण वह कुछ बोल न सकी, केवल गरम-गरम आँसू गिराती रही। भोलासिंह भी चुपचाप खड़ा आश्चर्य के साथ उसकी इस अवस्था को देखता रहा।

नकली प्रभाकर ने इंदुमति से कुछ न कहकर भोलासिंह से कहा, ''भाई भोलासिंह, अब तो मैं बिलकुल ही थक गया हूँ। मेरी कमजोरी अब मुझे एक कदम भी आगे नहीं चलने देती। इंदु से मिलने का उत्साह मुझे यहाँ तक साहस देकर ले आया यही गनीमत है, नहीं दुश्मनों के दिए हुए जहर की बदौलत बिलकुल ही कमजोर हो गया हूँ। इत्तिफाक की बात है कि इंदु मुझे इसी जगह मिल गई। अब मैं कुछ देर तक सुस्ताए बिना एक कदम भी आगे नहीं चल सकता अस्तु तुम जाओ, गुलाबसिंह को भी खुशखबरी देकर इसी जगह बुला लाओ तब तक मैं भी अच्छी तरह आराम कर लूँ।'' डेरा सैकड़ों कदम की दूरी पर था, तमाम मैदान पार करने के बाद पहाड़ी पर चढ़कर वह गुफा थी जिसमें गुलाबसिंह का डेरा था, अस्तु वहाँ तक जाने और आने में घड़ी भर से भी ज्यादा देर लग सकती थी तथापि भोलासिंह दौड़ा-दौड़ा जाकर गुलाबसिंह से मिला और उन्हें प्रभाकर सिंह के आने की खुशखबरी सुनाई। उस समय गुलाबसिंह रसोई बनाने की फिक्र में थे मगर यह खबर सुनते ही उन्होंने सब काम छोड़ दिया और प्रभाकर सिंह के आने की खुशखबरी सुनाई। उस समय गुलाबसिंह रसोई बनाने की फिक्र में थे मगर यह खबर सुनते ही उन्होंने सब काम छोड़ दिया और प्रभाकर सिंह से मिलने के लिए भोलासिंह के साथ चल पड़े।

जिस समय गुलाबसिंह को साथ लिए हुए भोलासिंह सुरंग के मुहाने पर पहुँचा तो वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था। न तो प्रभाकर सिंह दिखाई पड़े और न इंदुमति ही नजर आई। ऐसी अवस्था देख भोलासिंह सन्नाटे में आ गया और अब उसे मालूम हुआ कि उसने धोखा खाया। वह घबड़ाकर चारों तरफ देखने के बाद यह कहता हुआ जमीन पर बैठ गया ''हाय, मैंने बुरा धोखा खाया। प्रभाकर सिंह के साथ-ही-साथ इंदुमति को भी हाथ से खो बैठा।''

4

अब हम यहाँ पर कुछ हाल प्रभाकर सिंह का लिखना जरूरी समझते हैं। पहिले बयान में हम लिख आए हैं कि 'प्रभाकर सिंह इंदुमति और गुलाबसिंह को लेकर भूतनाथ अपनी घाटी में गया तो रास्ते में सुरंग के अन्दर से यकायक प्रभाकरसिंह गायब हो गए।' अस्तु इसी जगह से हम प्रभाकर सिंह का हाल लिखना शुरू करते हैं।

जब भूतनाथ उन लोगों को साथ लिए हुए सुरंग में गया और कुछ दूर जाने के बाद चौमुहानी पर पहुँचा तो रास्ते का हाल बताकर कुछ आगे चलने के बाद भूतनाथ ने मोमबत्ती बुझा दी और उसे यही खयाल रहा कि हमारे तीनों मेहमान हमारे पीछे-पीछे चले आ रहे हैं, मगर वास्तव में ऐसा न था। चौमुहानी से थोड़ी ही दूर आगे बढ़ने के बाद किसी ने प्रभाकर सिंह के दाहिने मोढ़े पर अपना हाथ रखा जो सबके पीछे-पीछे जा रहे थे। प्रभाकर सिंह ने चौंककर पीछे की तरफ देखा मगर अँधकार में कुछ भी दिखाई न दिया, हाँ एक हलकी-सी आवाज यह सुनाई पड़ी 'ठहरो, और जरा मेरी बात सुन कर तब आगे बढ़ो।' ठहरें या न ठहरें, भूतनाथ को रोकें अथवा चुप रहें इत्यादि सोचते हुए प्रभाकर सिंह कुछ ही देर रुके थे कि उनके कान में पुनः एक बारीक आवाज आई, "घबड़ाओ मत, जरा-सा रुककर सुनते जाओ कि अब तुम कैसी आफत में फँसना चाहते हो और उससे छुटकारा पाने की क्या तदबीर है!"

इन शब्दों ने प्रभाकर सिंह को और भी रोक लिया और वह कुछ ठिठके-से रहकर सोचने लगे कि क्या करना चाहिए। इतने ही में पिछली तरफ रोशनी मालूम हुई जो उसी चौराहे पर थी जिसे यह लोग छोड़कर कुछ दूर आगे बढ़ आये थे। उस रोशनी में दो औरतें दिखाई पड़ीं और यह भी मालूम पड़ा कि जिसने प्रभाकर सिंह के मोढ़े पर हाथ रख कर उन्हें रोका था वह भी एक औरत ही है जो अब कुछ पीछे हट इन्हें पुनः अपनी तरफ बुला रही है।

यद्यपि इस कार्रवाई में बहुत देर लगी तथापि इसी बीच में उस अनूठी और पेचीली सुरंग में गुलाबसिंह और इंदुमति को लिए भूतनाथ इतना आगे बढ़ गया कि न तो वह इन दोनों की बात ही सुन सका और न चौमुहानी वाली रोशनी ही पर उसकी निगाह पड़ी। कुछ वर्तमान और कुछ भविष्य को सोचते हुए प्रभाकर सिंह अटके और उन औरतों से जो कम-उम्र, नाजुक और सुन्दर थीं डरना व्यर्थ समझ कर चौमुहानी की तरफ मुड़कर उस औरत की तरफ चले जिसने इन्हें रोका था।

इन तीनों औरतों का नखशिख बयान करने और इनकी खूबसूरती के बारे में लिखने की यहाँ कुछ जरूरत नहीं है। यहाँ इतना ही कहना काफी है जितना कह आये हैं अर्थात् तीनों कम उम्र की थीं, नाजुक थीं, सुन्दर थीं भड़कीली पोशाक पहिरे हुए थीं।

जब चौमुहानी पर पहुँचे तो उन दोनों औरतों में से एक ने जो पहिले ही से वहाँ खड़ी थी प्रभाकर सिंह का हाथ पकड़ लिया और कहा, "भूतनाथ ने जरूर आप को कहा होगा कि चौमुहानी से उसके घर का रास्ता छोड़कर बाकी दोनों तरफ जाना खतरनाक है, मगर नहीं, वह बिलकुल झूठा है। आप जरा इधर आइए और देखिए मैं आपको कैसा अनूठा तमाशा दिखाती हूँ।"

इतना कहकर दोनों बल्कि तीनों औरतें प्रभाकर सिंह को सुरंग के उस रास्ते में ले चलीं जिधर जाने के लिए भूतनाथ ने मना किया था। हम नहीं कह सकते कि क्या सोच-समझकर प्रभाकर सिंह ने इन औरतों की बात मान ली और भूतनाथ की नसीहत पर कुछ भी ध्यान न दिया अथवा भूतनाथ का साथ छोड़ दिया। क्या संभव है कि वे इन तीनों औरतों को पहिले से पहिचानते हों?

लगभग पन्द्रह या बीस कदम जाने के बाद उस तीसरी औरत ने जिसके हाथ में रोशनी थी नखरे के साथ हाथ से मोमबत्ती गिरा दी जिससे अँधकार हो गया। उसने यही जाहिर किया कि यह बात धोखे में उससे हो गई। उसके बाद उस औरत ने इनका हाथ भी छोड़ दिया। प्रभाकर सिंह अटक कर कुछ सोचने लगे और बोले "जो हुआ सो हुआ, अब रोशनी करो तो मैं तुम्हारे साथ आगे बढ़ूँगा नहीं तो पीछे की तरफ मुड़ जाऊँगा।" मगर उनकी इस बात का किसी ने

भी जवाब न दिया। आश्चर्य के साथ प्रभाकर सिंह ने पुनः पुकारा मगर फिर जवाब न मिला, मानो वहाँ कोई था ही नहीं।

आश्चर्य और चिंता के शिकार प्रभाकर सिंह कुछ देर तक खड़े सोचने के बाद अफसोस करते हुए पीछे की तरफ लौटे मगर अपने ठिकाने पर पहुँच सके। आठ ही दस कदम पीछे हटे थे कि दीवार से टकराकर खड़े हो गए और सोचने लगे "हैं, यह क्या मामला है! अभी-अभी तो हम लोग इधर से आ रहे हैं, फिर यह दीवार कैसा? रास्ता क्योंकर बंद हो गया? क्या अब इस तरफ का रास्ता बंद हो ही गया!" इत्यादि।

वास्तव में पीछे फिरने का रास्ता बंद हो गया मगर अँधेरे में इस बात का पता नहीं लग सकता था कि यह कोई दीवार बीच में आ पड़ी है या किसी तरह के तख्ते या दरवाजे ने बगल से निकल कर रास्ता बंद कर दिया है अथवा क्या है! जो हो, प्रभाकर सिंह को निश्चय हो गया कि अब पीछे की तरफ लौटना असंभव है अस्तु यही अच्छा होगा कि आगे की तरफ बढ़ें, शायद कहीं उजाले की सूरत दिखाई दे तब जान बचे, आह! मैं इन औरतों को ऐसा नहीं समझता था और इस बात का स्वप्न में भी गुमान नहीं होता था कि ये मेरे साथ दगा करेंगी।

लाचार प्रभाकर सिंह अँधेरे में अपने दोनों हाथों को फैलकर टटोलते हुए आगे की तरफ बढ़े मगर बहुत धीरे-धीरे जाने लगे जिसमें किसी तरह का धोखा न हो। रास्ता पेचीला और ऊँचा था तथा आगे की तरफ से तंग भी होता जाता था। अढ़ाई-तीन सौ कदम जाने के बाद रास्ता इतना तंग हो गया कि एक आदमी से ज्यादा के चलने की जगह न रही। कुछ आगे बढ़ने पर रास्ता खत्म हुआ और एक बंद दरवाजे पर हाथ पड़ा। धक्का देने से वह दरवाजा खुल गया और प्रभाकरसिंह जो उनके सामने की तरफ बढ़ती हुई मालूम पड़ती थी। लगभग पच्चीस-तीस कदम जाने के बाद प्रभाकर सिंह खोह के बाहर निकले और तब उन्होंने अपने को एक सरसब्ज पहाड़ की ऊँचाई पर किसी गुफा के बाहर खड़ा पाया।

इस समय सवेरा हो चुका था और पूरब तरफ पहाड़ की चोटी के पीछे सूरज की लालिमा दिखाई दे रही थी। प्रभाकर सिंह ने अपने को एक ऐसे स्थान में पाया जिसे एक सुन्दर और सोहावनी घाटी कह सकते हैं। यह घाटी त्रिकोण अर्थात् तीन तरफ से पहाड़ के अन्दर दबी हुई थी और जमीन के बीचोंबीच में एक सुन्दर बंगला बना हुआ था जो इस जगह से जहाँ प्रभाकर सिंह वहाँ पहुँचने के लिए रास्ता तलाश करने लगे मगर सुभीते से उतर जाने के लायक कोई पगडंडी नजर न आई, तथापि प्रभाकर सिंह हतोत्साह न हुआ और किसी-न-किसी तरह से उद्योग करके नीचे की तरफ उतरने ही लगे। वह सोच रहे थे कि देखें हमारा दिन कैसा कटता है, किस ग्रह दशा के फेर में पड़ते हैं, किसका सामना पड़ता है और खाने-पीने के लिए क्या चीज मिलती है अथवा यहाँ से निकलने का रास्ता ही क्योंकर मिलता है। उस बंगले तक पहुँचने में प्रभाकर सिंह को दो घंटे से ज्यादा देर लगी। पहाड़ी की चोटियों पर धूप अच्छी तरह फैल चुकी थी मगर बंगले के पास अभी धूप का नाम-निशान नहीं था।

बंगले के दरवाजे पर दो ज़वान लड़के पहरा दे रहे थे जिन्होंने प्रभाकर सिंह को रोका और पूछा, "तुम यहाँ क्योंकर आए?"

इसके जवाब में प्रभाकर सिंह ने क्रोध में आकर कहा, "जिस तरह हम आए हैं वह जरूर तुम्हें मालूम होगा और जरूर वे तीनों कमबख्त औरतें भी इसी बंगले के भीतर होंगी जिन्होंने मुझे धोखा देकर गुमराह किया है। तुम जाओ, उन्हें इत्तिला दो कि प्रभाकरसिंह आ पहुँचे।"

उन दोनों पहरेवालों ने प्रभाकर सिंह की बात का कुछ भी जवाब न दिया। प्रभाकरसिंह गुस्से में आकर कुछ कहा ही चहाते थे कि उनकी निगाह एक मौलसिरी के पेड़ के ऊपरी हिस्से पर जा पड़ी जो इसी बंगले के पूरब और दक्षिण के कोने पर बड़ी खूबसूरती के साथ खड़ा था। इस बंगले के चारों कोनों पर चार मौलसिरी के बडे-बड़े दरख्त थे जो इस समय खूब ही हरे-भरे थे और उनके फूलों से वहाँ की जमीन ढक रही थी तथा खुशबू से प्रभाकर सिंह का दिमाग मुअत्तर हो रहा था।

जिस मौलसिरी के पेड़ के ऊपर प्रभाकर सिंह की निगाह पड़ी उसके ऊपरी हिस्से में रेशमी डोर के साथ एक हिंडोला लटक रहा था जो झुकी हुई डालियों की आड़ में छिपा हुआ था मगर जब हवा के झपेटों से उसकी डालियाँ हिलतीं और इधर-उधर हटती थीं तो उस हिंडोले पर एक सुन्दर औरत बैठी हुई दिखाई देती थी और इसी पर प्रभाकर सिंह की निगाह पड़ी थी। गौर से देखने पर प्रभाकर सिंह को इंदुमति का गुमान हुआ और ये दौड़ कर उस पेड़ के नीचे जा खड़े हुए।

प्रभाकर सिंह ने सर उठाकर पुनः उस औरत को देखा इस आशा से कि यह इंदुमति है या नहीं, इस बात का निश्चय कर लें, मगर प्रभाकर सिंह का खयाल गलत निकला क्योंकि वह वास्तव में इंदुमति न थी, हाँ, इंदुमति से उसकी सूरत रुपये में बाहर आना जरूर मिलती-जुलती थी यहाँ तक कि यदि यह औरत केवल अपने दोनों होठ और अपनी ठुड्डी हाथ से ढाँक कर प्रभाकर सिंह की तरफ देखती होती तो दोपहरी की चमकचमाती हुई रोशनी में और दस हाथ की दूरी से भी वे इसे न पहिचान सकते और यही कहते कि जरूर मेरी इंदुमति है।

इस समय वह औरत भी प्रभाकर सिंह की तरफ देख रही थी। जब वे उस पेड़ के नीचे आए तब उसने हाथ के इशारे से उन्हें भाग जाने को कहा जिसके जवाब में प्रभाकर सिंह ने कहा, ''तुम इस बात का गुमान भी करो कि तुम्हारा हाल जाने बिना मैं यहाँ से चला जाऊँगा।''

औरत : **(अपने माथे पर हाथ रख कर)** बात तो अब यह है कि आप अब यहाँ से जा नहीं सकते और न आपको निकल जाने का रास्ता ही मिल सकता है।

प्रभाकर सिंह : तुम्हारे इस कहने से तो निश्चय होता है कि तुम्हारी जुबानी मुझे यहाँ का सच्चा-सच्चा हाल मालूम हो जाएगा और मैं अपने दुश्मनों से बदला ले सकूँगा।

औरत : नहीं क्योंकि एक तो मुझे यहाँ का पूरा-पूरा हाल मालूम नहीं, दूसरे अगर कुछ मालूम भी है तो उसके कहने का मौका मिलना कठिन है, क्योंकि अगर कुछ कहने की कोशिश करूँगी तो मेरी ही तरह से आप भी कैद कर लिए जाएँगे।

प्रभाकर सिंह : तो तुम कैदी हो?

औरत : **(आँचल से आँसू पोंछकर)** जी हाँ!!

प्रभाकर सिंह : तुम्हें यहाँ कौन ले आया?

औरत : मेरी बदकिस्मती!

प्रभाकर सिंह : तुम्हारा क्या नाम है?

औरत : तारा

प्रभाकर सिंह : **(ताज्जुब से)** तुम्हारे बाप का क्या नाम है?

औरत : **(रोकर)** वही जो आपकी इंदुमति के बाप का नाम है!! अफसोस, आपने मुझे अभी तक नहीं पहिचाना!

इतना कहके वह और भी खुलकर रोने लगी जिससे प्रभाकर सिंह का दिल बेचैन हो गया और उन्होंने पहिचान लिया कि यह बेशक् उनकी साली है। वह चाहते थे कि पेड़ पर चढ़कर उसे नीचे उतारें और अच्छी तरह बात करें मगर इसी बीच में कई आदमियों ने आकर उन्हें घेर लिया। बंगले के दरवाजे पर पहरा देने वाले दोनों नौजवान लड़कों ने प्रभाकर सिंह को जब उस औरत से बातचीत करते देखा तब तेजी के साथ वहाँ से चले गए और थोडी ही देर में कई आदमियों ने

आकर उनको घेर लिया।

5

संध्या का समय था जब नकली प्रभाकर सिंह इंदुमति को बहकाकर और धोखा देकर भूतनाथ की विचित्र घाटी से उसी सुरंग की राह ले भागा जिधर से वे लोग गए थे। उस समय इंदुमति की वैसी ही सूरत थी जैसी कि हम पहिले बयान में लिख आए हैं अर्थात् मर्दानी सूरत में तीर-कमान और ढाल-तलवार लगाए हुए थी। संभव था कि नकली प्रभाकर सिंह को उसके पहिचानने में धोखा होता परन्तु नहीं, उसको इंदुमति से कुछ ऐसा संबंध था कि उसने उसके पहिचानने में जरा भी धोखा नहीं खाया बल्कि इंदुमति को हर तरह से धोखे में डाल दिया। इंदुमति ने प्रभाकर सिंह को वैसे ही ढंग और पोशाक् में पया जैसा छोड़ा था परन्तु यदि वह विकल दुखित और घबड़ाई हुई न होती तो उनके लिए नकली प्रभाकर सिंह को पहिचान लेना कुछ कठिन न था।

सुरंग के बाहर होने बाद आसमान की तरफ देखकर इंदुमति को इस बात का खयाल हुआ कि रात हुआ ही चाहती है। वह सोचने लगी कि इस भयानक जंगल में क्योंकर पार होंगे और रात-भर कहाँ पर आराम से बिता सकेंगे, साथ ही उसे यकायक इसी तरह पर गुलाबसिंह को छोड़ना और भूतनाथ की घाटी से निकल भागना भी ताज्जुब में डाल रहा था। पूछने पर भी प्रभाकर सिंह ने उसको ठीक-ठीक सबब नहीं बताया था, हाँ बताने का वादा किया, मगर इससे उसकी बेचैनी दूर नहीं हुई थी। उसका जी तरह-तरह के खुटकों में पड़ा हुआ था और यह जानने के लिए वह बेचैन हो रही थी कि गुलाबसिंह ने उनका क्या नुकसान किया था जो उसको भी छोड़ दिया गया।

सुरंग के मुहाने से थोड़ी दूर आगे जाने बाद इंदुमति ने प्रभाकर सिंह से कहा, ''आपकी चाल इतनी तेज है कि मैं आपका साथ नहीं दे सकती।''

नकली प्रभाकर : **(धीमी चाल करके)** अच्छा लो मैं धीरे-धीरे चलता हूँ मगर जहाँ तक जल्दी हो सके यहाँ से निकल ही चलना चाहिए।

इंदुमति : आखिर इसका सबब क्या है, कुछ बताओ भी तो सही?

नकली प्रभाकर : अभी नहीं, थोड़ी देर के बाद इसका सबब बताऊँगा।

इंदुमतिः यही कहते-कहते तो यहाँ तक आ पहुँचे। अच्छा यही बताओ कि हम लोगों को कहाँ जाना होगा और कितना बड़ा सफर करना पड़ेगा?

नकली प्रभाकर : कुछ नहीं, थोड़ी ही दूर और चलना है। इसके बाद सवारी तैयार मिलेगी जिस पर चढ़कर हम लोग निकल जाएँगे।

सवारी का नाम सुन इंदुमति चौंकी और उसके दिल में तरह-तरह की बातें पैदा होने लगी। कई सायत सोचने के बाद उसने पुनः नकली प्रभाकर सिंह से पूछा, ''ऐसे मुसीबत के जमाने में यकायक आपको सवारी कैसे मिल गई?''

नकली प्रभाकर : इसका जवाब भी आगे चलकर देंगे।

प्रभाकर सिंह की इस बात ने इंदुमति को और भी तरद्दुद में डाल दिया। वह चलते-चलते रुककर खड़ी हो गई और इस बीच में नकली प्रभाकर सिंह जो आगे जा रहा था कई कदम आगे निकल गया।

हम नहीं कह सकते कि अब यकायक इंदुमति के जी में क्या आया कि वह प्रभाकर सिंह के साथ जाते-जाते एकदम रुक ही नहीं गई बल्कि जब प्रभाकर सिंह अपनी तेजी और जल्दबाजी में पीछे की सुध न करके इंदुमति से कुछ आगे बढ़ गया तो दाहिनी तरफ हटकर एक गुंजान पेड़ पर चढ़ गई और छिपकर इंतजार करने लगी कि देखें अब जमाना क्या दिखाता है।

नकली प्रभाकर सिंह लगभग दो-सौ कदम से भी ज्यादे आगे बढ़ गया तब उसे मालूम हुआ कि उसके पीछे इंदुमति नहीं है। वह घबराकर पीछे की तरफ लौटा और "इंदुमति, इंदुमति" कह कर कुछ ऊँचे स्वर से पुकारने लगा।

इंदुमति पेड़ पर चढ़कर छिपी हुई उसकी आवाज सुन रही थी मगर उसे खूब याद था कि उसे प्यारे पति ने आवश्यकता पड़ने पर कभी उसे इंदुमति कहकर नहीं पुकारा। यह एक ऐसी बात थी जो केवल उन दोनों पति-पत्नी ही से संबंध रखती थी, कोई तीसरा आदमी इसके जानने का अधिकारी न था।

नकली प्रभाकर सिंह इंदुमति को पुकारता हुआ उससे ज्यादा पीछे हट गया जहाँ इंदु छिपी हुई थी और इस बीच में उसने तीन दफे जफील **(सीटी)** भी बुलाई, साथ ही इसके यह भी उसके मुँह से निकल पड़ा, "कमबख्त ठिकाने पहुँचकर गायब हो गई!" यह बात इंदुमति ने भी सुन ली।

जफील की आवाज से वहाँ कई आदमी और भी आ पहुँचे तथा नकली प्रभाकर सिंह के साथी वन गये जिन्हें देख इंदुमति को विश्वास हो गया कि जो कुछ उसने यहाँ आकर सोचा था वही ठीक निकला, वास्तव में उसने पूरा धोखा खाया, और अब वह बेतरह दुश्मनों के काबू में पड़ी हुई है।

इंदुमति को खोजने वाली अब कई आदमी हो गये और वे इधर-उधर फैलकर पेड़ों की आड़ तथा झुरमुट में उसे खोजने लगे।

तिथि के अनुसार रात की पहिली कालिमा **(अँधेरी)** बीत चुकी थी और चन्द्रदेव उदय होकर धीरे-धीरे ऊँचे उठने लगे थे जिससे इंदु घबरा गई और मन में सोचने लगी कि यह तो बड़ा अँधेर हुआ चाहता हैं एक छिपे हुए इंदु को यह अपना-सा किया चाहता है! अब मैं क्या करूँ?"

प्रभाकर सिंह के साथ ही साथ जमाने ने भी उसे बहुत कुछ सिखला दिया था। तलवार चलाना और तीर का निशाना लगाना वह बखूबी जानती थी, बल्कि तीरंदाजी में उसे एक तरह का घमंड था और इस समय उसके पास यह सामान मौजूद भी था। जैसा कि हम ऊपर इशारा कर चुके हैं कि 'इस समय इसकी पोशाक् और सूरत वैसी ही थी जैसी कि हम पहिले बयान में दिखा चुके हैं।'

जब कई दुश्मनों ने इंदुमति को घेर लिया और चाँदनी भी फैल कर वहाँ की हर एक चीज को दिखाने लगी तब उसे विश्वास हो गया कि अब वह किसी तरह छिपी नहीं रह सकती, लोग जरूर उसे देख लेंगे और गिरफ्तार कर लेंगे। अतएव उसने कमान पर तीर चढ़ाया और संभलकर बैठ गई, सोच लिया कि जब तक तरकश में एक भी तीर मौजूद रहेगा किसी को अपने पास फटकने न दूँगी।

इसी बीच में मौका पाकर उसने नकली प्रभाकर सिंह को अपने तीर का निशाना बनाया। इंदु के हाथ से निकला हुआ तीर नकली प्रभाकर सिंह के पैर में लगा और वह, "हाय" करके बैठ गया। उसके साथी उसके चारों तरफ जमा हो गए और बोले, "बेशक् वह इसी जगह कहीं है और यह तीर उसी ने मारा है। अब उसे हम जरूर पकड़ लेंगे। तीर पूरब तरफ से आया है!"

एक और तीर आया और वह एक आदमी की पीठ को छेद कर छाती की तरफ से पार निकल गया।

अब तो उन लोगों में खलबली पड़ गई और खोजने की हिम्मत जाती रही बल्कि जान बचाने की फिक्र पड़ गई, मगर इस खयाल से कि तीर पूरब तरफ से आया है और मारने वाला भी उसी तरफ किसी पेड़ पर छिपा हुआ होगाा, दोनों व्यक्तियों को छोड़कर बाकी के लोग इंदु की तरफ झपटे और चाँदनी की मदद पाकर बहुत जल्दी उस पेड़ को घेर लिया जिस पर इंदु छिपी हुई थी।

अब इंदु ने अपने को जाहिर कर दिया और जरा ऊँची आवाज में उसने दुश्मनों से कहा, "हाँ, हाँ बेशक् मैं इसी पेड़ पर

हूँ, मगर याद रखो कि तुम लोगों को अपने पास आने न दूँगी बल्कि देखते ही देखते इस दुनिया को उठा दूँगी।''

इतना कहकर उसने पेड़ के नीचे के और भी एक आदमी को तीर से घायल किया। इसी समय ऊपर की तरफ से आवाज आई, ''शाबाश इंदु, शाबाश! इन लोगों की बातचीत से मैं पहिचान गया कि तू इंदुमति है!''

यह बोलने वाला भी उसी पेड़ पर था जिस पर इंदु थी मगर उससे ऊपर की एक ऊँची डाल पर बैठा हुआ जिसकी आवाज सुन कर इंदुमति घबड़ा गई और सोचने लगी कि यह कोई दुश्मन तो नहीं है! उसने पूछा, ''तू कौन है और यहाँ कब से बैठा हुआ है?''

जवाब : मैं तुमसे थोड़ी देर पहिले यहाँ आया हूँ बल्कि यों कहना चाहिए कि दूर से तुम लोगों को आते देखकर इस पेड़ पर चढ़ बैठा था, मैं तुम्हारा पक्षपाती हूँ और मेरा नाम भूतनाथ है। तुम तीर-कमान मुझको दो, मैं अभी तुम्हारे दुश्मनों को जहन्नमुम में पहुँचा देता हूँ।

इंदुमति : बस-बस-बस, मैं ऐसी बेवकूफ नहीं हूँ कि इस समय तुम्हारी बातों पर विश्वास कर लूँ जो अपना तीर-कमान, जिससे मैं अपनी रक्षा कर सकती हूँ। तुम्हारे हवाले करके अपने को तुम्हारी दया पर छोड़ दूँ। यद्यपि मैं औरत हूँ और मेरी कमान कड़ी नहीं है तथा मेरे फेंके तीर दूर तक नहीं जाते, तथापि मेरा निशाना नहीं चूक सकता और मैं नजदीक के दुश्मनों को बच कर नहीं जाने दे सकती। खैर तुम जो कोई भी हो समझ रखो कि इस समय मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास न करूँगी और तुम्हें कदापि नीचे न उतरने दूँगी, जरा भी हिलोगे तो मैं तीर मारकर तुम्हें दूसरी दुनिया में पहुँचा दूँगी।

इतने ही में नीचे कोलाहल बढ़ा और इंदुमति ने तीर मारकर और एक आदमी को गिरा दिया। फिर ऊपर से आवाज आई ''शाबाश इंदु शाबाश! तू मुझे नीचे उतरने दे, फिर देख मैं तेरे दुश्मनों से कैसा बदला लेता हूँ!''

इंदुमति : कदापि नहीं, मैं अपने दुश्मनों से आप समझ लूँगी।

आवाज : और जब तुम्हारे तीर खत्म हो जाएँगे तब तुम क्या करोगी?

इंदुमति : मेरे तीरों की गिनती दुश्मनों की गिनती से बहुत ज्यादा है, तुम इसकी चिंता मत करो और चुपचाप बैठे रहो।

आवाज : नहीं इंदु नहीं, तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम्हारे दुश्मन यहाँ बहुत ज्यादा हैं। थोड़ी देर में वे सब इकट्ठे हो जाएँगे और तब तुम्हारे तीरों की गिनती कुछ काम न करेगी।

इंदुमति : ऐसी अवस्था में तुम्हीं क्या कर सकते हो जो एक औरत का मुकाबला करके नीचे नहीं उतर सकते! खबरदार! व्यर्थ की बकवास करके मेरा समय नष्ट न करो!!

फिर नीचे कोलाहल बड़ा और इंदुमति के तीर ने पुनः एक आदमी का काम तमाम किया। इंदु के ऊपर की तरफ बैठा हुआ आदमी नीचे उतरने लगा और बोला, ''खबरदार इंदु, मुझ पर तीर न चलाइए और सच जानियो कि मैं भूतनाथ हूँ और अब नीचे उतरे विना नहीं रह सकता!''

इंदुमति : मैं जरूर तीर मारूँगी और भूतनाथ के नाम का मुलाहिजा न करूँगी।

इतना कहकर इंदु ने उसकी तरफ तीर सीधा क्रिया मगर घबड़ाकर दिल में सोचने लगी कि कहीं वह भूतनाथ ही न हो। उसी समय किसी हर्बे की चमक उसकी आँखों में पड़ी और उसकी तेज अक्ल ने तुरन्त समझ लिया कि यह बरछी है जिससे कुछ आगे बढ़कर वह जरूर मुझ पर हमला करेगा, अस्तु दिल कड़ा करके इंदु ने उस पर तीर चला ही दिया जो कि उसके मोढ़े में लगा, मगर इस चोट को सहकर और कुछ नीचे उतरकर उसने इंदु पर बरछी का वार किया, साथ ही इंदु का दूसरा तीर पहुँचा जो कि न मालूम कहाँ लगा कि वह लुढ़क कर जमीन पर आ रहा और बेहोश हो गया। परन्तु

उसकी बरछी का वार भी खाली नहीं गया। इंदु के जंघे में चोट आई। खून का तरारा बह चला और दर्द से वह बेचैन हो गई। कुशल हुआ कि वह बखूबी इंदु के पास नहीं पहुँचा था। अंदाज से कुछ दूर ही था इसलिए बरछी की चोट भी पूरी न बैठी, और कुछ और नजदीक आ गया होता तो इंदु भी पेड़ पर न ठहर सकती, जरूर नीचे गिर पड़ती।

इंदु जनाना थी मगर उसका दिल मर्दाना था। यद्यपि इस समय वह दुश्मनों से घिरी हुई थी और बचने की आशा बहुत कम थी तथापि उसने अपने दिल को खूब सम्हाला और दुश्मनों को अपने पास फटकने न दिया। पेड़ पर से जिस आदमी ने इंदु को जख्मी किया था, इंदु के हाथ से जख्मी होकर उसके गिरने के साथ ही नीचे वालों में खलबली मच गई। सभी ने गौर के साथ उसे देखना और पहिचानना चाहा। एक ने कहा, "यह तो भूतनाथ है!" दूसरे ने कहा, "फिर इंदु ने इसे क्यों मारा!"

इत्यादि बातें होने लगी जो इंदु के दिल में तरह-तरह का खुटका पैदा करने वाली थीं मगर उसने उसकी कुछ भी परवाह न की और दुश्मनों पर तीर का वार करने लगी। ग्यारह दुश्मनों में से सात को उसने जख्मी किया जिसमें उसके बारह तीर खर्च हुए मगर चार-पाँच दुश्मनों ने बड़ी चालाकी से अपने को बचाया और सर पर ढाल रख के इंदु को पकड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ने लगे। इंदु ने पुनः तीर मारना आरम्भ किया मगर उसका कोई अच्छा नतीजा न निकला क्योंकि उसके चलाए हुए तीर अब ढाल पर टक्कर खाकर बेकार हो जाते थे।

अब इंदु का कलेजा धड़कने लगा। वह जख्मी हो चुकी थी और उसका तरकस भी खाली हो चला था, पेड़ पर चढ़ने वाले बड़े ही कट्टर और लड़ाके आदमी थे अतएव उन्होंने इंदु के तीरों की कुछ भी परवाह न की और उसके पास पहुँचकर उसे गिरफ्तार करने पर ही तुल गए। ऐसी हालत देख इंदु ने भी अपने को उनके हाथ में फँसने की बनिस्बत जान दे देना अच्छा समझा। वह लुढ़ककर पेड़ के नीचे गिर पड़ी और सख्त चोट खाकर बेहोश हो गई।

6

जब इंदु होश में आई और उसने आँखें खोलीं तो अपने को एक सुन्दर मसहरी पर पड़े पाया और मय सामान कई लौडियों की खिदमत के लिए हाजिर देखकर ताज्जुब करने लगी।

आँख खुलने पर इंदु ने एक ऐसी औरत को भी अपने सामने इज्जत के साथ बैठे देखा जिसे अब हकीमिन जी के नाम से संबोधन करती थी और जिसके विषय में जाना गया कि वह इंदुमति का इलाज कर रही है।

निःसन्देह इंदुमति को गहरी चोट लगी थी और उसे करवट बदलना भी बहुत कठिन हो रहा था। उसे इस बात का बड़ा ही दुःख था कि वह जीती बच गई और दुश्मनों के हाथ में फँस गई, परन्तु उस समय जितनी औरतें वहाँ मौजूद थीं, सभी खूबसूरत, कमसिन, खुशदिल, हँसमुख और हमदर्द मालूम होती थीं। सभी को इस बात की फिक्र थी कि इंदुमति शीघ्र अच्छी हो जाय और उसे किसी तरह की तकलीफ न रहे। सभी प्यार के साथ उसकी खिदमत करती थीं, दिल बहलाने की बातें करती थीं, और कई उसके पास बैठी सर पर हाथ फेरती हुई प्रेम से पूछतीं कि 'कहो बहन, मिजाज कैसा है? अब तुम किसी बात की चिंता न करो, यह घर तुम्हारे दुश्मनों का नहीं है बल्कि दोस्तों का है जो कि बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा कि दुश्मनों के हाथों से तुम किस तरह छुड़ा ली गई। जरा तुम्हारी तबीयत अच्छी हो जाय तो मैं सब रामकहानी कह सुनाऊँगी, तुम किसी तरह की चिंता न करो'! इत्यादि!

इन बातों से मालूम होता था कि ये सब-की-सब लौंडी ही न थी बल्कि अच्छे खानदान की लड़कियाँ थीं और दो-एक तो ऐसी थीं जो बराबरी का **(बल्कि उससे भी बढ़कर होने का)** दावा रखती थीं।

यह सब कुछ था परन्तु इंदुमति को इस बात ठीक पता नहीं लगता था कि वह वास्तव में दुश्मनों की मेहमान है या दोस्तों की। यद्यपि उसकी हर तरह से खिदमत होती थीं, उसकी खातिरदारी की जाती थी, उसे भरोसा दिलाया जाता था और जिससे वह खुश हो, वह करने के लिए सब तैयार रहती थीं, यह सब कुछ था मगर फिर भी उसके दिल को भरोसा नहीं होता था।

इसी तरह समय बीतता गया और इंदु की तबीयत सम्हलती गई। उसे होश में आये आज तीसरा दिन है, दर्द में भी बहुत कमी है और वह दस-बीस कदम टहल भी सकती है। आज ही उसने कुछ थोड़ा-बहुत भोजन भी लिया है और इस फिक्र में तकिए का सहारा लगाए बैठी है कि आज किसी-न-किसी तरह इस बात का निश्चय जरूर करूँगी कि वास्तव में मैं किसके कब्जे में हूँ।

उसकी खातिर करने वालियों में दो औरतें ऐसी थीं जिन पर इंदु का भरोसा हो गया था और जिन्हें इंदु सबसे बढ़कर उच्च कुल की नेक और होनहार समझती थी। एक का नाम कला और दूसरी का नाम बिमला था। सबसे ज्यादे ये ही दोनों इंदु के साथ रहा करती थीं।

रात पहर भर से कुछ ज्यादे जा चुकी थी। चिंता निमग्न इंदु अपनी चारपाई पर लेटी हुई तरह-तरह की बातें सोच रही थीं। उसी के पास दो चारपाइयाँ और बिछी हुई थीं जो कला और बिमला के सोने के लिए थीं। कला अपनी चारपाई पर नहीं बल्कि इंदु के पास उसकी चारपाई का ढासना लगाये बैठी हुई थी मगर बिमला अभी तक यहाँ आई न थी। कई सायत तक सन्नाटा रहने के बाद इंदु ने बातचीत शुरू की।

इंदुमति : कला, कुछ समझ नहीं आता कि तू मुझसे यहाँ का भेद क्यों छिपाती है और साफ-साफ क्यों नहीं कहती कि यह किसका मकान है?

कला : बहिन, मैं जो तुमसे कह चुकी कि यह तुम्हारे दुश्मन का मकान नहीं है बल्कि तुम्हारे दोस्त का है तो फिर क्यों तरद्दुद करती हो?

इंदुमति : तो क्या मैं अपने दोस्त का नाम नहीं सुन सकती? आखिर नाम छिपाने का सबब ही क्या है?

कला : छिपाने का सबब केवल इतना ही है कि यहाँ का हाल सुनकर जितना तुम्हें आनन्द होगा उतना ही बल्कि उससे ज्यादे दुःख होगा और हकीमिन जी का हुक्म है कि अभी तुम्हें कोई ऐसी बात न कही जाय जिससे रंज हो।

इंदुमति : यह कोई बात नहीं है, अगर है तो हकीमिनजी का केवल नखरा है और तुम लोगों का बहाना।

कला : अगर तुम ऐसा ही समझती हो तो लो आज मैं वह सब हाल कह दूँगी, मगर शर्त यह है कि सिवाय बिमला के और किसी को भी मालूम न हो कि मैंने तुमसे कुछ कहा था।

इंदुमति : नहीं-नहीं, मैं कसम खाकर कहती हूँ कि अपनी जुबान से किसी से भी कुछ न कहूँगी।

कला : अच्छा तो कुछ रात बीत जाने दो और बिमला को भी आ जाने दो।

इतने ही में बिमला ने भी चौखट के अन्दर पैर रखा!

इंदुमति : लो बिमला भी आ गई।

कला : अच्छा हुआ मगर जरा सन्नाटा हो जाने दो!

बिमला : **(कला के पास बैठ कर)** क्या बात है?

कला : **(धीरे से)** ये यहाँ का हाल जानने के लिए बेताब हो रही हैं।

बिमला : इनका बेताब होना उचित ही है मगर **(इंदु की तरफ देख के)** आप तंदुरुस्त हो जातीं तब इसे पूछतीं तो अच्छा था नहीं तो..

इंदुमति : यही हठ तो और भी उत्कंठित करती है।

बिमला : सुनने से आपको जितनी खुशी होगी उससे ज्यादे रंज होगा।

इंदुमति : बला से, जो होगा देखा जाएगा! मगर **(उदासी से)** तुमसे तो मुझे ऐसी आशा नहीं थी कि..

बिमला : **(इंदु का हाथ प्रेम से दबाकर)** बहिन, मैं तुमसे कोई बात नहीं छिपाऊँगी, कहूँगी और जरूर कहूँगी।

इंदुमति : तो फिर कहो।

बिमला : अच्छा सुनो मगर किसी के सामने इस बात को कभी दोहराना मत।

इंदुमति : कदापि नहीं।

बिमला : अच्छा खैर...यह बताओ कि तुम्हें अपना मायका **(बाप का घर)** छोड़े कितने दिन हुए?

इंदुमति : **(कुछ सोच के)** लगभग एक वर्ष और सात महीने के हुए होंगे, शादी भई और मायका छूटा। तब से आज तक दुःख-ही-दुःख उठाती रही। मैं अपनी माँ और मौसेरी बहिनों को फूट-फूट कर रोती हुई छोड़ कर पति के साथ रवाना हुई थी, वह दिन कभी भूलने वाला नहीं।

इतना सुनते ही कला और बिमला की आँखों में आँसू आ गये।

बिमला : **(आँसू पोंछ कर)** मुझे भी वह दिन नहीं भूलने का!

इंदुमति : **(आश्चर्य से)** बहिन, तुम्हें वह दिन कैसे याद है, तुम वहाँ कहाँ थीं?

बिमला : मैं थी और जरूर थी, बल्कि हम दोनों बहनें **(कला की तरफ इशारा करके)** वहाँ थीं।

इंदुमति : सो कैसे, कुछ कहो भी तो।

बिमला : बस इतना ही तो असल भेद है, सब बातें इसी से संबंध रखती हैं। **(धीरे से)** तुम्हारी वे दोनों मौसेरी बहिनें हम दोनों कला और बिमला के नाम से आज साल-भर से यहाँ निवास करती हैं। यद्यपि देखने में हर तरह से सुख भोग रही हैं मगर वास्तव में हमारे दुःख का कोई पारावार नहीं!

इंदुमति : **(बड़े ही आश्चर्य से)** यह तो तुम ऐसी बात कहती हो कि जिसका स्वप्न में भी गुमान नहीं हो सकता! यद्यपि तुम दोनों की उम्र वही होगी, चाल-ढाल, बातचीत सब उसी ढंग की है, मगर सूरत-शक्ल में जमीन-आसमान का फर्क है, ओह! नहीं, यह कैसे हो सकता है। मुझे कैसे विश्वास हो सकता है?

बिमला : **(मुसकराकर)** हम दोनों की सूरत-शक्ल में भी किसी तरह का फर्क नहीं पड़ा। मैं सहज ही में विश्वास दिला दूँगी कि जो कुछ कहती हूँ वह बाल-बाल सच है। अच्छा ठहरो, मैं तुम्हें अभी बता देती हूँ।

इतना कहकर बिमला उठी और उसने इस कमरे के कुल दरवाजे बंद कर दिए।

इंदु जबसे यहाँ आई है तबसे इसी कमरे में है, उसे इसके बाहर का हाल कुछ भी मालूम नहीं है, वह नहीं जानती कि इस कमरे के बाहर कोठरी है या दालान, बारहदरी है या सायबान, पहाड़ है या बियाबान। होश में आने के बाद उसमें अभी बाहर निकलने की ताकत ही नहीं आई। हाँ, इसके भीतर की तरफ दो कोठरी, एक पायखाना और एक नहाने का घर है, इन्हें इंदु जरूर जानती है क्योंकि इन कोठरियों से उसे वास्ता पड़ चुका है।

बिमला इंदु के पास से उठकर दरवाजा बंद करने के बाद उसी नहाने वाली कोठरी में चली गई और थोड़ी ही देर में लौटकर मुसकराती हुई इंदु के पास आई और बोली, ''अब तुम मुझे गौर से देखो और पहचानो कि मैं कौन हूँ!''

यद्यपि इंदु बीमार, कमजोर और हतोत्साह थी तथापि बिमला की नवीन सूरत देखते ही चौंकी और उठकर गले से लिपट गई।

बिमला : बस समझ लो कि इसी तरह कला भी सूरत बदले हुए हैं। हम दोनों बहनें एक साथ एक ही अनुष्ठान साधन के लिए सूरत बदल कर ग्रहदशा के दिन काट रही हैं। जब तक कमबख्त भूतनाथ से बदला न ले लेंगी तब तक..

इंदुमति : **(बिमला को छोड़ कर)** अहा! मुझे कब आशा थी कि इस तरह अपनी बहिन जमना, सरस्वती को देखूँगी, मगर भूतनाथ..

कला : **(बिमला से)** बस बहिन, अब बातें पीछे करना पहिले अपनी सूरत बदलो और उस झिल्ली[1] को चढ़ाकर बिमला बन जाओ, दरवाजे खोल दो और आराम से बातें करो।

बिमला उठी और पुनः उसी कमरे में जाकर अपनी सूरत पहिले जैसी बनाकर लौट आई। काम केवल इतना ही था कि एक अद्‌भुत झिल्ली जो अपने चेहरे से उतारी थी फिर चढ़ाकर जैसी-की-तैसी बन बैठी। कला ने कमरे के दरवाजे खोल दिए और आराम के साथ बैठकर फिर तीनों बातचीत करने लगीं।

इंदुमति : बहिन, तुमसे मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हुई, अब तुम अपना हाल कह जाओ और यह बताओ कि यह मकान किसका है, मेरी मौसी का या मेरी माँ का!

विमला : दोनों में किसी का भी नहीं।

इंदुमति : (ताज्जुब से) तो क्या तुम दोनों लावारिस हो गईं? कोई तुम्हारा मालिक नहीं रहा?

विमला : रहा और नहीं भी रहा!

इंदुमति : सो कैसी बात? यह मैं जानती हूँ कि दयारामजी के मरने से तुम दोनों विधवा हो गईं क्योंकि भाग्यवश दोनों बहिनें एक ही साथ ब्याही गई थीं फिर भी हम लोगों के माँ-बाप ऐसे गए-गुजरे नहीं कि हम लोग लावारिस समझी जायें।

बिमला : **(अपनी आँखों से आँसू पोंछ कर)** नहीं लावारिस तो नहीं हैं मगर अभागी और दैव की सताई हुई जरूर हैं। हम दोनों बहिनों को मालूम हो गया कि हमारे निर्दोष पति को गदाधरसिंह ने मारा है और बस यही जान लेना हमारी इस ग्रहदशा का कारण है।

इंदुमति : **(चौंककर)** हैं! कौन गदाधरसिंह?

बिमला : वही जो हमारे ससुर का ऐयार और हमारे पति का दिलीदोस्त कहलाता है।

इंदुमति : **(बड़े ही आश्चर्य से)** यह बात तबीयत में नहीं जमती। ऐयारी के फन से यह बिलकुल ही विरुद्ध है। ऐयार चाहे कैसा ही बेईमान क्यों न हो मगर मालिक के साथ ऐसा फरेब कभी नहीं करेगा और गदाधरसिंह तो एक नेक ऐयार गिना जाता है, एक दफे मैंने भी उसकी सूरत देखी है।

बिमला : बहिन, बेशक् ऐसा ही है। यद्यपि अभी किसी को इस बात की खबर नहीं है, यहाँ तक कि मेरे माँ-बाप और ससुर को भी इस बात का विश्वास नहीं हो सकता मगर मुझे तो जो कुछ पता लगा है वह यही है और बहुत ठीक भी है।

कला : और इतना भी मैं कहूँगी कि मेरे ससुर को भी इस बात का शक जरूर हो गया, खास करके तबसे जबसे गदाधरसिंह ने अपना काम या हमारे यहाँ का रहना एक प्रकार से छोड़ दिया है, यद्यपि हमारे ससुर इस विचार को प्रकट नहीं करते।

बिमला : इस समय वही गदाधरसिंह तुम्हारा रक्षक बना है और भूतनाथ के नाम से तुम्हारे साथ दोस्ती दिखलाता है, मगर हम दोनों कब उस पर विश्वास करने लगीं!

इंदुमति : **(चौंक कर)** हैं!! क्या वही गदाधरसिंह भूतनाथ बना है?

बिमला : हाँ वही भूतनाथ है जिसके फँदे से बचाकर मैं तुमको यहाँ ले आई।

कला : बहिन, हम दोनों वे बातें जानती हैं जो अभी दुनिया में किसी को मालूम नहीं हैं या अगर मालूम हैं भी तो केवल दो ही चार आदमियों को।

बिमला : मैं भी भूतनाथ को वह मजा चखाऊँगी कि उसे नानी याद आ जाएगी और वह समझ जाएगा कि दुनिया में औरतें कहाँ तक कर सकती हैं।

इंदुमति : तुम्हारी बातों ने तो मुझे पागल बना दिया! मैं वे बातें सुन रही हूँ जिसके सुनने की आशा न थी। तो तुम यह भी कहोगी कि गुलाबसिंह ने भी हम लोगों के साथ दग़ा की और जान-बूझकर हम दोनों को भूतनाथ के हवाले कर दिया?

बिमला : कौन गुलाबसिंह?

इंदुमति : वही गुलाबसिंह, भानुमति वाला।

बिमला : **(कुछ सोचकर)** इस विषय में मैं कुछ नहीं कह सकती, क्योंकि अभी तक मैंने तुम्हारी जुबानी तुम्हारा हाल कुछ भी नहीं सुना। मैं नहीं जानती कि तुम क्योंकर घर से निकलीं, तुम पर क्या आफतें आईं, और गुलाबसिंह ने तुम्हारे साथ क्या सलूक किया। तथापि गुलाबसिंह पर शक करने की इच्छा नहीं होती क्योंकि वह बड़ा नेक और ईमानदार आदमी है तथा हमारे घर के कई एहसान भी उसके ऊपर हैं यदि वह मानें। यों तो आदमी का ईमान बिगड़ते कुछ देर नहीं लगती क्योंकि आदमी का शैतान हरदम आदमी के साथ रहता है।

इंदुमति : ठीक है, अच्छा मैं भी अपना हाल कह सुनाऊँगी मगर पहिले यह सुन लूँ कि क्योंकर यहाँ आई हो क्योंकर तुमने मुझे दुश्मनों के हाथ से बचाया है।

बिमला : हाँ-हाँ, मैं कहती हूँ सुनो। अच्छा यह बताओ कि तुम उन दुश्मनों को जानती हो जिनके हाथ में फँसी थीं?

इंदुमति : नहीं, बिलकुल नहीं।

बिमला : वे महाराज शिवदत्त के आदमी थे!

इंदुमति : ओफ ओह, जिसके खौफ से हम लोग भागे हुए थे! मगर अभी तुम कह चुकी हो कि मैंने तुम्हें भूतनाथ के हाथ से बचाया है।

बिमला : हाँ, बेशक् वैसा भी कह सकते हैं क्योंकि भूतनाथ तो हम लोगों का सबसे बड़ा दुश्मन ठहरा, मगर इधर तुम शिवदत्त ही के आदमियों के हाथ में फँसी थीं। इत्तिफाक से हम लोग भी उसी समय वहाँ जा पहुँचे और लड़-भिड़ कर उन लोगों के हाथ से तुम्हें छुड़ा लाए। बस यही तो मुख्तसर हाल है।

इंदुमति : **(आश्चर्य से)** तुममें इतनी ताकत कहाँ से आ गई कि उन लोगों से लड़ कर मुझे छुड़ा लाईं?

बिमला : **(मुसकुराती हुई)** हाँ इस समय मुझमें इतनी ताकत है। मेरे पास दो ऐयार हैं तथा बीस-पच्चीस सिपाही भी रखती हूँ।

इंदुमति : तो ये सब तुम्हारे बाप या ससुर के नौकर होंगे? जरूरत पड़ने पर तुम्हें उनसे इजाजत लेनी पड़ती होगी?

बिमला : **(एक लंबी साँस लेकर)** नहीं बहिन, ऐसा नहीं है। हम दोनों अपने घर और ससुराल से मंजिलों दूर पड़े हुए हैं। हम लोगों की किसी को कुछ खबर ही नहीं बल्कि यों कहना कुछ अनुचित न होगा कि अपने नातेदारों के खयाल से हम दोनों बहिनें मर चुकी हैं और किसी को खोजने या पता लगाने की भी जरूरत नहीं।

इंदुमति : **(आश्चर्य से)** तुम्हारी बातें तो बड़ी ही विचित्र हो रही हैं। अच्छा तो तुम यहाँ किसके भरोसे पर बैठी हो और तुम्हारा मददगार कौन है?

बिमला : यह बहुत ही गुप्त बात है, तुम भी किसी से इसका जिक्र न करना। मैं यहाँ इन्द्रदेव के भरोसे पर हूँ। वही मेरे मददगार हैं और यह उन्हीं का स्थान है। वही मेरे बाप हैं, वही मेरे ससुर हैं, और इस समय वहीं मेरे पूज्य इष्टदेव हैं!

इंदुमति : कौन इन्द्रदेव?

बिमला : वही तिलिस्मी इन्द्रदेव! मेरे ससुर के सच्चे मित्र!!

इंदुमति : **(सिर हिला कर)** आश्चर्य! आश्चर्य!! और तुम्हारे ससुर को इस बात की खबर नहीं है।

बिमला : हाँ बिलकुल नहीं है।

इंदुमति : यह कैसी बात है?

बिमला : ऐसी ही बात है। मैं जो कह चुकी कि उन लोगों के खयाल से हम दोनों इस दुनिया में नहीं है।

इंदुमति : आखिर उन्हें इस बात का विश्वास कैसे हुआ कि जमना और सरस्वती मर गईं?

बिमला : सो मैं नहीं जानती क्योंकि यह कार्रवाई इन्द्रदेव जी की है, मैं सूर्यमासी **(इन्द्रदेव की स्त्री)** के यहाँ न्यौते में आई थी, उसी जगह उन्होंने **(इन्द्रदेव ने)** मुझे गुप्त भाव से बताया कि भूतनाथ ने मेरे पति के साथ कैसा सलूक किया। मालूम होते ही मेरे तन-बदन में आग-सी लग गई और मैंने उसी समय उनके सामने प्रतिज्ञा की कि 'भूतनाथ से इसका बदला जरूर लूँगी।' **(एक लंबी साँस लेकर)** गुस्से से प्रतिज्ञा तो कर गई मगर अब विचारा तो कहाँ मैं और कहाँ भूतनाथ। पहाड़ और राई का मुकाबला कैसा? ऐसा खयाल आते ही मैं इन्द्रदेव के पैरों पर गिर पड़ी और बोली कि 'मेरी इस प्रतिज्ञा की लाज आपकी है, बिना आपकी मदद के मेरी प्रतिज्ञा पूरी नहीं हो सकती और वैसी अवस्था में मुझे आपके सामने ही प्राण दे देना पड़ेगा' इत्यादि।

इन्द्रदेव को भी इस अनुचित घटना का बड़ा दुःख था परन्तु मेरी उस अवस्था ने उन्हें और दुःखित कर दिया तथा मेरी प्रार्थना पर उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया बल्कि मेरी प्रतिज्ञा पूरी करना उन्होंने आवश्यक और धर्म समझ लिया। बस फिर क्या था, मेरे मन की भई! जैसा कि मैं चाहती थी उससे बढ़कर उन्होंने मुझे मदद दी और सच तो यह है कि उनसे बढ़कर इस दुनिया में मुझे कोई मदद दे ही नहीं सकता। खैर मैं खुलासा हाल फिर कभी सुनाऊँगी, मुख्तसर यह है कि उन्होंने हर प्रकार की मदद करने का बंदोबस्त करके हम दोनों को समझाया कि अब किसी तरह की जिंदगी हम दोनों को अख्तियार करनी चाहिए।

सबसे पहिले इन्द्रदेव जी ने यही बताया कि 'प्रकट में तुम दोनों बहिनों को इस दुनिया से उठ जाना चाहिए अर्थात् तुम्हारे रिश्तेदारों के साथ-ही-साथ और सभी को यह मालूम हो जाना चाहिए कि जमना और सरस्वती मर गईं। यह बात मुझे पसन्द आई। आखिर इन्द्रदेव ने हम दोनों की सूरत बदलकर रहने और अपना काम करने का बंदोबस्त करके न मालूम हमारे रिश्तेदारों को कैसे क्या समझा दिया और क्योंकर विश्वास दिला दिया कि सब कोई हमारी तरफ से निश्चिन्त हो गए। उनकी इच्छानुसार बहुत ही गुप्त भाव से हम दोनों यहाँ कला और बिमला के नाम से रहती हैं। जो लोग हमारे साथ हैं वे सब इन्द्रदेव जी के अदमी हैं मगर उनको भी यह नहीं मालूम है कि हम दोनों वास्तव में जमना और सरस्वती हैं!

इंदुमति : **(आश्चर्य से)** क्या तुम्हारे घर में जितने आदमी हैं उनमें से किसी को भी तुम्हारा सच्चा हाल मालूम नहीं है?

बिमला : किसी को भी नहीं।

इंदुमति : तो फिर मेरे बारे में तुमने लोगों को क्या समझाया है?

बिमला : मैंने यही किसी को भी नहीं कहा कि तुम मेरी रिश्तेदार हो, केवल यही कहा कि तुम्हें भूतनाथ तथा शिवदत्त के हाथ से बचाना हमारा धर्म है। अस्तु अब उचित यही है कि हमारी तरह तुम भी अपनी सूरत बदल कर यहाँ रहो और अपने दुश्मनों से बदला लो, हम लोगों का बाकी हालचाल तुम्हें आप ही धीरे-धीरे मालूम हो जाएगा।

इंदुमति : ठीक है, और जैसा तुम कहती हो मैं वैसा ही करूँगी, मगर **(सिर झुका कर)** मेरे पति का मुझसे..

बिमला : **(बात काट कर)** नहीं-नहीं, उनके बारे में तुम कुछ भी चिंता मत करो, आज मैं उनको तुम्हें जरूर दिखा दूँगी और फिर ऐसा बंदोबस्त करूँगी कि तुम दोनों एक साथ

इंदुमति : **(प्रसन्न होकर)** इससे बढ़ कर मेरे लिए और कोई दूसरी बात नहीं हो सकती, मगर यह तो बताओ कि इस समय वे कहाँ हैं?

बिमला : (मुसकुराती हुई)

इस समय वे मेरे ही घर में हैं और मेरे कब्जे में हैं।

इंदुमति : **(घबड़ाकर)** यह कैसी बात? अगर यहीं हैं तो मुझे दिखाओ।

बिमला : मैं दिखाऊँगी, मगर जरा रुकावट के साथ।

इंदुमति : सो क्यों?

बिमला : **(कुछ सोच कर)** अच्छा चलो पहिले मैं तुम्हें उनके दर्शन करा दूँ फिर सलाह-विचार करके जैसा होगा देखा जाएगा। मगर इस सूरत में मैं तुम्हें उनके सामने न ले जाऊँगी।

इंदुमति : सो क्यों?

बिमला : तुम अपनी सूरत बदलो और इस बात का वादा करो कि जब मैं उनके सामने तुम्हें ले जाऊँ तो चुपचाप देख लेने के सिवाय उनके सामने एक शब्द भी मुँह से निकालोगी।

इंदुमति : आखिर इसका सबब क्या है?

बिमला : सबब पीछे बताऊँगी।

इंदुमति : अच्छा तो फिर जो कुछ तुम कहती हो मुझे मंजूर है।

"अच्छा लो मैं बंदोबस्त करती हूँ।" यह कहकर बिमला उठी और कुछ देर के लिए कमरे के बारह चली गई। जब लौटी तो उसके हाथ में एक छोटी-सी संदूकड़ी थी। उसी में से सामान निकालकर उसने इंदुमति की सूरत बदली और वैसी ही एक झिल्ली उसके चेहरे पर भी चढ़ाई जैसी आप पहिरे हुए थी। जब हर तरह से सूरत दुरुस्त हो गई तब हाथ का सहारा देकर उसने इंदु को उठाया और कमरे के बाहर ले गई।

कमरे के बाहर एक दालान था जिसके एक बगल में तो ऊपर की मंजिल में चढ़ जाने के लिए सीढ़ियाँ थीं तथा उसी के बगल में नीचे उतर जाने की रास्ता था और दालान के दूसरी तरफ बगल में सुरंग का मुहाना था मगर उसमें मजबूत दरवाजा लगा हुआ था। इंदु को उसी सुरंग में बिमला के साथ जाना पड़ा।

सुरंग बहुत छोटी थी, तीस-पैंतीस कदम जाने के बाद उसका दूसरा मुहाना मिल गया जहाँ से सुबह की सफेदी निकल आने के कारण मैदान की सूरत दिखाई दे रही थी। जब इंदुमति वहाँ हद पर पहुँची तब उसकी आँखों के सामने वही सुन्दर घाटी या मैदान तथा बंगला था जिसका हाल हम इस भाग के चौथे बयान में लिख आए हैं या यों कहिए कि जहाँ पर एक पेड़ के साथ लटकते हुए हिंडोले पर प्रभाकर सिंह ने तारा को बैठा देखा था।

वही त्रिकोण घाटी और वही सुन्दर बंगला जिसके चारों कोनों पर मौलसिरी **(मालश्री)** के पेड़ थे इंदुमति की आँखों के

सामने था जिन्हें वह बड़े गौर से देख रही थी बल्कि यों कहना चाहिए कि वहाँ की सुंदरता और कुदरती गुलबूटों ने इंदु की निगाह पड़ने के साथ ही लुभा लिया और इसके साथ ही प्रभाकर सिंह की याद ने आँसू बनकर निगाह के आगे पर्दा डाल दिया।

आँखें साफ करके वह हर एक चीज को गौर से देखने लगी। इसी बीच एक चट्टान पर बैठे हुए प्रभाकर सिंह पर उसकी निगाह पड़ी जिनके चारों तरफ कुदरती सुन्दर पौधे और खुशरंग फूलों के पेड़ बहुतायत से थे जो उदास आदमी के दिल को भी अपनी तरफ खींच लेते थे और जिन पर सूर्य भगवान की ताजी-ताजी किरणें पड़ रही थीं।

आह, प्रभाकर सिंह को देखकर इंदुमति की कैसी अवस्था हो गई यह लिखना हमारी सामर्थ्य के बाहर है। वह कुछ देर तक एकटक उनकी तरफ देखती रही। न तो वहाँ से नीचे की तरफ उतरने का कोई रास्ता था और न वह यही जानती थी कि वहाँ तक क्योंकर पहुँच सकेगी, अस्तु वह बैचेन होकर घूमी और यही कहती हुई बिमला के गले से लिपट गई कि 'बहिन, तुम बेशक् तिलिस्म की रानी हो गई हो'!

बिमला : बहिन, घबड़ाओ मत, जरा गौर से देखो तो..

इंदुमति : **(बिमला को छोड़ कर)** तो क्या जो कुछ मैं देख रही हूँ केवल भ्रम है?

बिमला : नहीं, ऐसा नहीं है।

इंदुमति : तो फिर यह स्थान किसका है?

बिमला : इस समय तो मेरा ही है।

इंदुमति : तो क्या ये भी तुम्हारे ही मेहमान हैं?

बिमला : बेशक्।

इंदुमति : कब से?

बिमला : कई दिनों से, या यों कहो कि जबसे तुम आई हो उससे भी पहिले

इंदुमति : **(आश्चर्य, दुःख और क्लेश से)** तब तुमने इनसे मुझे मिलाया क्यों नहीं बल्कि हाल तक नहीं कहा, ऐसा क्यों?

बिमला : इसके कहने का मौका ही कब मिला! आज ही तो इस योग्य हुई हो कि कुछ बातें कर सकूँ, इसके अतिरिक्त तुम्हारी मुलाकात के बाधक वे स्वयं भी हो रहे हैं। जिस तरह तुम मेरा साथ दिया चाहती हो उस तरह वे मेरा साथ नहीं दिया चाहते, जिस तरह तुमसे मुझे उम्मीद है उस तरह उनसे नहीं, जिस तरह तुम मेरा पक्ष कर सकती हो और करोगी उस तरह वे नहीं करते बल्कि आश्चर्य यह है कि वे भूतनाथ के पक्षपाती हैं और इसी बात का उन्हें हठ है, फिर तुम ही सोचो कि मैं क्योंकर..

इंदुमति : **(जोर देकर)** नहीं बहिन! ऐसी भला क्या बात है, उन्हें सच्चे मामले की खबर न होगी!

बिमला : सब कुछ खबर है, इसी वास्ते मैं उन्हें यहाँ लाई थी और भूतनाथ के कब्जे से पहिले ही दिन, जब तुम लोग सुरंग में घुसे थे छुड़ाने का उद्योग किया था परन्तु खेद यह है कि वे **(प्रभाकर सिंह)** तो मेरे कब्जे में आ गए और तुम आगे निकल गईं जिससे तुम्हें इतना कष्ट भी भोगना पड़ा।

इंदुमति : **(आश्चर्य से)** सो कैसी बात? तुम्हीं ने उन्हें मुझसे जुदा किया था?

बिमला : हाँ ऐसा ही है। **(हाथ का इशारा करके)** बस इसी घाटी के बगल ही में उस तरफ भूतनाथ का स्थान है, रास्ता भी करीब-करीब मिलता-जुलता है। भूतनाथ की घाटी में जाने के लिए जो रास्ता या सुरंग है उसी में से एक रास्ता हमारे यहाँ भी जाने के लिए है। इसके अतिरिक्त यहाँ आने के लिए एक रास्ता और भी है जिससे प्रायः हम लोग आया-जाया करते हैं। जिस समय तुम लोग भूतनाथ के साथ सुरंग में घुसे थे उस समय मैं देख रही थी।

इंदुमति : फिर तुमने कैसे उन्हें बुला लिया?

इसके जवाब में बिमला ने खुलासा हाल जिस तरह प्रभाकर सिंह को सुरंग के अन्दर धोखा देकर अपने कब्जे में ले आई थी बयान किया जो कि हम चौथे बयान में लिख चुके हैं।

अब हमारे पाठक समझ गए होंगे कि भूतनाथ के पीछे-पीछे सुरंग के अन्दर चलने वाले प्रभाकर सिंह को जिन्होंने धोखा देकर गायब किया वे बिमला और कला यही दोनों बहिनें थीं और यह काम उन्होंने नेकनीयती के साथ किया था ऐसा ही इंदुमति का विश्वास है।

खुलासा हाल सुनकर इंदुमति कुछ देर तक चुप रही फिर बोली

इंदुमति : अच्छा यह बताओ कि मेरे आने की उन्हें खबर भी है या नहीं?

बिमला : कुछ-कुछ खबर है! तुम्हारे लिए वे बहुत ही बेचैन हैं, कलपते हैं, रोते हैं, मगर फिर भी भूतनाथ का पक्ष नहीं छोड़ते।

इंदुमति : तुमने अपने को उन पर प्रकट कर दिया?

बिमला : हाँ, भेद छिपा रखने की कसम खिलाकर मैंने उन्हें बतला दिया कि हम दोनों बहिनें जमना और सरस्वती हैं जिसे जान कर वे बहुत ही प्रसन्न हुए मगर इस बात पर उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि भूतनाथ मेरे पति के घातक हैं, गुलाबसिंह भूतनाथ का दोस्त है और गुलाबसिंह पर उन्हें पूरा विश्वास है।

इंदुमति : अच्छा तुम मुझे उनके सामने ले चलो, देखें वे क्योंकर राजी नहीं होते और कैसे तुम्हारा साथ नहीं देते।

बिमला : मुझे इसमें कोई उज्र नहीं है मगर तुम हरएक बात को अच्छी तरह सोच-विचार लो।

इंदुमति : **(जोर देकर)** कोई परवाह नहीं, तुम वहाँ चलो, **(कुछ सोचकर)** मगर मैं अपनी असली सूरत में उनके सामने जाऊँगी!

बिमला : जैसी तुम्हारी मर्जी, चलो पीछे की तरफ लौटी, एक सुरंग के रास्ते पहिले **(उँगली का इशारा करके)** उस बीच वाले बंगले में पहुँचना होगा तब उनके पास जा सकोगी।

7

प्रभाकर सिंह को इस घाटी में आए यद्यपि आज लगभग एक सप्ताह हो गया मगर दिली तकलीफ के सिवाय और किसी बात की उन्हें तकलीफ नहीं हुई। नहाने-धोने, खाने-पीने, सोने-पहिरने इत्यादि सभी तरह का आराम था परन्तु इंदु के लिए वे बहुत ही बेचैन और दुखी हो रहे थे। जिस समय वे उस घाटी में आये थे उस समय वे बल्कि उसके दो-तीन घंटे बाद तक वे बड़े ही फेर और तरद्‌दुद में पड़े रहे क्योंकि कला और बिमला ने उनके साथ बड़ी दिल्लगी की थी, मगर इसके बाद उनकी घबराहट कम हो गई जब कला और बिमला ने उन्हें बता दिया कि वे दोनों वास्तव में जमना और सरस्वती हैं।

पेड़ के साथ लटकते हुए हिंडोले पर बैठने वाली औरत ने उन्हें थोड़ी देर के लिए बड़े ही धोखे में डाला। जब उन्हें पेड़ पर चढ़ने का इरादा किया तो वहाँ पहरा देने वाले दोनों नौजवान लड़कों ने गड़बड़ मचा दिया। दौड़ते हुए और कई आदमियों को बुला लाए जिन्होंने प्रभाकर सिंह को घेर लिया मगर किसी तरह की तकलीफ नहीं दी और न कोई कड़ी बात ही कही।

दोनों नौजवान लड़कों के हल्ला मचाने पर जितने आदमी वहाँ इकट्ठे हो गए थे वे सब कद में छोटे बल्कि उन्हीं दोनों नौजवान सिपाहियों के बराबर थे जिन्हें देख प्रभाकर सिंह ताज्जुब करने लगे और विचारने लगे कि क्या वे लोग वास्तव में मर्द हैं?

पहिले तो क्रोध के मारे प्रभाकर सिंह की आँखें लाल हो गईं मगर जब कुछ सोचने-विचारने पर उन्हें मालूम हो गया कि ये सब मर्द नहीं औरतें हैं तब उनका गुस्सा कुछ शान्त हुआ और उन सभों की इच्छानुसार वे उस बंगले के अन्दर चले गए जिसमें छोटे-बड़े सब मिलाकर ग्यारह कमरे थे।

बीच वाले बड़े कमरे में साफ और सुथरा फर्श बिछा हुआ था। वहाँ पहुँचने के साथ ही बिमला पर उनकी निगाह पड़ी और वे पहिचान गए कि मुझे भुलावा देकर यहाँ लाने वालियों में से यह भी एक औरत है जो बड़ी ढिठाई के साथ इस अनूठे ढंग पर इस्तकबाल कर रही है।

प्रभाकर सिंह ने बिमला से कहा, "मालूम होता है कि यह मकान आप ही का है!"

बिमला : जी हाँ समझ लीजिए कि आप ही का है।

प्रभाकरसिंह : अच्छा तो मैं पूछता हूँ कि तुमने मेरे साथ ऐसा खोटा बर्त्ताव क्यों किया?

बिमला : मैंने आपके साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं किया बल्कि सच तो यों है कि आपको एक भयानक खोटे बेईमान और झूठे ऐयार के पंजे से बचाने का उद्योग किया जो कि सिवाय बुराई के कभी कोई भलाई का काम करके आपके साथ नहीं कर सकता था। अफसोस, आपको तो हम उसके फंदे से निकाल लाए मगर बेचारी इंदु फँसी रह गई जिसे बचाने के लिए हम लोग तन-मन-धन सभी अर्पण कर देंगे।

प्रभाकर सिंह : इसमें कोई सन्देह नहीं कि इंदु के लिए मुझे बहुत बड़ी चिंता है और मैं यह नहीं चाहता कि वह किसी अवस्था में भी मुझसे अलग हो, मगर मैं इस बात का कभी विश्वास नहीं कर सकता कि भूतनाथ हम लोगों के साथ खोटा बर्त्ताव करेगा। मैं गुलाबसिंह की बात पर दृढ़ विश्वास रखता हूँ जिसने उसकी बड़ी तारीफ मुझसे की थी।

बिमला : नहीं, ऐसा नहीं है, वह..

प्रभाकर सिंह : **(बात काट कर)** तुम्हारी बात मान लेना सहज नहीं है जिसने खुद मेरे साथ बुराई की! **(क्रोध की मुद्रा से)** बेशक़ तुमने मेरे साथ दुश्मनी की कि इंदु को मुझसे जुदा करके एक आफत में डाल दिया! क्या जाने इस समय उस

पर क्या बीत रही होगी!! हाँ, कहाँ है वह जिसे मैं अपनी साली समझता था और जिसकी बात मान कर मैंने यह कष्ट उठाया! क्या अब वह अपना मुँह न दिखलावेंगी?

विमला : आप क्रोध न करें, आपकी साली जरूर आपके सामने आवेगी और उसके साथ-साथ मैं भी इस बात को साबित कर दूँगी कि हम लोग आपके साथ दुश्मनी नहीं करते। इंदु हमारी बहुत ही प्यारी बहिन है और उसे हम लोग हद से ज्यादे प्यार करते हैं, जिस तरह

प्रभाकर सिंह : **(सिर हिलाकर)** नहीं-नहीं, अगर तुम इंदु को प्यार करती होतीं तो उसे इस तरह मुझसे अलग करके संकट में न डालतीं। कुछ देर के लिए यह भी मान लिया जाय कि भूतनाथ हमारा दुश्मन है, गुलाबसिंह ने हमसे जो कुछ कहा वह झूठ था, और तुमने वास्तव में हमें एक दुश्मन के हाथ से बचाना चाहा, मगर फिर भी यह कहना पड़ेगा कि वहाँ से बचा लाने के लिए वह ढंग अच्छा न था जो तुमने किया। अच्छा होता यदि तुम मुझे यहाँ ले आने के बदले में उस जगह केवल इतना ही कह देतीं कि 'देखो खबरदार हो जाओ, भूतनाथ का विश्वास मत करो, इंदु को लेकर निकल भागो और फलानी राह से मेरे पास चले आओ'। बस अगर तुम ऐसा करतीं तो मैं तुम्हारी इज्जत करता।

विमला : ठीक है मगर मुझे विश्वास नहीं था कि आप यकायक मेरी बात मान जाएँगे।

''यह सब तुम्हारी बनावटी बातें हैं।'' इतना कहकर प्रभाकर सिंह एक उचित स्थान पर बैठ गए और बिमला भी उनके सामने बैठ गई।

प्रभाकर सिंह : **(कई सायत तक कुछ सोचने के बाद)** खैर पहिले यह बताओ कि जमना कहाँ है जिसके कारण मैं यहाँ तक आया?

विमला : वे भी इसी जगह कहीं है, डर के मारे आपके सामने नहीं आतीं। उन्होंने मुझे यह कहकर आपके पास भेजा है कि 'जीजाजी से मेरा प्रणाम कहो और यह कहो कि मैं यहाँ बड़े संकट में पड़ी हुई ग्रहदशा के दिन काट रही हूँ। किसी कारणवश हर वक्त अपनी सूरत बदले रहती हूँ। दुश्मन पड़ोस में है जिसका हरदम डर ही लगा रहता है, अस्तु यदि आप मेरी रक्षा करने और मेरा भेद छिपाये रहने की प्रतिज्ञा करें तो मै। आपके सामने आऊँ नहीं तो

प्रभाकर सिंह : **(आश्चर्य से)** वाह वाह वाह!! **(कुछ देर तक सोच कर)** खैर जो कुछ हो, जमना को मैं इज्जत के साथ प्यार करता हूँ, वह मेरी बहुत ही नेक साली है। यद्यपि उसका यहाँ होना मेरे लिए एक ताज्जुब की बात है तथापि उसे देखकर मैं बहुत प्रसन्न होऊँगा। यदि यह उसी का मकान है तो मैं विशेष चिंता भी न करूँगा। तुम शीघ्र जाकर उसे कह दो कि मेरे सबब से तुम्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती, तुम्हारे भेद तुम्हारी इच्छानुसार मैं जरूर छिपाऊँगा।

प्रभाकर सिंह की बात समाप्त होते ही प्रसन्नता के साथ बिमला ने अपने चेहरे पर से झिल्ली उतार कर अलग रख दी और प्रभाकर सिंह के पैरों पर गिर पड़ी।

प्रभाकर सिंह : **(बिमला को पैरों पर से उठा कर)** जमना! अहा, क्या तुम वास्तव में जमना हो?

विमला : जी हाँ, मैं वास्तव में जमना हूँ, इसमें आप कुछ ही देर सन्देह न करें। ज्यादे देर तक तरद्दुद में न डाल कर मैं अभी आपका भ्रम दूर कर देती हूँ! अपने जमना होने के सबूत में मैं आपको उस दिन की चिकोटी याद दिलाती हूँ जिस दिन मेरे यहाँ सत्यनारायण की कथा थी और जिसका हाल सिवाय आपके और किसी को मालूम नहीं है।

प्रभाकर सिंह : **(प्रसन्न होकर)** बेशक़, बेशक़, अब मुझे कुछ सन्देह नहीं रहा, परन्तु आश्चर्य! आश्चर्य!! तुम्हारे ससुर ने हाल ही से अपने हाथ में मुझे चिट्ठी लिखी थी कि जमना और सरस्वती दोनों मर गई हैं! मैंने यह हाल अभी तक तुम्हारी बहिन इंदु से नहीं कहा क्योंकि इस संकट के जमाने में इस खबर को सुनाकर उन्हें और भी दुःख देना मैंने

उचित नहीं जाना। मगर अब मुझे कहना पड़ा कि तुम्हारे ससुर ने मुझे झूठ लिखा, न मालूम क्यों?

विमला : नहीं-नहीं, उन्होंने झूठ नहीं लिखा, उन्हें यही मालूम है कि जमना-सरस्वती दोनों मर गईं, मगर वास्तव में हम दोनों जीती हैं।

प्रभाकर सिंह : यह तो तुम और भी आश्चर्य की बात सुनातीं हो!

विमला : आपके लिए बेशक् आश्चर्य की बात है। इसी से तो मैंने आपसे प्रतिज्ञा करा ली कि मेरे भेद आप छिपाये रहें, जिनमें से एक यह भी बात है कि हमारा जीते रहना किसी को मालूम न होने पाये।

इतना कहकर विमला ने ताली बजाई। उसी समय तेजी के साथ सरस्वती **(कला)** एक दरवाजा खोल कर कमरे के अन्दर आई और प्रभाकर सिंह के पैरों पर गिर पड़ी। प्रभाकर सिंह ने प्रेम से उसे उठाया और कहा, ''आह! मैं इस समय तुम दोनों को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ क्योंकि सुरंग में तुम दोनों को देखना विश्वास के योग्य न था। अब यह मालूम होना चाहिए कि तुम लोग यहाँ क्यों, किसके भरोसे पर और किस नीयत से रहती हो, तथा बाहर मौलसिरी **(मालश्री)** के पेड़ पर मैंने किसे देखा? नहीं-नहीं, वह इस सरस्वती के सिवाय कोई और न थी, मैं पहिचान गया, इसी की सूरत इंदु से विशेष मिलती है!''

विमला : बेशक् वह सरस्वती ही थी, क्षण-भर के लिए इसने आपके साथ दिल्लगी की थी।

कला : **(मुसकुराती हुई)** मगर जो कुछ मैं किया चाहती थी वह न कर सकी।

प्रभाकर सिंह : वह क्या?

कला : बस अब उसका कहना ठीक नहीं।

प्रभाकर सिंह : अच्छा यह बताओ कि तुम लोग यहाँ छिपकर क्यों रहती थीं?

बिमला : इसलिए कि कमबख्त भूतनाथ से बदला लेकर कलेजा कुछ ठंडा करें। आपको नहीं मालूम कि वह मेरे पति का घातक है। उसने अपने हाथ में उन्हें मारकर हम दोनों बहिनों को विधवा बना दिया!!

प्रभाकर सिंह : **(आश्चर्य से)** यह तुम क्या कह रही हो?

बिमला : बेशक् ऐसा ही है। आपने उस कमीने को पहिचाना नहीं! वह वास्तव में गदाधरसिंह है, सूरत बदले हुए चारों तरफ घूम रहा है। आजकल वह अपनी नौकरी पर अर्थात् मेरे ससुर के यहाँ नहीं रहता।

प्रभाकर सिंह : यह तो मुझे भी मालूम है, गदाधरसिंह लापता हो रहा है और किसी को उसका ठीक हाल मालूम नहीं है, मगर यह बात मेरे दिल में नहीं बैठती कि भूतनाथ वास्तव में वही गदाधरसिंह है।

बिमला : मैं जो कहती हूँ बेशक् ऐसा ही है।

प्रभाकर सिंह : **(सिर हिलाकर)** शायद हो। **(कुछ सोचकर)** खैर पहिले मैं इंदु को उसके यहाँ से हटाऊँगा और तब साफ-साफ उससे पूछूँगा कि बताओ तुम गदाधरसिंह हो या नहीं? मगर फिर भी इसका सबूत मिलना कठिन होगा कि दयाराम को उसी ने मारा है।

बिमला : नहीं-नहीं, आप ऐसा कदापि न करें नहीं तो हमारा सब उद्योग मिट्टी में मिल जाएगा।

प्रभाकर सिंह : नहीं, मैं जरूर पूछूँगा और यदि तुम्हारा कहना ठीक निकला तो मैं स्वयं उससे लड़ूँगा।

विमला : **(उदासी से)** ओह! तब तो आप और भी अँधेर करेंगे!!

प्रभाकर सिंह : नहीं, इस विषय में मैं तुमसे राय न लूँगा।

विमला : तब आप अपनी प्रतिज्ञा भंग करेंगे।

प्रभाकर सिंह : ऐसा ही न होने पावेगा **(कुछ सोच कर)** खैर यह तो पीछे देखा जाएगा पहिले इंदु की फिक्र करनी चाहिए। यद्यपि गुलाबसिंह उसके साथ है अभी यकायक उसे किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती।

विमला : मैं उसके लिए बंदोबस्त कर चुकी हूँ, आप बेफिक्र रहें।

प्रभाकर सिंह : भला मैं बेफिक्र क्योंकर रह सकता हूँ ? मुझे यहाँ से जाने दो, भूतनाथ के घर जाकर सहज ही में यदि तुम चाहती हो तो उसे यहाँ तुम्हारे पास ले आऊँगा!

बिमला : जी नहीं, ऐसा करने से मेरा भेद खुल जाएगा। वह बड़ा ही कांइयाँ है, बात-ही-बात में आपसे पता लगा लेगा कि उसकी घाटी के साथ एक और स्थान है जहाँ कोई रहता है। अभी उसे यह मालूम नहीं।

प्रभाकर सिंह : नहीं-नही, मैं किसी तरह तुम्हारा भेद खुलने न दूँगा।

बिमला : अस्तु इस समय तो आप रहने दीजिए, पहिले जरूरी कामों से निपटिए, स्नान, ध्यान, पूजा-पाठ कीजिए, भोजन इत्यादि से छुट्टी पाइए, फिर जैसी राय होगी देखा जाएगा। मैं कुछ इंदु बहिन की दुश्मन तो हूँ नहीं जो उसे तकलीफ होने दूँगी बल्कि आपसे ज्यादे मुझे खुटका लगा हुआ है। अगर वह यहाँ न आई तो मैंने किया ही क्या!

प्रभाकर सिंह : खैर जैसी तुम्हारी मर्जी, थोड़ी देर के लिए ज्यादे जोर देने की भी अभी जरूरत नहीं।

बिमला : अच्छा तो अब आप कुछ देर के लिए हम दोनों को छुट्टी दीजिए, मैं आपके लिए खाने-पीने का इंतजाम करूँ, तब तक आप इस **(उँगली का इशारा करके)** कोठरी में जाइए और फिर बंगले के बाहर जाकर मैदान और कुदरती बाग में जहाँ चाहिए घूमिए-फिरिए, मैं बहुत जल्दी हाजिर होऊँगी, मगर आप इस बात का खूब खयाल रखिएगा कि अब हम दोनों को जमना और सरस्वती के नाम से संबोधित न कीजिएगा और न हम दोनों घड़ी-घड़ी जमना और सरस्वती की सूरत में आपको दिखाई देंगी। हम दोनों का नाम बिमला और कला बस यही ठीक है।

इसके बाद और भी कुछ समझा-बुझाकर कला को साथ लिए हुए बिमला कमरे के बाहर चली गई।

प्रभाकर सिंह भी उठ खड़े हुए और कुछ सोचते हुए उस कमरे में टहलने लगे। वे सोचने लगे क्या जमना का कहना सच है? क्या भूतनाथ वास्तव में गदाधरसिंह ही है? फिर मैंने उसे पहिचाना क्यों नहीं? संभव है कि रात का समय होने के कारण मुझे धोखा हुआ हो या उसी ने कुछ सूरत बदली हुई हो! मेरा ध्यान भी तो इस तरफ नहीं था कि गौर से उसे देखता और पहिचानने की कोशिश करता, लेकिन अगर वह वास्तव में गदाधरसिंह है तो निःसन्देह खोटा है और कोई भारी घात करने के लिए उसने यह ढंग पकड़ा है। ऐयार भी तो पहले दर्जे का है, वह जो न कर सके थोड़ा है, मगर ऐसा तो नहीं हो सकता कि उसने दयाराम को मारा हो। अच्छा उसने रणधीरसिंह का घर क्यों छोड़ दिया जिनका ऐयार था और जो बड़ी खातिर से उसे रखते थे? संभव है कि दयाराम के मारे जाने पर उसने उदास होकर अपना काम छोड़ दिया हो, या यह भी हो सकता है कि दयाराम के दुश्मन और खूनी का पता लगाने ही के लिए उसने अपना रहन-सहन का रंग-ढंग बदल दिया हो। अगर ऐसा है तो रणधीरसिंह जी इस बात को जानते होंगे। गुलाबसिंह ने वह भेद मुझ पर क्यों नहीं खोला? हो सकता है कि उन्हें यह सब मालूम न हो या वे धोखे में आ गए हों, परन्तु नहीं, गदाधरसिंह तो ऐसा आदमी नहीं था, अस्तु जो हो, बिना विचारे और अच्छी तरह तहकीकात किए किसी पक्ष को मजबूती के साथ पकड़ लेना उचित नहीं है। इसके अलावे यह भी तो मालूम करना चाहिए कि जमना और सरस्वती इस तरह स्वतंत्र क्यों

हा रही हैं और उन्होंने अपने को मुर्दा क्यों मशहूर कर दिया तथा यह अनूठा स्थान इन्हें कैसे मिल गया और यहाँ किसका सहारा पाकर ये दोनों रहती हैं। भूतनाथ से दुश्मनी रखना और बदला लेने का व्रत धारण करना कुछ हंसी-खेल नहीं है और इस तरह रहने से रुपये-पैसे की भी कम जरूरत नहीं है। आखिर यह है क्या मामला! यह तो हमने पूछा ही नहीं कि यह स्थान किसका है और तुम लोग आजकल किसकी होकर रहती हो। खैर अब पूछ लेंगे। कोई-न-कोई भारी आदमी इनका साथी जरूरी है, उसे भी भूतनाथ ने दुश्मनी है। क्या इन दोनों पर व्यभिचार का दोष भी लगाया जा सकता है? कैसे कहें 'हाँ' या 'नहीं' ऐसे खोटे दिल की तो ये दोनों थी नहीं, मगर ये सती और साधवी हैं तो इनका मददगार भी कोई इन्हीं का रिश्तेदार जरूर होगा, मगर वह भी कोई साधारण व्यक्ति न होगा जिसका यह अनूठा स्थान है। हाँ यह भी तो है कि यदि ये व्यभिचारिणी होती तो मुझे यहाँ न लातीं और इंदु को भी लाने की चेष्टा न करतीं...मगर अभी यह भी क्योंकर कह सकते हैं कि इंदु को यहाँ लाने की चेष्टा कर रही हैं! अच्छा जो होगा देखा जाएगा, चलो पहिले मैदान में घूम आवें तब फिर उन दोनों के आने पर बातचीत से सब मामले की थाह लेंगे।''

प्रभाकर सिंह दरवाजा खोल कर उस कोठरी में घुस गए जिसकी तरफ बिमला ने इशारा किया था। उसके अंदर नहाने तथा संध्या-पूजा करने का पूरा-पूरा सामान करीने से रखा हुआ था, बल्कि एक छोटी-सी आलमारी में कुछ जरूरी कपड़े और भोजन करने के अच्छे-अच्छे पदार्थ भी मौजूद थे। प्रभाकर सिंह ने अपनी ढाल-तलवार एक खूँटी से लटका दी और तीर-कमान भी एक चौकी पर रख कर कपड़े का कुछ बोझ हलका किया और जल से भरा हुआ लोटा उठा कर कोठरी के बाहर निकले। कई कदम आगे गए होंगे कि कुछ सोच कर लौटे और उस कोठरी में जाकर अपनी तलवार खूँटी पर से उतार लाये और बंगले के बाहर निकले।

दिन पहर भर से ज्यादे चढ़ चुका था और धूप में गर्मी ज्यादे आ चुकी थी मगर उस सुन्दर घाटी में जिसमें पहाड़ी से सटा हुए एक छोटा-साथ चश्मा भी बह रहा था, जंगली गुलबूटे और सुन्दर पेड़ों की बहुतायत होने के कारण हवा बुरी नहीं मालूम होती थी। प्रभाकर सिंह पूरब तरफ मैदान की हद तक चले गए और नहर लाँघ कर पहाड़ी के कुछ ऊपर बढ़ गए जहाँ पेड़ों का एक बहुत अच्छा छोटा-सा झुरमुट था। जब कुछ देर बाद वहाँ से लौटे तो नहाने और संध्या-पूजा के लिए इन्हें वह चश्मा ही प्यारा मालूम हुआ अस्तु वे उसके किनारे एक सुन्दर चट्टान पर बैठ गए। घंटे-डेढ़-घंटे के अन्दर ही प्रभाकर सिंह सब जरूरी कामों से निश्चिन्त हो गए तथा अपने कपड़े भी धोकर सुखा लिए। इसके बाद उस बंगले में पहुँचे और इस आशा में थे कि जमना और सरस्वती यहाँ आ गई होंगी मगर एक लौंडी के सिवाय वहाँ और किसी को भी न देखा जिसकी जुबानी मालूम हुआ कि 'उनके आने में अभी घंटे भर की देर है, तब तक आप कुछ जल-पान खा लीजिए जिसका सामान उस नहाने वाली कोठरी में मौजूद है।'

''अच्छा'' कहकर प्रभाकर सिंह ने उस लौंडी को तो बिदा कर दिया और आप एक किनारे फर्श पर तकिए का सहारा लेकर लेट गए और कुछ चिंता करने लगे।

घंटे भर क्या कई घंटे बीत गये पर जमना और सरस्वती न आईं और प्रभाकर सिंह तरह-तरह की चिंता में डूबे रहे, यहाँ तक कि उन्होंने कुछ जलपान भी न किया। जब थोड़ा-सा दिन बाकी रह गया तब वह घबड़ाकर बंगले के बाहर निकले और मैदान में घूमने लगे। अभी उन्हें घूमते हुए कुछ ज्यादे देर नहीं हुई थी कि एक लौंडी बँगले के अन्दर से निकली और दौड़ती हुई प्रभाकर सिंह के पास आई तथा एक चिट्ठी उनके हाथ में देकर जवाब का इंतजार किए बिना ही वापस चली गई।

प्रभाकर सिंह ने चिट्ठी खोलकर पड़ी, यह लिखा हुआ था

''श्रीमान् जीजाजी,

मैं एक बड़े ही तरद्दुद में पड़ गई हूँ, मुझे मालूम हुआ कि इंदु बहिन बुरी आफत में पड़ा चाहती हैं, अस्तु मैं उन्हीं की फिक्र में जाती हूँ, लौट कर आपसे सब समाचार कहूँगी। आशा है कि तब तक आप सबके साथ यहाँ रहेंगे।

बिमला।''

इस चिट्ठी ने प्रभाकर सिंह को बड़े ही तरद्दुद में डाल दिया और तरह-तरह की चिंता करते हुए वह उस मैदान में टहलने लगे। उन्हें कुछ भी सुध न रही कि किस तरफ जा रहे हैं और किधर जाना चाहिए। उत्तर तरफ का मैदान समाप्त करके वे पहाड़ी के नीचे पहुँचे और कई सायत तक रुके रहने के बाद एक पगडंडी देख ऊपर की तरफ चलने लगे।

लगभग तीस या चालीस कदम के ऊपर गये होंगे कि एक छोटा-सा काठ का दरवाजा नजर आया कि जिस पर साधारण जंजीर चढ़ी हुई थी।

वे इस दरवाजे को देखकर चौंके और चारों तरफ निगाह दौड़ाकर सोचने लगे, ''हैं! यह दरवाजा कैसा? मैं तो बिना इरादा किए ही यकायक यहाँ आ पहुँचा। मालूम होता है कि यह कोई सुरंग है। मगर इसके मुँह पर किसी तरह की हिफाजत क्यों नहीं है? यह दरवाजा तो एक लात भी नहीं सह सकता। शायद इसके अन्दर किसी तरह की रुकावट हो जैसी कि उस सुरंग के अन्दर थी जिसकी राह से मैं यहाँ आया था? खैर इसके अन्दर चल के देखना तो चाहिए कि क्या है। कदाचित् इस कैदखाने के बाहर ही निकल जाऊँ, बेशक् यह स्थान सुन्दर और सुहावना होने पर भी मेरे लिए कैदखाना ही है। यदि इस राह से मैं बाहर निकल गया तो बड़ा ही अच्छा होगा, मैं इंदु को जरूर बचा लूँगा जिसे इस आफत के जमाने में भी मैंने अपने से अलग नहीं किया था। अच्छा जो हो, मैं इस सुरंग के अन्दर जरूर चलूँगा मगर इस तरह निहत्थे जाना तो उचित नहीं पहिले बंगले के अन्दर चलकर अपनी पूरी पोशाक् पहिरना और अपने हरबे लगा लेना चाहिए, न मालूम इसके अन्दर चल कर कैसा मौका पड़े! न भी मौका पड़े तो क्या? कदाचित् इस घाटी के बाहर ही हो जाएँ तो अपने हर्बे क्यों छोड़ जायें?''

इस तरह सोच-विचार कर प्रभाकर सिंह वहाँ से लौटे और तेजी के साथ बँगले के अन्दर चले गये। बात-की-बात में अपनी पूरी पौशाक् पहिर और हर्बे लगाकर वे बाहर निकले और मैदान तय करके फिर उसी सुरंग के मुहाने पर जा पहुँचे।

दरवाजा खोलने में किसी तरह की कठिनाई न थी अतएव वे सहज ही में दरवाजा खोल उस सुरंग के अन्दर चले गये। सुरंग बहुत चौड़ी-ऊँची न थी, केवल एक आदमी खुले ढंग से उसमें चल सकता था, अगर सामने से कोई दूसरा आदमी आता हुआ मिल जाय तो बड़ी मुश्किल से दोनों एक-दूसरे को निकालकर अपनी-अपनी राह ले सकते थे। हाँ, लंबाई में यह सुरंग बहुत छोटी न थी बल्कि चार-साढ़े-चार सौ कदम लंबी थी। सुरंग में पूरा अंधकार था और साथ ही इसके वह भयानक भी मालूम होती थी, मगर प्रभाकर सिंह ने इसकी कोई परवाह न की और हाथ फैलाए आगे की तरफ बढ़े चले गए। जैसे-जैसे आगे जाते थे सुरंग तंग होती जाती थी।

जब प्रभाकर सिंह सुरंग खतम कर चुके तो आगे रास्ता बंद पाया, लकड़ी या लोहे का कोई दरवाजा नहीं लगा हुआ था जिसे बंद कहा जाय बल्कि अनगढ़ पत्थरों से ही वह रास्ता बंद था। प्रभाकर सिंह ने बहुत अच्छी तरह टटोलने और गौर करने पर यही निश्चय किया कि बस अब आगे जाने का रास्ता नहीं है, मालूम होता है कि सुरंग बनाने वालों ने इसी जगह तक बनाकर छोड़ दिया है और यह सुरंग अधूरी रह गई।

इस विचार पर भी प्रभाकर सिंह का दिल न जमा, उन्होंने सोचा कि जरूर इसमें कोई बात है और यह सुरंग व्यर्थ नहीं बनाई गई होगी। उन्होंने फिर अच्छी तरह आगे की तरफ टटोलना शुरू किया। मालूम होता था कि आगे छोटे-बड़े कई अनगढ़ पत्थरों का ढेर लगा हुआ है। इस बीच में दो-तीन पत्थर कुछ हिलते हुए भी मालूम पड़े जिन्हें प्रभाकर सिंह ने बलपूर्वक उखाड़ना चाहा। एक पत्थर तो सहज ही में उखड़ आया और जब उन्होंने उसे उठाकर अलग रखा तो छोटे-छोटे दो छेद मालूम पड़े जिनमें से उस पार की चीजें दिखाई दे रही थीं और यह भी मालूम होता था कि अभी कुछ दिन बाकी है। अब उन्हें और भी विश्वास हो गया कि अगर इसी तरह और दो-तीन पत्थर अपने ठिकाने से हटा दिए जाएँ तो जरूर रास्ता निकल आएगा अस्तु उन्होंने फिर जोर करना शुरू किया।

तीन पत्थर और भी अपने ठिकाने से हटाए गए और अब छोटे-छोटे कई सूराख दिखाई देने लगे मगर इस बात का निश्चय नहीं हुआ कि कोई दरवाजा भी निकल आवेगा।

उन सूराखों से प्रभाकर सिंह ने गौर से दूसरी तरफ देखना शुरू किया। एक बहुत ही सुंदर घाटी नजर पड़ी और कई आदमी भी इधर-उधर चलते-फिरते नजर आये।

यह वही घाटी थी जिसमें भूतनाथ रहता था, जहाँ जाते हुए यकायक प्रभाकर सिंह गायब हो गए थे, और जहाँ इस समय गुलाबसिंह और इंदुमति मौजूद हैं। प्रभाकर सिंह ने उसे घाटी को देखा नहीं था इसलिए बड़े गौर से उसकी सुंदरता को देखने लगे। उन्हें इस बात की क्या खबर थी कि यह भूतनाथ का स्थान है और इस समय इसी में इंदुमति विराज रही है तभी इस समय उनके देखते-ही-देखते वह एक भारी आफत में फँसना चाहती है।

प्रभाकर सिंह बराबर उद्योग कर रहे थे कि कदाचित् पत्थरों के हिलाने-हटाने से कोई दरवाजा निकल आये और साथ ही इसके घड़ी-घड़ी उन सूराखों की राह से उस पार की तरफ देख भी लेते थे। इस बीच में उनकी निगाह यकायक इंदुमति पर पड़ी जो पहाड़ की ऊँचाई पर से धीरे-धीरे नीचे की तरफ उतर रही थी। बस फिर क्या था! उनका हाथ पत्थरों को हटाने के काम से रुक गया और वे बड़े गौर से उसकी तरफ देखने लगे, साथ ही इसके उन्हें इस बात का विश्वास हो गया कि यही भूतनाथ का वह स्थान है जहाँ हम इंदुमति के साथ आने वाले थे।

थोड़ी ही देर में इंदु भी नीचे उतर आई और धीरे-धीरे उस कुदरती बगीचे में टहलती हुई उस तरफ बढ़ी जिधर प्रभाकर सिंह थे और अंत में एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गई जो प्रभाकर सिंह से लगभग पचास-साठ कदम की दूरी पर होगी।

अब प्रभाकर सिंह उससे मिलने के लिए बहुत ही बेचैन हुए मगर क्या कर सकते थे, लाचार थे, तथापि उन्होंने उसे पुकारना शुरू किया। अभी दो ही आवाज दी थी कि उनकी निगाह और भी दो आदमियों पर पड़ी जो इंदु से थोड़ी दूर पर एक मुहाने या सुरंग के अन्दर से निकले थे और इंदु की तरफ बढ़ रहे थे, उन्हें देखते ही इंदु भी घबराकर उनकी तरफ लपकी और पास पहुँचकर एक आदमी के पैरों पर गिर पड़ी जो शक्ल-सूरत में बिलकुल ही प्रभाकर सिंह से मिलता था या यों कहिए कि वह सचमुच एक दूसरा प्रभाकर सिंह था।[1]

प्रभाकर सिंह के कलेजे में एक बिजली-सी चमक गई, अपनी-सी सूरत बने हुए एक ऐयार का वहाँ पहुँचना और इंदु का उसके पैरों पर गिर पड़ना उनके लिए कैसा दुखदाई हुआ इसे पाठक स्वयं विचार सकते हैं। केवल इतना ही नहीं उनके देखते-ही-देखते नकली प्रभाकर सिंह ने अपने साथी को विदा कर दिया और इसके बाद वह इंदुमति को कुछ समझाकर अपने साथ ले भागा।

प्रभाकर सिंह चुटीले साँप की तरह पेंच खाकर रह गए, कर ही क्या सकते थे? क्योंकि वहाँ तक इनका पहुँचना बिलकुल ही असंभव था।

उन्होंने पत्थरों को हटाकर रास्ता निकालने का फिर एक दफे उद्योग किया और जब नतीजा न निकला तो पेचोताव खाते हुए वहाँ से लौट पड़े। अब सुरंग के बाहर हुए तो देखा कि सूर्य भगवान अस्त हो चुके हैं और अँधकार चारों तरफ से घिरा आ रहा है अस्तु तरह-तरह की बातें सोचते और विचारते हुए प्रभाकर सिंह बंगले की तरफ लौटे और जब वहाँ पहुँचे तो देखा कि हर एक स्थान में मौके-मौके से रोशनी आ रही है।

प्रभाकर सिंह उसी कमरे में पहुँचे जिसमें बिमला से मुलाकात हुई थी और फर्श पर तकिए के सहारे बैठकर चिंता करने लगे। वे सोचने लगे

''वह कौन आदमी होगा जिसने आज इंदु को इस तरह धोखे में डाला? इंदु की बुद्धि पर भी कैसा परदा पड़ गया कि उसने उसे बिलकुल नहीं पहिचाना! पर वह पहिचानती ही क्योंकर? एक तो वह स्वयं घबड़ाई हुई थी दूसरे संध्या होने के

कारण कुछ अंधकार-सा भी हो रहा था, तीसरे वह ठीक-ठीक मेरी सूरत बनकर वहाँ पहुँचा भी था, मुझमें और उसमें कुछ भी फर्क नहीं था, कमबख्त पोशाक भी इसी ढंग की पहिने हुए था, न मालूम इसका पता उसे कैसे लगा! नहीं, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि इस समय भी मेरी पोशाक् वैसी ही है जैसी हमेशा रहती थी, इससे मालूम होता है कि वह आदमी मेरे लिए कोई नया नहीं हो सकता। अस्तु जो हो मगर इस समय इंदु मेरे हाथ से निकल गई। न मालूम अब उस बेचारी पर क्या आफत आवेगी! हाय, यह सब खराबी बिमला की बदौलत हुई, न वह मुझको बहका के यहाँ लाती और न यह नौबत पहुँचती। हाँ, यह भी संभव है कि यह कार्रवाई बिमला ही ने की हो क्योंकि अभी कई घंटे बीते हैं कि उसने मुझे लिखा भी था कि इंदु किसी आफत में फँसना चाहती है, उसकी मदद को जाती हूँ। शायद उसका मतलब इसी आफत से हो! क्या यह भी हो सकता है कि बिमला ही ने यह ढंग रचा हो और उसी ने किसी आदमी को मेरी सूरत बनाकर इंदु को निकाल लाने के लिए भेजा हो! नहीं, अगर ऐसा होता तो वह यह न लिखती कि 'इंदु बहिन बुरी आफत में पड़ना चाहती है।' हाँ, यह हो सकता है कि इस होने वाली घटना का पहिले से उसे पता लगा हो और इसी दुष्ट के कब्जे से इंदु को छुड़ाने के लिए वह गई हो। जो हो, कौन कह सकता है कि इंदु किन मुसीबत में गिरफ्तार हो गई! अफसोस इस बात का है कि मेरी आँखों के सामने यह सब कुछ हो गया और मैं कुछ न कर सका।"

इसी तरह की बातें प्रभाकर सिंह को सोचते कई घंटे बीत गए मगर इस बीच में कोई शान्ति दिलाने वाला वहाँ न पहुँचा। कई नौजवान लड़के जो बँगले के बाहर पहरे पर दिखाई दिए थे इस समय उनका भी पता न था। दिनभर उन्होंने कुछ भोजन नहीं किया था मगर भोजन करने की उन्हें कोई चिंता भी न थी, वे केवल इंदुमति की अवस्था और अपनी बेबसी पर विचार कर रहे थे, हाँ, कभी-कभी इस बात पर भी उनका ध्यान जाता कि देखो अभी तक किसी ने भी मेरी सुध न ली और न खाने-पीने के लिए ही किसी ने पूछा!

चिंता करते-करते उनकी आँखें लग गई और नींद में भी वे इंदुमति के विषय में तरह-तरह के भयानक स्वप्न देखते रहे। आधी रात जा चुकी जब एक लौंडी ने आकर उन्हें जगाया!

प्रभाकर सिंह : **(लौंडी से)** क्या है?

लौंडी : मैं आपके लिए भोजन की सामग्री लाई हूँ।

प्रभाकर सिंह : कहाँ है?

लौंडी : **(उँगली से इशारा करके)** उस कमरे में।

प्रभाकर सिंह : मैं भोजन न करूँगा, जो कुछ लाई हो उठा ले जाओ।

लौंडी : मैं ही नहीं कला जी भी आई हैं जो कि उस कमरे में बैठी आपका इंतजार कर रही हैं।

कला का नाम सुनते ही प्रभाकर सिंह उठ बैठे और उस कमरे में गए जिसकी तरफ लौंडी ने इशारा किया था। यह वही कमरा था जिसको दिन के समय प्रभाकर सिंह देख चुके थे और जिसमें नहाने-धोने का सामान तथा जलपान के लिए भी कुछ रखा हुआ था।

कमरे के अन्दर पैर रखते ही कला पर उनकी निगाह पड़ी जो एक कंबल पर बैठी हुई थी। प्रभाकर सिंह को देखते ही वह उठ खड़ी हुई और उसने बड़े आग्रह से उन्हें यह कंबल पर बैठाया जिसके आगे भोजन की सामग्री रखी हुई थी। बैठने के साथ ही प्रभाकर सिंह ने कहा

प्रभाकर सिंह : कला, आज तुम लोगों की बदौलत मुझे बड़ा ही दुःख हुआ।

कला : **(बैठकर)** सो क्या?

प्रभाकर सिंह : **(चिढ़े हुए ढंग से)** मेरी आँखों के सामने से इंदु हर ली गई और मैं कुछ न कर सका!!

कला : ठीक है, आपने किसी सुरंग से यह हाल देखा होगा।

प्रभाकर सिंह : सो तुमने कैसे जाना?

कला : यहाँ दो सुरंगें ऐसी हैं जिनके अन्दर से भूतनाथ की घाटी बखूबी दिखाई देती है। उनमें से एक के अन्दर के सूराख पत्थर के ढोकों से मामूली ढंग से बंद किए हुए हैं और दूसरी के सूराख खुले हुए हैं जिनकी राह से हम लोग बराबर भूतनाथ के घर का रंग-ढंग देखा करती हैं।

प्रभाकर सिंह : ठीक है, इत्तिफाक से मैं उसी सुरंग के अन्दर पहुँच गया था जिसमें देखने के सूराख पत्थर के ढोकों से बंद किए हुए थे।

कला : जी हाँ, मगर हम लोगों को आपसे पहिले इस बात की खबर लग चुकी थी।

प्रभाकर सिंह : तब तुम लोगों ने क्या किया?

कला : यही किया कि इंदु बहिन को उस आफत से छुड़ा लिया।

प्रभाकर सिंह : **(प्रसन्नता से)** तो इंदु कहाँ है?

कला : एक सुरक्षित और स्वतंत्र स्थान में। अब आप भोजन करते जाइए और बातें किए जाइए, नहीं तो मैं कुछ न कहूँगी, क्योंकि आप-दिन-भर के भूखे हैं बल्कि ताज्जुब नहीं कि दो दिन ही के भूखे हों। यहाँ जो कुछ खाने-पीने का सामान पड़ा हुआ था उसके देखने से मालूम हुआ कि आपने दिन को भी कुछ नहीं खाया था।

मजबूर होकर प्रभाकर सिंह ने भोजन करना आरंभ किया और साथ-ही-साथ बातचीत भी करने लगे।

प्रभाकर सिंह : अच्छा तो मैं इंदु को देखना चाहता हूँ।

कला : जी नहीं, अभी देखने का उद्योग न कीजिए, कल जैसा होगा देखा जाएगा क्योंकि इस समय उसकी तबीयत खराब है, दुश्मनों के हाथ से चोट खा चुकी है, यद्यपि उसने बड़े साहस का काम किया और अपने तीरों से कई दुश्मनों को मार गिराया।

इस खबर ने भी प्रभाकर सिंह की तरद्दुद में डाल दिया। वे इंदु को देखना चाहते थे और कला समझाती जाती थी कि अभी ऐसा करना अनुचित होगा और वैद्य की भी यही राय है।

बड़ी मुश्किल से कला ने प्रभाकर सिंह को भोजन कराया और कल पुनः मिलने का वादा करके वहाँ से चली गई। प्रभाकर सिंह को इस बात का पता न लगा कि यह किस राह से आई थी और किस राह से चली गई।

क्या हम कह सकते हैं कि प्रभाकर सिंह इंदु की तरफ से बेफिक्र हो गए? नहीं कदापि नहीं! उन्हें कुछ ढाँढस हो जाने पर भी कला की बातों पर पूरा विश्वास न हुआ। उनका दिल इस बात को कबूल नहीं करता था कि यदि कला और बिमला दूर से या किसी छिपे ढंग से इंदु को दिखला देती तो कोई हर्ज होता। बात तो यह है कि कला तथा बिमला का इस तरह गुप्त रीति से आना-जाना और रास्ते का पता न देना भी उन्हें बुरा मालूम होता था और उन लोगों पर विश्वास नहीं जमने देता था, हाँ, इस समय इतना जरूर हुआ कि उनकी विचार-प्रणाली का पक्ष कुछ बदल गया और वे पुरानी चिंता के साथ-ही-साथ किसी और चिंता में भी निमग्न होने लगे।

कई घंटे तक कुछ सोचने-विचारने के बाद वे उठ खड़े हुए और दालानों, कमरों तथा कोठरियों में घूमने-फिरने और टोह लगाने के साथ-ही-साथ दीवारों, आलों और आलमारियों पर भी निगाहें डालने लगे। पिछली रात का समय, इनके सिवाय कोई दूसरा आदमी बँगले के अन्दर न होने के कारण सन्नाटा छाया हुआ था, मगर जहाँ तक देखने में आता था कमरों और कोठरियों में रोशनी जरूर हो रही थी।

कमरों और कोठरियों में छोटी-बड़ी आलमारियाँ देखने में आईं जिनमें से कई में तो ताला लगा हुआ था कई बिना ताले की थीं और कई में किवाड़ के पल्ले भी न थे।

इन्हीं कोठरियों में से एक कोठरी ऐसी भी थी जिसमें अँधकार था अर्थात् चिराग नहीं जलता था अतएव प्रभाकर सिंह ने चाहा कि इस कोठरी को भी अच्छी तरह देख लें। उसके पास वाली कोठरी में एक फर्शी शमादान जल रहा था जिसे उन्होंने उठा लिया मगर जब उस कोठरी के दरवाजे के पास पहुँचे तो अन्दर से कुछ खटके की आवाज आई। वे ठमक गये और उस तरफ ध्यान देकर सुनने लगे। आदमी के पैरों की चाप-सी मालूम हुई जिससे गुमान हुआ कि कोई आदमी इसके अंदर जरूर है, मगर फिर कुछ मालूम न हुआ और प्रभाकर सिंह शमादान लिए हुए कोठरी के अन्दर चले गए।

और कोठरियों की तरह यह भी साफ-सुथरी थी तथा जमीन पर एक मामूली फर्श विछा हुआ था। हाँ, छोटी-छोटी आलमारियाँ इसमें बहुत ज्यादे थीं जिनमें से एक खुली हुई थी और उसका ताला ताली समेत उसकी कुंडी के साथ अड़ा हुआ था। वह सिर्फ एक ही ताली न थी बल्कि तालियों का एक गुच्छा ही था।

ये शमादान लिए हुए उस आमलारी के पास चले गये और उसका पल्ला अच्छी तरह खोल दिया। उसमें तीन दर वने हुए थे जिनमें से एक में हाथ की लिखी हुई कितावें थीं, दूसरे में कागज-पत्र के छोटे-बड़े कई मुट्ठे थे, और तीसरे में लोहे की कई बड़ी-बड़ी तालियाँ थीं और सबके साथ एक-एक पुर्जा बँधा हुआ था, उन्होंने एक ताली उठायी और उसके साथ का पुर्जा खोल कर पढ़ा और फिर ज्यों-का-त्यों उसी तरह ठीक करके रख दिया, इसके बाद दूसरी ताली का पुर्जा पढ़ा और उसी तरह रख देने के बाद फिर क्रमशः सभी तालियों के साथ वाले पुर्जे पढ़ डाले और अंत में एक ताली पुर्जे सहित उठाकर अपनी जेब में रख ली।

तालियों की जाँच करने के बाद उन कागज के मुट्ठों पर हाथ डाला और घंटे-भर तक अच्छी तरह देखने-जाँचने के बाद उसमें से भी तीन मुट्ठे लेकर अपने पास रख लिए और फिर किताबों की जाँच शुरू की। इसमें उनका समय बहुत ज्यादे लगा मगर इनमें से कोई किताब उन्होंने ली नहीं।

उस आलमारी की तरफ से निश्चिन्त होने के बाद फिर उन्होंने किसी और आलमारी को जाँचने या खोलने का इरादा नहीं किया। वे वहाँ से लौटे और शमादान जहाँ से उठाया था वहाँ रख कर अपने उसी कमरे में चले आये जहाँ आराम कर चुके थे। वहाँ भीद वे ज्यादे देर तक नहीं ठहरे सिर्फ अपने कपड़ों और हर्वों की दुरुस्ती करके बंगले के बाहर निकले। आसमान की तरफ देखा तो मालूम हुआ कि रात बहुत कम बाकी है और आसमान पर पूरब तरफ सफेदी फैलना ही चाहती है।

''कुछ देर तक और ठहर जाना मुनासिब है,'' यह सोचकर वे इधर-उधर घूमने और टहलने लगे। जब रोशनी अच्छी तरह फैल चुकी तब दक्खिन और पश्चिम कोण की तरफ रवाना हुए। जब मैदान खतम कर चुके और पहाड़ी के नीचे पहुँचे तो उन्हें एक हलकी-सी पगडंडी दिखाई पड़ी जो कि बहुत ध्यान देने से पगडंडी मालूम होती थी, हाँ, इतना कह सकते हैं कि उस राह से पहाड़ी के ऊपर कुछ दूर तक चढ़ने में सुभीता हो सकता था अस्तु प्रभाकर सिंह पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे। लगभग पचास कदम चढ़ जाने के बाद उन्हें एक छोटी-सी गुफा दिखाई दी जिसके अन्दर वे बेधड़क् चले गए और फिर कई दिनों तक वहाँ से लौट कर बाहर न आए।

8

आज प्रभाकर सिंह उस छोटी-सी गुफा के बाहर आए हैं और साधारण रीति पर वे प्रसन्न मालूम होते हैं। हम यह नहीं कह सकते कि वे इतने दिनों तक निराहार या भूखे रह गए होंगे क्योंकि उनके चेहरे से किसी तरह की कमजोरी नहीं मालूम होती। जिस समय वे गुफा के बाहर निकले सूर्य भगवान उदय हो चुके थे। उन्होंने बँगले के अन्दर जाना कदाचित् उचित न जाना या इसकी कोई आवश्यकता न समझी हो अस्तु वे उस सुन्दर घाटी में प्रसन्नता के साथ चारों तरफ टहलने लगे। नहीं-नहीं, हम यह भी नहीं कह सकते कि वे वास्तव में प्रसन्न थे क्योंकि बीच-बीच में उनके चेहरे पर गहरी उदासी छा जाती थी और वे एक लंबी साँस लेकर रह जाते थे। संभव है कि यह उदासी इंदुमति की जुदाई से संबंध रखती हो और वह प्रसन्नता किसी ऐसे लाभ के कारण हो जिसे उन्होंने उस गुफा के अन्दर पाया हो। तो क्या उन्हें उस गुफा के अन्दर कोई चीज मिली थी या उस गुफा की राह से वे इस घाटी के बाहर हो गए थे अथवा उन्हें किसी तिलिस्म का दरवाजा मिल गया जिसमें उन्होंने कई दिन बिता दिए? जो हो, बात कोई अनूठी जरूर है और घटना कुछ आश्चर्यजनक अवश्य है।

बहुत देर तक इधर-उधर घूमने के बाद वे एक पत्थर की सुन्दर चट्टान पर बैठ गए और साथ ही किसी गंभीर चिंता में निमग्न हो गए। इसी समय इन्हें इंदुमति ने पहाड़ी के ऊपर से देखा था मगर इस बात की प्रभाकर सिंह को कुछ खबर न थी।

बहुत देर तक चट्टान पर बैठे कुछ सोचने-विचारने के बाद उन्होंने सर उठाया और इस नियत से बँगले की तरफ देखा कि चलें उसके अन्दर चलकर किसी और विष की टोह लगावें, परन्तु उसी समय बँगले के अन्दर से आती हुई तीन औरतों पर उनकी निगाह पड़ी जिनमें से एक इंदुमति, दूसरी बिमला और तीसरी कला थी।

इंदुमति को देखते ही वे प्रसन्न होकर उठ खड़े हुए, इधर इंदुमति भी इन्हें देखते ही दीवानी-सी होकर दौड़ी और प्रभाकर सिंह के पैरों पर गिर पड़ी।

प्रभाकर सिंह : **(इंदु को उठा कर)** अहा इन्दे! इस समय तुझे देख मैं कितना प्रसन्न हुआ यह कहने के लिए मेरे पास केवल एक ही जुबान है अस्तु मैं कुछ कह नहीं सकता।

इंदुमति : नाथ, मुझे आपने धोखे में डाला! **(मुसकराती हुई)** मुझे तो इस बात का गुमान भी न था कि आप मेरे साथ चलते हुए रास्ते में किसी चुलबुली औरत को देखकर अपने आपे से बाहर हो जाएँगे और मेरा साथ छोड़ कर उसके साथ दौड़ पड़ेंगे! क्या इस विपत्ति के समय में मुझे अपने साथ लाकर ऐसा ही बर्त्ताव करना आपको उचित था? क्या आप की उन प्रतिज्ञाओं का यही नमूना था!

प्रभाकर सिंह : **(हँसते हुए)** वाह, तुम अपनी बहिन को और अपने ही मुँह से चुलबुली बनाओ! क्या मैं किसी चुड़ैल के पीछे दौड़ा था? तुम्हारी बहिन इस बिमला ही ने तो मुझे रोका और कहा कि जरूरी बात कहनी है। मैंने समझा कि यह अपनी है जरूर कुछ भलाई की बातें कहेंगी, अस्तु इनके फेर में पड़ गया ओर तुम्हें खो बैठा। तुम्हारे साथ गुलाबसिंह मौजूद ही थे और इधर बिमला से मैं कुछ सुनना चाहता था। ऐसी अवस्था में यह कब आशा हो सकती थी कि साधारण मामले पर इतना पहाड़ टूट पड़ेगा! सच तो यह है कि तुम्हारी बहिन ने मुझे धोखा दिया जिसका मुझे बहुत रंज है और मैं उसके लिए इनसे बहुत बुरा बदला लेता मगर आज इन्होंने तुमसे मुझे मिला दिया इसीलिए मैं इनका कसूर माफ करता हूँ मगर इस बात की शिकायत

जरूर करूँगा कि मुझे यहाँ फँसा इन्होंने भूखों मार डाला, खाने तक को न पूछा। आओ-आओ बैठ जाओ, सब कोई बैठ कर बातें करें।

बिमला : वाह! बहुत अच्छी कही, आपने तो मानो अनशन व्रत ग्रहण किया था! साफ-साफ क्यों नहीं कहते कि किसी

की फिक्र और तरद्दुद के कारण खाना-पीना कुछ अच्छा ही नहीं लगता था।

कला : **(मुसकराती हुई)** रात-रात भर जाग के कोने-कोने की तलाशी लिया करते थे कहीं छेद-सुराख और आले-अलमारी में से इंदुमति निकल आवे।

प्रभाकर सिंह : **(चौंककर, कला से)** सो क्या?

बिमला : बस इतना ही तो! खैर इन बातों को जाने दीजिए यह बताइए कि आप मुझसे संतुष्ट हुए कि नहीं? अथवा आपको इस बात का निश्चय हुआ या नहीं कि हम लोगों ने जो कुछ किया वह नेकनीयती के साथ था?

प्रभाकर सिंह : चाहे यह बात ठीक हो, चाहे तुम पर हर तरह से निर्दोष हो, चाहे तुम दोनों बहिनों पर किसी तरह का ऐब का धब्बा लगाना कठिन अथवा असंभव ही क्यों न हो, परन्तु इतना तो मैं जरूर कहूँगा कि तुम्हारी यह कर्रवाई बदनीयती के साथ नहीं तो बेवकूफी के साथ जरूर हुई। संभव था कि जिस दुश्मन पर फतह पाके तुम इंदुमति को छुड़ा लाई वह और जबर्दस्त होता या तुम पर फतह पा जाता तो फिर इंदुमति पर कैसी मुसीबत गुजरती! मेरी समझ में नहीं आता कि इस अनुचित और टेढ़ी बात से तुम्हें या हमें क्या फायदा पहुँचा, हाँ, इंदुमति जख्मी हुई यह मुनाफा जरूर हुआ जिस तरह तुमने मुझे बहकाया था उस तरह वहाँ यही समझा दिया होगा कि इंदुमति को साथ लेकर वहाँ से हट जाना मुनासिब है तो..

बिमला : **(बात काट कर)** नहीं-नहीं, यदि मैं ऐसा करती तो आप मुझ पर कदापि विश्वास न करते और भूतनाथ तथा गुलाबसिंह का साथ न छोड़ते, साथ ही इसके यह भी असंभव था कि वहाँ पर मैं सविस्तार अपना हाल कहकर आपको समझाती, भूतनाथ के ऐबों को दिखाती अथवा उचित-अनुचित बहस करती, बल्कि..

इंदुमति : **(बात काट कर, प्रभाकर सिंह से)** खैर इन सब बातों से क्या फायदा, जो कुछ हुआ सो हुआ अब आगे के लिए सोचना चाहिए कि हम लोगों का कर्त्तव्य क्या है और क्या करना उचित होगा। मै। इतना जरूर कहूँगी कि हमारी ये दोनों जमाने के हाथों से सताई हुई बहिनें इस योग्य नहीं हैं कि इन पर बदनीयती का धब्बा लगाया जाय। हाँ यदि कुछ भूल समझी जाय तो वह बड़े-बड़े बुद्धिमान लोगों से भी हो जाया करती है। साथ ही इसके यह भी मानना पड़ेगा कि ग्रहदशा के फेर में पड़े हुए कई आदमी एक साथ मिलकर मुसीबत के दिन काटना चाहें तो सहज में काट सकते हैं बनिस्बत इसके कि वे सब अलग-अलग होकर कोई कार्रवाई करें, आप यह सुन ही चुके हैं कि ये दोनों **(कला और बिमला)** किस तरह जमाने अथवा भूतनाथ के हाथों से सताई जा चुकी हैं अस्तु हम लोगों का एक साथ रहना लाभदायक होगा।

प्रभाकर सिंह : **(इंदु से)** तुम्हारा कहना कुछ-कुछ जरूर ठीक है, में इस बात को पसन्द करता हूँ कि तुम यहाँ रहो जब तक कि मैं अपने दुश्मनों पर फतह पाकर स्वतंत्र और निश्चिन्त न हो जाऊँ। मुझे इस बात की जरूर खुशी है कि तुम्हारे लिए एक अच्छा ठिकाना निकल आया है। मगर मैं हाथ-पैर तुड़ाकर नहीं रह सकता।

इंदुमति : मगर आपको इन दोनों की मदद जरूर करनी चाहिए।

प्रभाकर सिंह : इसके लिए मैं दिलोजान से तैयार हूँ, मगर अभी मैं भूतनाथ के साथ दुश्मनी न करूँगा जब तक कि अच्छी तरह जाँच न लूँ और अपने दोस्त गुलाबसिंह से राय न मिला लूँ।

बिमला : **(कुछ घबराहट के साथ)** तो क्या आप हम लोगों के बारे में गुलाबसिंह से कुछ जिक्र करेंगे?

प्रभाकर सिंह : बेशक्!

बिमला : तब तो आप चौपट ही करेंगे क्योंकि गुलाबसिंह भूतनाथ का दोस्त है और उससे हमारा हाल जरूर कह देना,

ऐसी अवस्था में मेरे मनसूबों पर बिलकुल ही पाला पड़ जाएगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि सहज ही में इस दुनिया से... **(लंबी साँस लेकर)** ओफ! यदि मैं आपसे भलाई की आशा न करूँ तो दुनिया में किससे कर सकती हूँ? वह कौन-सा दरख्त है जिसके साये तले मैं बैठ सकता हूँ और वह कौन-सा मकान है जिसमें स्वतंत्र परू से रह कर जिंदगी बिता सकती हूँ? एक इन्द्रदेव जिन्होंने अपना हाथ मेरे सिर पर रखा है, और दूसरे आप जिनसे मैं भलाई की उम्मीद कर सकती हूँ। यदि आप ही मेरी प्रतिज्ञा भंग करने के कारण हो जाएँगे तो हमारी रक्षा करने वाला और हमारे सतीत्व को बचाने वाला, हमारे धर्म का प्रतिपालन करने वाला और कुम्हलाई हुई शुभ मनोरथलता में जीवन संचार करने वाला और कौन होगा? मैं कसम खाकर कह सकती हूँ कि भूतनाथ कदापि आपके साथ भलाई न करेगा चाहे गुलाबसिंह आपका दिली दोस्त हो और चाहे भूतनाथ गुलाबसिंह को इष्टदेव के तुल्य मानता हो, साथ ही इसके मैं डंके की चोट पर कह सकती हूँ कि यदि आप मुझे धर्म-पथ से विचलित हुई पावें, यदि आपको मेरे निर्मल आँचल में किसी तरह का धब्बा दिखाई दे, और यदि जाँच करने पर मैं झूठी साबित होऊँ तो आपको अख्तियार है और होगा कि मेरे साथ ऐसा बुरा सलूक करें जो कि अनपढ़, उजड्ड और अधर्मी दुश्मन के किए भी न हो सके। बेशक् आप मुझे..

इतना कहते-कहते बिमला का गला भर आया और उसकी आँखों से आँसू की धारा बह चली।

प्रभाकर सिंह : **(बात काट कर दिलासे के ढंग से)** बस-बस बिमला बस, मुझे विश्वास हो गया कि तू सच्ची है और दिल का गुबार निकालने के लिए तेरी प्रतिज्ञा सराहने के योग्य है। मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि तेरे भेदों को तुझसे ज्यादा छिपाऊँगा और तेरी इच्छा के विरुद्ध कभी किसी पर प्रकट न करूँगा चाहे वह मेरा कैसा ही प्यार क्यों न हो, साथ ही इसके विश्वास दिलाता हूँ कि तू मुझसे स्वप्न में भी बुराई की आशा न रखियो। मगर हाँ, मैं भूतनाथ की जाँच जरूर करूँगा कि वह कितने पानी में है।

बिमला : **(खुशी से प्रभाकर सिंह को प्रणाम करके)** बस मैं इतना ही सुनना चाहती थी, आपकी इतनी प्रतिज्ञा मेरे लिए बहुत है। आप शौक से भूतनाथ की बल्कि साथ ही इसके मेरी भी जाँच कीजिए मैं इसके लिए कदापि न रोकूँगी, मगर मैं खुद जानती हूँ कि भूतनाथ परले सिरे का बेईमान, दग़ाबाज और खुदगर्ज ऐयार है और ऐयारी के नाम में धब्बा लगाने वाला है। मै। आपको एक चीज दूँगी जो समय पड़ने पर आपको बचावेगी, वह चीज मुझे इन्द्रदेव ने दी है और वह आप ऐसे बहादुर के पास रहने योग्य है। यदि आपकी इच्छा के विरुद्ध न हो तो मैं इन्द्रदेव से भी आपकी मुलाकात कराऊँगी।

प्रभाकर सिंह : मैं बड़ी खुशी से इन्द्रदेव से मिलने के लिए तैयार हूँ, उनसे मिलकर मुझे कितनी खुशी होगी मैं बयान नहीं कर सकता। वे निःसन्देह महात्मा हैं और मुझे उनसे मिलने की सख्त जरूरत है! मैं यह भी जानता हूँ कि वह मुझ पर कृपादृष्टि रखते हैं और ऐसे समय में मेरी भी पूरी सहायता कर सकते हैं।

बिमला : निःसन्देह ऐसा ही है। आप इस घाटी में तीन दिन के लिए मेरी मेहमानी कबूल करें, इन तीन दिनों में कई अद्‌भुत चीजें आपको दिखाऊँगी और इन्द्रदेव जी से भी मुलाकात कराऊँगी क्योंकि कल वे यहाँ जरूर आवेंगे।

कला : **(मुसकराती हुई दिल्लगी के साथ)** मगर ऐसा न कीजिएगा कि उस रात की तरह ये तीन दिन भी आप इस स्थान की तलाशी में ही बिता दें और हर रोज सुबह को एक नई घाटी से बाहर निकला करें।

प्रभाकर सिंह : मैं पहिले ही आवाज देने पर समझ गया था कि तुमने उस रात की कार्रवाई देख ली है, इसे दोहराने की कोई जरूरत न थी! अगर खुशी से तुम अपना घर न दिखाओगी तो मैं बेशक् इसी तरह जबर्दस्ती देखने का उद्योग करूँगा।

कला : जबर्दस्ती से कि चोरी से!

इतना कहकर कला खिलखिलाकर हँस पड़ी और तब तक कुछ देर तक इन सभों में इधर-उधर की बातें होती रहीं, इसके बाद धूप ज्यादा निकल आने के कारण सब कोई उठ कर बँगले के अन्दर चले गए और वहाँ भी कई घंटे तक

हँसी-दिल्लगी तथा ताने और उलाहने की बातें होती रही। इस बीच में इंदु ने अपनी दर्दनाक कहानी कह सुनाई और प्रभाकर सिंह ने भी अपनी बेबसी में जो कुछ देखा-सुना था इससे बयान किया।

दो पहर से ज्यादे दिन चढ़ चुका था जब बिमला सभों को लिए हुए अपने महल में आई। इतनी देर तक खुशी में किसी को भी नहाने-धोने अथवा खाने की सुध न रही।

9

तीन दिन नहीं बल्कि पाँच दिन तक मेहमानी का आनन्द लूट कर आज प्रभाकर सिंह उस अद्भुत खोह के बाहर निकले हैं। इन पाँच दिनों के अन्दर उन्होंने क्या-क्या देखा-सुना, किस-किस स्थान की सैर की, किस-किस से मिले-जुले, सो हम यहाँ पर कुछ भी न कहेंगे सिवाय इसके कि वे इंदुमति को बिमला और कला के पास छोड़ गए हैं और इस काम से बहुत प्रसन्न भी हैं। साथ ही इसके यह भी कह देना उचित जान पड़ता है कि अब उनके विचारों में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया है।

दिन पहर भर से कुछ कम बाकी है। प्रभाकर सिंह सिर झुकाए कुछ सोचते हुए पहाड़ के किनारे भूतनाथ की घाटी की तरफ धीरे-धीरे चले जा रहे हैं। वे जानते हैं कि भूतनाथ की घाटी का दरवाजा अब दूर नहीं है तथा उन्हें यह भी गुमान है कि भूतनाथ या गुलाबसिंह ताज्जुब नहीं कि बाहर ही मिल जाएं। इसलिए वे धीरे-धीरे दम उठाते हैं, इधर-इधर चौकन्ने होकर देखते हैं और कभी-कभी पत्थर की किसी सुन्दर चट्टान पर बैठ जाते हैं।

प्रभाकर सिंह का सोचना बहुत ठीक निकला। वे एक पत्थर की चट्टान पर बैठकर कुछ सोच रहे थे कि भूतनाथ ने उन्हें देख लिया और तेजी के साथ लपक कर इनके पास आया, मगर इन्हें सुस्त और उदास देखकर उसे ताज्जुब और दुःख हुआ क्योंकि जिस तपाक् के साथ वह प्रभाकर सिंह से मिलना चाहता था उस तपाक् के साथ प्रभाकर सिंह उससे नहीं मिले, न तो उसका इस्तकबाल किया और न उसे आवभगत के साथ लिया। हाँ, इतना जरूर किया कि भूतनाथ को देख उठ खड़े हुए और एक लंबी साँस लेकर बोले, "बस भूतनाथ! तुमसे मुलाकात हो गई अब केवल गुलाबसिंह से मिलने की अभिलाषा है! इसके बाद फिर कोई भी मुझे प्रभाकर सिंह की सूरत में नहीं देख सकेगा!!"

भूतनाथ : **(आश्चर्य से)** क्यों-क्यों, सो क्यों?

प्रभाकर सिंह : तुम जानते हो कि इस दुनिया में मेरा कोई भी नहीं है, एक इंदुमति थी सो वह भी ऐसे ठिकाने पहुँच गई, जहाँ कोई भी जाकर उससे मिल भी नहीं सकता।

भूतनाथ : नहीं-नहीं प्रभाकर सिंह, ये शब्द बहादुरों के मुँह से निकलने योग्य नहीं हैं! क्या इंदुमति का कुछ हाल आपको मालूम हुआ?

प्रभाकर सिंह : कुछ क्या बल्कि बहुत।

भूतनाथ : किस रीति से?

प्रभाकर सिंह : आश्चर्यजनक रीति से।

भूतनाथ : किसकी जुबानी?

प्रभाकर सिंह : एक निर्जीव मूरत की जबानी।

भूतनाथ :बस इस पहेल से तो काम नहीं चलता, खुलासा कहिए नहीं तो..

प्रभाकर सिंह : अच्छा बैठो और सुनो।

दोनों बैठ गए और तब भूतनाथ ने प्रभाकर से पूछा

भूतनाथ : अच्छा अब कहिए कि क्या हुआ और किसी जुबानी आपको इंदमति का हाल मालूम हुआ?

प्रभाकर सिंह : मैं कह चुका हूँ कि एक निर्जीव मूरत की जुबानी मुझे बहुत कुछ हाल मालूम हुआ जिसे सुनकर तुम ताज्जुब करोगे। सुनो और आश्चर्य करो कि तुम्हारे पड़ोस में कैसा एक विचित्र स्थान है! **(रुककर)** नहीं नहीं, यह मेरी भूल है कि मैं ऐसा कहता हूँ, निःसन्देह उस विचित्र स्थान का हाल सबसे ज्यादे तुम्हीं को मालूम होगा, मैं तो नया मुसाफिर हूँ।

भूतनाथ : आखिर किस स्थान के विषय में आप कह रहे हैं? कुछ समझाइए भी तो।

प्रभाकर सिंह : **(हाथ का इशारा करके)** बस इसी तरफ थोड़ी ही दूर पर एक शिवालय है जिसके अन्दर शिवजी की नहीं बल्कि किसी तपस्वी ऋषि की मूर्ति है जो कि पूरे आदमी के कद की...

भूतनाथ : हाँ-हाँ ठीक है इस तरफ के जँगली लोग उसे अगस्तमुनि की मूर्ति कहते हैं, खूब लंबी-लंबी जटा है और मूर्ति के आगे एक छोटा-सा कुंड है जिसमें हरदम जल भरा रहता है न मालूम वह जल कहाँ से आता है चाहे जितना भी खर्च करो कम होता ही नहीं। वह स्थान 'अगस्ताश्रम' के नाम से पुकारा जाता है।

प्रभाकर सिंह : बस-बस, वही स्थान है।

भूतनाथ : फिर, उससे क्या मतलब?

प्रभाकर सिंह : उसी मूर्ति की जुबानी मुझे कई बातें मालूम होती हैं, तुम्हें तो मालूम ही होगा कि उसमें बात करने की शक्ति है।

भूतनाथ : **(दिल्लगी के तौर पर हँसकर)** बहुत खासे! यह आपसे किसने कह दिया कि भूतनाथ ऐसा पागल हो गया है कि जो कुछ उसे कहोगे वह विश्वास कर लेगा!

प्रभाकर सिंह : तो क्या मैं गप्प उड़ा रहा हूँ?

भूतनाथ : अगर गप्प नहीं तो दिल्लगी ही सही!

प्रभाकर सिंह : नहीं कदापि नहीं, मुझे आश्चर्य होता है कि तुम यहाँ के रहने वाले होकर उस मूर्ति का हाल कुछ नहीं जानते और यदि मैं कुछ कहता भी हूँ तो दिल्लगी उड़ाते हो! अस्तु जाने दो अब मैं इस विषय में कुछ भी नहीं कहूँगा हाँ, तुम चाहो तो साबित कर दूँगा कि वह मूर्ति बोलती है और त्रिकालदर्शी है। अच्छा जाओ गुलाबसिंह को जल्द भेजो कि मैं उससे मिल कर विदा होऊँ।

भूतनाथ : तो आप मेरे स्थान पर ही क्यों नहीं चलते? उस जगह आपको बहुत आराम मिलेगा, गुलाबसिंह से मुलाकात भी होगी और साथ ही इसके मेरा भ्रम भी दूर हो जाएगा।

प्रभाकर सिंह : नहीं, अब मैं वहाँ न जाऊँगा। मैं उसी शिवालय में चल कर बैठता हूँ तुम गुलाबसिंह को उसी जगह भेज दो मैं मिल लूँगा, बस अब इस विषय में जिद न करो।

भूतनाथ : प्रभाकर सिंह जी, मैं खूब जानता हूँ कि आप क्षत्रिय हैं और सच्चे बहादुर हैं, आपकी वीरता मौरूसी है, खानदानी है, निःसन्देह आपके बड़े लोग जैसे वीर पुरुष होते आए हैं वैसे ही आप भी हैं, मगर आश्चर्य है कि आप मुझे कुछ ऐयारी ढंग की बातें करके धोखे में डालना चाहते हैं...अच्छा-अच्छा,मेरी बातों से यदि आपकी भृकुटी चढ़ती है तो जाने दीजिए, मैं कुछ न कहूँगा, जाता हूँ और गुलाबसिंह को बुलाए लाता हूँ।

इतना कहकर भूतनाथ ने जफील बजाई जिसकी आवाज सुनकर उसके तीन शागिर्द बात-की-बात में वहाँ आ पहुँचे। भूतनाथ उन्हें इशारे में कुछ समझा कर विदा हुआ और अपनी घाटी की तरफ चला गया। प्रभाकर सिंह को मालूम हो

गया कि भूतनाथ इन तीनों ऐयारों को मेरी निगरानी के लिए छोड़ गया है।

कुछ सोच-विचारकर प्रभाकर सिंह उठ खड़े हुए और धीरे-धीरे ईशरान कोण की तरफ जाने लगे। एक घड़ी बराबर चले जाने के बाद वह उस शिवालय के पास पहुँचे जिसका जिक्र अभी थोड़ी देर हुई भूतनाथ से कर चुके थे और जिसका नाम भूतनाथ ने अगस्तमुनि का आश्रम बतलाया था।

यह स्थान बहुत ही सुन्दर और सुहावना था और पहाड़ की तराई में कुछ ऊँचे की तरफ बढ़कर बना हुआ था। इस जगह दूर-दूर तक बेल के पेड़ बहुतायत के साथ लगे हुए थे और बेलपत्र की छाया से यह जगह बहुत ठंडी जान पड़ती थी। मंदिर यद्यपि बहुत बड़ा न था मगर एक खूबसूरत छोटी-सी चारदीवारी से घिरा हुआ था। आगे की तरफ एक मामूली सभामंडप और बीच में मूर्ति के आगे एक छोटा-सा कुंड बना हुआ था जिसमें पानी हरदम भरा रहता था। वह कुंड यद्यपि बहुत छोटा अर्थात् डेढ़ हाथ चौड़ा तथा लंबा और उसी अंदाज का गहरा था मगर उसके साफ और निर्मल जल से सैकड़ों आदमियों का काम चल सकता था। किसी पहाड़ी सोते का मुँह उसके अन्दर जरूर था जिसमें से जल बराबर आता और बह कर ऊपर की तरफ से निकलता जाता था। इस कुंड के विषय में लोग तरह-तरह की गप्पें उड़ाया करते थे जिसके लिखने की यहाँ कोई आवश्यकता नहीं।

प्रभाकर सिंह आकर इस मंदिर के सभामंडप में बैठ गए और भूतनाथ तथा गुलाबसिंह का इंतजार करने लगे। उन्होंने देखा कि भूतनाथ के शागिर्द ऐयारों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा है बल्कि इधर-उधर चलते-फिरते दिखाई दे रहे हैं।

संध्या हुआ ही चाहती थी जब गुलाबसिंह को लिए भूतनाथ वहाँ आ पहुँचा जहाँ प्रभाकर सिंह बैठे उन दोनों का इंतजार कर रहे थे। प्रभाकर सिंह को देखकर गुलाबसिंह ने प्रसन्नता प्रकट की और दो-चार मामूली बातचीत के बाद कहा

''भूतनाथ की जुबानी आपका हाल सुन कर मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ। आपने भूतनाथ को यह समझाने की कोशिश की थी कि यह अगस्तमुनि की मूर्ति बोलती है और इसकी जुबानी आपको इंदुमति का बहुत कुछ हाल मालूम हुआ है।''

प्रभाकर सिंह : निःसन्देह! मेरा कहना केवल आश्चर्य बढ़ाने के लिए नहीं है बल्कि इस विषय पर विश्वास दिलाने के लिए है, अब तुम आ गए हो तो अपने कानों से सुन लेना कि मूर्ति क्या कहती है, मुझे यह बात अकस्मात् मालूम हुई। मैं नहीं जानता था कि इस मूर्ति में ऐसे गुण भरे हुए हैं, मगर अफसोस इस बात का है कि यह मूर्ति रोज नहीं बोलती और न हर वक्त किसी के सवाल का जवाब का देती है। इसके बोलने का खास-खास दिन मुकर्रर है जिसका ठीक हाल मुझे मालूम नहीं है मगर इतना मैं जान गया हूँ कि बातचीत करते समय यह मूर्ति अंत में खुद बता देती है कि अब आगे किस दिन और किस समय बोलेगी। इसकी जुबानी सुनकर मैं कहता हूँ कि आज ग्यारह घड़ी रात जाने के बाद यह मूर्ति पुनः बोलेगी और इसके बाद पुनः रविवार के दिन बातचीत करेगी। आह, ईश्वर की लीला का किसी को भी अंत नहीं मिलता! मेरी अक्ल हैरान है और कुछ भी समझ में नहीं आता कि क्या मामला है?

गुलाबसिंहः निःसन्देह यह आश्चर्य की बात है! खैर अब जो कुछ होगा हम लोग देख ही सुन लेंगे परन्तु यह तो बताइए कि आप इस मूर्ति की जुबानी क्या-क्या सुन चुके हैं?

प्रभाकर सिंह : सो मैं अभी कुछ नहीं कहूँगा, थोड़ी ही देर की तो बात है सब्र करो, समय आना ही चाहता है, जो कुछ पूछना हो खुद इस मूर्ति से पूछ लेना। तब तक मैं जरूरी कामों से निपटकर संध्योपासना में लगता हूँ, अगर उचित समझें तो आप लोग भी निपट लीजिए।

भूतनाथ : मैं आपके लिए खाने-पीने की सामग्री लेता आया हूँ।

10

रात लगभग ग्यारह घड़ी के जा चुकी है। भूतनाथ, गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह उत्कंठा के साथ उस **(अगस्तमुनि की)** मूर्ति की तरफ देख रहे हैं। एक आले पर मोमबत्ती जल रही है जिसकी रोशनी से उस मंदिर के अन्दर की सभी चीजें दिखाई दे रही हैं। भूतनाथ और गुलाबसिंह का कलेजा उछल रहा है कि देखें अब यह मूर्ति क्या बोलती है।

यकायक कुछ गाने की आवाज आई, ऐसा मालूम हुआ मानो मूर्ति गा रही है, सब कोई बड़े गौर से सुनने लगे :

।। बिरह।।

सबहि दिन नाहिं बराबर जात।
कबहूँ कला बला पुनि कबहूँ कबहूँ करि पछितात।
कबहूँ राजा रंक पुनि कबहुँ ससि उड्गन दिखलात।।
पै करनी अपनी सब चाखैं, फल बोये को खात।
अनरथ करम छिपे नहिं कबहूँ, अन्त सबै खुल जात।।
सबहि दिन नाहिं बराबर जात।

इसके बाद मूर्ति इस तरह बोलने लगी

''आहा! आज मैं अपने सामने किस-किस को बैठा देख रहा हूँ? महात्मा प्रभाकर सिंह! धर्मात्मा गुलाबसिंह! मैं अभी धर्मात्मा कैसे कहूँ, क्या संभव है कि भविष्य में भी यह धर्मात्मा बना रहेगा?

''खैर जो कुछ होगा देखा जाएगा। हाँ, यह तीसरा आदमी मेरे सामने कौन था! वही गदाधरसिंह जिसने एकदम से अपनी काया पलट कर दी और एक सुन्दर नाम को छोड़ के भूतनाथ नाम से प्रसिद्ध होना पसन्द किया! आह, दुनिया में किसी पर विश्वास और भरोसा न करना चाहिए और न किसी की मित्रता पर किसी को घमंड करना चाहिए। क्या दयाराम के स्वप्न में भी इस बात का गुमान रहा होगा कि मैं अपने दोस्त गदाधरसिंह के हाथ से मारा जाऊँगा, दोस्त ही नहीं बल्कि गुलाम और ऐयार गदाधरसिंह!''

मूर्ति की यह बात सुनकर भूतनाथ का कलेजा दहल उठा और गुलाबसिंह तथा प्रभाकर सिंह आश्चर्य के साथ भूतनाथ का मुँह देखने लगे। मूर्ति ने फिर इस तरह कहना शुरू किया

''अफसोस! अपनी चूक का प्रायश्चित करना उचित न था कि ढंग बदल कर पुनः पाप में लिप्त होना। भूतनाथ, क्या तुम समझते हो कि इस दुष्कर्म का अच्छा फल पाओगे? क्या तुम समझते हो कि गुप्त रहकर पृथ्वी का आनन्द लूटोगे? क्या तुम समझते हो कि बेईमान दारोगा से मिलकर स्वर्ग की सम्पत्ति लूटोगे और मायारानी की बदौलत कोई अनमोल पदार्थ बन जाओगे? नहीं-नहीं, कदापि नहीं! गदाधरसिंह, तुम्हारी किस्मत में दुःख भोगना बदा है अस्तु भोगो, जो जी में आवे करो मगर ऐ गुलाबसिंह, तुम ऐसे दुष्ट का साथ क्यों दिया चाहते हो जो बिना कदम लगाए आसमान पर चढ़ जाने का हौंसला करता है, खुद गिरेगा और तुम्हें भी गिरावेगा, और ऐ प्रभाकर सिंह, तुम अब अपनी आँखों के आँसू पोंछ डालो, इंदुमति को बिलकुल भूल जाओ, अपने कातर हृदय को ढाँढस देकर वीरता का स्मरण करो, दुनिया में कुछ नाम पैदा करो। यदि तुम धर्म-पथ पर दृढ़ता के साथ चलोगे तो मैं बराबर तुम्हारी सहायता करता रहूँगा। मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम अवश्य उस पथ का अवलंबन करो जो मैं तुमसे उस दिन कह चुका हूँ, खबरदार, अपने भेद के मालिक आप बने रहो और किसी दूसरे को उसमें हिस्सेदार मंत बनाओ। क्या तुम्हें मुझसे और कुछ पूछना है?''

इतना कहकर मूर्ति चुप हो गई और प्रभाकर सिंह ने उससे यह सवाल किया :

प्रभाकर सिंह : मुझे यह पूछना है कि मैं किसी को अपना साथी बनाऊँ या न बनाऊँ?

मूर्ति : बनाओ और अवश्य बनाओ। पहिली बरसात के दिन एक आदमी से तुम्हारी मुलाकात होगी, उसे तुम अपना साथी बनाओगे तो शुभ होगा। अच्छा और कुछ पूछोगे?''

भूतनाथ : अब मैं कुछ पूछूँगा।

मूर्ति : पूछो क्या पूछते हो?

भूतनाथ : पहिले यह बताओ कि अब तुम किस दिन और किस समय बोलोगे?

मूर्ति : यदि तुम्हारी नीयत खराब न हुई और तुमने कोई उत्पात न मचाया तो इसी अमावस वाले दिन सोलह घड़ी रात बीत जाने के बाद हम पुनः बोलेंगे।

गुलाबसिंहः हमें भी कुछ पूछना है।

मूर्ति : तुम्हारी बातों का जवाब आज नहीं मिल सकता, हाँ यदि तुम चाहो तो आज के अट्ठारहवें दिन इसी समय यहाँ आ सकते हो परन्तु अकेले।

गुलाबसिंहः अच्छा तो अब यह बताइए कि हम भूतनाथ के मेहमान बने रहें या..

मूर्ति : नहीं, अगर अपनी भलाई चाहते हो तो दो पहर के अन्दर भूतनाथ का साथ छोड़ दो और प्रभाकर सिंह की आज्ञानुसार काम करो। बस अब कुछ मत पूछो।

इसके बाद मूर्ति ने बोलना बंद कर दिया। भूतनाथ, गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह ने कई तरह के सवाल किए मगर मूर्ति ने कुछ जवाब न दिया अस्तु तीनों आदमी मंदिर के बाहर निकले और सभा-मंडप में बैठकर यों बातचीत करने लगे :

गुलाबसिंहः क्यों भूतनाथ, यह तो हमें एक नई बात मालूम हुई है। मैं स्वप्न में भी नहीं जान सकता था कि दयाराम जी को तुमने मारा होगा! अफसोस!!

भूतनाथ : गुलाबसिंह, आश्चर्य की बात है कि तुम इतने बड़े होशियार होकर इस पत्थर की मूर्ति की बातों में फँस गए और जो कुछ उसने कहा उसे सच समझने लगे! इतना तक नहीं विचारा कि यह असंभव बात वास्तव में क्या है? निःसन्देह यह धोखे की टट्टी है और इसमें कोई अनूठा रहस्य है बल्कि यों कहना चाहिए कि यह कोई तिलिस्म है और इसका परिचालक **(इस समय जो भी हो)** जरूर हमारा दुश्मन है।

गुलाबसिंहः नहीं-नहीं भूतनाथ, अब तुम हमें धोखे में डालने की कोशिश मत करो और न अब हम लोग तुम्हारी बातों पर विश्वास ही कर सकते हैं। ऐसी आश्चर्यमय और अनूठी घटना का प्रभाव जैसा हम लोगों के ऊपर पड़ा उसे हमीं लोग जान सकते हैं।

भूतनाथ : खैर, तुम जानो, जो जी में आये करो और जहाँ चाहो चले जाओ, मैं तुम्हें अपने पास रहने के लिए जोर नहीं देता, मगर तुम दोस्त हो अस्तु निश्चिन्त रहो, मैं तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न दूँगा।

इसके बाद इन तीनों में किसी तरह की बातचीत न हुई, गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह पूरब की तरफ रवाना हुए और भूतनाथ ने पश्चिम की तरफ का रास्ता लिया।

11

ऊपर लिखी वारदात के तीसरे दिन उसी अगस्ताश्रम के पास आधी रात के समय हम एक आदमी को टहलते हुए देखते हैं। हम नहीं कह सकते कि यह कौन तथा किस रंग-ढंग का आदमी है, हाँ, इसके कद की ऊँचाई से साफ मालूम होता है कि यह औरत नहीं है बल्कि मर्द है मगर यह नहीं मालूम पड़ता कि अपनी पोशाक् के अन्दर यह किस ठाठ से है अर्थात् यह आदमी जिसने स्याह लबादे से अपने को अच्छी तरह छिपा रखा है सिपाहियों और बहादुरों की तरह के हर्बे-हथियारों से सजा हुआ है या चोरों की तरह संधियों और हत्थियों वगैरह से। जो हो, हमें इसके ब्यौरे से इस समय कोई मतलब नहीं, हमें सिर्फ इतना ही कहना है कि यह यद्यपि टहल कर अपना समय बिता रहा है मगर इसमें कोई शक नहीं कि अपने को हर तरह से छिपाए रखने की भी कोशिश कर रहा है। दिन का मुकाबला करने वाली चाँदनी यद्यपि अच्छी तरह छिटकी हुई है मगर उस अँधकार को दूर करने की शक्ति उसमें नहीं है जो इस समय पेड़ों के झुरमुट के अन्दर पैदा हो रहा है और जिससे उस टहलने वाले व्यक्ति को अच्छी सहायता मिल रही है। अगस्ताश्रम की तरफ घड़ी-घड़ी अटक कर देखने और आहट लेने से यह भी मालूम होता है कि वह किसी आने वाले की राह देख रहा है।

इसे टहलते हुए घंटा भर से ज्यादे हो गया और तब इसने दो आदमियों को आते और अगस्ताश्रम की तरफ जाते देखा ये दोनों कद के छोटे तथा ढाल-तलवार तथा तीर-कमान से सुसज्जित थे मगर इनकी पोशाक् के बारे में हम इस समय किसी तरह की निंदा या प्रशंसा नहीं कर सकते।

मालूम होता है कि वह टहलने वाला स्याहपोश इन्हीं दोनों आदमियों का इंतजार कर रहा था क्योंकि जैसे ही वे दोनों अगस्ताश्रम की चारदीवारी के अन्दर घुसे वैसे ही इसने उनका पीछा किया। उनके कुछ ही देर बाद यह स्याहपोश भी चारदीवारी के अन्दर जा पहुँचा मगर वहाँ उन दोनों पर निगाह न पड़ी। पहिले इसने मंदिर के चारों तरफ की परिक्रमा की और उन दोनों को ढूँढ़ा और जब पता न लगा तब मंदिर के अन्दर पैर रखा मगर वहाँ भी कोई न था।

हम पहिले कह आए हैं कि यह मंदिर बहुत छोटा और साधारण था अतएव इसके अन्दर किसी को खोजने में विलंब करना बेशक् पागलपन समझा जा सकता है मगर उस स्याहपोश ने इसका कुछ भी विचार न किया और खूब अच्छी तरह खोज डाला यहाँ तक कि उस छोटे-से कुंड में भी तलवार डाल कर जाँच लिया जिसमें हरदम पानी भरा रहता था।

उस स्याहपोश को बड़ा जी ताज्जुब हुआ और आश्चर्य के साथ सोचने लगा "वे दोनों आदमी कहाँ गायब हो गए! इस छोटे-से मंदिर में किसी तरह छिप नहीं सकते, इसके अतिरिक्त वहाँ विशेष अँधकार भी नहीं है क्योंकि सभा मंडप में चंद्रमा की चाँदनी जो आड़ होकर पहुँच रही है उसकी चमक से मंदिर के अन्दर का अंधकार भी इस योग्य नहीं रह गया है कि अपनी स्याह चादर के अन्दर भी किसी को छिपा सके, अस्तु यही कहना पड़ता है कि यहाँ की जमीन उन दोनों को खा गई। जो हो, इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह मंदिर मेरे दुश्मन का मुँह है। खैर कोई चिंता नहीं, अब मैं बाहर चलता हूँ क्योंकि गरमी से जी व्याकुल हो रहा है तिस पर भारी पोशाक् ने और भी तंग कर रखा है।"

इस तरह की बातें सोचता और कुछ बुदबुदाता हुआ वह आदमी मंदिर के बाहर निकला और फिर उसी जगह पेड़ों की झुरमुट और आड़ में जा पहुँचा जहाँ हम इसे पहले टहलते हुए देख चुके हैं। इस समय यहाँ एक आदमी और खड़ा है जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी और जिसे देखते ही उस स्याहपोश ने पूछा, "केम?" इसके जवाब में उसने कहा, "चहा।"

जवाब सुनते ही स्याहपोश ने अपने ऊपर से स्याह लबादा उतार कर उसके हवाले किया और कहा, "अब मैं इसे नहीं ओढ़ सकता क्योंकि इस गरमी में तकलीफ होने के सिवाय अब इसकी जरूरत भी न रही, मैं भूतनाथ की सूरत में अच्छा हूँ मुझे कोई पहिचानने वाला नहीं। केवल गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह के खयाल से ओढ़ लिया था सो उनके मिलने की अब कोई उम्मीद नहीं रही!"

दूसरे नकाबपोश ने यह लबादा ले लिया और जवाब में कहा, "मेरे लिए अब क्या आज्ञा होती है?"

पाठक अब समझ गए हों कि यह स्याहपोश वास्तव में भूतनाथ है अस्तु उसने अपने साथी नकाबपोश से कहा, ''तुम्हारी यहाँ कोई जरूरत नहीं रही, तुम जाओ जो कुछ मैं पहिले हुक्म दे चुका हूँ उसी के अनुसार काम करो, मैं जब यहाँ से जल्दी नहीं टल सकता क्यांकि इस मंदिर ने मुझे अपने जाल में फँसा लिया है।

नकाबपोश चला गया और भूतनाथ फिर उसी अँधकार में टहलने लगा। कुछ देर बाद उस मंदिर में अन्दर से दो आदमी बाहर निकले और दक्खिन की तरफ चल पड़े। हम नहीं कह सकते कि ये वे ही थे जो पहिले मंदिर में जाकर गायब हो गए थे अथवा कोई दूसरे।

भूतनाथ ने उन दोनों का पीछा किया मगर बड़ी कठिनता से अपने को छिपाता और उन्हें देखता हुआ जाने लगा क्योंकि चाँदनी उसके काम में बाधा डाल रही थी। लगभग आध कोस जाने के बाद वे दोनों एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ की जमीन पत्थर के बड़े-बड़े ढोकों से कुछ भयानक-सी हो रही थी उसी जगही खोह का एक मुहाना भी था जिसे भूतनाथ ने सहज ही में समझ लिया और यह इरादा कर लिया कि इन दोनों को यहाँ पर खोह के अन्दर घुसने के पहिले ही रोक लेना चाहिए, ताज्जुब नहीं कि खोह के अन्दर जाने पर ये फिर मेरे हाथ न लगें।

वे दोनों आदमी खोह के मुहाने पर पहुँच कर रुके और आपस में कुछ बातें करने लगे। उसी समय भूतनाथ उनके पास जाकर खड़ा हो गया और यह देखकर कि उसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है बोला, ''तुम दोनों कौन हो?''

एक : तुम्हें इससे मतलब?

भूतनाथ : मतलब यही है कि यह स्थान हमारी हुकूमत के अन्दर है और हम जानना चाहते हैं कि तुम दोनों कौन हो और तुम्हारे उस अगस्ताश्रम के मंदिर जाने-आने का कारण क्या है?

एक : न तो इस सरजमीन के तुम मालिक ही हो और न ही तुम्हें कुछ पूछने का कोई अधिकार ही है। जिस तरह एक बेईमान और नमक हराम ऐयार बेइज्जती के साथ अपनी जिंदगी बिता सकता है उसी तरह तुम भी अपनी जिंदगी के दिन बिताने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकते। हम खूब जानते हैं कि तुम्हारा नाम गदाधरसिंह है और अब अपनी असलियत को छिपाते हुए तुम भूतनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ चाहते हो!

भूतनाथ : **(गुस्से से पेच खाकर)** मालूम होता है कि तुम दोनों की शामत आई है जिससे मेरी बातों के साफ-साफ जवाब न देकर जली-कटी बातें करते और मुझे गदाधरसिंह के नाम से संबोधन करते हो। मैं नहीं जानता कि गदाधरसिंह किस चिड़िया का नाम है पर संभव है कि यह कोई भेद की बात हो, इसलिए मैं गदाधरसिंह के बारे में कुछ नहीं पूछता और एक दफे तुम्हारी इस ढिठाई को माफ करके फिर कहता हूँ कि तुम दोनों आदमी अपना परिचय दो नहीं तो..

एक : नहीं तो क्या, तुम हमारा कर ही क्या सकते हो? पहिले तुम अपनी जान बचाने का बंदोबस्त तो कर लो। हम लोग तुम्हारी झूठी बातों से धोखा नहीं खा सकते, बस चले जाओ और अपना काम करो, हम लोगों का पीछा करके तुम अच्छा नतीजा नहीं निकाल सकते।

भूतनाथ खिलखिलाकर हँस पड़ा और उसने फिर पूछा।

भूतनाथ : मैं समझता हूँ कि तुम दोनों मर्द नहीं बल्कि औरत हो। खैर इससे भी कोई मतलब नहीं। मैं वह आदमी नहीं हूँ जो किसी तरह का मुलाहिजा कर जाऊँ, इस तलवार को देख लो और जल्द बताओ कि तुम कौन हो!

इतना कहकर भूतनाथ ने म्यान से तलवार निकाल ली मगर उन दोनों का दिल फिर भी न हिला और एक ने पुनः कड़क कर भूतनाथ से कहा ''चल दूर हो मेरे सामने से। तेरी निर्लज्ज तलवार से हम डर नहीं सकते! समझ ले कि तू इस ढिठाई की सजा पावेगा और पछतावेगा।''

इसके जवाब में भूतनाथ ने हाथ बढ़ाकर एक की कलाई पकड़ ली, मगर साथ ही इसके दूसरे नकाबपोश ने भूतनाथ पर छुरी का वार किया जिसके लिए शायद वह पहिले ही से तैयार था। वह छुरी यद्यपि बहुत बड़ी न थी मगर भूतनाथ उसकी चोट खाकर सम्हल न सका। छुरी भूतनाथ के बगल में चार अँगुल धँस गई और साथ ही भूतनाथ यह कहता हुआ जमीन पर गिर पड़ा "ओफ, यह जहरीली छुरी...।"

12

दिन पहर-भर से ज्यादे चढ़ चुका था जब भूतनाथ की बेहोशी दूर हुई और वह चैतन्य होकर ताज्जुब के साथ चारों तरफ निगाहें दौड़ाने लगा। उसने अपने को एक ऐसा कैदखाने में पाया जिसमें से उसकी हिम्मत और जवाँमर्दी उसे बाहर नहीं कर सकती थी। यद्यपि वह कैदखाना बहुत छोटा और अँधकार से खाली था मगर तीन तरफ से उसकी दीवारें बहुत मजबूत और संगीन थीं तथा चौथी तरफ लोहे का मजबूत जंगला लगा हुआ था जिसमें आने के लिए छोटा दरवाजा भी था जो इस समय बहुत बड़े ताले से बंद था। इस कैदखाने के अन्दर बैठा-बैठा भूतनाथ अपने सामने के दृश्य बहुत अच्छी तरह देख सकता था। थोड़ी देर इधर-उधर निगाह दौड़ाने के बाद वह उठ खड़ा हुआ और जंगले के पास आकर बड़े गौर से देखने लगा। उसके सामने वही सुन्दर जमीन और खुशनुमा घाटी थी जिसका हाल हम ऊपर बयान कर चुके हैं, जो कला और बिमला के कब्जे में है, अथवा जहाँ की सैर अभी-अभी प्रभाकर सिंह कर आए हैं। बीच वाले सुन्दर कमरे को भूतनाथ बड़े गौर के साथ देख रहा था क्योंकि वह कैदखाना जिसमें भूतनाथ कैद था पहाड़ की ऊँचाई पर बना हुआ था जहाँ से इस घाटी का हर एक हिस्सा साफ-साफ दिखाई दे रहा था। उसकी चालाक और चंचल निगाहें इस बात की जाँच कर रही थीं कि वह किस जगह पर कैद है और उसको कैद करने वाला कौन है।

इस घाटी में न कभी वह आया था इसे कभी देखा था और न इसका हाल ही कुछ जानता था, अतएव उसे किसी तरह का गुमान भी न हुआ कि यह उसके पड़ोस की घाटी है अथवा उसके पास ही में उसका निजी मकान है जहाँ वह रहता है।

थोड़ी देर तक बड़ी गौर से इधर-उधर देखने के बाद भूतनाथ हताश होकर बैठ गया और तरह-तरह की बातें सोचने लगा। उसे इस बात का बहुत ही दुःख था कि उसके हरबे छीन लिए गए थे और उसका ऐयारी का बटुआ भी उसके पास न था मगर उसके उस जख्म में कोई विशेष तकलीफ न थी जिसकी बदौलत वह बेहोश होकर कैदखाने की हवा खा रहा था।

दोपहर की टनटनाती धूप भूतनाथ की आँखों के सामने चमक रही थी। भूख तो कोई बात नहीं मगर प्यास के मारे उसका गला चटका जाता था। वह सोच रहा था कि उसे दाना-पानी देने के लिए भी कोई आवेगा या वह भूखा ही पिंजरे में बंद रहेगा क्योंकि अभी तक किसी आदमी की सूरत उसे दिखाई न पड़ी थी।

थोड़ी देर और बीत जाने के बाद एक औरत वहाँ आई जिसके पास भूतनाथ के लिए खाने-पीने का सामान था। उसने वह सामान बड़ी होशियारी से जंगले के अन्दर खास रास्ते से जो इसी काम के वास्ते बना हुआ था रख दिया और कहा, ''लो गदाधरसिंह, तुम्हारे लिए खाने-पीने का सामान आ गया है। इसे खाओ और मौत का इंतजार करो।''

भूतनाथ : **(पानी का लोटा उठाकर)** हाँ, ठीक है, बस मेरे लिए यही काफी है, मैं सिर्फ पानी ही पीकर मौत का इंतजार करूँगा क्योंकि जब तक मैं जंगल-मैदान और स्नान इत्यादि कर्म न कर लूँ भोजन नहीं कर सकता।

औरत : खैर तुम्हारी खुशी, मेरा जो काम था उसे मैं पूरा कर चुकी। मगर मैं अपनी तरफ से यह पूछती हूँ कि तुम कै दिन तक इस तरह गुजारा कर सकोगे? **(कुछ सोचकर)** नहीं, मेरा यह सवाल करना ही वृथा है क्योंकि मैं खूब जानती हूँ कि दो-तीन दिन के अन्दर ही तुम्हारा फैसला हो जाएगा और तुम इस दुनिया से उठा दिए जाओगे।

भूतनाथ : अगर ऐसा ही है तो यह दो-तीन दिन का विलंब भी क्यों?

औरत : इसलिए कि तुम्हारी मौत का ढंग निश्चय कर लिया जाय।

भूतनाथ : ढंग कैसा मैं नहीं समझा!

औरत : मतलब यह है कि तुम एकदम से नहीं मार डाले जाओगे बल्कि तरह-तरह की तकलीफ देकर तुम्हारी जान ली

जाएगी, अस्तु यह निश्चय किया जा रहा है कि किस तरह की तकलीफ तुम्हारे लिए उचित है।

भूतनाथ : ये बातें कौन तजवीज कर रहा है?

औरत : हमारे मालिक लोग।

भूतनाथ : मालूम होता है कि तुम्हारे मालिक लोग मर्द नहीं हैं हींजड़े हैं या औरत। ऐसे विचार मर्दो के नहीं होते!

औरतः बेशक् ऐसा ही है, हमारे मालिक औरत हैं।

भूतनाथ : **(आश्चर्य से)** औरत है!!

औरत : हाँ औरत।

भूतनाथ : मगर मैंने किसी औरत के साथ कभी दुश्मनी नहीं कि बल्कि कोई मर्द भी ऐसा न मिलेगा जो मुझे अपना दुश्मन बतावे और कहे कि गदाधरसिंह ने मुझे बर्बाद कर दिया।

औरत : जो हो, इस विषय में मैं नहीं कह सकती, आखिर कोई बात होगी ही तो!!

भूतनाथ : क्या तुम बता सकती हो कि तुम्हारी मालकिन का नाम क्या है अथवा वह कौन है? तुम यकीन रखो कि इसके बदले में मैं तुम्हें इतनी दौलत दूँगा कि कभी तुमने आँखों से न देखी होगी।

औरत : मैं ऐसा नहीं कर सकती कि तुम्हें इस कैद से छुड़ा दूँ और तब तुम मुझे बेअंदाज दौलत देकर मालामाल कर दो, इसके अतिरिक्त इस कैदखाने की ताली खुद मालकिन के कब्जे में है।

भूतनाथ : नहीं, नहीं, मैं यह नहीं कहता, तुम मुझे इस कैदखाने से बाहर कर दो।

औरत : अगर ऐसा नहीं है तो तुम मुझे किस काम के लिए और कहाँ से दौलत दे सकते हो!

भूतनाथ : मेरे मकान में जो कुछ दौलत है उसका तो कोई ठिकाना ही नहीं, मगर मेरे पास ही हरदम बटुए में दो-चार लाख रुपए की जमा मौजूद रहती है। तुम कह सकती हो कि इस समय तो तुम्हारे पास तुम्हारा बटुआ भी नहीं है..

औरत : हाँ-हाँ, मैं यही कहने वाली थी, बल्कि यह भी समझ रखना चाहिए कि इस समय वह बटुआ जिसके कब्जे में होगा उसने वह रकम भी जरूर निकाल ली होगी।

भूतनाथ : **(बनावटी हँसी के साथ)** नहीं नहीं, इसका तो तुम गुमान ही न करो कि वह रकम निकाली गई होगी, क्योंकि उसके कोई जवाहिरात की डिबिया नहीं है या कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे कोई देखते ही दौलत समझ ले, बल्कि उस बटुए में कोई ऐसी चीज है जिसे मेरे सिवाय कोई बता नहीं सकता कि यह दौलत है और जो किसी अनजान की निगाह में बिलकुल रद्दी चीज है, बल्कि यों समझो कि जहाँ वह दौलत रखी हई है वहाँ की ताली उस बटुए में है जिसकी कलई मेरे सिवाय कोई खोल नहीं सकता और न मेरे बताए बिना कोई पा ही सकता है। वह दौलत जो लगभग चार-पाँच लाख रुपये की होगी मैं सिर्फ इतने ही काम के बदले में दे देना चाहता हूँ कि मेरा बटुआ मुझे ला दिया जाय और बता दिया जाय यह स्थान किसका है और मैं किसका कैदी हूँ। मैं समझता हूँ कि मैं जरूर मार ही डाला जाऊँगा, अस्तु ऐसी अवस्था में अगर वह दौलत किसी नेक, रहमदिल और गरीब के काम आ जाय तो इससे बढ़कर खुशी की बात और क्या हो सकती है।

अहा, दुनिया में रुपया भी एक अजीब चीज है! इसकी आँच को सह जाना हँसी-खेल नहीं है। इसे देखकर जिसके मुँह

में पानी न भर आवे समझ लो कि वह पूरा महात्मा है, पूरा तपस्वी है और सचमुच का देवता है। इस कम्बख्त की बदौलत बड़े-बड़े घर सत्यानाश हो जाते हैं, भाई-भाई में बिगाड़ हो जाता है, दोस्तों की दोस्ती में बट्टा लग जाता है, जोरू और खसम का रिश्ता कच्चे धागे से भी ज्यादे कमजोर होकर टूट जाता है, और ईमानदारी की साफ और सफेद चादर में ऐसा धब्बा लग जाता है जो किसी तरह छुड़ाए नहीं छुटता, इसे देखकर जो धोखे में न पड़ा, इसे देखकर जिसका ईमान न टला, और इसे जिसने हाथ-पैर का मैल समझा, बेशक् कहना पड़ेगा कि उस पर ईश्वर की कृपा है और वही मुक्ति का वास्तविक पात्र है।

इसकी आँच के सामने एक लौंडी का दिल भला कब तक कड़ा रह सकता था? यद्यपि उस औरत ने अपने चेहरे के उतार-चढ़ाव को बहुत सम्हाला फिर भी भूतनाथ जान ही गया कि यह लालच के फँदे में फँस गई।

भूतनाथ : सच तो यों है कि उस दौलत को मैं बहुत ही सस्ते दाम में बल्कि मुफ्त मोल बेच रहा हूँ, अब भी अगर तुम न खरीदो तो मैं जोर देकर कहूँगा कि तुमसे बढ़कर बदनसीब इस दुनिया में दूसरा कोई नहीं है। क्या वह दौलत कम है? क्या उसे पाकर फिर भी किसी को नौकरी की जरूरत रह सकती है? क्या उसकी बदौलत सुख का सामान इकट्ठा होने में किसी तरह की त्रुटि हो सकती है? बिलकुल नहीं फिर सोच-विचार करना क्यों और विलंब कैसा? केवल हमारा ऐयारी का बटुआ ला देना और बता देना कि मैं किसका कैदी हूँ और इस स्थान का मालिक कौन है। सिर्फ इतने ही के बदले में अभी-अभी वह रकम तुम्हें मिल सकती है सो भी ऐसी कि उसे कोई छीन भी न सकेगा।

औरत : तुम यकीन जानो कि मैं एक अमीर की लौंडी हूँ। मेरी मालकिन बेअंदाज दौलत लुटाने वाली है, और उसकी बदौलत मुझे किसी बात की परवाह नहीं है...

भूतनाथ : **(बात काटकर)** मगर लौंडीपन का तौक गले में जरूर पड़ा हुआ है। स्वतंत्र नहीं, लापरवाह और बेफिक्र नहीं।

औरत : हाँ, यह सच है मगर उनकी नौकरी मुझे गढ़ाती नहीं और वे मुझसे बहिनापे का-सा बर्त्ताव करती हैं, मगर फिर भी तुम खुशी से दोगे तो मैं उस दौलत को जरूर ले लूँगी लेकिन सिर्फ ऐसी अवस्था में जब कि मुझ पर नमकहरामी का धब्बा न लग सके।

ग्रंथकर्ता : सत्यवचन! नमकहराम!! भला ऐसी भी कोई बात है!!

भूतनाथ : नहीं नहीं, तुम पर नमकहरामी का धब्बा नहीं लग सकेगा और तुम्हारी मालकिन का भी कुछ नुकसान नहीं होगा क्योंकि मैं इस कैदखाने से छूटकर भाग नहीं जाना चाहता, केवल इतना ही जानना चाहता हूँ कि मैं किसकी कैद में हूँ और अपना बटुआ केवल इतने ही के लिए माँगता हूँ कि उस खजाने की ताली निकालकर तुम्हें दे दूँ और तुम्हें बता दूँ कि वह खजाना कहाँ है।

औरत : अच्छा पहिले मैं बटुआ लाकर तुम्हें दे दूँ तब पीछे बता दूँगी कि तुम किसके कैदी हो, सब्र करो और दिन बीत जाने दो, देखो वह दूसरी लौंडी आती है, अब मैं विदा होती हूँ।

इतना कहकर वह लौंडी भूतनाथ के दिल में खुशी और उम्मीद का पौधा जमाकर चली गई।

भूतनाथ बड़ा ही कट्टर और दुःख-सुख बर्दाश्त करने वाला ऐयार था। कठिन से कठिन समय आ पड़ने पर भी उसकी हिम्मत टूटती न थी और वह अपनी कार्रवाई से बाज नहीं आता था।

खाने-पीने का सामान जो कुछ उसके सामने आ गया था उसमें से पानी के सिवाय बाकी सब कुछ ज्यों-का-त्यों पड़ा रह गया। भूतनाथ को सिर्फ इस बात का इंतजार था कि दिन बीते, अँधेरा हो और वह लौंडी आवे, इस बीच में बारी-बारी से आठ-दस लौंडियाँ उसके पास आईं, उन्होंने तरह-तरह की बातें कीं और खाने के लिए समझाया बल्कि यह तक कहा कि तुम्हारे मैदान जाने और नहाने का भी सामान किया जा सकता है मगर भूतनाथ ने कुछ भी न माना बल्कि उनकी

बातों का जवाब तक न दिया और वे सब निराश होकर लौटती गईं।

दिन बीत गया, संध्या हुई और अँधकार ने अपना दखल जमाना शुरू किया। दो घंटे रात जाते-जाते तक निशादेवी का शून्यमय राज्य हो गया। उस कैदखाने के पास जिसमें भूतनाथ बंद था। पेड़ों की बहुतायत होने के कारण इतना अँधकार था कि किसी का आना-जाना दूर से मालूम नहीं हो सकता था।

भूतनाथ जंगले का सीखचा पकड़े हुए खड़ा कुछ सोच रहा था कि वही लौंडी जिसके ऊपर भूतनाथ का मोहिनी मंत्र चल चुका था और जो लालच के सुनहरे जंगले के सुराख। से हाथ बढ़ाकर धीरे से बोली, ''लो गदाधरसिंह, यह तुम्हारा बटुआ हाजिर है। इसके लिए मुझे बहुत तकलीफ उठानी पड़ी।''

भूतनाथ : बेशक्, हमारा और तुम्हारा दोनों का काम चल गया। **(संभलकर, क्योकि उसके मुँह से हमारा नाम निकल गया यह शब्द भी खुशी के मारे निकल आये थे जो कि वह निकालना नहीं चाहता था)** मेरा काम तो सिर्फ इतना ही कि मुझे अपने कैद करने वालों का पता लग जाएगा मगर तुम अब हर तरह से प्रसन्न और स्वतंत्र हो जाओगी।

इतना कहकर भूतनाथ ने बटुआ उसके हाथ से ले लिया और कहा, ''क्या इसमें मेरा सामान ज्यों-का-त्यों पड़ा हुआ है?''

लौंडी : बेशक्।

भूतनाथ : तब मैं रोशनी करके देखूँ और वह ताली निकालूँ?

लौंडी : नहीं नहीं, रोशनी करने का मौका नहीं है, जो कुछ तुम्हें करना है अंधेरे ही में करो और जो कुछ निकालना है उसे टटोलकर निकालो, मैं तुम्हें फिर भी विश्वास दिलाती हूँ कि तुम्हारी सब चीजें इसमें ज्यों-की-त्यों रखी हैं।

भूतनाथ : खैर कोई चिंता नहीं, मैं सब काम अँधेरे ही में कर सकूँगा, अगर मेरी चीजें ज्यों-की-त्यों रखी हैं और इधर-उधर नहीं की गई तो मुझे रोशनी की कोई भी जरूरत नहीं है। अच्छा अब वह असल काम हो जाना चाहिए अर्थात् मुझे मालूम हो जाना चाहिए कि मैं किसका कैदी हूँ।

लौंडी : हाँ मैं बताती हूँ **(कुछ सोच कर)** मगर मैं फिर सोचती हूँ कि यह काम मेरे लिए बिलकुल ही अनुचित होगा, मालिक का नाम तुम्हें बता देना निःसन्देह मालिक के साथ दुश्मनी करना है।

भूतनाथ : यह सोचना तुम्हारी बुद्धिमानी नहीं है बल्कि बेवकूफी है, हाँ यदि मैं स्वतंत्र होता और मैदान में तुमसे मुलाकात हुई होती तो तुम्हारा यह सोचना कुछ उचित भी हो सकता था। तुम देख रही हो कि मैं किस अवस्था में हूँ और मेरी तकदीर में क्या लिखा हुआ है। फिर भी इस समय कर ही क्या सकता हूँ, सोचो तो..

लौंडी : हाँ, एक तौर पर तुम्हारा कहना भी ठीक है, अच्छा मैं बताए देती हूँ कि तुम्हारा दुश्मन कौन है और तुम्हें किसने कैद किया।

भूतनाथ : बस मैं इतना ही सुनना चाहता हूँ।

लौंडी : तुम्हें उसी ने कैद किया है जिसके पति को तुमने बेईमानी और नमकहरामी करके बड़ी निर्दयता के साथ बेकसूर मारा है। दयाराम को मार कर तुम इस दुनिया में सुखी नहीं हो सके और न भविष्य में तुम्हारे सुखी होने की आशा है।

भूतनाथ : **(चौंक कर ताज्जुब के साथ)** है, क्या दयाराम की दोनों स्त्रियाँ जीती हैं? और उनकी इस बात का विश्वास है कि दयाराम को मैंने ही मार डाला है।

लौंडी : हाँ, वे दोनों जीती हैं, और उन्हें इस बात का विश्वास है।

भूतनाथ : मगर यह बात सच नहीं है, अपने प्यारे मित्र दयाराम को मैंने नहीं मारा बल्कि किसी दूसरे ही ने मारा है।

लौंडी : खैर इन बातों से तो मुझे कोई संबंध नहीं, मैं तो लौंडी ठहरी, जो कुछ सुनती हूँ वही जानती हूँ!!

भूतनाथ : अच्छा-अच्छा, मुझे इन बातों से कुछ फायदा भी नहीं है, बस विश्वास इसी बात का हो जाना चाहिए कि तुम सच कहती हो और वास्तव में दयाराम की दोनों स्त्रियाँ जीती हैं। मुझे खूब याद है कि उनके मर जाने की खबर बड़ी सच्चाई के साथ उड़ी थी और उनके क्रियाकर्म में बहुत ज्यादा रुपया खर्च किया गया था जिसे मैं निजीतौर पर बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। इस बारे में तुम मुझे क्योंकर धोखा दे सकती हो!!

लौंडी : तुम जो चाहो समझो और कहो, मैं तुमसे बहस करने के लिए नहीं आई हूँ और न ही रहस्यों को जानती हूँ, बात जो सच है वही कह दी है।

भूतनाथ : मगर मुझे विश्वास नहीं आता।

लौंडी : विश्वास नहीं आता तो जाने दो।

भूतनाथ : ऐसी अवस्था में मैं इनाम भी नहीं दे सकता।

लौंडी : मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है।

भूतनाथ : अच्छा तो जाओ अपना काम देखो।

लौंडी : बटुआ मुझे वापस कर दो, जहाँ से मैं लाई हूँ वहाँ रख आऊँ और बदनामी से बचूँ।

भूतनाथ उस लौंडी से बातें भी करता जाता था और अपने बटुए में से जिसे लौंडी ने ला दिया था अँधेरे में टटोल-टटोल कर कुछ निकालता भी जाता था जिसकी खबर उस लौंडी को कुछ भी न थी और न अँधकार के कारण वह कुछ देख ही सकती थी। अस्तु लौंडी की बात का भूतनाथ ने पुनः यों उत्तर दिया

भूतनाथ : बदनामी से तो तुम किसी तरह बच सकती हो, अगर मैं यह बटुआ तुम्हें वापस न दूँ तो तुम क्या करोगी?

लौंडी : मैं खूब चिल्लाऊँगी कि किसी लौंडी ने यह बटुआ लाकर भूतनाथ को दे दिया है।

भूतनाथ : लेकिन लोगों के इकट्ठा हो जाने पर मैं यही कह दूँगा कि इसी लौंडी ने लाकर दिया है।

लौंडी : मगर इस बात का किसी को विश्वास न होगा।

भूतनाथ : **(हँस कर)** मालूम होता है कि तुम विश्वासपात्र समझी जाती हो, खैर तुम नहीं तो कोई दूसरी तुम्हारी साथिन पकड़ी जाएगी।

लौंडी : जो होगा देखा जाएगा।

भूतनाथ : मगर नहीं, ये मैं ऐसा बेईमान नहीं हूँ, लो यह बटुआ देता हूँ, जहाँ से तुम लाई हो रख आओ। क्या कहूँ, मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास ही नहीं होता, नहीं तो मैं यह खजाना जरूर तुम्हें दे देता।

इतना कह कर भूतनाथ ने वह बटुआ लौंडी की तरफ बढ़ाया। उसने जिस तरह दिया था उसी तरह ले लिया और यह

कहती वहाँ से चली गई, ''बुरे लोगों से बातचीत करना भी बुरा ही है, इस काम के लिए मुझे जिंदगी-भर पछताना पड़ेगा।''

जब लौंडी कुछ दूर चली गई तो भूतनाथ ने धीरे-से यह जवाब दिया जिसे वह खुद ही सुन सकता था ''तुम्हारे लिए चाहे जो हो मगर मेरा काम निकल ही गया। अब मैं इस पेचीले मामले की गुत्थी अच्छी तरह सुलझा लूँगा।''

भूतनाथ ने बात करते-करते उस बटुए में से जो कई चीजें निकाल ली थीं उनमें कुछ शीशियाँ भी थीं जिनमें किसी तरह का अर्क था। एक शीशी का अर्क किसी ढंग से भूतनाथ ने कैदखाने के कई सींखचों की जड़ में लगाया और उसके कुछ देर बाद दूसरी शीशी का अर्क भी उसी जगह पर लगाया जिससे उतनी जगह का लोहा गल कर मोमबत्ती की तरह हो गया और भूतनाथ ने उसे बड़ी आसानी से हटाकर अपने निकलने लायक रास्ता बना लिया। बात-की-बात में भूतनाथ कैद खाने के बाहर हो गया और मैदान की हवा खाने लगा।

भूतनाथ कैदखाने के बाहर हो गया सही, मगर उसके लिए इस घाटी से बाहर हो जाना बड़ा ही कठिन था। एक तो अँधेरी रात दूसरे पहाड़ की ढालवीं और अनगढ़ ढोकों वाली पथरीली जमीन, तिस पर पगडंडी और रास्ते का कुछ पता नहीं। मगर खैर जो होगा देखा जाएगा, भूतनाथ को इन बातों की कुछ परवाह न थी।

अब हम थोड़ा-सा हाल उस लौंडी का बयान करेंगे जो भूतनाथ के हाथ से बटुआ वापस लेकर चली गई थी।

उसे अपने किये पर बड़ा ही पछतावा था। उसे इस बात का बड़ा ही दुःख था कि उसने भूतनाथ से अपने मालिकों का नाम बता दिया जो अपने को बहुत ही छिपाकर इस घाटी में रहती थीं। अब वह इस बात को खूब समझने लगी कि अगर भूतनाथ किसी तरह छूटकर निकल गया तो मेरे इस कर्म का बहुत ही बुरा नतीजा निकलेगा और भेद खुल जाने के कारण मेरे मालिकों को सख्त तकलीफ उठानी पड़ेगी। वह यही सोचती जा रही थी कि मैंने बहुत ही बुरा किया जो लालच में पड़ कर अपने बेकसूर मालिकों के साथ ऐसी बेईमनी का बर्त्ताव किया! अब क्या किया जाय और मैं इस पाप का क्या प्रायश्चित करूँ?

साथ ही इसके उसने यह भी सोचा कि भूतनाथ का यह बटुआ कुछ हल्का मालूम पड़ता है। इसमें अब वह वजन नहीं है जो पहिले था जब मैं लाई थी। मालूम होता है, भूतनाथ ने अँधेरे में टटोलकर अपने मतलब की चीज निकाल ली। अपने हाथ की रखी हुई चीज निकालने के लिए बुद्धिमान आदमी को रोशनी की जरूरत नहीं पड़ती। भूतनाथ ने बड़ी चालाकी की, अपना काम कर लिया और मुझे बेवकूफ बना कर विदा किया! मैं ही ऐसी कमबख्त थी जो उसके फँदे में आ गई, अब मुझे जरूर अपने इस पाप का प्रायश्चित्त करना पड़ेगा!!

इसी तरह की बातें सोचती वह लौंडी वहाँ से चली गई।

13

रात आधी से ज्यादे बीत जाने पर भी कला, बिमला और इंदुमति की आँखों में नींद नहीं है। न मालूम किस गंभीर विषय पर ये तीनों विचार कर रही हैं! संभव है कि भूतनाथ के विषय ही में कुछ विचार कर रही हों, अस्तु जो कुछ हो इनकी बातचीत सुनने से मालूम हो जाएगा।

इंदुमति : **(बिमला की तरफ देख कर)** बहिन, जब इस बात का निश्चय हो गया कि तुम्हारे पति को गदाधरसिंह **(भूतनाथ)** ने मार डाला है तब उसके लिए बहुत बड़े जाल फैलाने और सोच-विचार करने की जरूरत ही क्या है? जब वह कमबख्त तुम्हारे कब्जे में आ गया तो उसे मार कर सहज ही में बखेड़ा तै करो!

बिमला : **(ऊँची साँस लेकर)** हाय बहिन, तुम क्या कहती हो? इस कमीने को यों-ही सहज में मार डालने से क्या मेरे दिल की आग बुझ जाएगी? क्या कहा जाएगा कि मैंने इसे मार कर अपना बदला ले लिया? किसी को मार डालना और बात है और बदला लेना और बात है। इसने मेरे दिल को जो कुछ सदमा पहुँचाया है उससे सौ गुना ज्यादे दुःख और इसे हो तब मैं समझूँ कि मैंने कुछ बदला लिया।

इंदुमति : बहिन, तुम खुद कह चुकी हो कि यह बहुत बुरी बला है अस्तु यदि यह तुम्हरे कब्जे से निकल गया या तुम्हारे असल भेद की इसे खबर हो गई तो बहुत बुरा हो जाएगा।

बिमला : बल्कि अनर्थ हो जाएगा। तुम्हारा कहना बहुत कठिन है, मगर उसे हमारा भेद कुछ भी मालूम नहीं हो सकता और न यहाँ से निकल कर भाग ही जा सकता है।

इंदुमति : ईश्वर करे ऐसा ही हो मगर..

कला : कल इन्द्रदेव जी यहाँ आएगे, उनसे राय करके कोई-न-कोई कार्रवाई बहुत जल्दी हो जाएगी।

बिमला : मैं सोच रही हूँ कि तब तक उसकी **(पड़ोस वाली)** घाटी पर कब्जा कर लिया जाय, उसका सदर दरवाजा जिधर से वे लोग आते-जाते हैं बंद कर दिया जाय, उसके आदमी सब मार डाले जायें और उसका माल-असबाब सब लूट लिया जाय और इन बातों की खबर भूतनाथ को भी दे दी जाएँ।

इंदुमति : बहुत अच्छी बात है।

बिमला : और इतना काम मैं सहज ही में कर सकूँगी।

इंदुमति : सो कैसे?

बिमला : तुम देखती रहो, सब काम तुम्हारे सामने ही तो होगा।

इंदुमति : हाँ, कल ही इस काम को करके छुट्टी पा लेना चाहिए जिससे इन्द्रदेव जी जाएँ तो उनके दिल को भी ढाढस पहुँचे।

बिमला : कल नहीं आज बल्कि इसी समय उस घाटी का रास्ता बंद कर दिया जाय जिसमें लोग भाग कर बाहर न चले जाएँ।

कला : ऐसा हो जाय तो बहुत अच्छी बात है, मगर दूसरे के घर में तुम इस तरह की कार्रवाई..

बिमला : **(मुसकुराकर)** नहीं बहिन, तुम व्यर्थ इतना सोच कर रही हो। बात यह है कि जिस तरह यह स्थान और घाटी

जिसमें हम लोग रहती हैं इन्द्रदेव जी के अधिकार में है, उसी तरह वह घाटी भी जिसमें भूतनाथ रहता है इस घाटी का एक हिस्सा होने के कारण इन्द्रदेव जी के अधिकार में है। यह दोनों घाटी एक ही हैं, या यों कहो कि एक ही मान का यह जनाना हिस्सा और वह मर्दाना हिस्सा है और इसलिए इन दोनों जगहों का पूरा-पूरा भेद इन्द्रदेव जी को मालूम है और उन्होंने जो कुछ भी मुझे बताया है मैं जानती हूँ, इस बात की खबर भूतनाथ को कुछ भी नहीं है। यह घाटी जिसमें मैं रहती हूँ हमेशा बंद रहती थी मगर उस घाटी का दरवाजा बराबर न जाने क्यों खुला ही रहता था, शायद इसका सबब यह हो कि उस घाटी में कोई जोखिम की चीज नहीं है और न कोई अच्छी इमारत ही है, अस्तु भूतनाथ यह भी नहीं जानता कि उस घाटी का दरवाजा कहाँ है तथा क्योंकर खुलता और बंद होता है या इस स्थान का कोई मालिक भी है या नहीं। भूतनाथ को घूमते-फिरते इत्तिफाक से या और किसी वजह से वह घाटी मिल गई और उसने उसे अपना घर बना लिया और जब यह खबर इन्द्रदेव जी को और मुझको मालूम हुई तब उन्होंने मेरी इच्छानुसार यह स्थान मुझे देकर यहाँ के बहुत से भेद बता दिए। बस अब मैं समझती हूँ कि तुम्हें मेरी बातों का तत्व मालूम हो गया होगा।

इंदुमति : हाँ अब मैं समझ गई, ऐसी अवस्था में तम जो चाहो सो कर सकती हो।

बिमला : अच्छा तो मैं जाती हूँ और जो कुछ सोचा है उस काम को ठीक करती हूँ।

इतना कहकर बिमला उठ खड़ी हुई और इंदुमति तथा कला को उसी जगह बैठे रहने की ताकीद कर घर के बाहर निकलने लगी, मगर इंदु ने साथ जाने के लिए जिद्द की और बहुत कुछ समझाने पर भी न मानी, लाचार बिमला इंदु को साथ ले गई और कला को उसी जगह छोड़ गई।

भूतनाथ का साथ छोड़कर प्रभाकर सिंह के इस घटी आने का हाल हमारे पाठक भूले न होंगे। उन्हें याद होगा कि भूतनाथ की घाटी के अन्दर जाने वाली सुरंग के बीच में एक चौमुहानी थी जहाँ पहुँचकर प्रभाकर सिंह ने भूतनाथ और इंदुमति का साथ छोड़ा था और कला तथा बिमला के साथ दूसरी राह पर चल पड़े थे। आज इंदुमति को साथ लिए बिमला पुनः उसी जगह जाती है।

उस सुरंग के अन्दर वाली चौमुहानी से एक रास्ता तो भूतनाथ की घाटी के लिए था, दूसरा रास्ता सुरंग के बाहर निकल जाने के लिए था, और तीसरा तथा चौथा रास्ता **(या सुरंग)** कला और बिमला के घाटी में आने के लिए था। एक रास्ता तो ठीक उस घाटी में आता था जिधर से प्रभाकर सिंह आए थे और दूसरा रास्ता बिमला के महल में जाता था।

बिमला के घर आने वाले दोनों रास्ते एक रंग-ढंग के बने हुए थे और इनके अन्दर के तिलिस्मी दरवाजे भी एक ही तरह के साथ गिनती में एक बराबर थे, अस्तु एक सुरंग का हाल पढ़कर पाठक समझ जाएँगे कि दूसरी तरफ वाली सुरंग की अवस्था भी वैसी ही है जो बिमला के घर को जाती है।

उस सुरंग की चौमुहानी पर पहुँचकर जब बिमला की घाटी से आने वाली सुरंग की तरफ बढ़िए तो कई कदम जाने के बाद एक **(कम ऊँची)** दहलीज मिलेगी जिसके अन्दर पैर रख कर ज्यों-ज्यों आगे बढ़िए त्यों-त्यों वह दहलीज ऊँची होती जाएगी, यहाँ तक कि बीस-पच्चीस कदम आगे जाते-जाते वह दहलीज ऊँची होकर सुरंग की छत के साथ मिल जाएगी और फिर पीछे को लौटने के लिए रास्ता न रहेगा। उसके पास ही दाहिनी तरफ दीवार के अन्दर एक पेंच है जिसे कायदे के साथ घूमाने पर वह दरवाजा खुल सकता है। अगर वह पेंच न घुमाया जाय और दहलीज के अन्दर कोई न हो, और जाने वाला आगे निकल गया हो, तो खुद-ब-खुद भी वह रास्ता बारह घंटे के बाद खुल जाएगा और वह दहलीज धीरे-धीरे नीची होकर करीब-करीब जमीन के बराबर अर्थात् ज्यों-की-त्यों हो जाएगी।

रास्ता कैसा पेचीदा और तंग है इसका हाल हम चौथे बयान में लिख जाए हैं पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं। लगभग तीन सौ कदम जाने के बाद एक और बंद दरवाजा मिलेगा जो किसी पेंच के सहारे पर खुलता और बंद होता है। पेंच घुमाकर खोल देने पर भी उसके दोनों पल्ले अलग नहीं होते, भिड़के रहते हैं। हाथ का धक्का दीजिए तो खुल जाएँगे और कुछ देर बाद आप-से-आप बंद भी हो जाएँगे मगर पुनः दूसरी बार केवल धक्का देने से वह दरवाजा न खुलेगा असल पेंच घुमाने की जरूरत पड़ेगी। दोनों दरवाजों के दोनों तरफ एक ही ढंग के तिलिस्मी पेंच दरवाजा खोलने

और बंद करने के लिए बने हुए थे और इसका हाल भूतनाथ को कुछ भी मालूम न था। इसके अतिरिक्त उस सुरंग का सदर दरवाजा भी **(जिसके अन्दर घुसने के बाद चौमुहानी मिलती थी)** बंद हो सकता था और यह बात बिमला के अधीन थी। केवल इतना ही नहीं, उस चौमुहानी से भूतनाथ की घाटी की तरफ जाने वाली सुरंग में भी एक दरवाजा **(इन दोनों सुरंगों की तरफ)** था और उसका हाल भी यद्यपि भूतनाथ को तो मालूम न था मगर बिमला उसे भी बंद कर सकती थी।

इंदु को साथ लिए हुए बिमला उसी सुरंग में घुसी और उस सुरंग के भेद इंदु को समझाती तथा दरवाजा खोलती और बंद करती हुई उस चौमुहानी पर पहुँची जिसका हाल ऊपर कई दफे लिखा जा चुका है और जहाँ प्रभाकर सिंह ने इंदु का साथ छोड़ा था। वहाँ पहुँचकर कुछ देर के लिए बिमला अटकी और आहट लेने लगी कि भूतनाथ की घाटी में आने वाला कोई आदमी तो इस समय इस सुरंग में मौजूद नहीं है। जब सन्नाटा मालूम हुआ और किसी आदमी के वहाँ होने का गुमान न रहा तब वह भूतनाथ वाली घाटी की तरफ जो रास्ता गया था उस सुरंग में घुसी और दस-बारह कदम जाने के बाद दीवार के अन्दर बने हुए किसी कल-पुरजे को घुमाकर उस सुरंग का रास्ता उसने बंद कर दिया। लोहे का एक मोटा तख्ता दीवार के अन्दर से निकला और रास्ता बंद करता हुआ दूसरी दीवार के अन्दर कुछ घुस कर अटक गया।

इसके बाद बिमला सुरंग के सदर दरवाजे पर दरवाजे बंद करने के लिए पहुँची ही थी कि सुरंग के अन्दर घूमते हुए भूतनाथ के शागिर्द भोलासिंह पर निगाह पड़ी और उसने भी इन दोनों औरतों को देख लिया। वह इंदु को अच्छी तरह देख चुका था अस्तु निगाह पड़ते ही पहिचाना गया और आश्चर्य के साथ देखता हुआ बोला "आह, मेरी रानी तुम यहाँ कहाँ? तुम्हारे लिए तो हमारे गुरुजी बहुत परेशान हैं!!"

इस जगह बखूबी उजाला था इसलिए इंदु ने भोलासिंह को और भोलासिंह ने इंदु को बखूबी पहिचान लिया। इंदु पर क्या-क्या मुसीबतें गुजरीं और प्रभाकर सिंह कहाँ गए इन बातों की खबर भोलासिंह को कुछ भी न थी, इसलिए वह इस समय इंदु को देख कर खुश हुआ और ताज्जुब करने लगा। इंदु ने धीरे से बिमला को समझाया कि यह भूतनाथ का शागिर्द है।

इंदु उसे पहिचानती थी सही मगर नाम कदाचित् नहीं जानती थी। वह उसकी बात का जवाब दिया ही चाहती थी कि बिमला न उँगली दबाकर उसे चुप रहने का इशारा किया और कुछ आगे बढ़कर कहा, "तुम्हारे गुरुजी ने इन्हें मौत के पंजे से छुड़ाया और इनकी बदौलत उसी आफत से मेरी भी जान बची है!"

भोलासिंह : गुरुजी कहाँ हैं?

बिमला : हमारे साथ आओ और उनसे मुलाकात करके सुनो कि उन्होंने इस बीच में कैसे-कैसे अनूठे काम किए हैं।

भोलासिंह : चलो-चलो, मैं बहुत जल्द उनसे मिलना चाहता हूँ।

बिमला ने इंदु को अपने आगे किया और भोलासिंह को पीछे आने का इशारा करके अपनी घाटी की तरफ रवाना हुई।

बिमला इस सुरंग का सदर दरवाजा बंद न कर सकी, खैर इसकी उसकी ज्यादे परवाह भी न थी। चौमुहानी से जो भूतनाथ की घाटी की तरफ रास्ता बन गया था उसी को बंद कर उसने संतोष लाभ कर लिया। बिमला के पीछे-पीछे चल कर भोलासिंह उस चौमुहाने तक पहुँचा मगर जब बिमला अपनी घाटी की तरफ अर्थात् सामने वाली सुरंग में रवाना हुई तब भोलासिंह रुका और बोला, "इस तरफ तो हमारे गुरुजी कभी जाते न थे उन्होंने दूसरों को भी इधर जाने को मना कर दिया था। आज वे इधर कैसे गए!"

बिमला : हाँ पहिले उनका शायद ही खयाल था मगर आज तो इसी मकान में बैठे हुए है।

भोलासिंह : क्या इसके अन्दर कोई मकान है?

विमला : हाँ, बहुत सुन्दर मकान है।

भोलासिंह : कितनी दूरी पर?

विमला : बहुत थोड़ी दूर पर, तुम आओ तो सही।

"ये दोनों औरतें बेचारी भला मेरे साथ क्या दगा करेंगी!" यह सोच भोलासिंह आगे बढ़ा और इनके साथ सुरंग के अन्दर घुस गया।

जो हाल प्रभाकर सिंह का इस सुरंग में हुआ था वही हाल इस समय भोलासिंह का हुआ अर्थात् पीछे की तरफ लौटने का रास्ता बंद हो गया और विमला तथा इंदु के आगे बढ़ जाने तथा चुप हो जाने के कारण वह जोर-जोर से पुकारने और टटोल-टटोल कर आगे की तरफ बढ़ने लगा।

प्रभाकर सिंह को इसके आगे का दरवाजा खुला हुआ मिला था मगर भोलासिंह को आगे का दरवाजा खुला हुआ न मिला। उसे दोनों दरवाजों के अन्दर बंद करके विमला और इंदु अपने डेरे की तरफ निकल गईं।

भूतनाथ

दूसरा भाग

बाबू देवकीनन्दन खत्री

भूतनाथ

दूसरा भाग

बाबू देवकीनन्दन खत्री

bpb
भारत पुस्तक भण्डार

दूसरा भाग

1

रात बहुत कम बाकी थी जव विमला और इंदुमति लौट कर घर में आई जहाँ कला को अकेली छोड़ गई थीं। यहाँ आते ही विमला ने देखा कि उसकी प्यारी लौंडी चंदो जमीन पर पड़ी हुई मौत का इंतजार कर रही है। उसका दम टूटा ही चाहता है, आँखें वंद हैं, और अधखुले मुँह से रुक कर साँस आती-जाती है, बीच-बीच में हिचकी भी आ जाती है। कला झारी में गंगाजल लिए उसके मुँह में शायद टपकाना चाहती है।

यह अवस्था देखकर विमला घबरा गई और ताज्जुब करने लगी कि उसकी इस थोड़ी सी गैरहाजिरी में क्या हो गया और चंदो यकायक किसी बीमारी में फँस गई जो इस समय उसकी जिंदगी का चिराग इस तरह टिमटिमा रहा है बल्कि बुझना चाहता है। विमला ने घबराकर कला से पूछा, "यह क्या मामला है और कमबख्त को हो क्या गया है!!"

कला : मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि चंदो अब इस संसार को छोड़ना ही चाहती है, अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए इस कमबख्त ने जहर खा लिया है और जब रग-रग में जहर भी न गया है तब यहाँ आकर सब हाल कहा हैं मैंने जहर उतर जाने के लिए दवा इसे खिलाई है मगर कुछ फायदा होने का रंग नहीं है क्योंकि देर बहुत हो गई, कुछ और दवा पहुँचती तो अच्छा था।

विमला : राम-राम, मगर यह इस कमबख्त को सूझी क्या? और इसने कौन-सा पाप किया है जिसके लिए ऐसा प्रायश्चित करना पड़ा!

कला : वहिन, पाप तो इसने निःसन्देह बहुत भारी किया है, जिसका प्रायश्चित इसके सिवा और कुछ यह कर ही नहीं सकती थी, परन्तु मुझे इसके मरने का दुःख अवश्य है। जो काम इसने किया है उसके करने की आशा इससे कदापि नहीं हो सकती थी और जब इससे ऐसा काम हो गया तो किसी और लौंडी पर अब हम लोग इतना विश्वास भी नहीं कर सकतीं। हाँ, लालच में पड़कर इस चुड़ैल ने हम दोनों बहिनों का असल हाल गदाधरसिह को बतला दिया और कह दिया कि तुमसे बदला लेने के लिए यह सब खेल रचे गए हैं, और साथ ही भूतनाथ का बटुआ भी यहाँ से लेकर जाकर उसे दे दिया। परन्तु इतना करने पर भी जब भूतनाथ ने इसे सूखा ही टकरा दिया तब इसे ज्ञान उत्पन्न हुआ और ग्लानि में आकर जहर खा लिया। जब जहर अच्छी तरह तमाम बदन में भीन गया तब यह हम दोनों से मिलने और अपना पाप कहने के लिए यहाँ आयी थी, इसे यहाँ आये बहुत देर नहीं हुई।

विमला : **(हाथ से अपना माथा ठोंक कर)** हाय हाय हाय, इस कमबख्त ने तो बहुत ही बुरा किया! क्या जाने यह इससे और भी कुछ ज्यादे कर गुजरी हो! जिस भेद को छिपाने के लिए तरह-तरह की तरकीबें की गई थीं उस भेद का आज इसने सहज ही में सत्यानाश कर दिया। हाय, अब भूतनाथ भी जरूर हमारे कब्जे से निकल गया होगा। जब उसे ऐयारी का बटुआ मिल गया तब वह उस कैदखाने के भी बाहर हो गया हो तो आश्चर्य नहीं। वह बड़ा ही धूर्त और मक्कार है जिसके फेर में पड़ कर चंदो ने हम लोगों को बर्बाद कर दिया और खुद भी दीन-दुनिया दोनों में से कहीं के लायक न रही!!

कला : बेशक् ऐसा ही है, यद्यपि इस बात की आशा नहीं हो सकती कि भूतनाथ इस घाटी के बाहर हो जाएगा तथापि उसका कैदखाने से बाहर निकल जाना ही कम घबराहट की बात नहीं है, और इससे भी ज्यादे बुरी बात यह हुई कि हमारा भेद उसे मालूम हो गया। हाय, ऐसी रात में किसकी हिम्मत पड़ सकती है कि अकेले यहाँ जाकर भूतनाथ का हाल मालूम करे? अगर वह छूट गया होगा तो जरूर उसी जगह कहीं छिपा होगा, ताज्जुब नहीं कि सूरज निकलने तक वह कोई आफत...

विमला : मेरा भी यही खयाल है! (चंदो के पास जाकर) हाय, शैतान की बच्ची, तूने यह क्या किया! हाय, अगर तू जीती रहती तो तुझसे पूछती कि दुष्ट, तूने इतना ही किया कि कुछ और?

चंदो यद्यपि मौत के पंजे में फँसी हुई थी और उसकी जान बहुत जल्द निकलने वाली थी मगर वह कला और बिमला की बातें सुन रही थी, यद्यपि उसमें जवाब देने की ताकत न थी। उसने बिमला की आखिरी बात सुनकर आँखें खोल दीं, बिमला की तरफ देखा और इस प्रकार मुँह खोला मानो कुछ कहने के लिए बेचैन हो रही है, बहुत उद्योग कर रही है मगर उसमें इतनी शक्ति न रही, उसकी आँखें पुनः बंद हो गईं और अब वह पूरी तरह से बेहोश हो गई। देखते-देखते दस-पाँच हिचकियाँ लेकर उसने बिमला और कला के सामने दम तोड़ दिया।

अब कला और बिमला को यह फिक्र पैदा हुई कि पहिले इसे ठिकाने पहुँचाया जाय या चलकर भूतनाथ की खबर ली जाय, मगर इंदुमति की राय हुई इन दोनों कामों के पहिले बँगले की हिफाजत की जाय (जो इस घाटी के बीच में था और जहाँ प्रभाकर सिंह पहिले-पहिले पहुँचे थे) क्योंकि उसमें बहुत-सी जरूरी चीजें रखी हुई हैं और साथ ही उसकी जाँच करने से बहुत-से भेद भी मालूम हो सकते हैं।

इंदु की इस राय को बिमला और कला ने बहुत पसन्द किया और तीनों औरतें हर्बों और जरूरी चीजों से अपने को सजाकर गुप्त राह से बँगले की तरफ रवाना हुई।

इस बँगले का हाल हम पहिले खुलासा तौर पर लिख चुके हैं, इसके दरवाजे ऐसे न थे कि बंद कर देने पर कोई जबर्दस्ती या सहज ही में खोल सके तथा और बातों में भी वह एक छोटा-मोटा तिलिस्म या कारीगरी का खजाना ही समझा जाता था। यद्यपि वह बँगला ऐसी हिफाजत की जगह में था जहाँ बदमाशों का गुजर नहीं हो सकता था तथापि उसकी हिफाजत के लिए कई लौंडियाँ मुकर्रर थी जो मर्दानी सूरत में पहरेदारी के कायदे से उसके चारों तरफ बराबर घूमा करती थीं।

कला, बिमला और इंदु ने वहाँ पहुँचकर उस बँगले के दरवाजे बंद करने शुरू कर दिये। पहिले बाहर से भीतर आने का रास्ता रोका, इसके बाद कई जरूरी चीजें उनमें से निकालने के बाद आलमारियों में ताले लगाये और तब भीतर के कमरे सब बंद कर दिये गये। इतना करके एक छोटे गुप्त रास्ते को बंद करती हुई बाहर निकली ही थीं कि एक पहरेदार लौंडी के जोर से चिल्लाने की आवाज आई।

तीनों औरतें कदम बढ़ाती हुई बँगले के सदर दरवाजे पर पहुँची जहाँ नाममात्र के लिए पहरा रहा करता था या जिधर से पहरेदार लौंडी के चिल्लाने की आवाज आई थी। वह लौंडी मरदाने भेष में थी और घबराई हुई मालूम पड़ती थी। बिमला ने पूछा "क्या मामला है, तू क्यों चिल्लाई?"

लौंडी : मेरी रानी, देखो उस पहाड़ी की तरफ जिधर कैदखाना है और जहाँ भूतनाथ कैद है कई उस जगह आग की धूनी जल रही है। मालूम होता है मानो बहुत-से आदमियों ने आकर उस पहाड़ी पर दखल जमा लिया है। अगर ये आग की धूनियाँ आपकी तरफ से नहीं सुलगाई गई हैं तो जरूरी किसी आने वाली आफत की निशानी हैं और मुझे विश्वास हे कि आपने इसके लिए कोई हुक्म नहीं दिया होगा।

विमला : (ताज्जुब के साथ उस पहाड़ी की तरफ देख कर) बेशक् यह नई बात है, मैंने ऐसा करने के लिए किसी को हुक्म नहीं दिया मगर घबराने की कोई बात नहीं है, जहाँ तक मैं समझती हूँ यह भूतनाथ की कार्रवाई है क्योंकि चंदो की मदद से भूतनाथ कैद से छूट गया और हम लोग उसी के बंदोबस्त कर रही हैं।

लौंडी : (ताज्जुब के साथ) हैं, भूतनाथ कैदखाने से छूट गया! और चंदो बीबी की मदद से!!

बिमला : हाँ, ऐसी ही बात है, किसी दूसरे वक्त इसका खुलासा हाल तुम्हें मालूम होगा इस समय मैं उसी पहाड़ी पर जाती हूँ और भूतनाथ को गिरफ्तार करती हूँ।

कला : मगर बहिन, मैं इस राय के विरुद्ध हूँ!

विमला : क्यों?

कला : देखो, सोचो तो सही कि इस तरह कई जगहों पर आग सुलगाने या बालने से भूतनाथ का क्या मतलब है?

विमला : (कुछ सोच कर) जहाँ तक मैं समझती हूँ इस कार्रवाई से भूतनाथ का यही मतलब होगा कि हम लोगों को धोखा देकर उस तरफ बुलावे और किसी जगह पर आड़ में छिपे रहकर हमारे ऊपर वार करे।

कला : बेशक्, क्योंकि आग के पास पहुँच कर हम लोग उसे ढूँढ़ न सकेंगे। दस्तूर की बात है कि जो कोई सुलगती हुई आग के पास रहता है वह सामने की किसी चीज को नहीं देख सकती। वहाँ तो कई जगह पर आग सुलग रही है, उस बीच में जाकर हम लोग किसी भी तरफ निगाह करके दुश्मन को नहीं देख सकेंगे।

विमला : ठीक है मगर हम लोगों पर इस समय उसका कोई हर्वा काम नहीं कर सकता। कला : तथापि हर तरह से बच के काम करना चाहिए, विशेष करके इसलिए कि इंदु बहिन हमारे साथ हैं, यद्यपि ये यहाँ के सब भेदों को जान गई हैं और हम लोगों का साथ हर तरह से दे सकती हैं।

इंदुमति : मेरे लिए कोई तरद्दुद न करो, मैं तुम लोगों के साथ बखूबी चल सकती हूँ मगर मैं यह पूछती हूँ कि ऐसा करने की जरूरत क्या है और इस काम में जल्दी किये बिना हर्ज ही क्या होता है? संभव है कि भूतनाथ ने वहाँ ऐयारी का कोई जाल फैलाया हो और इस रात के समय वह कुछ कर भी सके। थोड़ी-सी तो रात हो गई है, अच्छा होता अगर यह बिता दी जाती। प्रातःकाल हम लोग देखेंगे कि भूतनाथ कहाँ जाता और क्या करता है, यद्यपि वह स्वतंत्र हो गया है मगर इस घाटी के बाहर नहीं जा सकता और हमारे मकान तथा बँगले में भी उसकी गुजर नहीं हो सकती।

कला : मैं भी इस राय को पसन्द करती हूँ, चलो बँगले के ऊपर छत पर चल कर बैठें।

विमला : अच्छा चलो।

इंदुमति : (चलते हुए) मगर ताज्जुब है कि इतनी जल्दी भूतनाथ को आग सुलगाने के लिए इतना सामान कैसे मिल गया!

कला : बहिन, यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है! हम लोगों की जरूरत के लिए जंगल की लकड़ियाँ बहुत बटोरी गई थीं जिसके बहुत बड़े-बड़े दो-तीन ढेर वहाँ कैदखाने के पास ही में लगे हुए थे। मालूम होता है कि उन्हीं लकड़ियों से भूतनाथ ने काम लिया है।

इंदुमति : हाँ, तब तो उसे बहुत सुबीता मिल गया होगा, मगर क्या तुम खयाल कर सकती हो कि भूतनाथ की यह कार्रवाई किसी और मतलब से भी हुई है?

विमला : मैं नहीं कह सकती, सम्भव है कि उसका और ही कोई मतलब हो। खैर देखा जाएगा।

इसी तरह की बातें करती तथा दरवाजों को खोलती और बंद करती हुई तीनों बहिनें बँगले की छत पर चढ़ गईं और एक अच्छे ठिकाने बैठकर उस तरफ देखने और सुबह का इंतजार करने लगीं।

उस समय कला और विमला से बहुत बड़ी भूल हो गई, क्योंकि वे तीनों अद्‌भुत बँगले की हिफाजत के लिए जब आईं तो उन्होंने रोशनी का कोई खास बंदोबस्त नहीं किया, बँगले का इंतजाम करने के बाद वे तीनों बहिनें जब पहरे वाली लौंडी के चिल्लाने की आवाज सुनकर सदर दरवाजे पर गईं तब उनके पास किसी तरह की रोशनी मौजूद न थी और न इस काम के लिए रोशनी की जरूरत ही थी। परन्तु जब तक वे पहरा देने वाली लौंडी से बातचीत करतीं और पहाड़ी के ऊपर वाली रोशनी की तरफ देखती रही तब तक एक आदमी जो अपने को स्याह कपड़े से छिपाए हुए था आड़ देता हुआ सदर दरवाजे के पास पहुँचा और न मालूम किस ढंग से उस बँगले के अन्दर दाखिल हो गया क्योंकि वे तीनों

बहिनें और पहरा देने वाली लौंडी पहाड़ी की रोशनी को ताज्जुब के साथ देखती हुई सदर दरवाजे से कुछ आगे की तरफ बढ़ गई थीं और उन्हें इस बात का कुछ खयाल न था कि दुश्मन बगल में आ पहुँचा और अपना काम किया चाहता है! खैर वे तीनों बँगले के अन्दर घुसी तो दरवाजा बंद करती हुई छत पर चढ़ गईं जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है।

वे तीनों बहिनें उन कई जंगल बलती आग की रोशनियों को गैर से देख रही थीं जो अब धीरे-धीरे ठंडी हो रही थी।

कला : अब आग बिलकुल ठंडी हो जाएगी।

विमला : हाँ और इससे मालूम होता है कि भूतनाथ कहीं आगे की तरफ बढ़ गया।

"आगे की तरफ नहीं बढ़ गया बल्कि इस तरफ चला आया और विश्वास दिलाना चाहता है कि वह आपका दुश्मन बल्कि दोस्त है।"

यह आवाज छत के ऊपर जाने वाले दरवाजे की तरफ से आई थी जो उन तीनों बहिनों के पास ही था।

इस आवाज ने उन तीनों को चौंका दिया, वे उठ खड़ी हुईं और उस दरवाजे के तरफ देखने लगीं। अब यहाँ पर वैसा अँधकार न था जैसा नीचे खास करके पेड़ों की छाँह के सबब से था। चन्द्रदेव उदय हो चुके थे और उनकी चाँदनी पल-पल में बराबर बढ़ती चली जा रही थी अस्तु उन तीनों बहिनों ने साफ देख लिया कि दरवाजे के अंदर एक पैर बाहर और दूसरा भीतर किए कोई आदमी स्याह लबादा ओढ़े रहा है।

विमला : (उस आदमी से) तुम कौन हो?

आदमी : गदाधरसिंह।

विमला : (निडर रहकर) तुमने बड़ी चालाकी से अपने को कैद से छुड़ा लिया!

गदाधरसिंह : बात तो ऐसी ही है।

विमला : मगर तुम भाग कर इस घाटी के बाहर नहीं जा सकते!

गदाधरसिंह : शायद ऐसा ही हो, मगर मुझे भागने की जरूरत ही क्या है?

विमला : क्यों, अपनी जान बचाने के लिये तुम जरूर भागना चाहते होगे?

गदाधरसिंह : नहीं, मुझे अपनी जान का यहाँ कोई खौफ नहीं है क्योंकि तुम्हारी एक नमकहराम लौंडी ने मुझे बता दिया है कि तुम मेरे प्यारे दोस्त दयाराम की स्त्री हो...

विमला : (बात काटकर) जिस प्यारे दोस्त को तुमने अपने हाथ से हलाल किया!!

गदाधरसिंह : नहीं! नहीं, कदापि नहीं, जिसने यह बात तुमसे कही है यह बिलकुल झूठ है और उसने तुम लोगों को धोखे में डाल दिया है, यही समझाने और विश्वास दिलाने के लिए मैं यहाँ अटक गया हूँ और भागना पसन्द नहीं करता। मुझे विश्वास था कि तुम दोनों बहिनों का देहांत हो चुका है जैसा कि दुनिया में प्रसिद्ध किया गया है, मगर अब तुम दोनों का हाल जानकर भी क्या मैं भागने की इच्छा करूँगा? नहीं, क्योंकि तुम दोनों को अब भी मैं उसी निगाह से देखता हूँ जैसे अपने प्यारे दोस्ते की जिंदगी में देखता था और यही सबब है कि मुझे तुम दोनों से किसी तरह का डर नहीं लगता।

विमला : मगर नहीं, तुम्हें हम लोगों से डरना चाहिए, हम लोग तुम्हारे हितेच्छु कभी नहीं हो सकते क्योंकि हम लोगों ने

जो कुछ सुना वह कदापि झूठ नहीं हो सकता।

गदाधरसिंह : (दरवाजे से बाहर निकल कर और बिमला के पास आकर) मैं विश्वास दिला दूँगा कि मुझ पर झूठा इल्जाम लगाया गया है।

बिमला : (कई कदम पीछे हटकर और नफरत के साथ) बस दूर रह मुझसे दुष्ट! मैं तेरी सूरत नहीं देखना चाहती!!

गदाधरसिंह : (अपने ऊपर से स्याह कपड़ा हटाकर) नहीं, तुम मेरी सूरत देखो और पहिचानो और सुनो कि मैं क्या चाहता हूँ।

बिमला : सिवाय बात बनाने के तू और क्या कहेगा? तू अपने माथे से कलंक का टीका किसी तरह नहीं धो सकता और न वह बहुत झूठी हो सकती है जो मैं सुन चुकी हूँ। दलीपशाह और शम्भू अभी तक दुनिया में मौजूद हैं और मैं भी खास तौर पर इस बात को जानती हूँ।

गदाधरसिंह : मगर सच बात यह है कि लोगों ने तुम्हें धोखा दिया और असल भेद को छिपा रखा। खैर तुम अगर मुझ पर विश्वास नहीं करती तो मुझे ज्यादे खुशामद करने की जरूरत नहीं, अब मैं सिर्फ दो-चार बातें पूछ कर चला जाऊँगा। एक तो यह कि तुम मुझे गिरफ्तार करके यहाँ लाई थीं, मगर मैं अपनी चालाकी से छूट गया। अब बताओ मेरे साथ क्या सलूक करोगी?

बिमला : अपने दिल का बुखार निकालने के लिए जो कुछ मुझसे बन पड़ेगा करूँगी, इसे तुम खुद सोच सकते हो।

गदाधरसिंह : पर मैं तो अब स्वतंत्र हूँ, अगर चाहूँ तो तुम तीनों को इसी जग खत्म कर रख दूँ, मगर नहीं मैं नमक का खयाल करता हूँ ऐसा कदापि न करूँगा, हाँ? तुमसे बचने के लिए उद्योग जरूर करूँगा।

बिमला : कदाचित् ऐसा ही हो।

इतना कह बिमला ने कला की तरफ देखा।

गदाधरसिंह बिमला से बातें कर रहा था मगर उसे इस बात की खबर न थी कि कला क्या कर रही है अथवा क्या किया चाहती है।

कला ने अपने बगल से एक छोटा-सा बाँस का बना हुआ तमंचा निकाला और गदाधरसिंह (भूतनाथ) की तरफ उसका मुँह करके चलाया।

इस अद्‌भुत तमंचे में बेहोशी की बारूद भरी जाती थी और इसका तेज तथा जल्द बेहोश कर देने वाला धुआँ छूटने के साथ ही तेजी से कई बिगहे तक फैलकर लोगों को बेहोश कर देता था। यहाँ पर फैलने के लिए विशेष जगह तो थी नहीं इसलिए उस धुएँ के गुब्बार ने गदाधरसिंह को चारों तरफ से घेरकर एक तरह का अंधकार कर दिया।

''गदाधरसिंह धुएँ के असर से बेहोश हो जाएगा'' यह सोच कर बिमला, कला और इंदुमति तीनों बहिनें भाग कर नीचे उतर जाने के लिए उठीं और नाक दबाए हुए सीढ़ी की तरफ बढ़ गईं।

गदाधरसिंह बेशक् इस धुएँ के असर से बेहोश हो जाता मगर उसने पहिले ही से अपने बचाव का बंदोबस्त कर लिया था अर्थात् ऐसी दवा खा ली थी कि कई घंटे तक उस पर बेहोशी का असर नहीं हो सकता था तथापि उस धुएँ ने एक दफे उसका सर घुमा दिया।

वे तीनों बहिनें वहाँ से भागीं तो सही मगर अफसोस, बिमला और इंदु तो नीचे उतर गईं परन्तु कला को फूती। से

गदाधरसिंह ने पकड़ कर कब्जे में कर लिया और हाल बिमला को नीचे उतरकर और कई कमरों में घूम-फिरकर छिप जाने के बाद मालूम हुआ जब चित्त स्थिर हो जाने पर उसने कला को अपने साथ न देखा।

2

दिन पहर भर से कुछ ज्यादे हो चुका है। यद्यपि अभी दोपहर होने में बहुत देर है तो भी धूप की गर्मी इस तरह बढ़ रही है कि अभी से पहाड़ के पत्थर गर्म हो रहे हैं और उन पर पैरी रखने की इच्छा नहीं होती, दो पहर दिन चढ़ जाने के बाद यदि ये पत्थर आग के अँगारों का मुकाबला करने लग जायें तो क्या आश्चर्य है!

पहाड़ के ऊपरी हिस्से पर एक छोटा-सा मैदान है जिसका फैलाव लगभग डेढ़ या दो बिगहे का होगा। इसके ऊपर की तरफ सिर उठा कर देखने से मालूम होता है कि कुछ और चढ़ जाने से पहाड़ खतम हो जाएगा और फिर सरपट मौन दिखाई देगा पर वास्तव में ऐसा नहीं है।

इस छोटे मैदान में पत्थर के कई ढोंके मौजूद हैं जो मैदान की मामूली सफाई में बाधा डालते हैं और पत्थर के बड़े चट्टान भी बहुतायत से दिखाई दे रहे हैं जिनकी वजह से वह जमीन कुछ सुन्दर मालूम होती है मगर इस वक्त धूप की गर्मी के समय सभी बातें बुरी और भयानक जान पड़ रही हैं।

इस मैदान में केवल ढाक (पलास) के कई पेड़ दिखाई दे रहे हैं सो भी एक साथ नहीं जिनसे किसी तरह का आराम मिलने की आशा हो सके। इन्हीं पेड़ों में से एक के साथ हम बेचारी कला को कमन्द के सहारे बँधे हुए और उसके सामने गदाधरसिंह अर्थात् भूतनाथ को खड़े देख रह हैं, अब सुनिए कि इन दोनों में क्या बातें हो रही हैं।

कला : तो क्या उस समय तुमने वहाँ पर कला और विमला को अच्छी तरह देखा या पहिचाना था?

गदाधरसिंह. : नहीं, पहिचाना तो नहीं था मगर बातें जरूर की थीं और वे बातें भी ऐसे ढंग की थीं जिनसे उनका कला और बिमला ही होना साबित होता था।

कला : वह तुम्हारा भ्रम था, इस घाटी में कला और बिमला नहीं रहतीं।

गदा धरसिंह : (हँसकर) बहुत खासे! अब थोड़ी देर में कह दोगी कि मैं कला और बिमला को जानती ही नहीं!

कला : नहीं ऐसा तो मैं नहीं कह सकती कि मैं दोनों को पहिचानती तक नहीं, मगर

यह जरूर कहूँगी कि वे दोनों यहाँ नहीं रहतीं और हम लोगों को उनसे कोई वास्ता नहीं।

गदाधरसिंह : तो फिर तुम्हारी तरफ से इस ढंग की बातें क्यों की गईं कि मानो तुम ही कला या बिमला हो?

कला : यह तो उनसे पूछो तो मालूम हो जिन्होंने तुमसे बातें की थी, मैंने तो तुमसे एक बात भी नहीं की थी।

गदाधरसिंह : वे कौन थीं जो मुझसे बातें कर रही थीं?

कला : मेरी मालकिन।

गदाधरसिंह : आखिर उनका कुछ नाम-पता भी है या नहीं?

कला : यह बताने की तो कोई जरूरत नहीं।

गदाधरसिंह : तुझे झख मार कर बताना ही पड़ेगा और यह भी बताना पड़ेगा कि कला और बिमला कहाँ है? तेरा यह कहना मैं नहीं मान सकता कि कला-बिमला इस घाटी में नहीं रहतीं और तुम लोगों का उनसे कोई संबंध नहीं। आखिर तुमने मुझसे दुश्मनी क्यों की और मैं क्यों इस घाटी में कैद करके लाया गया? तुम लोगों का मैंने क्या बिगाड़ा था?

कला : हम लोगों को तुम्हारे साथ किसी तरह की दुश्मनी नहीं है मगर तुम्हारी गिरफ्तारी में हम लोग शरीक जरूर हैं औ वह गिरफ्तारी कला और बिमला के हुक्म ही से हुई थी। खूब जानती हूँ मैं कि यहाँ की एक लौंडी ने तुम्हें कला और विमला को खबर दी थी और कहा था कि कला और बिमला ने तुम्हें गिरफ्तार किया है। बेशक उसका यह कहना सच था मगर अफसोस, तुमने उसके साथ दग़ा किया। यह मैं इसीलिए कहती हूँ कि वह मेरी बहिन थी। अगर तुम उसके साथ दग़ा न करते तो वह जरूर तुम्हें पूरा-पूरा भेद बता देती। एक तौर पर उसने भंडा फोड़ ही दिया मगर तुम्हारी सच्चाई जानने के लिए बहुत कुछ बचा भी रखा, अगर तुम अपना वादा पूरा करते तो वह जरूर बचा हुआ भेद भी बता देती और यह भी कह देती कि कला और बिमला कहाँ रहती हैं। मेरे कहने का मतलब यही है कि तुम सब बातों को सच न समझना।

गदाधरसिंह : नहीं, बल्कि तुम्हारा मतलब यह है कि मुझे कुछ दो तो यहाँ का भेद बताऊँ।

कला : नहीं, ऐसा है तो नहीं मगर तुम जैसा चाहे खयाल कर सकते हो।

गदाधरसिंह : (मुसकराकर) ठीक है, अच्छा पहिले तुम मेरी उस बात का जवाब तो दो जो मैं पूछ चुका हूँ, पीछे और बातें की जाएँगी।

कला : कौन-सी बात का जवाब?

गदाधरसिंह : यही कि इस रात का मुझसे इस ढंग की बातें क्यों की गईं जो कला और बिमला ही कर सकती हैं।

कला : मैं समझती हूँ कि तुम्हें ठीक तरह से पहिचान लेने ही के लिए उन्होंने इस ढंग की बातें की थीं क्योंकि हम लोगों को इस बात का निश्चय नहीं था कि वास्तव में तुम गदाधरसिंह ही तो हो और तुम्हारी गिरफ्तारी में धोखा नहीं हुआ।

गदाधरसिंह : (मुसकराते हुए) बात बनाने में तुम भी बड़ी तेज हो, यद्यपि मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं कर सकता मगर कह सकता हूँ कि शायद तुम्हारा कहना ठीक हो। अच्छा अब यह कहो कि तुम यहाँ के भेद और कला तथा बिमला का हाल मुझे बता सकती हो या नहीं?

कला : नहीं।

गदाधरसिंह : इसलिए कि मैंने तुम्हारी बहिन के साथ दग़ा किया, यदि वास्तव में वह तुम्हारी बहिन थी!

कला : सिर्फ इसीलिए नहीं बल्कि इसलिए भी कि यह काम बड़ा ही नाजुक है और करने के बाद मै। किसी तरह जीती नहीं रह सकती।

गदाधरसिंह : क्यों तुम्हें मारने वाला कौन है? यहाँ जितने हैं वे सभी तुम्हारे अपने हैं इसके अतिरिक्त किसी को मालूम ही क्योंकर हो सकता है कि तुमने मुझे बताया है।

कला : यह बात छिपी नहीं रह सकती, यह घाटी तिलिस्मी है और यहाँ के हर पेड़-पत्तों और पत्थरों के ढोकों के भी कान हैं, मेरी बहिन ने इस बात का कुछ खयाल नहीं किया और इसीलिए आखिरकार जान से मारी गई।

गदाधरसिंह : (आश्चर्य से) क्या तुम्हारी बहिन मारी गई?

कला : हाँ, क्योंकि मालकिन को तुम्हारी और उसकी बातों का किसी तरह पता लग गया।

गदाधरसिंह : रात का समय था, संभव है किसी ने छिपकर सुन लिया हो। इसके अतिरिक्त और किसी तिलिस्मी बात का मैं कायल नहीं। इस समय दिन है चारों तरफ आँखें खोलकर देखो किसी की सूरत दिखाई नहीं देती अस्तु

मेरी-तुम्हारी बातें कोई सुन नहीं सकता, तुम बेखौफ होकर यहाँ का हाल इस समय मुझे बता सकती हो।

कला : नहीं, कदापि नहीं।

गदाधरसिंह : (कमर से खंजर निकाल कर और दिखाकर) नहीं तो फिर इसी से तुम्हारी खबर ली जाएगी!

कला : जो हो बताने के बाद भी तो मैं किसी तरह बच नहीं सकती, फिर ऐसी अवस्था में क्यों अपने मालिक को नुकसान पहुँचाऊँ? चाहे तिलिस्मी बातों का तुम्हें विश्वास न हो पर मैं समझती हूँ कि मेरे और तुम्हारे बीच जो-जो बातें हो रही हैं वह सब मेरी मालकिन सुन रही होंगी...

गदाधरसिंह : (खिलखिलाकर हँसकर) ठीक है, तुम्हारी बातें...

कला : बेशक् ऐसा ही है, अगर मैं इस घाटी के बाहर होती तो इस बात का खयाल न होता और यहाँ के भेद शायद बता देती।

गदाधरसिंह : (मुसकुराते हुए) यही सही, तुम मुझे इस घाटी के बाहर ले चलो और यहाँ के भेद बता दो तो मैं तुम्हें...

कला : नहीं-नहीं, किसी तरह का वादा करने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि उस पर मुझे विश्वास न होगा, हाँ, यदि मुझे दलीपशाह के पास पहुँचा दो तो मैं यहाँ का पूरा-पूरा भेद तुम्हें बता सकती हूँ बल्कि हर तरह से तुम्हारी मदद भी कर सकती हूँ!

गदाधरसिंह : (चौंक कर) दलीपशाह! दलीपशाह से और तुमसे क्या वास्ता?

कला : वे मेरे रिश्तेदार हैं और यहाँ से भाग कर मैं उनके यहाँ अपनी जान बचा सकती हूँ।

गदाधरसिंह : अगर ऐसा ही है तो तुम स्वयं उसके पास क्यों नहीं चली जाती?

कला : पहिले तो मुझे यहाँ से भागने की कोई जरूरत ही नहीं, भागने का खयाल तो सिर्फ इसी सबब से होगा कि तुम्हें यहाँ के भेद बताऊँगी दूसरे यह कि आजकल न-जाने किस कारण से उन्होंने अपना मकान छोड़ दिया है और किसी दूसरी जगहर जाकर छिपव रहे हैं।

गदाधरसिंह : अगर ऐसा ही है तो तम स्वयं उनके पास क्यों नहीं चली जाती?

कला : पहिले तो मुझे यहाँ से भागने की कोई जरूरत ही नहीं, भागने का खयाल तो सिर्फ इसी सबब से होगा कि तुम्हें यहाँ के भेद बताऊँगी दूसरे यह कि आजकल न-जाने किस कारण से उन्होंने अपना मकान छोड़ दिया है और किसी दूसरी जगह जाकर छिप रहे हैं।

गदाधरसिंह : अगर किसी दूसरी जगह जाकर छिप रहे हैं तो भला मुझे क्योंकर उनका पता लगेगा?

कला : तुम्हें उनका पता जरूर मालूम होगा क्योंकि तुम उनके साढ़ू और दोस्त भी हो।

गदाधरसिंहः यह बात तुम्हें क्योंकर मालूम हुई?

कला : भला मैं दलीपशाह के नाते की होकर यह नहीं जानूँगी कि तुम उनके कौन हो।

गदाधरसिंह : (आश्चर्य के साथ कुछ सोच कर) अगर तुम्हारी बात सच है तो तुम मेरी भी नातेदार होवोगी।

कला : जरूर ऐसा ही है, मगर यहाँ मैं इस बारे में कुछ भी न कहूँगी, दलीपशाह के मकान पर चलने ही से तुम्हें सब हाल मालूम हो जाएगा तथा और भी कई बातें ऐसी मालूम होंगी जिन्हें जान कर तुम खुश हो जाओगे इन्हीं बातों का खयाल करके और तुम्हें अपना नजदीकी नातेदार समझ के मैं चाहती हूँ कि तुम्हें इस घाटी के बाहर कर दूँ और खुद भी भाग जाऊँ नहीं तो यहाँ रह कर तुम्हारी जान किसी तरह बच नहीं सकती और विना मेरी मदद के तुम घाटी के बाहर भी नहीं जा सकते।

गदाधरसिंह : (सोचकर) अगर एसा ही है तो तुम मेरी नातेदार होकर यहाँ क्यों रहती हो?

कला : यहाँ पर मैं इन सब बातों का कुछ भी जवाव न दूँगी।

कला की बातें सुन कर गदाधरसिंह सोच और तरद्दुद में पड़ गया। वह यहाँ का भेद जानने के लिए अवश्य ही कला को तकलीफ देता या गुस्से में आकर शायद मार ही डालता मगर कला की बातों ने उसे उलझन में डाल दिया और वह सोच में पड़ गया कि अव क्या करना चाहिए। वह जानता था बल्कि उसे विश्वास था कि बिना किसी मदद के वह इस घाटी के बाहर नहीं निकल सकता और यहाँ फँसे रहना भी उसके लिए अच्छा नहीं चाहे वह किसी तरह की ऐयारी करके कितना भी उपद्रव मचा ले, अतएव वह बाहर निकल जाना बहुत पसन्द करता था और समझाते था कि इत्तिफाक ही ने इस समय उसे कए मदद दिला दी है और अव इससे काम न लेना निरी बेवकूफी है। मगर कला की बातों ने उसे चक्कर में डाल दिया था। यद्यपि वह दलीपशाह का पता जानता था मगर कई कारणों से उसके पास या सामने जाना अथवा कला को ले जाना पसन्द नहीं करता था, उधर कला से उसकी इच्छानुसार बात करने की उसे सख्त जरूरत थी क्योंकि उसे इस बात का शक हो रहा था कि गला से दलीपशाह के पास ले जाने का वादा न करूँगा तो शायद यह मुझे इस खोह के बाहर भी न ले जाएगी। वह कला को धोखा देने और कोरा वादा करने के लिए तैयार था मगर वह चाहता था कि कला मुझसे वादा पूरा करने के लिए कसम न खिलावे, असली सूरत में कसम खाकर मुँह फेर लेने की आदत अभी तक उसमें नहीं पड़ी थी और वह अपने को बहादुर समझता था।

गदाधरसिंह के दिल में ये बातें भी पैदा हो रही थीं कि इस घाटी के मालिक का पता लगाना चाहिए और यहाँ के भेदों को जानना चाहिए परन्तु उसने सोचा कि यहाँ अकेला और बिना किसी मददगार के रहकर मैं कुछ भी न कर सकूँगा। यहाँ के रहने वाले बिलकुल ही सीधे-सादे नहीं मालूम होते और यद्यपि अभी तक यहाँ किसी मर्द की सूरत दिखाई न दी परन्तु औरतें भी यहाँ की ऐयारी ही जान पड़ती है।। क्या यह औरत भी मुझसे ऐयारी के ढंग पर बातें कर रही हैं? संभव है कि ऐसा ही हो और मुझे इस घाटी के बाहर ले जाने के बहाने से यह किसी खोह या कन्दरा में फँसकर पुनः कैद करा दे। अभी तक तो मैंने इस बात की भी जाँच नहीं की कि इसकी सूरत असली है या बनावटी। खैर मैं अभी-अभी इस बात की भी जाँच कर लूँगा और इसके बाद जब इस घाटी के बाहर निकल जाने के लिए इसके साथ किसी खोह या सुरंग के अन्दर घुसूँगा तो पूरा होशियार रहूँगा कि यह मुझसे दग़ा न करे, न इसे अपने आगे चलने दूँगा और न पीछे रहने दूँगा बल्कि इसका हाथ पकड़े रहूँगा या कमर में कमंद बाँध कर थामे रहूँगा। इस खोह के बाहर निकल जाने पर मैं सब कुछ कर सकूँगा क्योंकि तब वहाँ का रास्ता भी देखने में आ जाएगा, तब अपने दो-एक शागिर्दों को मदद के लिए साथ लेकर पुनः यहाँ आऊँगा और यहाँ रहने वालों से समझूँगा जिन्होंने मुझे गिरफ्तार किया था।

इत्यादि तरह-तरह की बातें गदाधरसिंह बहुत देर तक सोचता रहा और इसके बाद कला से बोला, ''अच्छा मैं तुम्हें दलीपशाह के पास ले चलूँगा मगर तुम पानी से अपना मुँह धोकर मुझे विश्वास दिलाओ कि तुम्हारी सूरत बदली हुई नहीं है या तुम ऐयार नहीं हो और मुझे कोई धोखा नहीं दिया चाहती।''

कला : हाँ-हाँ, मैं अपना चेहरा धोने के लिए तैयार हूँ, पानी दो।

गदाधरसिंह : (अपने बटुए में से पानी की एक छोटी-सी बोतल निकाल कर और कला की ओर बढ़ाकर) लो यह पानी तैयार है।

कला ने गदाधरसिंह के हाथ से पानी लेकर अपना चेहरा धो डाला। उसके चेहरे पर किसी तरह का रंग तो चढ़ा हुआ

था ही नहीं जो धोने से दूर हो जाता बल्कि एक प्रकार की झिल्ली चढ़ी हुई थी जिस पर पानी का कुछ भी असर नहीं हो सकता था, अस्तु गदाधरसिंह को विश्वास हो गया कि इसकी सूरत बदली हुई नहीं है। भूतनाथ ने उसके हाथ-पैर खोल दिए और घाटी के बाहर चलने के लिए कहा।

गदाधरसिंह : क्या तुम इस दिन के समय मुझे यहाँ से बाहर ले जा सकती हो?

कला : हाँ, ले जा सकती हूँ।

गदाधरसिंह : मगर तुम्हारे संगी-साथी किसी जगह से छिपे हुए देख सकते हैं।

कला : अव्वल तो शायद ऐसा न होग, दूसरे अगर कोई दूर से देखता भी होगा तो जब तक वह मेरे पास पहुँचेगा तब तक मैं तुम्हें लिए हुए इस घाटी के बाहर हो जाऊँगी, फिर मुझे बचा लेना तुम्हारा काम है।

गदाधरसिंह : (जोश के साथ) ओह, घाटी के बाहर हो जाने पर फिर तुम्हारा कोई क्या बिगाड़ सकता है!

कला : तो बस फिर जल्दी करो, मगर हाँ एक बात तो रह ही गई।

गदाधरसिंह : वह क्या?

कला : तुमने मुझसे इस बात की प्रतिज्ञा नहीं की कि दलीपशाह से मुलाकात करा दोगे।

गदाधरसिंह : मैं तो पहले ही वादा कर चुका हूँ कि तुम्हें दलीपशाह के पास ले चलूँगा।

कला : वादा और बात है, प्रतिज्ञा और बात है, मैं इस बारे में तुमसे कसम खिला के प्रतिज्ञा करा लेना चाहती हूँ, तुम क्षत्रिय हो अस्तु खंजर, जिसे दुर्गा समझते हो, हाथ में लेकर प्रतिज्ञा करो कि वादा पूरा करोगे।

गदाधरसिंह : (कुछ देर तक सोचने के बाद खंजर हाथ में लेकर) अच्छा लो मैं कसम खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हें दलीपशाह के घर पहुँचा दूँगा।

कला : हाँ, बस मेरी दिलजमयी हो गई।

इतना कहकर कला उठ खड़ी हुई और गदाधरसिंह को साथ लिए हुए पहाड़ी के नीचे उतरने लगी।

पाठकों को समझ रखना चाहिए कि इस सुन्दर घाटी से बाहर निकल जाने के लिए केवल एक ही रास्ता नहीं है बल्कि कई रास्ते हैं जिन्हें मौके-मौके से समयानुसार ये लोग अर्थात् कला और बिमला काम में लाया करती हैं और इनका हाल किसी मौके पर आगे चल कर मालूम होगा। इस समय हम केवल उसी रास्ते का हाल दिखाते हैं जिससे गदाधरसिंह कावे साथ लिए हुए कला बाहर जाने वाली है।

कला पहाड़ी के कोने की तरफ दबती हुई नीचे उतरने लगी। धूप बहुत तेज हो चुकी थी और गरमी से उसे सख्त तकलीफ हो रही थी तथापि वह गौर से कुछ सोचती हुई पहाड़ी के नीचे उतरने लगी। जब करीब जमीन के पास पहुँच गई तो एक ऐसा स्थान मिला जहाँ जंगली झाड़ियाँ बहुतायत से थीं और वहाँ पत्थर का एक छोटा बुर्ज भी था जिस पर चढ़ने के लिए उसके अंदर की तरफ छोटी-छोटी तीस या पैंतीस सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। उस बुर्ज के ऊपर लोहे की चौरुखी झंडी लगी हुई थीं, अर्थात् लोहे के बनावटी बाँस पर लोहे के ही तपरों की बनी चौरुखी झंडी इस ढंग से बनी हुई थी कि यह घुमाने से घूम सकती थी। एक झंडी का रंग सफेद, दूसरी का स्याह, तीसरी का लाल और चौथी झंडी का पीला था। इस समय पीले रंग वाली झंडी का रुख बँगले की तरफ घूमा हुआ था। वहाँ पार खड़ी होकर कला ने गदाधरसिंह से कहा, ''बस इसी जगह बाहर निकल जाने के लिए एक सुरग है और यह बुर्ज उसकी ताली है अर्थात्

दरवाजा खोलने के लिए पहिले मुझे इस बुर्ज के ऊपर जाना होगा अस्तु तुम इसी जगह खड़े रहो, मैं क्षण-भर के लिए ऊपर जाती हूँ।''

गदाधरसिंह : (कुछ सोचकर) तो मुझे भी अपने साथ लेती चलो, मैं देखूँगा कि वहाँ तुम क्या करती हो।

कला : (मुसकराकर) तो तुम इस रास्ते का भेद जानना चाहते हो?

गदाधरसिंह : हाँ वेशक् और इसीलिए तो मैंने तुमसे दलीपशाह के पास पहुँचा देने का वादा किया है।

कला : अव चलो।

गदाधरसिंह कला के साथ उस बुर्ज के अन्दर घुस गया। उसने देखा कि कला ने ऊपर चढ़ कर उस झंडी के बाँस को जो बुर्ज के बीचोंबीच से छत फोड़ कर अन्दर निकला हुआ था कि घुमा दिया। वस इसके अतिरिक्त उसने और कुछ भी नहीं किया और बुर्ज के नीचे उतर आई। वाहर निकलने पर गदाधरसिंह ने देखा कि जिस रुख पर पीले रंग की झंडी थी, अव उस रुख पर लाल रंग की झंडी है। मगर इस काम से और इस सुरंग के दरवाजे से क्या संबंध हो सकता है सो उसकी समझ में न आया। कुछ गौर करने पर यकायक खयाल आया कि ये झंडियाँ यहाँ रहने वालों के लिए इशारे का काम करती हो तो कोई ताज्जुब की वात नहीं है। वह सोचने लगा कि निःसन्देह यह औरत बड़ी चालाक और धूर्त है, पहिले भी इसी ने मुझ पर वार किया था, बेहोशी की दवा से भरा हुआ तमंचा इसी ने तो मुझ पर चलाया था और इस समय भी इसी से मुझे पाला पड़ा है, देखना चाहिए यह क्या रंग लाती है। इस समय भी अगर यह मेरे साथ दग़ा करेगी तो मैं इसे दुरुस्त ही करके छोडूँगा इत्यादि।

गदाधरसिंह को सोच और विचार में पड़े हुए देखकर कला भी समझ गई कि वह मेरी ही विषय में चिंता कर रहा है और इसे इस झंडी के घुमाने पर शक हो गया और अस्तु उसने शीघ्रता से मुद्रा दिखाते हुए गदाधरसिंह से कहा, ''बस आओ और जल्दी से खोह के अन्दर घुसो क्योंकि पहिला दरवाजा खुल गया है।''

बुर्ज के नीचे उतर जाने के बाद गदाधरसिंह को साथ लिए हुए कला यहाँ से पश्चिम तरफ ढालवी जमीन पर चलने लगी और लगभग तीस या चालीस कदम चलने के बाद एक ऐसी जगह पहुँची जहाँ चार-पाँच पेड़ परिजात के लगे हुएथे और उनके वीच में जंगली लताओं से छिपा हुआ एक छोटा दरवाजा था। कला ने गदाधरसिंह की तरफ देख के कहा, ''यही उस खोह का दरवाजा है जिस राह से हम लोगों का आना-जाना होता है, अब मैं इसके अन्दर घुसती हूँ, तुम पीछे चले जाओ।''

गदाधरसिंह : जहाँ तक मेरा खयाल है मैं यह कह सकता हूँ कि इस खोह के अन्दर जरूर अँधकार होगा। कहीं ऐसा न हो कि तुम आगे चलकर गायब हो जाओ और मैं अँधेरे में तुम्हें टटोलता, पुकारता और पत्थरों से ठोकरें खाता हुआ परेशानी में फँस जाऊँ, क्योंकि नित्य आने-जाने के कारण यह रास्ता तुम्हारे लिए खेल हो रहा है। इसके अतिरिक्त यह रास्ता एकदम सीधा कभी न होगा, जरूर रास्ते में गिर ही पड़ी होगी। या यों कहा जाय कि इसके बीच में दो-एक तिलिस्मी दरवाजे जरूर लगे होंगे।

कला : नहीं-नहीं, तुम वेखौफ मेरे पीछे चले आओ, यह रास्ता बहुत साफ है।

गदाधरसिंह : नहीं, मैं ऐसा वेवकूफ नहीं हूँ, बेहतर होगा कि तुम अपनी कमर में मुझे कमंद बाँधने दो, मैं उसे पकड़े हुए तुम्हारे पीछे-पीछे चला चलूँगा।

कला : अगर तुम्हारी यही मर्जी है तो मुझे मंजूर है।

आखिर ऐसा ही हुआ, गदाधरसिंह ने कला की कमर में कमन्द बाँधी और उसे आगे चलने के लिए कहा और उस

कमन्द का दूसरा सिरा पकड़े हुए पीछे-पीछे आप रवाना हुआ। गदाधरसिंह को इस बात का बहुत खयाल था कि सुरंग की राह से आने-जाने का रास्ता किसी तरह मालूम कर ले, मगर कला किसी दूसरी ही फिक्र में थी, वह यह नहीं चाहती थी कि इसी सुरंग के अन्दर भूतनाथ अर्थात् गदाधरसिंह को फँसा कर मार डाले, इस समय उसे इस सुरंग से निकाल देना ही वह पसन्द करती थी, अस्तु वह धीरे-धीरे सुरंग के अन्दर से रवाना हुई।

पंद्रह या बीस कदम आगे जाने के बाद सुरंग में एकदम अँधकार मिला इसलिए गदाधरसिंह को टटोल-टटोलकर चलने की जरूरत पड़ी मगर कला तेजी के साथ कदम बढ़ाए चली जा रही थी और एकतौर पर गदाधरसिंह को खेंचे लिए जाती थी।

कला : अब तुम जल्दी चलते क्यों नहीं? रास्ता बहुत चलना है और तुम्हारी सताई हुई प्यास के मारे मैं बेचैन हो रही हूँ, इस खोह के बाहर निकलकर तब पानी पीऊँगी, और तुम्हारा यह हाल है कि चींटी की तरह कदम बढ़ाते हो, मेरे पीछे-पीछे आने में भी तुम्हारी यह दशा है, तुम कैसे ऐयार हो?

गदाधरसिंह : मालूम होता है कि मुझे आज तुमसे भी कुछ सीखना पड़ेगा, मेरी ऐयारी में जो कुछ कसर थी उसे अब कदाचित् तुम लोग ही पूरा करोगी।

कला : वास्तव में ऐसी ही बात है, देखो यहाँ एक दरवाजा आया है, जरा संभलकर चौखट लाँघना नहीं ठोकर खाओगे।

उसी समय किसी तरह के खटके की आवाज आई और मालूम हुआ कि दरवाजा खुल गया। गदाधरसिंह बहुत होशियारी से इस नीयत से हाथ बढ़ा कर टटोलता हुआ आगे बढ़ा कि दरवाजे का पता लगावे और मालूम करे कि वह कैसा है या किसी तरह से खुलता है मगर चौखट लाँघ जाने पर भी जब इस बात का कुछ पता न लगा तब उसने चिढ़ कर कला से कहा, "क्या खाली चौखट ही थी या यहाँ तुमने दरवाजा खोला है?"

कला : इस बात के जानने की तुम्हें कोई जरूरत नहीं, मैंने तुमसे यह वादा नहीं किया है कि यहाँ के सब भेद बता दूँगी।

गदाधरसिंह : मैं यहाँ के भेद जानना नहीं चाहता मगर इस सुरंग का हाल तो तुम्हें बताना ही पड़ेगा।

कला : इस भरोसे मत रहना, मैं वादे के मुताबिक तुम्हें इस जगह से बाहर कर दूँगी और तुम प्रतिज्ञानुसार मुझे दलीपशाह के पास पहुँचा देना।

गदा धरसिंह : क्या तुम नहीं जानती कि अभी तक तुम मेरे कब्जे में हो और मैं जितना चाहे तुम्हें सता सकता हूँ?

कला : तुम्हारे ऐसे बेवकूफ ऐयार के मुँह से ऐसी बात निकले तो कोई ताज्जुब की बात नहीं! अजी तुम यही गनीमत समझो कि इस घाटी के अन्दर हम लोगों ने तुम्हें किसी तरह का दुःख नहीं दिया क्योंकि हम लोग तुम्हारे साथ कोई और ही सलूक किया चाहती हैं और किसी दूसरे ढंग पर बदला लेने का इरादा है। यह तुम्हारी भूल है कि तुम मुझे अपने कब्जे में समझते हो, अगर अपनी खैरियत चाहते हो तो चुपचाप चले जाओ।

कला की ऐसी बातें सुनकर गदाधरसिंह झल्ला उठा और उसने क्रोध के साथ कमन्द खैंची। उसे आशा थी कि कला इसके साथ खिंचती चली आवेगी मगर ऐसा न हुआ और खाली कमन्द खिंचकर गदाधरसिंह के हाथ में आ गई, क्योंकि रास्ता चलते-चलते कला ने वह कमंद खोल डाली थी, इसलिए कि उसके हाथ खुले थे। गदाधरसिंह ने इस खयाल से उसके हाथ नहीं बाँधे थे और कला ने भी ऐसा ही बहाना किया था कि सुरंग के अंदर कई कठिन दरवाजे खोलने पड़ेंगे।

जिस समय खाली कमंद खिंचकर गदाधरसिंह के हाथ में आ गई उसका कलेजा दहल उठा और वह वास्तव में बेवकूफ-सा बनकर चुपचाप खड़ा रह गया मगर साथ ही कला की आवाज आई "कोई चिंता मत करो, चुपचाप कदम

बढ़ाते चले आओ और समझ लो कि यहाँ भी तुम्हें बहुत कुछ सीखना पड़ेगा।''

एक खटके की आवाज आई और आहट से उसी समय यह भी मालूम हो गया कि जिस चौखट को लाँघकर वह आया था उसमें किसी तरह का दरवाजा था जो उसके इधर आ जाने के बाद आप-से-आप बंद हो गया। पीछे की तरफ हटकर और हाथ बढ़ाकर देखा तो अपना खयाल सच पाया और विश्वास हो गया कि अब उसका पीछे की तरफ लौट जाना असंभव हो गया।

वहाँ की अवस्था और कला की बातों से गदाधरसिंह का गुस्सा बराबर बढ़ता ही गया और इस बात की उसे बहुत ही शर्म आई कि एक साधारण औरत ने उसे उल्लू बना दिया। मगर वह कर ही क्या सकता था, उन अनजान सुरंग और अंधकार में उसका क्या बस चल सकता था? परन्तु इतने पर भी उसने मजबूर होकर कला के पीछे-पीछे टटोलते हुए जाना पसन्द नहीं किया।

कई सायत तक चुपचाप खड़े रहकर कुछ सोचने के बाद उसने अपने बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी की और आँखें फाड़ कर चारों तरफ देखने लगा। उसने देखा कि यह सुरंग बहुत बड़ी चौड़ी और कुदरती ढंग पर बनी हुई है तथा ऊँचाई भी किसी तरह कम नहीं है, तीन आदमी एक साथ खड़े होकर उसमें बखूबी लंबी है क्योंकि आगे की तरफ बिलकुल अँधकार मालूम होता था। पीछे की तरफ देखा तो दरवाजा बंद पाया जिसमें किसी तरह की कुंडी, खटके या ताले का निशान नहीं मालूम होता था।

गदाधरसिंह हाथ में बत्ती लिए हुए आगे की तरफ कदम बढ़ाये रवाना हुआ। लगभग डेढ़ सौ कदम जाने के बाद उसे पुनः दूसरी चौखट लाँघने की जरूरत पड़ी। उसके पार हो जाने के बाद यह दरवाजा भी आप-से-आप बंद हो गया। उसने अपनी आँखों से देखा कि लोहे का बहुत बड़ा तख्ता एक तरफ से निकल कर रास्ता बंद करता हुआ दूसरी तरफ जाकर हाथ भर तक दीवार के अन्दर घुस गया, क्योंकि वह पीछे फिर कर देखता हुआ आगे बढ़ा था। वह पुनः आगे की तरफ बढ़ा मगर अब क्रमशः सुरंग तंग और नीची मिलने लगी। उसे कला का कहीं पता न लगा जिसे गिरफ्तार करने के लिए वह दाँत पीस रहा था।

कई सौ कदम चले जाने के बाद पिछले दो दरवाजों की तरह उसे और भी तीन दरवाजे सामने पड़े और सब वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ दो तरफ को रास्ता फूट गया था। वहाँ पर वह अटक गया और सोचने लगा कि किस तरफ जाय। कुछ ही सायत बाद एक तरफ से आवाज आई, ''अगर सुरंग के बाहर निकल जाने की इच्छा हो तो दाहिनी तरफ चला जा और अगर यहाँ के रहने वालों की ऐयारी का इम्तिहान लेना हो और किसी को गिरफ्तार करने की प्रबल अभिलाषा हो तो बाईं तरफ का रास्ता पकड़!''

गदाधरसिंह चौकन्ना होकर उस तरफ देखने लगा जिधर से आवाज आई थी मगर किसी आदमी की सूरत दिखाई न पड़ी। आवाज पर गौर करने से विश्वास हो गया कि यह उसी औरत (कला) की आवाज है जिसकी बदौलत वह यहाँ तक आया था। आवाज किस तरफ से आई या आवाज देने वाला कहाँ है और वहाँ तक पहुँचने की क्या तरकीब हो सकती है इत्यादि बातों पर गौर करने के लिए भी गदाधर वहाँ न अटका और गुस्से के मारे पेचोताब खाता हुआ दाहिनी तरफ वाली सुरंग में रवाना हुआ। थोड़ी देर तक तेजी के साथ चलकर वह सुरंग से बाहर निकल आया और ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ बहुत सुन्दर और सुहावने बेल और परिजात के पेड़ लगे हुए थे और हरी-हरी लताओं से सुरंग का मुँह ढका हुआ था।

जहाँ पर गदाधरसिंह खड़ा था उसके दाहिनी तरफ कई कदम की दूरी पर सुन्दर झरना था जो पहाड़ की ऊँचाई से गिरता हुआ तेजी के साथ बह रहा था। यद्यपि इस समय उसके जल की चौड़ाई चार या पाँच हाथ से ज्यादा न थी मगर दोनों तरफ के कगारों पर ध्यान देने से विश्वास होता था कि मौसम पर जरूर चश्मा छोटी-मोटी नदी का रूप धारण कर लेता होगा।

गदाधरसिंह ने देखा कि उस चश्मे का जल मोती की तरह साफ और निखरा हुआ बह रहा है और उसके उस पार वही

औरत (कला) जिसने उसे धोखा दिया था हाथ में तीर-कमान लिए खड़ी उसकी तरफ देख रही है। वह अकेली नहीं है बल्कि और भी चार औरतें उसी की तरह हाथ में तीर-कमान लिए उसके पीछे हिफाजत के खयाल में खड़ी हैं।

गदाधरसिंह क्रोध से भरा हुआ लाल आँखों से उस औरत (कला) की तरफ देखने लगा और कुछ बोलना ही चाहता था कि सामने से और भी दो आदमी आते हुए दिखाई दिए जिन्हें नजदीक आने पर भी उसने नहीं पहिचाना मगर उसे खयाल हुआ कि इन दोनों के ऐयारी के ढंग पर अपनी सूरतें बदली हुई हैं।

ये दोनों आदमी गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह थे जिनकी सूरत इस समय वास्तव में बदली हुई थीं। प्रभाकर सिंह ने निगाह पड़ते ही कला को पहचान लिया क्योंकि उसे बदली हुई सूरत में कला और बिमला को देख चुके थे, हाँ, कला ने प्रभाकर सिंह को नहीं पहचाना जो उस समय भी सुन्दर सिपाहियाना ठाठ में सजे हुए थे।

कला को इस जगह ऐसी अवस्था में देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ और वे उससे कुछ पूछना ही चाहते थे कि उनकी निगाह गदाधरसिंह पर जा पड़ी जो चश्मे के उस पार पत्थर की चट्टान पर खड़ा इन लोगों की तरफ देख रहा था।

प्रभाकर सिंह ने इस ढंग पर अपनी सूरत बदली हुई थी कि उन्हें यकायक पहिचानना बड़ा कठिन था मगर एक बँधे हुए इशारे से उन्होंने कला पर अपने को प्रकट कर दिया और यह बतला दिया कि जो आदमी मेरे साथ है वह मेरा सच्चा खैरख्वाह गुलाबसिंह है।

गुलाबसिंह का हाल कला को मालूम था क्योंकि वह उसकी तमारीफ इंदुमति से सुन चुकी थी और जानती थी कि ये प्रभाकर सिंह के विश्वासपात्र हैं इसलिए इनसे कोई बात छिपाने की जरूरत नहीं है अस्तु पूछने पर उसने अपने साथ वाली औरतों को अलग करके सब हाल अपना और भूतनाथ का साफ-साफ बयान कर दिया जिसे सुनते ही प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह हँस पड़े।

प्रभाकर सिंह : वास्तव में तुम बेतरह इसके हाथ फँस गई थीं मगर खूब ही चालाकी से अपने को बचाया!

गुलाबसिंह : (प्रभाकर सिंह की तरफ देख के) यद्यपि गदाधरसिंह इनका कसूरवार है और आजकल उसने अजीब तरह का ढंग पकड़ रखा है तथापि मैं कह सकता हूँ कि गदाधरसिंह ने इन्हें पहिचाना नहीं, अगर पहिचान लेता तो कदापि इनके साथ बेअदबी का बर्ताव न करता।

कला : (गुलाबसिंह से) आज जो चाहें कहें क्योंकि वह आपका दोस्त है मगर हम लोगों को उस पर कुछ भी विश्वास नहीं है। (प्रभाकर सिंह से) मालूम होता है कि हम लोगों का हाल आपने इनसे कह दिया है।

प्रभाकर सिंह : हाँ, बेशक् ऐसा ही है मगर तुम लोगों को इन पर विश्वास करना चाहिए क्योंकि ये मेरे सच्चे सहायक, हितैषी और दोस्त हैं। तुम लोगों को भी इनसे बड़ी मदद मिलेगी।

कला : ठीक है और मैं जरूर इन पर विश्वास करूँगी क्योंकि इनका पूरा-पूरा हाल बहिन इंदुमति से सुन चुकी हूँ, यद्यपि ये गदाधरसिंह के दोस्त हैं और हम लोग उनके साथ दुश्मनी का बर्ताव कर रहे हैं।

गुलाबसिंह : (कला से) यद्यपि गदाधरसिंह मेरा दोस्त है मगर (प्रभाकर सिंह की तरफ बताकर) इनके मुकाबले में मैं उस दोस्ती की कुछ भी कदर नहीं करता। इनके लिए मैं उसी को नहीं बल्कि दुनिया के हर एक पदार्थ को जिसे मैं प्यार करता हूँ छोड़ देने के लिए तैयार हूँ। अच्छा जाने दो इस समय पर इन बातों की जरूरत नहीं, पहिले उस (गदाधरसिंह) से बातें करके उसे विदा कर लो फिर हम लोगों से बातें होती रहेंगी। हाँ, यह तो बताओ कि जब तुमने इसे गिरफ्तार ही कर लिया था तो फिर मार क्यों नहीं डाला?

कला : हम लोग इसे मार डालना पसन्द नहीं करतीं बल्कि यह चाहती हैं कि जहाँ तक हो सके इसकी मिट्टी पलीद करें

और इसे किसी लायक न छोड़ें। यह किसी के सामने मुँह दिखाने के लायक न रहे बल्कि आदमी की सूरत देखकर भागता फिरे, और इसके माथे पर कलंक का ऐसा टीका लगे कि किसी के छुड़ाए न छूटे सके और यह घबड़ाकर पछताता हुआ जंगल-जंगल छिपता फिरे।

गुलाबसिंह : बेशक् यह बहुत बड़ी सजा है, अच्छा तुम उससे बात करो।

गदाधरसिंह दूर खड़ा हुआ इन लोगों की तरफ बराबर देख रहा था मगर इन लोगों की बातें उसे कुछ भी सुनाई नहीं देती थीं और न वह हाव-भाव ही से कुछ समझ सकता था, हाँ इतना जानता था कि अब वह कला का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

कला : (कुछ आगे बढ़ कर ऊँची आवाज में गदाधरसिंह से) अब तो तुम इस घाटी के बाहर निकल आए, मैंने जो कुछ वादा किया था सो पूरा हो गया अब तुम मुझे दलीपशाह के पास ले चलकर अपना वादा पूरा करो।

गदाधरसिंह : (कला की तरफ बढ़ कर) बेशक् तुम्हारी ऐयारी मुझ पर चल गई और मैं बेवकूफ बन गया। मैं यह भी खूब समझता हूँ कि दलीपशाह से मुलाकात करने की तुम्हें कोई जरूरत न थी, वह केवल बहाना था, और न अब तुम मेरे साथ दलीपशाह के पास जा ही सकती हो। अस्तु कोई चिंता नहीं, तुम मेरे हाथ से निकल गईं और मैं तुम्हारे पंजे से छूट गया। अच्छा अब मैं जाता हूँ मगर कहे जाता हूँ कि तुम लोग व्यर्थ ही मुझसे दुश्मनी करती हो। दयाराम जी के विषस में जो कुछ तुम लोगों ने सुना है या जो कुछ तुम लोगों का खयाल है वह बिलकुल झूठ है, वह मेरे सच्चे प्रेमी थे और मैं अभी तक उनके लिए रो रहा हूँ, यदि जमना और सरस्वती वास्तव में जीती हैं और तुम लोग उनके साथ रहती हो तो जाकर कह देना कि गदाधरसिंह तुम लोगों के साथ दुश्मनी कदापि न करेगा, यद्यपि तुम्हारा हाल जानने के लिए वह तुम्हारे आदमियों को दुःख दे और सतावे तो हो सकता है मगर वह तुम दोनों को कदापि दुःख न देगा। तुम यदि इच्छा हो तो गदाधरसिंह को सता लो, उसे तुम्हारे लिए जान दे देने में भी कुछ उज्र न होगा।

इतना कहकर भूतनाथ वहाँ से पलट पड़ा और देखते-देखते नजरों से गायब हो गया।

गुलाबसिंह को बाहर ही छोड़कर प्रभाकर सिंह कला के साथ घाटी के अन्दर चले गये और गुलाबसिंह से कह गये कि तुम इसी जगह ठहरकर मेरा इंतजार करो, इंदुमति तथा बिमला से मिलकर आता हूँ तो चुनार की तरफ चलूँगा क्योंकि जब तक शिवदत्त से बदला न ले लूँगा तब तक मेरा मन स्थिर न होगा।

संध्या हो चुकी थी जब प्रभाकर सिंह लौट कर गुलाबसिंह के पास आए और दोनों आदमी धीरे-धीरे बातचीत करते हुए चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुए।

इन दोनों को इस बात की कुछ भी खबर नहीं है कि भूतनाथ इनका पीछा किये चला आ रहा है और चाहता है कि इन दोनों को किसी तरह पहिचान ले। इन दोनों के खयाल से भूतनाथ उसी समय कला के सामने ही चला गया था मगर वास्तव में वह थोड़ी दूर जाकर छिप रहा था और अब मौका पाकर इन दोनों के पीछे-पीछे छिपता हुआ रवाना हुआ।

3

क्या भूतनाथ को कोई अपना दोस्त कह सकता था? क्या भूतनाथ के दिल में किसी की मुहब्बत कायम रह सकती थी? क्या भूतनाथ किसी के एहसान का पाबंद रह सकता था? क्या भूतनाथ पर किसी का दबाव पड़ सकता था? क्या भूतनाथ पर कोई भरोसा रख सकता था? इसका जवाब देना बहुत कठिन है। जो गुलाबसिंह भूतनाथ को अपना दोस्त कहता था आज वही गुलाबसिंह भूतनाथ पर भरोसा नहीं करता और इसी तरह भूतनाथ भी उसे अपना दोस्त नहीं समझता। जिस प्रभाकर सिंह की मदद के लिए भूतनाथ कमर बाँध कर तैयार हुआ था आज उसी प्रभाकर सिंह पर ऐयारी का वार करके इंदुमति को सताने के लिए वह तैयार हो रहा है।

सूरत बदले हुए प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह को यद्यपि भूतनाथ ने पहिचाना न था मगर उसे किसी तरह का शक जरूर हो गया था और यही जाँच करने के लिए उसने इन दोनों का पीछा किया था।

रात पहर भर से ज्यादे हो चुकी थी। गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह आपस में बातें करते हुए चुनारगढ़ की तरफ जा रहे थे। वे दोनों इस विचार में थे कि कोई गाँव या बस्ती आ जाय तो वहाँ थोड़ी देर के लिए आराम करें। कुछ दूर और जाने के बाद वे दोनों ऐसी जगह पहुँचे जहाँ जंगली पेड़ बहुत ही कम होने के कारण वह जमीन मैदान का नमूना बन रही थी और पगडंडी रास्ते से कुछ हट कर दाहिनी तरफ एक सुन्दर कुआँ भी था जिसे देख इन दोनों की इच्छा हुई कि इस कुएँ पर बैठकर कुछ देर आराम कर लें तब आगे बढ़ें।

कुएँ के पास जाकर देखा कि एक आदम गमछा बिछाए उसी जगह पर आराम कर रहा है और डोरी तथा लोटा उसके सिरहाने की तरफ पड़ा हुआ है।

गुलाबसिंह ने प्रभाकर सिंह की तरफ देखकर कहा, ''कुछ देर के लिए यहाँ आराम कीजिए, पानी पीजिए, और हाथ-मुँह धो ठंडे होकर सफर की हरारत मिटाइए!'' इसके जवाब में प्रभाकर सिंह ने कहा, ''पानी पीने के लिए हम लोगों के पास लोटा-डोरी तो है नहीं, हाँ आगे किसी ठिकाने पर चलें तो सभी कुछ हो सकता है, बल्कि वहाँ खाने-पीने का भी सुबीता होगा!''

इन दोनों की बातें सुनकर वह मुसाफिर जो कुएँ की जगत पर लेटा हुआ था उठ बैठा और बोला, ''हाँ हाँ, आप क्षत्री जान पड़ते हैं और मैं भी गौड़ ब्राह्मण हूँ, अभी-अभी यह लोटा माँज कर मैंने रखा है आप पानी खींच लीजिए।''

''अति उत्तम'' कह कर गुलाबसिंह ने लोटा-डोरी उठा ली और प्रभाकर सिंह उसी जगत पर बैठ गये।

गुलाबसिंह ने कुएँ से जल निकाला और दोनों दोस्तों ने हाथ-मुँह धोया। इसके बाद पुनः जल निकाल कर दोनों ने थोड़ा-थोड़ा पीया फिर लोटा माँज मुसाफिर के सिरहाने उसी जगह रख दिया।

गुलाबसिंह यद्यपि होशियार आदमी थे मगर इस जगह एक मामूली बात में भूल कर गये। उन्हें उचित था कि अपने हाथ से लोटा माँज कर तब जलपान करते या मुँह-हाथ धोते, मगर ऐसा न करने से दोनों ही को तकलीफ उठानी पड़ी।

वह आदमी जो कुएँ पर पहिले ही से आराम कर रहा था वास्तव में भूतनाथ था। वह इन दोनों की आहट लेता हुआ इनसे कुछ ही दूर आगे-आगे सफर कर रहा था बल्कि यों कहना चाहिए कि कभी आगे, कभी पीछे, कभी पास कभी दूर जब जैसा मौका पाता उसी तरह उन दोनों के साथ सफर कर रहा था और इस समय पहिले ही से यहाँ आकर इन लोगों को धोखा देने के लिए अटका हुआ था।

प्रभाकर सिंह : (गुलाबसिंह से) यह कुआँ है तो अच्छे मौके पर मगर इसका पानी अच्छा नहीं है।

गुलाबसिंह : हाँ पानी में कुछ बदबू मालूम पड़ती है, मगर यह बात पहिले न थी, मैं कई दफे इस कुएँ का पानी पी चुका

हूँ, यहाँ चार-पाँच कोस के घेरे में यही एक कुआँ है।

इसके बाद दोनों आदमी कुछ देर तक मामूली बातचीत करते रहे क्योंकि अनजान मुसाफिर पास होने के खयाल से मतलब की या भेद की कोई बात नहीं कर सकते थे। इसके बाद वे दोनों चादर बिछाकर लेट गये और बात-की-बात में बेखबर होकर खर्राटे लेने लगे। उस समय भूतनाथ अपनी जगह से उठा और दोनों के पास आकर गौर से देखने लगा कि अभी ये बेहोश हुए हैं या नहीं।

भूतनाथ ने अपने लोटे के अन्दर बेहोशी की दवा लगा दी थी जिसका कुछ हिस्सा पानी में मिल घुलकर इनके पेट में उतर गया था और इसी दवा के महक इन दोनों की नाक में गई थी जिसका असल मतलब न समझ कर इन्होंने पानी की शिकायत की थी।

जब भूतनाथ ने देखा कि वे दोनों अच्छी तरह बेहोश हो गये तब अपने बटुए में से सामान निकालकर उसने रोशनी की, इसके बाद कुएँ में से पानी निकाला और रूमाल तर करके इन दोनों का चेहरा साफ किया। उस समय अच्छी तरह देखने से भूतनाथ का शक जाता रहा और उसने पहिचान लिया कि ये दोनों गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह हैं।

गुलाबसिंह ऐयार नहीं था मगर अकल का तेज होशियार आदमी था तथा ऐयारों के साथ दोस्ती रहने के कारण कुछ-कुछ ऐयारी का काम भी कर सकता था और इसी सबब से उसने अपनी और प्रभाकर सिंह की सूरत मामूली ढंग पर बदल ली थी।

भूतनाथ ने इन दोनों को अच्छी तरह पहिचान लेने के बाद गुलाबसिंह की सूरत पुनः उसी तरह की बना दी और प्रभाकर सिंह को पीठ पर लाद कर अपने घर का रास्ता लिया।

तेजी के साथ चलकर दो ही घंटे में वह अपनी घाटी के मुहाने पर जा पहुँचा जहाँ रहता था तथा जो कला और बिमला की घाटी के साथ सटी हुई थी। वहाँ उसके शागिर्द लोग उसका इंतजार कर रहे होंगे यह सोच भूतनाथ तेजी से कदम बढ़ाता हुआ उस सुरंग के अन्दर घुसा।

सुरंग के अन्दर घुसने के बाद उसी चौमुहानी पर पहुँचा जिसका जिक्र ऊपर कई दफे आ चुका है। इसके बाद यह अपनी घाटी की तरफ घूमा और उस सुरंग में घुसा मगर दो ही चार कदम आगे जाने के बाद दरवाजा बंद देख उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ, उसका दिमाग हिल गया और हिम्मती होने पर भी वह एक दफे काँप उठा।

प्रभाकर सिंह की गठरी उसने जमीन पर रख दी और बटुए में से सामान निकाल रोशनी करने के बाद अच्छी तरह गौर करके देखने लगा कि रास्ता क्योंकर बंद हो गया, मगर उसकी समझ में कुछ भी न आया। उसने सिर्फ इतना देखा कि लोहे का एक बहुत बड़ा तख्ता सामने खड़ा हुआ है जिसके कारण यह बिलकुल नहीं जान पड़ता कि उसका घर किस तरफ है। उसने दरवाजा खोलने की बहुत कोशिश की और बड़ी देर तक हैरान रहा मगर सब बेकार हुआ। यह सोच कर उसकी आँखों में आँसू भर आये कि हाय उसके कई शागिर्द जो इस घाटी के अन्दर हैं सब बेचारे भूख के मारे तड़प कर मर जाएँगे, क्योंकि इस रास्ते के सिवाय बाहर निकलने के लिए उन्हें कोई दूसरा रास्ता न मिलेगा।

प्रभाकर सिंह की गठरी लिए भूतनाथ घबड़ाया हुआ सुरंग के बाहर निकल आया और एक घने पेड़ के नीचे बैठकर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए? इस समय यहाँ मेरा कोई शागिर्द या नौकर भी नहीं मिल सकता जिससे किसी तरह का काम निकाला जाय। जिस खयाल से प्रभाकर सिंह को ले आया था वह काम भी न हुआ। हाय मेरे आदमी एकाएक जहन्नुम में मिल गये और मैं उनकी कुछ भी मदद न कर सका! मालूम होता है कि यहाँ का कोई सच्चा जानकार आ पहुँचा जिसने इस घाटी पर कब्जा कर लिया। क्या दयाराम की दोनों स्त्रियाँ तो यहाँ नहीं आ पहुँची जो पड़ोस में रहती हैं? अगर ऐसा हो भी तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि बगल वाली घाटी जिसमें वे दोनों रहती हैं कोई तिलिस्म मालूम पड़ती है और यह घाटी उससे कुछ संबंध रखती हो तो आश्चर्य ही क्या है। मैं नहीं चाहता था कि उन दोनों को सताऊँ या किसी तरह की तकलीफ दूँ, मगर दोस्तों और शागिर्दों को छुड़ाने के लिए अब

मुझे सभी कुछ करना पड़ेगा।

4

गुलाबसिंह की जब आँख खुली तो रात बीत चुकी थी और सुबह की सुफेदी में पूरब तरफ लालिमा दिखाई देने लग गई थी। वह घवराकर उठ बैठा और इधर-उधर देखने लगा। जब प्रभाकर सिंह को वहाँ न पाया तब बोल उठा, "बेशक् मैं धोखा खा गया। वह मुसाफिर न था बल्कि कोई ऐयार था जिसने लोटे में किसी तरह की दवा लगा दी होगी। क्या मैं कह सकता हूँ कि प्रभाकर सिंह को वही उठा ले गया होगा?"

इतना कह वह जगत के नीचे उतरा और घूम-घूमकर प्रभाकर सिंह की तलाश करने लगा। जब वे न मिले तो तरह-तरह की बातें मन में सोचता हुआ आगे की तरफ बढ़ा

"बेशक् वह कोई ऐयार था जो प्रभाकर सिंह को उठाकर ले गया। ताज्जुब नहीं कि वह भूतनाथ हो। यद्यपि मुझे उससे ऐसी आशा न थी परन्तु आजकल वह जमना और सरस्वती के खयाल से प्रभाकर सिंह को भी अपना दुश्मन समझने लग गया है। यह भी किसी को क्या उम्मीद थी कि जमना और सरस्वती जीती होंगी। खैर मुझे इस समय प्रभाकर सिंह के लिए कुछ बंदोबस्त करना चाहिए, वेहतर होगा यदि मैं स्वयं भूतनाथ के पास चला जाऊँ और उससे प्रभाकर सिंह को माँग लूँ। मगर नहीं, यद्यपि वह मेरा दोस्त है परन्तु इस समय वह दोस्ती पर कुछ भी ध्यान न देगा। अगर उसे ऐसा ही खयाल होता तो प्रभाकर सिंह को ले जाता ही क्यों?, मुझे भी इस समय उससे किसी तरह की उम्मीद न रखनी चाहिए, क्योंकि अब हम लोग दयाराम के खयाल से जमना और सरस्वती के पक्षपाती हो गये हैं, अस्तु अब उसके लिए कोई दूसरा ही बंदोबस्त करना चाहिए। अगर उस खोह का रास्ता मुझे मालूम होता तो मैं जमना और सरस्वती को भी इस बात की खबर दे देता। अब मुझे दलीपशाह के पास चलना चाहिए और उससे मदद माँगनी चाहिए, क्योंकि मैं अकेले भूतनाथ का मुकाबला नहीं कर सकता। दलीपशाह जरूर मेरी मदद करेगा, उस पर मेरा जोर भी है और उसने मेरे साथ अपनी मुहब्बत भी दिखाई है, मगर पहिले अपने आदमियों को समझा देना चाहिए जो अभी तक हम लोगों का इंतजार कर रहे होंगे!"

इत्यादि तरह-तरह की बातें सोचता हुआ गुलाबसिंह आगे की तरह बढ़ा चला जाता था। लगभग एक या डेढ़ कोस गया होगा कि सामने से दो सिपाही ढाल-तलवार लगाए दो घोड़ों की बागडोर थामे आते हुए दिखाई पड़े। जब वे गुलाबसिंह के पास पहुँचे तो सलाम करके खड़े हो गए और गुलाबसिंह भी रुक गया।

गुलाबसिंह : तुम लोग कहाँ जा रहे हो?

एक : आप ही की खोज में जा रहे हैं, क्योंकि रात भर इंतजार करके हम लोग...

गुलाबसिंह : (बात काट कर) बेशक् तुम लोग तरद्दुद में पड़ गए होंगे, मगर क्या करें लाचारी है, अच्छा यह कहो कि बाकी आदमी कहाँ हैं?

एक : अभी तक सब उसी जगह अटके हुए हैं।

गुलाबसिंह : अच्छा एक काम करो, तुम घोड़ा यहीं छोड़ दो और लौट जाओ, हमारे आदमियों को इत्तिला दो कि हमारे घर पर चले जाएँ, पुराने घर पर नहीं आजकल जहाँ हम रहते हैं उस घर पर चले जाएँ, और जब तक हम या प्रभाकर सिंह वहाँ न आवें तब तक कहीं न जाएँ। मैं इस घोड़े पर सवार होकर किसी काम के लिए जाता हूँ। (दूसरे सिपाही की तरफ देखकर) तुम इस दूसरे घोड़े पर सवार हो लो और मेरे साथ-साथ चलो।

इतना कहकर गुलाबसिंह घोड़े पर सवार हो गया। "जो हुक्म" कहकर एक सिपाही तो पीछे की तरफ लौट गया और दूसरा घोड़े पर सवार होकर गुलाबसिंह के साथ रवाना हुआ।

5

ऊपर लिखी वारदात को गुजरे आज कई दिन हो चुके हैं। इस बीच में कहाँ और क्या-क्या नई बातें पैदा हुई उनका हाल तो पीछे मालूम होगा, इस समय हम पाठकों को कला और बिमला की उसी सुन्दर घाटी में ले चलते हैं जिसकी सैर वे पहिले भी कई दफे कर चुके हैं।

उस घाटी के बीचोंबीच में जो सुन्दर बँगला है उसी में चलिए और देखिए कि क्या हो रहा है।

रात घंटे भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है। बँगले के अन्दर एक कमरे में साफ और सुथरा फर्श बिछा हुआ है और उस पर कुछ आदमी बैठे आपस में बातें कर रहे हैं। एक तो इन्द्रदेव हैं, दूसरी कला, तीसरी बिमला और चौथी इंदुमति है, जिसका नाम आजकल 'चंदा' रखा गया है। खैर सुनिए कि इनमें क्या-क्या बातें हो रही हैं।

बिमला : (इन्द्रदेव से) आपका कहना बहुत ठीक है, मैं भी भूतनाथ से इसी तरह पर बदला लेना पसन्द करती हूँ, तभी तो उसे यहाँ से निकल जाने का मौका दिया, नहीं तो यहाँ पर उसको मार डालना कोई कठिन काम न था।

इन्द्रदेव : ठीक है, किसी दुश्मन को मार डालने से मेरी तबीयत तो प्रसन्न नहीं होती। मैं समझता हूँ कि मरने वाले को कई सायत तक की मामूली तकलीफ तो होती है मगर मरने के बाद उसे कुछ भी ज्ञान नहीं रहता कि उसने किसके साथ कैसा सलूक किया था और उसने किस तरह पर उससे बदला लिया। प्राण का संबंध शरीर से नहीं छूटता, उसे कोई-न-कोई शरीर अवश्य ही धारण करना पड़ता है। एक शरीर को छोड़ा तो दूसरा धारण करना पड़ा। यह उसकी इच्छानुसार नहीं होता बल्कि सर्वशक्तिमान जगदीश्वर के रचे हुए मायामय जगत् का यह एक अकाट्य नियम ही है और इसी नियम के अनुसार ईश्वर भले-बुरे कर्मों का बदला मनुष्य को देता है। एक देह को छोड़कर जब जीव दूसरी देह में प्रवेश करता है तब अपने भले-बुरे कर्मों का फल दूसरी देह में भोगता है, मगर इसका उसे कुछ भी परिज्ञान नहीं होता और उस सुख-दुःख का कारण न समझकर वह सहज ही में उस कर्म-फल को अथवा सुख-दुःख को भोग लेता है या भोग करता है। वह इस बात की नहीं समझ सकता कि पूर्व जन्म में मैंने यह पाप किया था जिसका बदला इस तरह पर मिल रहा है, बल्कि उसे वह एक मामूली बात समझता है, और दुःख को दूर करने का उद्योग किया करता है, यही कारण है कि वह पुनः पाप-कर्म में प्रवृत्त हो जाता है। अगर मनुष्य जानता कि यह दुःख उसके किस पाप-कर्म का फल है तो कदाचित् वह पुनः उस पाप-कर्म में प्रवृत्त होने का साहस न करता परन्तु उस महामाया की माया कुछ कही नहीं जाती और समझ में नहीं आता कि ऐसा क्यों होता है कदाचित् उस दयामय के दया भाव ही के कारण हो। इसी से मैं कहता हूँ कि दुश्मन को मार डालने से कोई फल नहीं होता। उसके पाप-कर्म का बदला ईश्वर तो उसे देगा ही परन्तु 'मैं भी तो कुछ बदला दे दूँ'' यही मेरी इच्छा रहती है। चाहे किसी मत के पक्षपाती लोग इसे भी ईश्वर की इच्छा ही कहें परन्तु मेरे चित्त को जो संतोष होता है वह विशेषता इसमें अधिक अवश्य है।

बिमला : निःसन्देह ऐसा ही है।

इन्द्रदेव : दुश्मन बहुत दिनों तक जीता रहकर पाप का प्रायश्चित भोगता रहे सो अच्छा, जितने ही ज्यादे दिनों तक वह पश्चात्ताप करे उतना ही अच्छा, उसके शरीर को जितना ही कष्ट भोगना पड़े उतना ही उत्तम वह अपने सच्चाई के साथ बदला देने वाले को प्रसन्न और हँसता हुआ देखकर जितना ही कुढ़े, जितना ही शर्मिन्दा हो और जितना दुःख पा सके उतना ही शुभ समझना चाहिए। इसी विचार से मैं कहता हूँ कि भूतनाथ को मारो मत, बल्कि उसे जहाँ तक बने सताओ और दुःख दो, भला वह समझे तो सही कि मेरे किस कर्म का यह क्या फल मिल रहा है!!

मगर एक बात और विचारने के योग्य है, वह यह कि इस तरह पर दुश्मन से बदला लेना कुछ सहज काम नहीं है, इसके लिए बड़े ही उद्योग, बड़े ही साहस और बड़े ही धैर्य की जरूरत है और इसके लिए अपने चित्त के भाव को बहुत ही छिपाना पड़ता है, सो ये बातें मनुष्य से जल्दी निभती नहीं, इसी से कई विद्वानों का मत है कि 'दुश्मन को जहाँ तक हो सके जल्द मिटा देना चाहिए, नहीं तो किसी विचार से तरह दे देने पर कहीं ऐसा न हो कि मौका पाकर वह बलवान हो

जाय और तुम्हीं को अपने कब्जे में कर ले'। यह सच है परन्तु यदि ईश्वर सहायक हो और मनुष्य धैर्य के साथ निर्वाह कर सके तो इस बदले से वह पहिला ही बदला अच्छा है जिसे मैं ऊपर बयान कर चुका हूँ

भूतनाथ के साथ इस तरह का वर्त्ताव करने से एक फायदा यह भी हो सकता है कि सच्चे और झूठे मामले की जाँच भी हो जाएगी। कदाचित् उसने तुम्हारे पति को धोखे ही से मारा हो जान-बूझकर न मारा हो, जैसा कि उसका कथन है! भूतनाथ ऐसा बुद्धिमन और धुरंधर यदि अपने कर्मों का प्रायश्चित पाकर सुधर जाय और अच्छी तरह राह पर लगे तो अच्छी ही बात है क्योंकि ऐसे वहादुर लोग दुनिया में कम पैदा होते हैं।

इन्द्रदेव की आखिरी बात कला और बिमला को पसन्द न आई मगर उन्होंने उनकी खातिर से यह जरूर कह दिया कि 'आपका कहना ठीक है'।

कला : खैर अब तो भूतनाथ को मालूम ही हो गया है कि जमना और सरस्वती जीती हैं, देखें हम लोगों के लिए क्या उद्योग करता है।

इन्द्रदेव : कोई चिंता नहीं, मालूम हो गया तो होने दो, तुम होशियारी के साथ इस घाटी के अन्दर पड़ी रहो, किसी को यहाँ का रास्ता मत बताओ और जब कभी इस घाटी के बाहर जाओ तो उन अद्‌भुत हर्वों को जरूर अपने साथ रखो जो मैंने तुम लोगों को दिये हैं।

बिमला : जो आज्ञा।

कला : यहाँ का रास्ता अभी तक तो सिवाय प्रभाकर सिंह के और किसी नए आदमी को मालूम नहीं हुआ, मगर इधर प्रभाकर सिंह जी की जुबानी यह जाना गया कि हम लोगों का कुछ हाल उन्होंने अपने दोस्त गुलाबसिंह को जरूर कह दिया है, मगर यहाँ का रास्ता, घाटी या इसका असल भेद उनको भी नहीं बताया है।

इन्द्रदेव : (कुछ सोचकर) प्रभाकर सिंह बुद्धिमान आदमी हैं, उन्होंने जो कुछ किया होगा उचित किया होगा, इसके विषय में तुम लोग चिंता मत करो। इसके अतिरिक्त गुलाबसिंह पर मैं भी विश्वास करता हूँ। वह निःसंदेह उनका सच्चा हितैषी है और साथ ही इसके साहसी और बहादुर भी हैं। यदि गुलाबसिंह को वे इस घाटी के अन्दर भीं ले आवें तो कोई चिंता की बात नहीं है। (मुसकुराकर) और बेटी, तुमने तो प्रभाकर सिंह को यहाँ का राज्य ही दे दिया, यहाँ के तिलिस्म की ताली ही दे दी है।

बिमला : सो आपकी आज्ञा से, मैंने अपनी तरफ से कुछ भी नहीं किया, परन्तु फिर भी आपकी पसन्द पाये विना वे कुछ कर न सकेंगे। हाँ, एक बात कहना तो मैं भूल ही गई।

इन्द्रदेव : वह क्या?

बिमला : भूतनाथ की घाटी का रास्ता मैंने बंद कर दिया है, अब भूतनाथ अपने स्थान पर नहीं पहुँच सकता और उसके साथी और दोस्त लोग उसी के अन्दर पड़े-पड़े सड़ा करेंगे।

यह कहकर बिमला ने अपनी बेईमान लौंडी चंदो की मौत और भूतनाथ की घाटी का दरवाजा बंद कर देने तक का हाल पूरा-पूरा इन्द्रदेव से बयान किया।

इन्द्रदेव : (कुछ सोच कर) मगर यह काम तो तुमने अच्छा नहीं किया! तुम लोगों को मैंने इस घाटी में इसलिए स्थान दिया था कि अपने दुश्मन भूतनाथ का हाल-चाल बराबर जाना करोगी? वह इस घाटी के पड़ोस में रहता है और यहाँ से उस घाटी का हाल बखूबी जाना जा सकता है, इसी सुबीते को देखकर मैंने तुम लोगों को यहाँ छोड़ा था, सो सुबीता तुमने अपने से बिगाड़ दिया। यद्यपि भूतनाथ के संगी-साथी इससे परेशान होकर मर जाएगे मगर इससे भूतनाथ का कुछ

नहीं बिगड़ेगा। वह इस स्थान को छोड़कर दूसरी जगह चला जाएगा, फिर तुम्हें उसके काम-काज की भी कुछ खबर नहीं मिला करेगी। तुम ही सोचो कि यदि वह तुम्हारे किसी साथी या दोस्त को गिरफ्तार करता तो जरूर इस घाटी में ले आता और तुम्हें उसकी खबर लग जाती, तब तुम उसको छुड़ाने का उद्योग करतीं, मगर अब क्या होगा? अब तो अगर वह तुम्हारे किसी साथी को पकड़ेगा तो दूसरी जगह ले जाएगा और ऐसी अवस्था में तुम्हें कुछ भी पता न लगेगा।

बिमला : (सिर झुका कर) बेशक् यह बात तो है।

कला : निःसन्देह भूल हो गई!

इंदुमति : गहरी भूल हो गई। आखिर हम लोग औरत की जात, इतनी समझ कहाँ अब इस भूल का सुधार क्योंकर हो?

इन्द्रदेव : अब इस भूल का सुधार होना जरा कठिन है, भूतनाथ जरूर चौकन्ना हो गया होगा और अब वह अपने लिए दूसरा स्थान मुकर्रर करेगा। (कुछ विचार कर) मगर खैर एक दफे मैं इसके लिए उद्योग जरूर करूँगा, कदाचित् काम निकल जाय।

कला : क्या उद्योग कीजिएगा?

इन्द्रदेव : सो अभी से कैसे कहूँ? वहाँ जाने पर और मौका देखने पर जो कुछ बन जाय। यदि भूतनाथ इस घाटी में बना रहेगा तो बहुत काम निकलेगा।

बिमला : तो क्या आप अकेले भूतनाथ की तरफ या उस घाटी में जाएँगे?

इन्द्रदेव : हाँ, जा सकता हूँ क्योंकि वे लोग मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते और न मुझे भूतनाथ की कुछ परवाह ही है, मगर मेरा इरादा है कि इस काम के लिए दलीपशाह को भी अपने साथ लेता जाऊँ।

इतना कहकर इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और उस कमरे में चले गए जो यहाँ नहाने-धोने के लिए मुकर्रर था।

दिन तीन पहर से ज्यादे बढ़ चुका है। इस समय हम भूतनाथ को एक घने जंगल में अपने तीन साथियों के साथ पेड़ के नीचे बैठे हुए देखते हैं। यह जंगल उस घाटी से बहुत दूर न था जिसमें भूतनाथ रहता था और जिसका रास्ता बिमला ने बंद कर दिया था।

भूतनाथ : (अपने सथियों से) मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि मेरे साथी लोग इस घाटी में कैदियों की तरह बंद होकर दुःख भोग रहे हैं। यद्यपि वहाँ पानी की कमी नहीं है और खाने के लिए भी इतना सामान है कि लोग महीनों तक निर्वाह कर सकें, मगर फिर कब तक! आखिर जब यह सामान चुक जाएगा तो फिर वे लोग क्या करेंगे?

एक : ठीक है मगर साथ ही इसके यह खयाल भी तो होता है कि शायद हमारे दोस्तों को भी तकलीफ दी गई हो!

भूतनाथ : हो सकता है लेकिन इस विचार पर मैं विशेष भरोसा नहीं करता, क्योंकि दरवाजा बंद कर देना सिर्फ एक जानकार आदमी का काम है मगर हमारे साथियों से लड़ कर बीस या पच्चीस आदमी पार नहीं पा सकते।

दूसरा : है तो ऐसी ही बात, इसी से आशा होती है कि अभी तक वे सब जीते होंगे, अस्तु जिस तरह हो सके उन्हें बचाना चाहिए।

भूतनाथ : मैं इसी फिक्र में पड़ा हूँ और सोच रहा हूँ कि उनको बचाने के लिए क्या इंतजाम किया जाय।

एक : पहिले तो उसका पता लगाना चाहिए जिसने दरवाजा बंद कर दिया है।

भूतनाथ : हाँ और इस विषय में मुझे उन्हीं औरतों पर शक होता है, जो इस पड़ोस वाली घाटी में रहती हैं, जहाँ मैं कैद होकर गया था, और जहाँ सुनने में आया के जमना और सरस्वती अभी तक जीती-जागती हैं और मुझसे दयाराम का बदला लेने के लिए उद्योग कर रही हैं। वास्तव में यह घाटी बड़ी विचित्र है। निःसन्देह वह तिलिस्म है और अगर मेरा खयाल ठीक है तो वहाँ की रहने वालियाँ आस-पड़ोस की भी घाटियों का हाल जानती होंगी, बल्कि मेरी इस घाटी से भी संबंध रखती हों तो ताज्जुब नहीं!

तीसरा : आपका विचार बहुत ठीक है। अगर वास्तव में जमना और सरस्वती जीती हैं और उसी घाटी में रहती है तो निःसन्देह यह काम उन्हीं का है और उन्हीं लोगों में से किसी को गिरफ्तार करने से हमारा काम निकल सकता है।

भूतनाथ : बेशक्, और मैं उन लोगों में से किसी को जरूर गिरफ्तार करूँगा।

एक : आप जब गिरफ्तार होकर वहाँ गए तो वहाँ की अवस्था देखकर और उन लोगों की बातें सुनकर जमना व सरस्वती के विषय में आपने क्या विश्वास किया?

भूतनाथ : मुझे विश्वास होता है कि जरूर वे दोनों जीती हैं।

दूसरा : तो यह घाटी उन लोगों को किसने रहने के लिए दी और इन लोगों का मददगार कौन है?

भूतनाथ : यही तो एक विचार करने की बात है। मेरे खयाल से अगर इन्द्रदेव उन दोनों के पक्षपाती बने हों तो कोई ताज्जुब की बात नहीं क्योंकि दयाराम जी मेरे हाथ से मारे गये इस बात को दुनिया में मेरे सिवाय सिर्फ दो ही आदमी और जानते हैं, एक तो दलीपशाह दूसरा शम्भू। शम्भू तो इन्द्रदेव का शागिर्द ही ठहरा और दलीपशाह इन्द्रदेव का दिली दोस्त! यद्यपि दलीपशाह मेरा नातेदार है और उसने इस बात को छिपा रखने के लिए मुझसे कसम भी खाई है, मगर अब मालूम होता है कि उसने अपनी कसम तोड़ दी ओर इस भेद को खोल दिया। इस बात का सबसे बड़ा सबूत एक

यह है कि जब मैं कैद होकर उस घाटी में गया था तो एक औरत ने जोर देकर मुझसे बयान किया था कि तुमने दयाराम को मारा है और इसके सबूत में पेश करने के लिए दलीपशाह और शम्भू अभी तक जीते हैं। अस्तु मेरा यह विचार पक्का है कि निःसन्देह शम्भू और दलीपशाह ने भेद खोल दिया और सबसे पहिले उन्होंने जरूर अपने दोस्त इन्द्रदेव से वह हाल बयान किया होगा। ऐसी अवस्था में ताज्जुब नहीं कि इन्द्रदेव ही इन दोनों के पक्षपाती बने हों।

एक : तो इन्द्रदेव को क्या आपसे कुछ दुश्मनी है?

भूतनाथ : नहीं इस बात का तो मुझे गुमान भी नहीं होता।

एक : और यदि इन्द्रदेव चाहे तो क्या आपको कुछ सता नहीं सकते? या आपको गिरफ्तार करके सजा नहीं दे सकते?

भूतनाथ : बेशक् इन्द्रदेव जो कुछ चाहें कर नहीं सकते हैं, उनकी ताकत का कोई अंदाजा नहीं कर सकता, वे एक बहुत बड़े तिलिस्म के राजा समझे जाते हैं, मुझसे वे बहुत ज्यादे जबर्दस्त हैं और ऐयारी में भी मैं उन्हें अपने से बढ़कर मानता हूँ। यद्यपि एक विषय में अपने को उनका कसूरवार मानता हूँ मगर फिर भी कह सकता हूँ कि वे मेरे दोस्त हैं।

दूसरा : तो आप ऐसे दोस्त पर इस तरह का शक क्यों करते हैं?

भूतनाथ : दिल ही तो है, खयाल ही तो है! जब आदमी किसी मुसीबत में गिरफ्तार होता है तो उसके सोच-विचार और शक का कोई हिसाब नहीं रहता। मै। इस समय मुसीबत की जिंदगी बिता रहा हूँ। मुझसे दो-तीन काम बहुत बुरे हो गये हैं जिनमें एक दयाराम वाली वारदात है। इसमें मुझे बहुत ही बड़ा धोखा हुआ, मैंने कुछ जान-बूझकर अपने दोस्त को नहीं मारा, मगर खैर वह जो कुछ होना था हो गया, अब क्या मैं अपने को दुश्मन के हाथ सहज ही में सौंप दूँगा! यद्यपि इन्द्रदेव को मैं अद्‌भुत व्यक्ति मानता हूँ मगर मैं अपने को भी कुछ समझता हूँ, मुझे अपनी ऐयारी पर भी घमंड है, इसलिए मैं इन्द्रदेव से नहीं डरता और तुम लोगों से कहे देता हूँ कि दलीपशाह इन्द्रदेव का दोस्त है तो क्या हुआ मगर मैं उसे मारे बिना कभी न छोड़ूँगा, उस कमबख्त से अपना बदला जरूर लूँगा। केवल उसी को नहीं मारूँगा बल्कि उसके खानदान में किसी को जीता न रहने दूँगा। मैं इस बात को जरा भी न सोचूँगा कि वह मेरा नातेदार है, क्योंकि खुद उसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया और मेरी बर्बादी के पीछे लग गया। मुझे यह खबर लगी कि दलीपशाह ने जमानिया के दारोगा से भी दोस्ती पैदा कर ली है और उसकी तरफ से भी मुझे सताने के लिए तैयार है।

एक : ऐसी अवस्था में जरूर दलीपशाह का नाम-निशान मिटा देना चाहिए क्योंकि जब तक वह जीता रहेगा आप बेफिक्र नहीं हो सकते, साथ ही इसके शम्भू को भी मार डालना चाहिए। उन दोनों के मारे जाने पर आप इन्द्रदेव को अच्छी तरह समझा लेंगे और विश्वास दिला देंगे कि आपके हाथों से दयाराम नहीं मारे गये और अगर दलीपशाह और शम्भू ने उनसे ऐसा कहा तो यह बात बिलकुल ही झूठ है।

भूतनाथ : ठीक है, मैं जरूर ऐसा ही करूँगा, लेकिन इतने पर भी काम न चलेगा और यह बात मशहूर ही होती दिखाई देगी तो लाचार होकर मुझे और भी अनर्थ करना पड़ेगा, नाता और रिश्ता भूल जाना पड़ेगा, दोस्ती और मुरौवत को तिलांजली दे देनी पड़ेगी, और जिन-जिन को यह बात मालूम हो गई है, उन सभी को इस दुनिया से उठा देना पड़ेगा।

एक : जमना, सरस्वती, इंदुमति और प्रभाकर सिंह को भी?

भूतनाथ : बेशक्, बल्कि गुलाबसिंह को भी।

दूसरा : यह बड़े कड़े कलेजे का काम होगा!

भूतनाथ : मुझसे बढ़कर कठिन और बड़ा कलेजा किसका होगा जिसने लड़के-लड़की और स्त्री को भी त्याग दिया है? मगर अफसोस, इस समय मैं पाप पर पाप करने के लिए मजबूर हो रहा हूँ।

एक : खैर यह बताइए कि सबसे पहले कौन काम किया जाएगा और इस समय आप हम लोगों को क्या हुक्म देते हैं?

भूतनाथ : सबसे पहले मैं अपने दोस्तों को छुड़ाऊँगा और इसके लिए उस पड़ोस की घाटी में रहने वाली औरतों में से किसी को गिरफ्तार करना चाहिए। खैर अब बताता हूँ कि तुम लोगों को क्या करना चाहिए। (चौंककर) देखो तो वह साधु कौन है! ऐसा गुमान होता है कि इसे मैंने कभी देखा है। यह तो हमारे उसी खोह की तरफ जा रहा है। पहिले इसी की सुध लेनी चाहिए फिर बताएँगे कि तुम लोगों को क्या करना चाहिए।

यह साधु जिस पर भूतनाथ की निगाह पड़ी बहुत ही बुड्‌ढा और तपस्वती जान पड़ता था। इसके सर और दाढ़ी के बाल बहुत ही घने और लंबे थे। लंबा कद, वृद्ध होने पर भी गठीला बदन ओर चेहरा रोआबदार मालूम होता था। कमर में क्या पहिरे हुए था इसका पता नहीं लगता था क्योंकि इसके बदन में बहुत लंबा गेरुए रंग का ढीला कुरता था जो घुटने से एक बित्ता नीचे तक पहुँच रहा था, मगर साथ ही इसके यह जान पड़ता था कि उसने अपने तमाम बदन में हलकी विभूति लगाई हुई है। इसके अतिरिक्त उसके पास और किसी तरह का सामान दिखाई न देता था अर्थात् कोई माला या सुमिरनी तक इसके पास न थी।

भूतनाथ अपने साथियों को इसी जगह रहने का हुक्म देकर धीरे-धीरे उस साधु के पीछे रवाना हुआ मगर इस लापरवाह साधु को इस बात का कुछ भी खयाल न था कि उसके पीछे कोई आ रहा है।

थोड़ी ही देर में वह साधु उस खोह के मुहाने पर जा पहुँचा जिसमें भूतनाथ रहता था। जब खोह के अन्दर घुसने लगा तब भूतनाथ भी लपककर उसके पास पहुँचा।

साधु : (भूतनाथ को देखकर) तुम कौन हो?

भूतनाथ : जी मेरा नाम गदाधरसिंह ऐयार है।

साधु : ठीक है, मैं तुम्हारा नाम सुन चुका हूँ, बहुत अच्छा हुआ कि तुमसे मुलाकात हो गई, मालूम होता है कि तुम्हीं ने इस घाटी में दखल जमा रखा है और जो लोग इसके अन्दर हैं वे सब तुम्हारे ही संगी-साथी हैं?

भूतनाथ : जी हाँ, बात ऐसी ही है।

साधु : मैं इसी फिक्र में पड़ा हुआ था और सोच रहा था कि इस घाटी में किसने अपना दखल जमा लिया है। शायद तुम्हें यह बात मालूम नहीं है, खैर अब समझ लो कि इस घाटी में पचास वर्ष से रहता हूँ और यह यहाँ का हाल जितना मैं जानता हूँ किसी दूसरे को मालूम नहीं है। इधर कई वर्ष हुए हैं कि इस घाटी को छोड़कर तीर्थयात्रा के लिए चला गया था। मेरा विचार था कि फिर लौट कर यहाँ न आऊँ और इसीलिए इसका दरवाजा खुला छोड़ गया था, पर ईश्वर की प्रेरणा से मैं घूमता-फिरता फिर यहाँ चला आया और जब इस घाटी के अन्दर गया तो देखा कि इसमें किसी दूसरे की अमलदारी हो रही है। अस्तु मैं इसका दरवाजा बंद करता हुआ बाहर निकल आया और फिक्र में पड़ा कि इसके मालिक का पता लगाना चाहिए, क्योंकि इसके अन्दर जितने आदमी दिखाई पड़े उनमें से कोई भी ऐसा नजर न आया जिसे मैं यहाँ का मालिक समझूँ। इसीलिए मैं इसके अन्दर किसी से मिला नहीं और न किसी ने मुझे देखा। खैर यह जान कर मुझे प्रसन्नता होगी कि तुम यहाँ रहते हो, मैं बहुत ही प्रसन्न होता यदि तुम्हारी गृहस्थी या तुम्हारी बाल-बच्चे भी यहाँ दिखाई देते। मगर खैर जो कुछ है वही गनीमत है। मैं तुम्हें मुहब्बत की निगाह से देखता हूँ क्योंकि तुमसे मुझे एक गहरा संबंध है।

भूतनाथ : (आश्चर्य से) वह कौन-सा संबंध है?

साधु : सो कहने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि भूलता हूँ जो तुम्हें संबंध रखने की बात कहता हूँ। जो साधु है और जिसने दुनिया से संबंध छोड़ दिया उसे फिर किसी से संबंध रखने की जरूरत ही क्या है, मगर खैर फिर कभी जब तुमसे

मिलूँगा तब बताऊँगा कि मैं कौन हूँ, उस समय तुम मुझे मुहब्बत की निगाह से देखोगे और समझ जाओगे कि मैं तुम पर क्यों कृपा करता हूँ अस्तु जाने दो। अच्छा तुम खुशी से इस घाटी में रहो, मैं इसका दरवाजा खोल देता हूँ बल्कि यह भी बताए देता हूँ कि किस तरह यह दरवाजा खुलता और बंद होता है।

भूतनाथ : (प्रसन्नता से) ईश्वर ही ने मुझे आपसे मिलाया! मैं बड़े ही तरद्दुद में पड़ा हुआ था। अपने दोस्तों की तरफ से मुझे बड़ी ही फिक्र थी जो इस घाटी के अन्दर पड़ा हुआ था। अपने दोस्तों की तरफ से मुझे बड़ी ही फिक्र थी जो इस घाटी के अन्दर इस समय कैद हो रहे हैं। मैं समझ रहा था कि मेरा कोई दुश्मन यहाँ आ पहुँचा जो इस घाटी का हाल अच्छी तरह जानता है और उसी ने मेरे साथ ऐसा बर्त्ताव किया है, मगर अब मेरा तरद्दुद जाता रहा और यह जान कर प्रसन्नता हुई कि इसके मालिक आप हैं, मगर आप मुझे बेहतर खुटके में डाल रहे हैं जो अपने पूरा परिचय नहीं देते। मैं क्योंकर समझूँ कि आप मेरे बड़े और सरपरस्त हैं?

साधु : (मुसकराकर) खैर तुम मुझे अपना सरपरस्त या मददगार न भी समझोगे तो इसमें मेरी या तुम्हारी किसी भी हानि नहीं है परन्तु फिर भी मैं वादा करता हूँ कि बहुत जल्द एक दफे पुनः तुमसे मिलूँगा और तब अपना ठीक-ठीक परिचय तुमको दूँगा, इस समय तुम मेरी फिक्र न करो और अपने दुश्मनों से बेफिक्र होकर इस घाटी में रहो। यहाँ थोड़ी-सी दौलत भी है जिसका पता तुम्हें मालूम न होगा, चलो वह भी मैं तुम्हें देता हूँ, जो कि तुम्हारे काम आवेगी, अब क्योंकि मुझे दौलत की कुछ जरूरत नहीं रही और यदि आवश्यकता पड़े भी तो मुझे किसी तरह की कमी नहीं है।

भूतनाथ : (प्रसन्न होकर) केवल धन्यवाद देकर मैं आपसे उऋण नहीं हो सकता आप मुझ पर बड़ी ही कृपा कर रहे हैं।

साधु : इसे कृपा नहीं कहते, यह केवल प्रेम के कारण है, अस्तु अब तुम विलंब न करो और शीघ्रता से चलो, जो कुछ मुझे करना है उसे जल्द निपटा करके बद्रिकाश्रम की यात्रा करूँगा।

भूतनाथ के दिल में इस समय तरह-तरह के विचार उठ रहे थे। वह न मालूम किन-किन बातों को सोच रहा था मगर प्रकट में यही जान पड़ता कि वह बड़ी होशियारी के साथ सचेत बना हुआ खुशी-खुशी साधु के साथ सुरंग के अन्दर जा रहा है। जब उस चौमुहानी पर पहुँचा जिसका जिक्र कई दफे हो चुका है तो भूतनाथ ने साधु से पूछा

भूतनाथ : ये बाकी के दोनों रास्ते किधर को गये हैं और उधर क्या है?

साधु : इस घाटी के साथ ही और भी दो घाटियाँ हैं और उन्हीं में जाने के लिये ये दोनों रास्ते हैं मगर उन्हें मैंने बहुत ही अच्छी तरह से बंद कर दिया है क्योंकि उन घाटियों में रहने वालों के आने-जाने के लिए और भी कई रास्ते मौजूद हैं, अब इन रास्तों में से कोई आ-जा नहीं सकता, तुम इस तरफ से बिलकुल बेफिक्र रहो। मगर इस राह से उस तरफ जाने का उद्योग कभी न करना।

भूतनाथ : जी नहीं, मैं तो उस तरफ जाने का खयाल कभी करता ही नहीं परन्तु आज उस तरफ वाली घाटी में बहुत से आदमी आकर बस गये हैं और वे सब मेरे साथ दुश्मनी करते हैं बस इसीलिए जरा खयाल होता है।

साधु : (लापरवाही के साथ) खैर अगर उस घाटी में आकर कोई रहता भी होगा तो यहाँ अर्थात् इस घाटी में आकर तुम्हारे साथ कोई बुरा बर्त्ताव नहीं कर सकता। यों तो दुनिया में सभी जगह दोस्त और दुश्मन रहा करते हैं, उसका बंदोबस्त दूसरे ढंग पर कर सकते हो।

भूतनाथ : जैसी मर्जी आपकी।

साधु : हाँ बेहतर यही है कि तुम बेफिक्री के साथ यहाँ रहकर अपने दुश्मनों का प्रबंध करो और मेरा इंतजार करो, मैं बहुत जल्द इसी घाटी में आकर तुमसे मिलूँगा। उसी समय मैं तुमको कुछ और भी लाभदायक वस्तुएँ दूँगा और कुछ उपदेश भी करूँगा।

इतना कहकर साधु आगे की तरफ बढ़े और बहुत जल्द उस दरवाजे के पास जा पहुँचे जिसे विमला ने बंद कर दिया था। जिस तरह से विमला ने उस दरवाजे को बंद किया था उसी तरह साधु ने उसे खोला और खोलने तथा बंद करने का ढंग भी भूतनाथ को बता दिया।

अब भूतनाथ सहज ही में साधु के साथ घाटी के अन्दर जा पहुँचा और अपने साथियों से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ। बातचीत करने पर मालूम हुआ कि उसके साथी लोगों ने कई दफे इस घाटी के बाहर निकलने का उद्योग किया था मगर रास्ता बंद होने के कारण बाहर न जा सके और इस वजह से वे लोग बहुत घबरा रहे थे।

भूतनाथ ने अपने सब साथियों से बाबाजी की मेहरबानी का हाल बयान किया और उन सभों के महात्मा के पैरों पर गिराया।

भूतनाथ यद्यपि जानता था कि साधु महाशय मुझ पर बड़ी कृपा कर रहे हैं और उन्हें मुझसे किसी तरह का फायदा भी नजर नहीं आता, तथापि वह अभी तक उन पर अच्छी तरह भरोसा करने का साहस नहीं रखता था, यह बात चाहे ऐयारी नियम के अनुसार कहिए चाहे भूतनाथ की प्रकृति के कारण समझिए, हाँ, इतना जरूर था कि बाबाजी की मेहरबानियों से भूतनाथ दबा जाता था और सोचता था कि यदि इन्होंने कोई खजाना मुझे दे दिया जैसा कि कह चुके हैं, तो मुझे मजबूर होकर इन पर भरोसा करना पड़ेगा और समझना पड़ेगा कि ये वास्तव में मुझसे स्नेह रखते हैं और मेरे कोई अपने ही हैं।

साधु महाशय की आज्ञानुसार भूतनाथ ने उन्हें वे सब गुफाएँ दिखाईं जिनमें वह अपने साथियों के साथ रहता था और बताया कि इस ढंग पर इस स्थान को हम लोग बरतते हैं, इसके बाद साधु महाशय उसे अपने साथ लिये पूरब तरफ की चट्टान पर चले गये जिधर छोटी-बड़ी कई गुफाएँ थीं।

साधु : देखो भूतनाथ, मैं जब यहाँ रहता था इसी तरफ की गुफाओं में गुजारा करता था और इस पड़ोस वाली घाटी में जिसे तुम अपने दुश्मनों का स्थान बता रहे हो, इन्द्रदेव रहता था जिसे तुम पहिचानते होगे।

भूतनाथ : जी हाँ, मैं खूब जानता हूँ।

साधु : उन दिनों इन्द्रदेव का दिमाग बहुत ही बड़ा-चढ़ा था और वह मुझसे दुश्मनी रखता था, क्योंकि जिस तरह वह एक तिलिस्म का दारोगा है उसी तरह मैं भी एक तिलिस्म का दारोगा हूँ, अस्तु वह चाहता था कि मेरे कब्जे में जो तिलिस्म है उसका भेद जान ले और उस पर कब्जा कर ले, मगर वह कुछ भी न कर सका और कई साल तक यहाँ रहने पर भी वह यह न जान सका कि फलाना ब्रह्मचारी इस पड़ोस वाली घाटी में रहता है। इस समय मैं तुमसे ज्यादा न कहूँगा और न ज्यादे देर तक रहने की मुझे फुरसत ही है, तुम्हें बड़ा ही ताज्जुब होगा जब मैं अपना परिचय तुम्हें दूँगा और उस समय तुम भी मुझसे उतनी ही मुहब्बत करोगे जितना इस समय मैं तुमसे करता हूँ।

भूतनाथ : ठीक है, मैं परिचय देने के लिये इस समय जिद्द भी नहीं कर सकता क्योंकि आप बड़े हैं। आपकी आज्ञानुसार मुझे चलना ही चाहिए, अच्छा यह तो बताएँ कि वह तिलिस्म जिसके आप दारोगा हैं अभी तक आपके कब्जे में है या नहीं?

साधु : हाँ अभी तक वह तिलिस्म मेरे ही कब्जे में है।

भूतनाथ : वह किस स्थान में है?

साधु : इसी घाटी में वह तिलिस्म है, मैं अगली दफे जब यहाँ आकर तुमसे मिलूँगा तो उसका कुछ हाल कहूँगा और अगर तुम इस घाटी में अपना कब्जा बनाये रहोगे और तुम्हारा चाल चलन अच्छी देखूँगा तो एक दिन तुमको उस तिलिस्म का दारोगा भी बना दूँगा क्योंकि अब मैं बहुत बुड्ढा हो गया हूँ और तिलिस्म के नियमानुसार अपने बाद के

लिए किसी-न-किसी को दारोगा बना देना बहुत जरूरी है।

साधु महाशय की इस आखिरी बात को सुनकर भूतनाथ वहत ही प्रसन्न हुआ। वह जानता था कि तिलिस्म का दारोगा वनना कोई मामूली बात नहीं है। उसके कब्जे में बेअंदाज दौतल रहती है और उसकी ताकत तिलिस्मी सामान की वदौलत मनुष्य की ताकत से कहीं वढ़-चढ़कर रहती है। उसी समय भूतनाथ का खयाल एक दफे इन्द्रदेव की तरफ गया और उसने मन में कहा कि देखो तिलिस्मी दारोगा होने के कारण ही इन्द्रदेव कैसे चैन और आराम के साथ रहता है, दुश्मनों का उसे जरा भी डर नहीं है और वास्तव में उसके दुश्मन उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। मगर अफसोस! भूतनाथ ने इस वात पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया कि इन्द्रदेव कैसा नेक, ईमानदार और साधु आदमी है तथा उसमें सहनशीलता और क्षमा-शक्ति कितनी भरी हुई है, तिस पर भी वह दुश्मनों के हाथ कैसा सताया गया।

भूतनाथ : (वहुत नरमी के साथ) तो आप पुनः कब तक लौटकर यहाँ आवेंगे?

साधु : इस विषय में जो कुछ मेरे विचार हैं उसे प्रकट करना अभी मैं उचित नहीं समझता।

भूतनाथ : जैसी मर्जी आपकी। आजकल मेरे वार्षिक दशा बहुत ही खराब हो रही है, रुपये-पैसे की तरफ से मैं बहुत ही तंग हो रहा हूँ।

साधु : तो इस समय जो खजाना मैं तुम्हें दे रहा हूँ वह तुम्हारे लिए कम नहीं है, यदि तुम उसे उचित ढंग पर खर्च करोगे तो वर्षों तक अमीर बने रहोगे और राज्य-सुख भोगोगे, आओ मेरे पीछे-पीछे चले आओ।

इतना कहकर साधु एक गुफा की तरफ बढ़ा और भूतनाथ खुशी-खुशी उसके पीछे रवाना हुआ।

खोह के अन्दर बहुत अँधकार था मगर भूतनाथ बेधड़क साधु के पीछे-पीछे दूर तक चला गया। जब लगभग दो-तीन सौ कदम चला गया तो साधु ने कहा, "लड़के देख, मैं इस खोह के अन्दर अंदाज से चला आकर सब काम कर सकता हूँ मगर तुझे इस काम में तकलीफ होगी क्योंकि तेरे लिये यह पहिला मौका है, इसलिये मैं उचित समझता हूँ, कि तू अपने ऐयारी के बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी कर लें और अच्छी तरह से सब कुछ देख लें, फिर दूसरी दफे तेरे ऐसे होशियार आदमी को रोशनी की जरूरत न पड़ेगी।"

भूतनाथ ने ऐसा ही किया अर्थात् रोशनी करके अच्छी तरह से देखता हुआ साधु के पीछे-पीछे जाने लगा और ऐसा कहने से साधु पर उसका विश्वास भी ज्यादे हो गया।

करीब-करीब पाँच सौ कदम चले जाने के बाद रास्ता बंद हो गया और साधु महाशय ने खड़े होकर भूतनाथ से कहा, "बस आगे जाने के लिये रास्ता नहीं है, देख वह बगल वाले में कैसा अच्छा नाग बना हुआ है जिसे देखकर डर मालूम होता है। यह वास्तव में लोहे का है। इसको पकड़ कर जब तू अपनी तरफ खैंचेगा तो यहाँ का दरवाजा खुल जाएगा, मगर इस बात से होशियार रहियो कि इसके सिर अथवा फन के ऊपर कभी हाथ न लगने पावे नहीं तो धोखा खाएगा।"

भूतनाथ : जो आज्ञा, पहिले आप अभी ही इसे खैचें जिससे मैं अच्छी तरह समझ लूँ।

साधु : (जोर से हँसकर) अभी तक तुझको मुझ पर भरोसा नहीं होता! मगर खैर कोई चिंता नहीं, ऐयारों के लिये यह ऐसा अनुचित नहीं है।

इतना कहकर साधु ने साँप की दुम पकड़ ली और अपनी पूरी ताकत के साथ खैंचा, दो हाथ के लगभग वह दुम खिंचकर आले के बाहर निकल आई, इसके साथ ही बगल में एक छोटा-सा दरवाजा खुला हुआ दिखाई दिया।

भूतनाथ को लिए हुए वह साधु उसके अन्दर घुस गया और उसी समय वह दरवाजा आप-से-आप बन्द हो गया। उस

समय साधु ने भूतनाथ से कहा, ''देख गदाधरसिंह इधर भी उसी तरह का नाग बना हुआ है, वाहर निकलते समय इधर से भी उसी तरह दरवाजा खोलना पड़ेगा।''

भूतनाथ ने उसे अच्छी तरह देखा और फिर उस कोठरी की तरफ निगाह दौड़ाई जिसमें इस समय वह मौजूद था। उसने देखा कि वहाँ चाँदी के कितने ही बड़े-बड़े देग या हंडे रखे हुए हैं कि जिनके मुँह सोने के ढक्कनों से ढके हुए हैं, भूतनाथ ने साधु की आज्ञा पाकर उन हंडों का मुँह खोला और देखा कि उनमें अशर्फियाँ भरी हुई हैं।

इस समय भूतनाथ की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था और उसने सोचा कि निःसन्देह ऐसे कई खजाने इस घाटी में होंगे मगर उनका पता जानने के लिए साधु से इस समय जिद करना ठीक न होगा, अवश्य यह पुनः यहाँ आवेंगे और मुझ पर कृपा करेंगे। लौटते समय आज्ञा पाकर भूतनाथ ने अपने हाथ से वह दरवाजा वंद किया और साधु के पीछे-पीछे चलकर खोह के वाहर निकल आया। उस समय साधु ने कहा, ''गदाधरसिंह , अव मैं जाता हूँ, जव लौट कर पुनः यहाँ आऊँगा तो ऐसे-ऐसे कई खजाने तुझे दूँगा और तिलिस्म का दारोगा भी बनाऊँगा मगर मैं तुझे समझाए जाता हूँ कि इन्द्रदेव के साथ, दुश्मनी का ध्यान भी कभी अपने दिल में न लाइयो नहीं तो बर्वाद हो जाएगा। और दुःख भोगेगा। वह तुझसे बहुत ज्यादा जबर्दस्त है। अच्छा अब मैं जाता हूँ, मेरे साथ आने की कोई जरूरत नहीं है।''

इतना कहकर साधु महाशय रवाना हो गये और आश्चर्य में भरे हुए भूतनाथ को उसी जगह छोड़ गये।

भूतनाथ बड़ी देर तक खड़ा-खड़ा इस बात को सोचता रहा कि यह साधु महाशय कौन हैं और मझ पर इतनी कृपा करने का सवव क्या है? सोचते-साचते उसका खयाल देवदत्त ब्रह्मचारी की तरफ चला गया जिन्होंने उसे पाला था और ऐयारी सिखाकर इस लायक बना दिया था कि किसी राजा या रईस के यहाँ रह कर इज्जत और हुर्मत पैदा करे।

भूतनाथ सोचने लगा कि ताज्जुव नहीं यदि यह मेरे गुरु महाराज देवदत्त ब्रह्मचारी हों जो वहुत दिनों से लापता हो रहे हैं। मुझे रणधीरसिंह जी के यहाँ नौकर रखा देने के बाद यह कह कर चले गये थे कि ''अव मैं योगाभ्यास करने के लिए उत्तराखंड चला जाऊँगा, तुम मुझसे मिलने के लिये उद्योग मत करना।'' या संभव है कि उनके भाई ज्ञानदत्त ब्रह्मचारी हों जिनकी प्राय गुरुजी तारीफ किया करते थे और कहते थे कि वे एक अद्भुत तिलिस्म के दारोगा भी हैं, जहाँ तक मेरा खयाल है उन्हीं दोनों में से कोई-न-कोई जरूर हैं। ताज्जुव नहीं कि मैं कुछ दिनों में तिलिस्म का दारोगा बन जाऊँ। अव मैं इस घाटी को कदापि न छोड़ूँगा और देखूँगा कि किस्मत क्या दिखाती है। अब प्रभाकर सिंह को भी लाकर इसी घाटी में रखना चाहिए। मगर वास्तव में आजकल मैं बड़े संकट में पड़ गया हूँ। मैं अपने मित्र इन्द्रदेव पर किस तरह सरस्वती बिना किसी मदद के मुझसे दुश्मनी करने के लिए तैयार हो रही हैं। खैर जो कुछ होगा देखा जाएगा अब प्रभाकर सिंह को शीघ्र इस घाटी में ले लाना चाहिए और उसके बाद इन्द्रदेव से मिलना चाहिए। उनसे मुलाकात होने पर बहुत-सी वातों का पता लग जाएगा, मैं इन्द्रदेव के सिवाय और किसी से डरने वाला भी नहीं हूँ। इत्यादि तरह-तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ अपने दोस्तों और साथियों के पास चला गया और उनसे अपने कर्त्तव्य के विषय में बातचीत करने लगा, मगर साधु महाशय की कृपा से खजाना मिलने का हाल उसने उन लोगों से नहीं कहा।

7

जमानिया वाला दलीपशाह का मकान बहुत ही सुन्दर और अमीराना ढंग पर गुजारा करने लायक बना हुआ है। उसमें जनाना और मर्दाना किला इस ढंग से बना है कि भीतर से दरवाजा खोलकर जब चाहे एक कर ले और अगर भीतर रास्ता बंद कर दिया जाय तो एक का दूसरे से कुछ भी संबंध न मालूम पड़े, यहाँ तक कि अगर मर्दाने मकान में कोई मेहमान आकर टिके तो उसे यकायक इस बात का पता भी न लगे कि जनाने लोग कहाँ रहते हैं और उस तरफ आने-जाने के लिये इस तरफ से कोई रास्ता भी है या नहीं।

इस मकान के सामने एक छोटा-सा सुन्दर नजरबाग बना हुआ था और उसके सामने अर्थात् पूरब तरफ ऊँची दीवार और फाटक था। मकान के बाईं तरफ लंबा खपरैल था जिसका एक सिरा तो मकान के साथ सटा हुआ था और दूसरा सिरा सामने अर्थात् फाटक वाली दीवार के साथ। उसके बीच में छोटे-बड़े कई दालान और कोठरियाँ बनी हुई थीं जिनमें दलीपशाह के खिदमतगार और सिपाही लोग रहा करते थे। इसी तरह मकान के दाहिनी तरफ इस सिरे से लेकर उस सिरे तक कुछ ऐसी इमारतें बनी हुई थीं जिनमें कई गृहस्थियों का गुजारा हो सकता था और उनमें दलीपशाह के शागिर्द ऐयार लोग रहा करते थे। इस ढंग पर वह नजरबाग बीच में अर्थात् चारों तरफ से घिरा हुआ था। सरसरी तौर पर खयाल करने से भी साफ मालूम होता था कि दलीपशाह बहुत ही अमीराना ढंग पर रह कर जिंदगी के दिन बिता रहा है।

इस इमारत के बगल ही में दलीपशाह का एक बहुत बड़ा खुला बाग था जिसमें बड़े-बड़े आम, नीबू और अमरूद तथा इसी तरह के और भी बहुत किस्म के दरख्त लगे हुए थे।

दलीपशाह अपने मर्दाने मकान में एक सुन्दर सजे हुए कमरे के बाहर दालान में चौकी के ऊपर फर्श पर बैठे हुए अपने दोस्त इन्द्रदेव से बातचीत कर रहे हैं। इस जगह से सामने का नजरबाग और उसके बाद फाटक अच्छी तरह दिखाई दे रहा है। आज इन्द्रदेव इनसे मिलने के लिये आये हुए हैं और इस समय इनके पास बैठे हुए कई जरूरी मामलों पर सलाह और बातचीत कर रहे हैं।

दलीपशाह : भाई साहब, गदाधरसिंह आपका दोस्त है इसलिए मैं लाचार होकर उसे अपना दोस्त मानता हूँ, मगर सच तो यों है कि उसके साथ रिश्तेदारी होने पर भी मैं उसे दिल से पसन्द नहीं करता।

इन्द्रदेव : हाँ, उसका चाल-चलन तो कुछ खराब जरूर है मगर आदमी बड़े ही जीवट का है और ऐयारी का ढंग बहुत अच्छा जानता है।

दलीपशाह : इस बात को मैं जरूर मानता हूँ बल्कि जोर देकर कह सकता हूँ कि अगर वह ईमानदारी के साथ काम करता हुआ रणधीरसिंह जी के यहाँ कायदे से बना रहता तो एक दिन ऐयारों का सिरताज गिना जाता।

इन्द्रदेव : ठीक है मगर उसने रणधीरसिंह का साथ छोड़ तो नहीं दिया!

दलीपशाह : अब इसे छोड़ना नहीं तो क्या कहते हैं? दो-दो महीने तक गायब रहना और मालिक को मुँह तक नहीं दिखाना, क्या इसी को नौकरी कहते हैं? आप ही कहिए कि अबकी कै महीने के बाद आया था? सिर्फ दो दिन रह कर चला गया। उससे तो उसकी स्त्री अच्छी है जो अपने मालिक अर्थात् रणधीरसिंह की स्त्री का साथ नहीं छोड़ती।

इन्द्रदेव : ठीक है मगर उसने रणधीरसिंह के यहाँ अपने बदले में अपना शागिर्द रख दिया है, इसके अतिरिक्त जब रणधीरसिंह जी को उसकी जरूरत पड़ती है तो उसी शागिर्द की मार्फत उसे बुलवा भेजते हैं। अभी हाल ही में देखिए उसने कैसी बहादुरी के काम किये।

दलीपशाह : अजी यह तो मैं खुद कह रहा हूँ कि वह ऐयार परले सिरे का है, मगर इस जगह बहस तो ईमानदारी की हो

रही है।

इन्द्रदेव : (दबी जुबान से) हाँ, वह लालची तो जरूर है मगर अभी नई जवानी है, संभव है आगे चलकर सुधर जाय!

दलीपशाह : (हँसकर) जी हाँ, बात तो यह है कि वह कमबख्त आपके सामने ढोंग रचता है और दयाराम जी के मामले पर उदासी दिखलाकर कहता है कि अब मैं दुनिया ही छोड़ दूँगा, मगर मैं इस बात को कभी नहीं मान सकता, हाँ उसका यह कहना शायद सच हो कि दयाराम जी के मामले में उसने धोखा खाया।

इन्द्रदेव : भाई, उसकी यह बात तो जरूर सच है, वह जान-बूझकर दयाराम को कदापि नहीं मार सकता है।

दलीपशाह : जी हाँ, मैं भी यही सोचता हूँ मगर आप देख लीजिएगा कि कुछ दिन के बाद वह हमारे और आपके ऊपर भी सफाई का हाथ जरूर फेरेगा। आपके ऊपर चाहे मेहरबानी भी कर जाये क्योंकि आपसे डरता है और उसे विश्वास है कि आप ऐयारी में किस तरह उससे कम नहीं हैं मगर मुझे तो कभी न छोड़ेगा।

इन्द्रदेव : अजी भविष्य में जैसा करेगा वैसा पावेगा, इस समय तो वह हमारा-आपका किसी का भी कसूरवार नहीं है!

दलीपशाह : (खिलखिलाकर हँसने के बाद धीरे से) तब क्यों आपने बेचारे के पीछे जमना और सरस्वती को लगा दिया है?

इन्द्रदेव : केवल उन दोनों का प्रण पूरा करने के लिये मैंने यह कार्रवाई कर दी है, नहीं तो तुम ही सोचो कि बेचारी लड़कियाँ उसका क्या बिगाड़ सकती हैं।

दलीपशाह : तो आप उन लड़कियों के साथ धोखेबाजी का काम करते हैं, सच्चे दिल से उनकी मदद नहीं करते!

इन्द्रदेव : (दाँत से जुबान दबाने के बाद) नहीं-नहीं, मैं जरूर उनकी मदद करता हूँ मगर मेरी इच्छा यही है कि गदाधरसिंह मारा न जाये और दोनों लड़कियों की अभिलाषा भी पूरी हो जाये।

दलीपशाह : यह एक अनूठी बात है, खरबूजा खा भी लें और वह काटा भी न जाये! मैं तो समझता हूँ वह एक दिन जरूर जमना और सरस्वती को मार डालेगा।

इन्द्रदेव : नहीं ऐसा तो न करेगा।

दलीपशाह : अजी आप तो निरे ही साधु हैं, इतने बड़े ऐयार होकर भी धोखा खाते हैं। मगर इसमें आपका कोई कसूर नहीं है, ईश्वर ने आपका दिल ही ऐसा नरम बनाया है कि किसी की बुराई पर ध्यान नहीं देते, मगर भाईजान, मैं तो उससे बराबर खटका रहता हूँ। इसमें आप यह न समझिए कि मैं उनका दुश्मन हूँ, आपकी तरह मैं भी यही चाहता हूँ कि वह किसी तरह अच्छे ढर्रे पर आ जाये मगर यह उम्मीद नहीं। अच्छा यह बताइए कि उन लोगों के विषय में आजकल क्या कार्रवाई हो रही है अर्थात् जमना और सरस्वती क्या कर रही हैं?

इन्द्रदेव : बस गदाधरसिंह के पीछे पड़ी हुई है, आज कई दिन हुए कि उसे गिरफ्तार भी कर लिया था मगर सिर्फ डरा-धमका के छोड़ दिया, क्योंकि मैंने अच्छी तरह समझा दिया है कि दुश्मन को सता के और दुःख दे के बदला लेना चाहिए न कि जान से मार के। वे बेचारियाँ तो मेरी बात मान जाएँगी मगर गदाधरसिंह की तरफ से मैं डरता हूँ, ऐसा न हो कि वह उन दोनों का सफाया कर दे।

दलीपशाह : (मुसकराकर) मगर आप तो उसे नेक बना रहे हैं, उस पर भरोसा कर रहे हैं! अभी-अभी कह चुके हैं कि वह उन दोनों के साथ बुराई कभी न करेगा।

इन्द्रदेव : आशा तो ऐसी ही है जो मैं कह चुका हूँ, फिर भी डरता हूँ क्योंकि आजकल उसका रंग-ढंग और रहन-सहन ठीक नहीं है।

दलीपशाह : आप तो अच्छा दोतर्फी बात करते हैं!

इन्द्रदेव : ऐसा नहीं है मेरे दोस्त, मैं खूब समझता हूँ कि वह आजकल बिगड़ा हुआ है मगर मैं उसे सुधारना चाहता हूँ, मेरा खयाल है कि वह दुःख भोगकर सुधर सकता है, मगर उसकी यातना की जाये तो ताज्जुब नहीं कि वह राह पर आ जाये।

दलीपशाह : तो क्या बेचारी जमना और सरस्वती ही के हाथ से उसकी यातना कराइएगा?

इन्द्रदेव : नहीं, वे बेचारियाँ भला क्या कर सकेंगी। मैं अब आपके पास इसीलिए आया हूँ कि इस काम में आपसे मदद लूँ।

दलीपशाह : वह क्या? मैं आपके लिए हर तरह से तैयार हूँ।

इन्द्रदेव : आप जानते ही हैं कि मैं अपना स्थान किसी तरह छोड़ नहीं सकता। दलीपशाह : बेशक् ऐसा ही है।

इन्द्रदेव : इसलिए मैं चाहता था कि आप कुछ दिनों तक उन लड़कियों के साथ रहकर उनकी मदद करें मगर देखता हूँ कि आप बेतरह गदाधरसिंह पर टूटे हुए हैं। मैं यह नहीं चाहता कि वह जान से मारा जाय।

दलीपशाह : तो क्या आप समझते हैं कि मैं आपकी इच्छा के विपरीत चलूँगा?

इन्द्रदेव : नहीं-नहीं, ऐसा तो मुझे स्वप्न में भी गुमान नहीं हो सकता। हाँ यह सोचता हूँ कि मेरा कहना आपकी इच्छा के विरुद्ध कहीं न हो।

दलीपशाह : चाहे जो हो मगर मैं आपकी बात कभी न टालूँगा, इसके अतिरिक्त आप जानते हैं कि वह मेरा रिश्तेदार है, उसकी स्त्री शान्ता है तो मेरी साली, मगर मैं उसे बहिन की तरह मानता और प्यार करता हूँ, ऐसी अवस्था में मैं कब चाहूँगा कि गदाधरसिंह मारा जाये और उसकी स्त्री विधवा होकर मेरी आँखों के सामने आये! मगर बात जो असल है वह जरूर करने में आती है।

इन्द्रदेव : ठीक है मगर गदाधरसिंह खुद अपने पैर में कुल्हाड़ी मार रहा है। खैर जैसा करेगा वैसा पावेगा। हम लोग जहाँ तक हो सकेगा उसके सुधारने की कोशिश करेंगे, आगे जो ईश्वर की मर्जी।

दलीपशाह : खैर मुझे आप क्या काम सुपुर्द करते हैं सो कहिए?

इन्द्रदेव : मैं चाहता हूँ कि आप कुछ दिनों तक जमना और सरस्वती के साथ रहकर उनकी मदद कीजिए, मगर इस तरह पर नहीं कि जो कुछ वे कहती जाएँ आप करते जाएँ।

दलीपशाह : तब किस तरह से?

इन्द्रदेव : इस तरह से कि दोनों जिस तरह चाहें स्वयं काम करके अपना हौसला पूरा करें और यही उनकी इच्छा भी है, मगर इस तरह पर नहीं कि जो कुछ वे कहती जाएँ या किसी मुसीबत में फँस जाएँ तब आप उनकी रक्षा करें।

दलीपशाह : यह तो बड़ा कठिन काम है!

इन्द्रदेव : बेशक् कठिन है और इसे सिवाय आपके दूसरा पूरा नहीं कर सकता। दलीपशाह : (कुछ सोचकर) बहुत अच्छा,

में तैयार हूँ।

इन्द्रदेव : तो बस आज ही आप मेरे साथ चलिए, मैं उन दोनों को आपके सुपुर्द कर दूँ और उस घाटी के भेद भी आपको बता दूँ तथा जो कुछ मैं कर आया हूँ उसे भी समझा दूँ।

दलीपशाह : जब आपकी इच्छा हो चलिए। (फाटक की तरफ खयाल करके) देखिए गुलाबसिंह चले आ रहे हैं, इन्हें चुनार से क्योंकर छुट्टी मिली!

इन्द्रदेव : इनका हाल आपको मालूम नहीं है पर मैं सुन चुका हूँ और इस समय आपसे कहने ही वाला था कि इंदुमति भी आजकल जमना और सरस्वती के पास पहुँची हुई हैं, मगर अब कहने की कोई जरूरत नहीं, खुद गुलाबसिंह की जुबानी आप सब कुछ सुन लेंगे और शायद इसीलिए वह यहाँ आए भी हैं।

दलीपशाह : शिवदत्त भी नया राज्य पाकर आजकल अंधा हो रहा है।

इन्द्रदेव : बेशक् ऐसा ही है।

इतने ही में दरबान ने ऊपर आकर गुलाबसिंह के आने की इत्तिला की और इन्हें ले आने का हुक्म पाकर चला गया। थोड़ी ही देर में गुलाबसिंह वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने बड़े अदप के साथ इन्द्रदेव को सलाम किया और दलीपशाह से मिले।

इशारा पाकर गुलाबसिंह एक कुर्सी पर बैठ गए और इस तरह बातचीत होने लगी

दलीपशाह : कहो भाई गुलाबसिंह जी, आज तो बहुत दिनों के बाद आपसे मुलाकात हुई है, सब कुशल तो है?

गुलाबसिंह : जी कुशलता तो नहीं है, और इसीलिए मुझे चुनारगढ़ से भागना पड़ा।

दलीपशाह : क्या महाराज शिवदत्त की नौकरी आपने छोड़ दी?

गुलाबसिंह : हाँ, मजबूर होकर मुझे ऐसा करना पड़ा, क्योंकि मैं प्रभाकर सिंह के साथ किसी तरह का बुरा बर्त्ताव नहीं कर सकता था।

दलीपशाह : प्रभाकर सिंह भी तो उन्हीं के यहाँ सेनापति का काम करते हैं?

गुलाबसिंह : हाँ, मगर महाराज ने उनके साथ बहुत ही बुरा बर्त्ताव किया, उनकी इंदुमति पर हजरत आशिक हो गए और बड़ी-बड़ी चालबाजियों से अपने महल में बुलवा लिया, मगर जब वह किसी तरह राजी न हुई और जान देने पर तैयार हो गई तब लाचार उसे महल के अंदर कैद करके रखा और प्रभाकर सिंह को मार डालने का बंदोबस्त करने लगे जिसमें निश्चिन्त होकर इंदुमति को काम में लावें, परंतु प्रभाकर सिंह को इस बात का पता लग गया और वे महल में घुसकर बड़ी बहादुरी से इंदुमति को छुड़ा लाए। तो भी शिवदत्त का मुकाबला नहीं कर सकते थे इसलिए अपनी स्त्री को साथ लेकर वहाँ से भाग खड़े हुए। इसके बाद शिवदत्त ने उनकी गिरफ्तारी के लिए मुझे मुकर्रर किया, मैंने इसी बात का गनीमत समझा और कई आदमियों को साथ लेकर उनकी खोज में निकला। आखिर उनसे मुलाकात हो गई और तब से उनकी ताबेदारी में रहने लगा क्योंकि उनके बुजुर्गों ने जो कुछ भलाई मेरे साथ की है उसे मैं भूल नहीं सकता। नौगढ़ की सरहद के पास ही उनसे मुलाकात हुई थी और अकस्मात् उसी जगह भूतनाथ भी मुझसे मिल गया। मैंने भूतनाथ से मदद माँगी और वह मदद देने के लिए तैयार होकर हम लोगों को अपना डेरे पर ले गया, मगर कई मामले ऐसे हो गए कि भूतनाथ दोस्ती का इस्तीफा देकर दुश्मन बन बैठा और उसे सबब से भी हमें तकलीफ ही उठानी पड़ी!

इतना कहकर गुलाबसिंह ने इन्द्रदेव की तरफ देखा।

इन्द्रदेव : हाँ-हाँ गुलाबसिंह, तुम कहते जाओ रुको, मत, दलीपशाह से कोई बात छिपी हुई नहीं है।

गुलाबसिंह : (हाथ जोड़कर) जी नहीं, अब जो कुछ कहना बाकी है आप ही इन्हें समझा दें, मैं डरता हूँ कि कदाचित् मेरी जवान से ऐसी कोई बात निकल पड़े जिसे आप नापसंद करते हों तो...

इन्द्रदेव : (मुसकराकर) अजी नहीं गुलाबसिंह, मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ तुम बड़े ही नेक और सज्जन आदमी हो, जमना और सरस्वती ने जो कुछ भेद की बातें प्रभाकर सिंह से कहीं हैं सो मुझे मालूम हैं और प्रभाकर सिंह ने जो कुछ तुम्हें बताया है उसे भी मैं कदाचित् जानता हूँ, अस्तु तुम जो कहना चाहते हो बेधड़क् कहते जाओ।

गुलाबसिंह : जो आज्ञा। अच्छा तो मैं संक्षेप में कह डालता हूँ, (दलीपशाह से) भूतनाथ जिस घाटी में रहता है उसके पास ही जमना और सरस्वती भी रहती हैं। वह किसी तरह प्रभाकर सिंह को अपने यहाँ ले गई मगर इसके बाद ही इंदुमति पुनः दुश्मनों के हाथ में फँस गई, उसे भी दोनों बहिनें छुड़ाकर अपने यहाँ ले गईं। तब से इंदुमति उन्हीं के यहाँ रहती हैं। प्रभाकर सिंह उस खोह के बाहर आए और कई दिनों के बाद हम दोनों आदमी चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुए इसलिए कि कुछ सिपाहियों का बंदोबस्त करके दुश्मन से बदला लें। मगर भूतनाथ जिसे जमना और सरस्वती ने गिरफ्तार करके नीचा दिखाया था हम लोगों का दुश्मन बन बैठा और धोखा देकर प्रभाकर सिंह को कैद कर अपने घर ले गया, कहाँ रखा मुझे मालूम नहीं।

इसके बाद गुलाबसिंह ने वह किस्सा खुलासे तौर पर दलीपशाह और इन्द्रदेव से बयान किया। इन्द्रदेव को प्रभाकर सिंह की गिरफ्तारी का हाल अभी तक मालूम नहीं हुआ था अस्तु उन्हें यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने दलीपशाह से कहा, ''मेरे दोस्त, मुझे प्रभाकर सिंह के हाल पर अफसोस होता है। भूतनाथ ने भी यह काम अच्छा नहीं किया। खैर कोई चिंता नहीं, प्रभाकर सिंह को उसके कब्जे से निकाल लेना कोई बड़ी बात नहीं है। अब तुम सफर की तैयारी करो, और जमना तथा सरस्वती के साथ-ही-साथ प्रभाकर सिंह की मदद करो, मैं खुद तुम्हारे साथ चल कर प्रभाकर सिंह को कैद से छुट्टी दिलाऊँगा!''

इतना कहकर इन्द्रदेव दलीपशाह को कमरे के अंदर ले गये और आधे घंटे तक एकांत में न मालूम क्या समझाते रहे, इसे बाद बाहर आए और बहुत देर तक गुलाबसिंह से बातचीत करते रहे।

भूतनाथ को जब अपनी घाटी में घुसने का रास्ता नहीं मिला तो वह प्रभाकर सिंह को एक दूसरे ही स्थान में ले जाकर रख आया था और अपने दो आदमी उनकी हिफाजत के लिए छोड़ दिये थे। अब जब भूतनाथ महात्मा जी की कृपा से अपनी सुहावनी घाटी में पहुँच गया, सुरंग का रास्ता उसके लिए साफ हो गया, दरवाजा खोलने और बंद करने की तरकीब मिल गई बल्कि उसके साथ-ही-साथ बेअंदाज दौलत का भी मालिक बन बैठा, तो उसका हौंसला बनिस्बत पहिले के सौगुना बढ़ गया और उसने चाहा कि प्रभाकर सिंह को भी लाकर उसी घाटी में रख छोड़े अस्तु महात्मा जी को विदा करने क बाद दूसरे दिन वहाँ से रवाना हुआ और संध्या होते-होते तक प्रभाकर सिंह को इस घाटी में ले आया। प्रभाकर सिंह दवा के नशे में बेहोश थे और उनके हाथ में हथकड़ी तथा पैरों में बेड़ी पड़ी हुई थीं।

भूतनाथ ने उन्हें एक बहुत बड़ी साफ और सुन्दर चट्टान पर रख दिया, पैर की बेड़ी खोल दीं, और लखलखा सुँघाकर उनकी बेहोशी दूर की। जब प्रभाकर सिंह उठ कर बैठ गये तो इस तरह बातचीत होने लगी :

प्रभाकर सिंह : (चारों तरफ देखकर) क्या अभी तक मेरी गिनती कैदियों ही में है? मैं पुनः बेहोश करके इस घाटी में क्यों लाया गया और तुम क्यों नहीं बताते कि किस तरह दुःख देने से तुम्हारा क्या मतलब है?

भूतनाथ : प्रभाकर सिंह, तुम खूब जानते हो कि ऐयारों को जरा-जरा से काम के लिए बड़े-बड़े नाजुक और अमीर आदमियों को तकलीफ देनी पड़ती है। मैं सच कहता हूँ कि तुमसे मुझे किसी तरह की दुश्मनी न थी, बल्कि मैं हर तरह से तुम्हारी मदद के लिए तैयार हो गया था, अगर तुम धोखा देकर अपना ढंग न बदलते तो देखते कि मैं किस खूबी और खूबसूरती के साथ तुम्हारे दुश्मनों से तुम्हारा बदला लेता और तुम्हें हर तरह से बेफिक्र कर देता, मगर अफसोस, तुमने मेरे दुश्मनों से मिलकर मुझे धोखा दिया और गुलाबसिंह को भी जो मेरा दोस्त था बहका दिया!

प्रभाकर सिंह : मैंने तुम्हारे किस दुश्मन से मिलकर तुम्हारा क्या नुकसान किया सो साफ-साफ क्यों नहीं कहते?

भूतनाथ : क्या तुम नहीं जानते जो साफ-साफ कहने की जरूरत है? जमना और सरस्वती ने मुझे तकलीफ देने के लिए ही अवतार लिया है और तुम उनके पक्षपाती बन गये हो। वे तो भला औरत की जात हैं, नासमझ कहलाती हैं, पर तुम्हीं ने उनका भ्रम क्यों नहीं दूर कर दिया कि भूतनाथ ने दयाराम को कदापि न मारा होगा क्योंकि वह उनके साथ मुहब्बत रखता था और उनका दोस्त था!

प्रभाकर सिंह : (हँसकर) तुमको भी तो वे गिरफ्तार करके उस घाटी में ले गई थीं, फिर तुम्हीं ने क्यों नहीं उनका भ्रम दूर कर दिया? तुम ऐयार कहलाते हो, हर तरह से बात बनाना जानते हो!

भूतनाथ : मुझे तो कसूरवार ही समझती हैं, फिर भला मेरी बात क्यों मानने लगीं?

प्रभाकर सिंह : इसी तरह मैं भी तो उनका रिश्तेदार ठहरा, मैं उनकी इच्छा के विरुद्ध क्यों करने लगा? तुम जानो और वे जानें मुझे इन झगड़ों से मतलब ही क्या? बेचारी औरत की जात अबला कहलाती है और तुम इतने बड़े नामी ऐयार हो फिर भी जरा से मामले के लिए मुझसे मदद माँगते हो और चाहते हो कि मैं तेरे लिए अपने एक ऐसे रिश्तेदार के साथ बेमुरौवती करूँ जो दया करने के लायक है! तुम्हें शर्म नहीं आती! हाँ अगर मैं खुद तुम्हारे साथ किसी तरह की करूँ तो जरूर मुझसे बदला लेना उचित था।

भूतनाथ : (मुसकुराकर) सत्य वचन! मालूम हुआ कि आप बड़े सच बोलने वाले हैं और सिवाय सच के कभी झूठ नहीं बोलते। अच्छा खैर इन बातों से कोई मतलब नहीं, मैं तुमसे बहस करना पसन्द नहीं करता। मैं जो कुछ पूछता हूँ उसका साफ-साफ जवाब दो नहीं तो तुम्हारे लिए अच्छा न होगा।

प्रभाकर सिंह : अब इस धमकी में तुम्हारी बातों का जवाब नहीं दे सकता, मुलायमियत से अगर पूछते तो शायद कुछ

जवाब दे देता क्योंकि न तो तुम्हारे किसी अहसान का बोझ मेरी गर्दन पर है और न मैं तुमसे डरता ही हूँ।

भूतनाथ : ऐसी अवस्था में भी तुम मुझसे नहीं डरते? देख रहे हो कि तुम्हारे हर्बे छीन लिए गए, हथकड़ी तुम्हारे हाथों में पड़ी हुई हैं, और इस समय तुम हर तरह से मजबूर और कमजोर हो!

"यह हथकड़ी तो कोई चीज नहीं है, मेरे ऐसे क्षत्री के लिए तुमने इसे पसन्द किया यह तुम्हारी भूल है!" इतना कहकर बहादुर प्रभाकर सिंह ने एक झटका ऐसा दिया कि हथकड़ी टूट कर उनके हाथों से अलग हो गई और साथ ही इसके वे अपनी कमर से तलवार खैंच कर भूतनाथ के सामने खड़े हो गये और बोले, "बताओ क्या अब भी मैं तुम्हारा कैदी हूँ?"

प्रभाकर सिंह की कमर में एक ऐसी तलवार थी जो वदन के साथ पेटी की तरह लपेटकर बाँधी जा सकती थी, चमड़े की मुलायम म्यान उसके ऊपर चढ़ी हुई थी और उसे प्रभाकर सिंह कपड़े के अन्दर कमर में लपेटकर धोती और कमरबंद से छिपाए हुए थे। अभी तक उस पर भूतनाथ की निगाह नहीं गई थी, बल्कि उसे इस बात का कुछ गुमान भी न था। यह तिलिस्मी तलवार विमला ने प्रभाकर सिंह को दी थी और विमला ने इन्द्रदेव से पाई थी। इन्द्रदेव का बयान है कि उन्हें इसी तरह के कई हर्बे कुँवर गोपालसिंह ने अपने जमानिया के तिलिस्म में से निकाल कर दिये थे।

इस तलवार में भी करीब-करीब वही गुण थे जो उस तिलस्मी खंजर और नेजे में था जिसका हाल हम चंद्रकांता सन्तति में लिख आये हैं, फर्क बस इतना था कि जिस तरह उन खंजरों में कब्जा दवाने से चमक पैदा होती थी उस तरह इसमें चमक नहीं पैदा होती थी और न इसके छूने से आदमी बेहोश ही होता था। मगर इसका जख्म लगने से बिजली के असर से आदमी बेहोश हो जाता था। उसकी तरह इसके जोड़ की भी एक खूबसूरत अँगूठी जरूर थी जो इस समय प्रभाकर सिंह की तर्जनी उँगली में पड़ी हुई थी। इस अँगूठी में यह भी गुण था कि अगर धोखे में उन्हीं हो इसका जख्म लग जाय तो उन्हें कुछ असर न हो।

प्रभाकर सिंह की हिम्मते-मरदानगी और ताकत देखकर भूतनाथ हैरान हो गया बल्कि यों कह सकते हैं कि घबरा गया, यद्यपि भूतनाथ भी मरदे-मैदान और लड़ाका था तथा यहाँ पास ही में उसके कई मददगार भी थे जो उसके आवाज देने के साथ ही पहुँच सकते थे मगर फिर भी थोड़ी देर के लिए उसके ऊपर प्रभाकर सिंह का रोब छा गया और वह खड़ा होकर उनका मुँह देखने लगा।

प्रभाकर सिंह : हाँ बताओ तो क्या मैं अब भी कैदी हूँ।

भूतनाथ : (बनावटी मुसकुराहट के साथ) हाँ बेशक् तुम ताकतवर और बहादुर हो, मगर समझ रखो कि ऐयारों का मुकाबला करना तुम्हारा काम नहीं है।

प्रभाकर सिंह : हाँ बेशक् इस बात को मैं मानता हूँ, मगर खैर जैसा मौका होगा देखा जाएगा, इस समय तुम्हारा क्या इरादा है सो साफ-साफ कह डालो, अगर लड़ना चाहते हो तो मैं लड़ने के लिए तैयार हूँ।

भूतनाथ : मुझे न तो तुम्हारे साथ किसी तरह की दुश्मनी ही है और न मैं व्यर्थ लड़ना ही चाहता हूँ, हाँ, इतना जरूर चाहता हूँ कि जमना और सरस्वती का सच्चा-सच्चा हाल मुझे मालूम हो जाय। न-मालूम कि नसालायक ने उन्हें समझा दिया है कि मैं अपने दोस्त दयाराम जी का घातक हूँ तथा इस बात पर उन्होंने विश्वास करके मेरे साथ दुश्मनी करने पर कमर बाँध ली है, और...

प्रभाकर सिंह : (बात काट कर) ओफ, इन पचड़ों को मैं सुनना पसन्द नहीं करता, इस बारे में मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि तुम जानो और वे जानें, मैं तुम्हारा ताबेदार नहीं हूँ कि तुम्हारे लिए उनको समझाने जाऊँ।

भूतनाथ : (क्रोध के साथ) तुम अजब ढंग पर बातें कर रहे हो! तुम्हारा मिजाज तो आसमान पर चढ़ा हुआ है!!

प्रभाकर सिंह : बेशक् ऐसा ही है, तुम धोखा देकर मुझे गिरफ्तार कर लाए हो इसलिए मैं तुमसे बात करना भी पसन्द नहीं करता।

भूतनाथ : फिर ऐसा करने से तो नहीं चलता, तुम्हें झख मार कर मेरी बातों का जवाब देना पड़ेगा।

यह कहकर भूतनाथ ने भी म्यान से तलवार निकाली और पैतरा बदलकर सामने खड़ा हो गया।

प्रभाकर सिंह : तुम्हारी तलवार बिलकुल बेकार है, कुछ भी काम नहीं देगी, चलाओ और देखो क्या होता है।

भूतनाथ : हाँ-हाँ, देखो यह तलवार कैसा मजा करती है, मैं तुम्हें जान से न मारूँगा बल्कि बेकार करके छोड़ दूँगा।

इतना कहके भूतनाथ ने प्रभाकर सिंह पर वार किया जिसे उन्होंने बड़ी चालाकी के साथ अपनी तलवार पर रोका।

प्रभाकर सिंह की तलवार पर पड़ने के साथ ही भूतनाथ की तलवार कटकर दो टुकड़े हो गई क्योंकि वह हर एक हर्बे को काट सकती थी। भूतनाथ ने टूटी हुई तलवार फेंक दी और कमर से खंजर निकालकर वार किया चाहता था कि प्रभाकर सिंह ने अपनी तलवार से उसे भी काट कर दो टुकड़े कर दिया। भूतनाथ को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वह सोचने लगा कि यह अनूठी तलवार किस लोहे की बनी हुई है जो दूसरे हर्बों को इतने सहज ही में काट डाला करती है!

थोड़ी ही दूर पर भूतनाथ के कई आदमी खड़े यह तमाश देख रहे थे मगर मालिक का इशारा पाये बिना पास नहीं आ सकते थे। इस समय भूतनाथ ने इशारा किया और वे लोग जो गिनती में आठ थे वहाँ आ मौजूद हुए। यह कैफियत देखकर प्रभाकरसिंह ने कहा, "भूतनाथ, मैं केवल तुम्हीं से नहीं बल्कि एक साथ इन सभों से लड़ने के लिए तैयार हूँ।"

यह बात भूतनाथ को बहुत बुरी मालूम हुई और अपने एक साथी के हाथ से तलवार लेकर उसने पुनः प्रभाकर सिंह पर वार किया और साथ-साथ अपने साथियों की मदद के लिए इशारा किया।

प्रभाकर सिंह बड़ा ही बहादुर आदमी था और लड़ाई के फन में तो वह लासानी था। अगर वह चाहता तो सहज ही में अपनी तिलिस्मी तलवार से जख्मी करके सभों को बेहोश कर देता, मगर नहीं, उसने कुछ देर तक लड़ कर सभों को दिखला दिया कि हमारे सामने तुम लोग कुछ भी नहीं हो! यद्यपि उसके बदन पर भी कई जख्म लगे, मगर उसने सभों के हर्बे बेकार कर दिये और अंत में भूतनाथ तथा उसके सभी साथी जख्मी होकर तलवार वाली बिजली के असर से बेहोश हो जमीन पर गिर पड़े। प्रभाकर सिंह धीरे-धीरे मस्तानी चाल से चलते हुए वहाँ से रवाना हुए, मगर जब सुरंग में आये और दरवाजा बंद पाया तब मजबूर होकर उन्हें रुक जाना पड़ा।

प्रभाकर सिंह पुनः लौटकर वहाँ आये जहाँ भूतनाथ और उसके साथी लोग बेहोश पड़े हुए थे। तिलिस्मी तलवार के जोड़ की अँगूठी उन्होंने भूतनाथ के बदन से लगाई, उसी समय भूतनाथ की बेहोशी जाती रही। वह उठकर खड़ा हो गया और ताज्जुब के साथ प्रभाकर सिंह का मुँह देखने लगा।

भूतनाथ : मैं समझ गया कि तुम बहादुर आदमी हो और तुम्हारे हाथ की यह तलवार बड़ी ही अनूठी है जिसके सबब से तुम और भी जबर्दस्त हो रहे हो। (मुसकुराकर) सच कहना यह तलवार तुमने कहाँ से पाई! पहिले तो यह तुम्हारे पास न थी, अगर होती तो बेइज्जती के साथ तुम चुनारगढ़ से न भागते!

प्रभाकर सिंह : ठीक है मगर इससे तुम्हें क्या मतलब, चाहे कहीं से यह तलवार मुझे मिली हो।

भूतनाथ : (मुलायमियत के साथ) नहीं-नहीं प्रभाकर सिंह, बुरा मत मानो, मेरी बातों का जवाब देने से तुम कुछ छोटे नहीं हो जाओगे। बताओ तो सही क्या यह तलवार जहर में बुझाई हुई है? क्योंकि इसका जख्म लगने के साथ ही नशा चढ़ आता है।

प्रभाकर सिंह : कदाचित् ऐसा ही हो, मैं ठीक नहीं कह सकता!

भूतनाथ : देखो मेरे साथी लोग अभी तक बेहोश पड़े हुए हैं।

प्रभाकर सिंह : अभी बड़ी देर तक ये बेहोश पड़े रहेंगे मगर मरेंगे नहीं। तुम्हारी बेहोशी तो मैंने दूर कर दी है, खैर यह बताओ कि अब तुम मेरे साथ क्या किया चाहते हो?

भूतनाथ : कुछ भी नहीं, मैं जो कुछ कर चुका हूँ उसके लिए आपसे माफी माँगता हूँ और चाहता हूँ कि आइन्दा के लिए हमारे और आपके बीच सुलह हो जाय।

प्रभाकर सिंह : जैसा तुम बर्त्ताव करोगे मैं वैसा ही जवाब दूँगा, मुझे खासतौर पर तुम्हारे साथ किसी तरह की दुश्मनी नहीं है।

भूतनाथ : अच्छा तो चलिए मैं आपको इस घाटी के बाहर कर आऊँ क्योंकि बिना मेरी मदद के आप यहाँ से बाहर नहीं जा सकते।

प्रभाकर सिंह : चलो।

भूतनाथ : मगर मैं देखता हूँ कि आप बहुत जख्मी हो रहे हैं और खून से आपका कपड़ा तरबतर हो रहा है, मुझे आज्ञा दीजिए तो आपके जख्मों को धोकर उन पर गीले कपड़े की पट्टी बाँध दूँ।

प्रभाकर सिंह : नहीं, इसकी कोई जरूरत नहीं है, घाटी के बाहर निकलकर मैं इसका उपाय कर लूँगा।

भूतनाथ : आखिर क्यों ऐसा किया जाय, जितनी देर होगी उतना ज्यादे खून निकल जाएगा, आप इसके लिए जिद न करें। आप मुझ पर भरोसा करें और आज्ञा दें कि इन जख्मों पर पट्टी बाँध दूँ।

प्रभाकर सिंह : खैर जैसी तुम्हारी मर्जी, मैं तैयार हूँ।

भूतनाथ तेजी के साथ उस गुफा में चला जिसमें उसका डेरा था और पीतल की गगरी पानी से भरी हुई और एक लोटा तथा कुछ कपड़ा पट्टी बाँधने के लिए लेकर प्रभाकर सिंह के पास लौट आया।

प्रभाकर सिंह ने कपड़े उतारे और भूतनाथ ने जख्मों को धोकर उन पर पट्टियाँ बाँधी। इसके बाद प्रभाकर सिंह कपड़ा पहिन कर चलने के लिए तैयार हो गए। भूतनाथ ने अपने आदमियों के विषय में प्रभाकर सिंह से पूछा कि इन सभों की बेहोशी खुद-ब-खुद जाती रहेगी या इसके लिए कोई इलाज करना होगा?

पहिले तो प्रभाकर सिंह के जी में आया कि अपने हाथ की अँगूठी छुआकर उन सभों को बेहोशी दूर कर दें मगर फिर कुछ सोच कर रुक गए और बोले, ''नहीं इनकी बेहोशी आप-से-आप थोड़ी देर में जाती रहेगी, कुछ उद्योग करने की जरूरत नहीं।''

आगे-आगे भूतनाथ और पीछे-पीछे प्रभाकर सिंह वहाँ से रवाना हुए। सुरंग में घुसकर भूतनाथ ने वह दरवाजा खोला जो बंद था मगर प्रभाकर सिंह को यह नहीं मालूम हुआ कि वह दरवाजा किस ढंग से खोला गया।

घाटी के बाहर निकल जाने पर भी भूतनाथ बहुत दूर तक पहुँचाने के लिए प्रभाकर सिंह के साथ मीठी-मीठी बातें करता हुआ चला गया। लगभग आध कोस तक दोनों आदमी चले गये होंगे जब प्रभाकर सिंह का सर घूमने लगा और धीरे-धीरे बेहोश होकर वे जमीन पर गिर पड़े।

भूतनाथ बड़ा ही चालाक और काइयाँ था और उसने प्रभाकर सिंह को बुरा धोखा दिया। हमदर्दी दिखाकर जख्म धोने के बहाने से वह बेहोशी की दवा का बर्त्ताव कर गया। जो पानी वह अपनी गुफा में से लेकर आया था उसमें जहरीली दवा मिली हुई थी मगर वह दवा ऐसी न थी जिससे जान जाती रहे बल्कि ऐसी थी कि खून के साथ मिलकर बेहोशी का असर पैदा करे।

जब प्रभाकर सिंह बेहोश हो गए तब भूतनाथ ने पहिले तो अँगूठी और तलवार पर कब्जा किया और बहुत ही खुश हुआ, इसके बाद प्रभाकर सिंह को गठरी में बाँध पीठ पर लाद अपनी घाटी की तरफ रवाना हुआ। बेचारे प्रभाकर सिंह पुनः भूतनाथ के फँदे में फँस गए, देखना चाहिए अब भूतनाथ उनके साथ क्या सलूक करता है!

9

अबकी दफे भूतनाथ ने प्रभाकर सिंह को बड़ी सख्ती के साथ कैद किया, पैरों में बेड़ी और हाथों में दोहरी हथकड़ी डाल दी और उसी गुफा के अन्दर रख दिया जिसमें स्वयं रहता था और उसके (गुफा के) बाहर आप चारपाई डाल रात को पहरा देने लगा।

भूतनाथ ने बहुत कुछ दम-दिलासा देकर प्रभाकर सिंह से जमना और सरस्वती का हाल पूछा मगर उन्होंने उनका कुछ भी भेद न बताया, इस पर भी भूतनाथ ने प्रभाकर सिंह को किसी तरह का दुःख नहीं दिया, हाँ इस बात का जरूरी खयाल रखा कि वे किसी तरह भाग न जाएँ।

इसी तरह प्रभाकर सिंह की हिफाजत करते-करते बहुत दिन गुजर गए मगर भूतनाथ की इच्छानुसार कोई कार्रवाई नहीं हुई। भूतनाथ ने जमना और सरस्वती के विषय में भी पता लगाने के लिए बहुत उद्योग किया मगर कुछ नतीजा न निकला।

भूतनाथ ने अपने कई शागिर्दों को तरह-तरह का काम सुपुर्द करके चारों तरफ दौड़ाया और कइयों को उस सुरंग के इर्द-गिर्द घूमकर टोह लगाने के लिए मुकर्रर किया जिसकी राह से कला ने इस खोह के बाहर किया था।

भूतनाथ को अपने शागिर्द भोलासिंह की बड़ी फिक्र थी क्योंकि वह मुद्दत से गायब था और हजार कोशिश करने पर भी उसका कुछ पता नहीं लगता था। वह भूतनाथ का बहुत ही विश्वासी शागिर्द था और भूतनाथ उसे दिल से मानता था।

एक दिन दोपहर के समय भूतनाथ अपनी घाटी से बाहर निकला और सुरंग के मुहाने पर बाहर की तरह पेड़ों की ठंडी छाया में टहलने लगा। संभव है कि वह अपने किसी शागिर्द का इंतजार कर रहा हो। उसी समय दूर से आते हुए भोलासिंह पर उसकी निगाह पड़ी। वह बड़ी खुशी के साथ भोलासिंह की तरफ बढ़ा और भोलासिंह भी भूतनाथ को देखकर दौड़ता हुआ आया और उसके पैरों पर गिर पड़ा। भूतनाथ ने भोलासिंह को गले से लगा लिया और पूछा, "इतने दिन तक तुम कहाँ थे? मुझे तुम्हारे लिए बड़ी ही फिक्र थी और दिन-रात खटके में जी लगा रहता था!"

भोलासिंह : गुरुजी, मैं तो बड़ी आफत में फँस गया था, ईश्वर ही ने मुझे बचाया नहीं तो मैं बिलकुल ही निराश हो चुका था।

भूतनाथ : क्या तुम्हें किसी दुश्मन ने गिरफ्तार कर लिया था!

भोलासिंह : जी हाँ।

भूतनाथ : किसने?

भोलासिंह : दो औरतों ने, जिन्हें मैं बिलकुल ही नहीं पहिचानता।

भूतनाथ : मालूम होता है कि तुम्हें भी जमना और सरस्वती ने गिरफ्तार कर लिया था?

भोलासिंह : जमना और सरस्वती कौन?

भूतनाथ : हमारे प्यारे दोस्त और मालिक दयाराम की स्त्रियाँ जिनका जिक्र मैं कई दफे तुमसे कर चुका हूँ।

भोलासिंह : हाँ-हाँ, अब मुझे याद आया, मगर आपने तो कहा था कि वे मर गईं?

भूतनाथ : हाँ, मुझे ऐसा ही विश्वास था, मुझे क्या तमाम दुनिया यही जानती है कि दोनों मर गईं मगर अब मुझे मालूम

हुआ कि वे दोनों जीती हैं और (हाथ का इशारा करके) इसी पड़ोस वाली घाटी में रहती हैं तथा उन्होंने अपने को कला और विमला के नाम से मशहूर किया है, इसलिए कि मुझे सता कर अपना कलेजा ठंडा करें क्योंकि किसी ने दोनों को विश्वास दिलाया है कि दयाराम को भूतनाथ ही ने मार डाला है।

भोलासिंह : शिव शिव शिव! भला यह भी कोई बात है! अच्छा तो यह सब बातें आपको किस तरह मालूम हुई?

भूतनाथ : मैं एक दफे उनके फँदे में पड़ गया था, वे मुझे गिरफ्तार करके अपनी घाटी में ले गईं और कैद कर दिया।

भोलासिंह : फिर आप छूटे किस तरह से?

भूतनाथ : वहाँ मैंने एक लौंडी को धोखा देकर अपना बटुआ जो छिन गया था मँगवा लिया। फिर कैदखाने से बाहर निकल जाना मेरे लिए कोई कठिन काम न था। इसके बाद मैंने उसी अँधेरी रात में पुनः एक लौंडी को गिरफ्तार किया और लालच दे कुछ पता लगाना चाहा मगर वह लालच में न पड़ी, तब मैंने अपने चाबुक से काम लिया, मुख्तसर यह कि वह मार खाते-खाते मर गई पर इससे ज्यादे और कुछ भी न बताया कि हाँ जमना और सरस्वती यहाँ रहती हैं और उन्होंने अपना नाम कला और विमला रखा है। इसके बाद एक ऐसा मौका हाथ आया कि मैंने कला को पकड़ लिया, मगर दिन के समय जब मैंने उसकी सूरत देखी तो मालूम हुआ कि जमना, सरस्वती दोनों में से कोई नहीं है क्योंकि नाम बदल दिया तो क्या हुआ मैं उन दोनों को अच्छी तरह पहिचानता हूँ, पहिले तो शक हुआ कि शायद ऐयारी ढंग पर इसने सूरत बदल ली है, मगर नहीं पानी से मुँह धुलवाने पर वह शक भी जाता रहा।

इतना कहकर भूतनाथ ने अपना खुलासा हाल उसी घाटी में गिरफ्तार होकर जाने और फिर बाहर निकलने का तथा प्रभाकर सिंह को गिरफ्तार करने का बयान किया और कहा, ''मालूम होता है कि उन्हीं में से किसी ने तुम्हें गिरफ्तार कर लिया था, खैर खुलासा हाल कहो तो कुछ मालूम हो!''

भोलासिंह : जी हाँ, बेशक् उन्हीं लोगों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया था। जब तक मैं उनके वहाँ कैद रहा तब तक रोज उन दोनों से मुलाकात होती रही, क्योंकि वह रोज ही मुझे समझाने-बुझाने के लिए आया करती थीं, मैंने यहाँ पर एक नया ही ढंग रचा, जिस पर कई दिनों तक तो उन्हें विश्वास ही न हुआ मगर अंत में उन्होंने मान लिया कि जो कुछ मैं कहता हूँ वह सब सच है। मैंने इन्हें यह भी समझाया कि मैं भूतनाथ का नौकर या शागिर्द नहीं हूँ बल्कि राजा सुरेन्द्रसिंह का ऐयार हूँ, जिनसे चुनार के राजा शिवदत्त से आजकल से लड़ाई हुआ हो चाही है। महाराज सुरेन्द्रसिंह ने सुना है कि गदाधरसिंह राजा शिवदत्त की मदद पर है इसलिए उन्होंने मुझे तथा अपने कई ऐयारों को गदाधरसिंह को गिरफ्तार करने के लिए भेजा है।

भूतनाथ : (मुसकराकर) खूब समझाया, अच्छी सूझी!

भोलासिंह : जी हाँ, आखिर उन्हें मेरी बातों पर विश्वास हो गया और कई तरह के वादे करा के उन्होंने मुझे छोड़ दिया।

भूतनाथ : किस राह से तुम्हें बाहर निकाला?

भोलासिंह : सो मैं नहीं कह सकता, क्योंकि उस समय मेरी आँखों पर पट्टी बाँध दी गई थी, जब पट्टी खोली गई तो मैंने देखा कि वहाँ बहुत-से सुन्दर और सुहाने बेल तथा पारिजात के पेड़ लगे हुए हैं और दाहिनी तरफ कई कदम की दूरी पर साफ पानी का एक सुन्दर चश्मा भी बह रहा है...

भूतनाथ : (बात काट के) ठीक है, ठीक है, मैं समझ गया, मैं भी उसी सुरंग से बाहर निकाला गया था। परन्तु मैं समझता हूँ कि उसके अतिरिक्त और भी कोई रास्ता उस घाटी में जाने के लिए जरूर है, क्योंकि जब मैं गिरफ्तार हुआ था तो किसी दूसरे ही मुहाने पर था। उस समय मुझे छुरी का एक जख्म लगा था जो अभी तक तकलीफ दे रहा है।

भोलासिंह : संभव है, हो सकता है। इसमें आश्चर्य ही क्या है!

इसके बाद दोनों आदमी एक पत्थर की चट्टान पर बैठकर देर तक बातें करते रहे। भूतनाथ पर जो कुछ बीती थी उसने ब्यौरेवार बयान किया और भोलासिंह ने जो कुछ कहा, बड़े गौर से सुना।

भोलासिंह भूतनाथ का बहुत ही विश्वासपात्र था इसलिए साधु महाशय की कृपा का हाल भूतनाथ ने यद्यपि अपने किसी शागिर्द या आदमी से बयान नहीं किया था मगर भोलासिंह से साफ और पूरा-पूरा बयान कर दिया चाहे अभी यह नहीं बताया कि उस खजाने का दरवाजा किस तरह खुलता और बंद होता है। हाँ, अंत में इतना जरूर कह दिया कि मैं तुम्हें उस खजाने वाले घर में ले चलूँगा और दिखाऊँगा कि यहाँ कितनी बेशुमार दौलत है!

संध्या होते ही भोलासिंह को लेकर भूतनाथ अपनी अनूठी घाटी में चला गया। रास्ते में उस दरवाजे का हाल और भेद भोलासिंह को बताया गया जिसे बिमला ने बंद कर दिया था और जिसे साधु महाशय की कृपा से भूतनाथ ने खोला था।

भोलासिंह जब उस घाटी के अन्दर पहुँच गया तो भूतनाथ ने सबसे पहिले प्रभाकर सिंह से उसकी मुलाकात कराई। भोलासिंह को देखकर और यह सुनकर कि इसका नाम भोलासिंह है प्रभाकर सिंह चौंके और गौर से उसकी तरफ देखकर चुप ही रहे।

इसके बाद भोलासिंह को साथ लेकर भूतनाथ उस गुफा की तरफ रवाना हुआ जिसमें खजाना था, वह खजाना जो साधु महाशय की कृपा से मिला था। रोशनी न करके अँधेरे ही में भोलासिंह को सुरंग के अन्दर अपने पीछे-पीछे आने के लिए भूतनाथ ने कहा और भोलासिंह भी बेखौफ कदम बढ़ाए चला गया। मगर अंत में जब भूतनाथ खजाने के दरवाजे पर पहुँचा और वह दरवाजा खोल चुका था तब उसने ऐयारों के बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी की और भोलासिंह की कोठरी के अन्दर आने के लिए कहा।

भूतनाथ : देखो भोलासिंह, इस तरफ निगाह दौड़ाओ। ये सब चाँदी के देग़ अशर्फियों से नकानक भरे हैं। इसमें से सिर्फ एक देग मैंने खाली किया है।

भोलासिंह : (देगों या हंडों की तरफ देख के) बेशक् यह बहुत दिनों तक काम देंगे।

भूतनाथ : बेशक्, साथ ही इसके यह भी सुन रखो कि वह साधु महाराज पुनः यहाँ आवेंगे तो ऐसे और भी कई खजाने मुझे देंगे!

भोलासिंह : ईश्वर की कृपा है आपके ऊपर! हाँ, यदि आप आज्ञा दीजिए तो मैं भी जरा इन अशर्फियों के दर्शन कर लूँ।

भूतनाथ : हाँ-हाँ, अपने हाथों से ही ढकना खोलते जाओ और देखते जाओ, बल्कि मैं यह भी हुक्म देता हूँ कि इस समय जितनी अशर्फियाँ तुमसे उठाते बने उठा लो और अपने घर ले जाकर बाल-बच्चों को दे आओ। तुम खूब जानते हो कि मैं तुम्हें अपने लड़के की तरह मानता हूँ।

भोलासिंह : निःसन्देह ऐसा ही है मगर मैं इस समय अशर्फियाँ लेकर क्या करूँगा, आपकी बदौलत मुझे किसी बात की कमी तो है ही नहीं।

भूतनाथ : नहीं-नहीं-नहीं, तुम्हें जरूर लेना पड़ेगा।

भोलासिंह : (कई देगों के ढकने उठाकर देखने के बाद) मगर इनमें से तो कई हंडे खाली है, आप कहते हैं कि सिर्फ एक ही हंडे की अशर्फियाँ निकाली गई हैं।

भूतनाथ : (ताज्जुब से) क्या कई हंडे खाली पड़े हैं!

इतना कहकर भूतनाथ ने एक-एक करके उन हंडों को देखना शुरू किया मगर यह मालूम करके उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि उसका आधा खजाना एकदम से खाली हो गया है अर्थात् आधे हंडों में अशर्फियों की जगह एक कौड़ी भी नहीं है।

भूतनाथ : हें, यह क्या हुआ! मैं खूब जानता हूँ कि इन सब हंडों में अशर्फियाँ भरी हुई थीं। मैंने अपने हाथ से इन सभों को ढकना उठाया था और अपनी आँखों से देखा था...

भोलासिंह : (बात काटकर) बेशक्-बेशक् आपने देखा होगा मगर बड़े आश्चर्य की बात है कि इतनी हिफाजत के साथ रहने पर भी अशर्फियाँ गायब हो गईं। मैं कह तो नहीं सकता मगर हमारे साथियों में से किसी-न-किसी की नीयत...

भूतनाथ : जरूर खराब हो गई, मैंने अपनी जुबान से इस खजाने का हाल अपने किसी साथी से भी नहीं कहा तिस पर यह हाल!

भोलासिंह : संभव है कि आपके पीछे-पीछे आकर किसी ने देख लिया हो और यह भेद मालूम कर लिया हो।

भूतनाथ : अगर ऐसा नहीं हुआ तो हुआ क्या? इसका पता लगाना चाहिए और जानना चाहिए कि हमारे साथियों में से किस-किस का दिल बेईमान हो गया है, क्योंकि इसमें तो कोई शक नहीं कि हमारे साथियों ही में से किसी ने यह चोरी की है।

भोलासिंह : मेरा खयाल तो यह है कि कई आदमियों ने मिलकर चोरी की है।

भूतनाथ : हो सकता है, भला तुम ही कहो कि अब मैं कब अपने साथियों का विश्वास कर सकता हूँ।

भोलासिंह : कभी नहीं, मेरा विश्वास अब इन सभों के ऊपर से उठ गया है। हाय-हाय, इतना बड़ा खजाना और ऐसी नमकहरामी!

भूतनाथ : देखो तो सही मैं कैसा इन लोगों को छकाता हूँ।

भोलासिंह : आप जल्दी न कीजिए, एक-दो रोज और देख लीजिए।

भूतनाथ : कहीं ऐसा न हो कि एक-दो दिन ठहरने से यह भी जो बचा है जाता रहे।

इतना कहकर भूतनाथ कोठरी के बाहर निकल आया और दरवाजा बंद कर पेचोबात खाता हुआ सुरंग बाहर हो उस तरफ रवाना हुआ जिधर उसका डेरा था।

भूतनाथ को इन अशर्फियों के गायब होने का बड़ा ही दुःख हुआ। रात के समय उसने किसी को कुछ कहना मुनासिब न समझा और चुप ही रहा। मगर रात-भर उसे अच्छी तरह नींद न आई और क्रोध के मारे उसने कुछ भोजन भी नहीं किया। भोलासिंह कुछ देर के बाद उसके पास से हट गया और किसी दूसरी ही गुफा के बाहर बैठकर उसने रात बिताई, जब घंटे-भर रात बाकी रही तब वह घबड़ाया हुआ भूतनाथ के पास आया और देखा कि वह गहरी नींद में सो रहा है। भोलासिंह ने हाथ से हिलाकर भूतनाथ को सचेत किया। वह घबराकर उठा बैठा और बोला, ''क्यों गया है!''

भोलासिंह : मालूम होता है कि आज फिर आपकी चोरी हुई!

भूतनाथ : सो कैसे?

भोलासिंह : मैंने कई आदमियों को उस खजाने वाले सुरंग के अन्दर जाते और वहाँ से लदे हुए बाहर निकलते देखा है।

भूतनाथ : फिर वे लोग कहाँ गए?

भोलासिंह : मालूम होता है कि सब घाटी के बाहर निकल गये, मैं उन लोगों को नीचे उतरकर उस सुरंग में जो बाहर निकलने का रास्ता है जाते देख लपका हुआ आपके पास आया हूँ, अतः आप शीघ्र उठिए और उन लोगों का पीछा कीजिए।

भूतनाथ घबराकर उठ बैठा और बोला, ''जरा देख तो लो कि यहाँ से कौन-कौन गायब हैं?''

भोलासिंह : इस देखा-देखी में तो बहुत देर हो जाएगी और वे लोग दूर निकल जाएँगे।

भूतनाथ : अच्छा चलो पहिले बाहर ही चलें।

दोनों आदमी तेजी के साथ पहाड़ी के नीचे उतर आए और सुरंग में घुसकर उस घाटी के बाहर निकले। यहाँ बिलकुल ही सन्नाटा था। थोड़ी देर तक ये दोनों इधर-उधर घूमते रहे मगर जब कुछ पता न लगा तो लौटकर सुरंग के मुहाने पर चले आए और यों बातचीत करने लगे

भोलासिंह : मालूम होता है कि वे लोग दूर निकल गये, किस तरफ गये हैं इसका पता लगाना जल्दी में नहीं हो सकता।

भूतनाथ : अच्छा तो तुम घाटी के अन्दर जाओ और वहाँ जो लोग हैं उनका खयाल रखो, मैं पुनः घूमकर टोल लगाता हूँ कि वे लोग कहाँ गये।

भोलासिंह : नहीं, आप ही घाटी के अन्दर जाइए और मुझे उन लोगों का पता लगाने की आज्ञा दीजिए, क्योंकि जो लोग यहाँ से गए हैं वे अगर अपने ही आदमी हैं तो आखिर लौटकर यहाँ आवेंगे जरूर, ऐसी अवस्था में ज्यादे देर तक पीछा करने की कोई जरूरत नहीं, इसके अतिरिक्त आप घाटी में जाकर इस बात का निश्चय कर सकते हैं कि वहाँ से कौन-कौन आदमी गायब हैं क्योंकि यह बात मुझे बिलकुल ही नहीं मालूम है कि आजकल किस-किस को आपने किस-किस काम पर मुस्तैद किया है तथा घाटी के अन्दर कौन-कौन रहता है।

भूतनाथ : ठीक है, अच्छा मैं ही घाटी के अन्दर जाकर पता लगाता हूँ कि कौन-कौन गायब है, अफसोस! सुरंग के अन्दर दरवाजा खोलना-बंद करना मैंने अपने सब आदमियों को बता दिया है, अगर बताता नहीं तो काम भी नहीं चल सकता था क्योंकि नित्य ही लोग आते-जाते रहते हैं, मेरी गैरहाजिरी में भी उन लोगों को आना-जाना पड़ता था।

भोलासिंह : ठीक है, बिना बताए काम नहीं चल सकता था।

भूतनाथ : इसके अतिरिक्त मैंने उन सभों को यह भी हुक्म दे रखा है कि नित्य ही प्रातःकाल सूर्योदय के पहिले बारी-बारी से दो-चार आदमी घाटी के बाहर निकलकर इधर-उधर घूमा-फिरा करें, अगर वे लोग जिन्हें तूने जाते देखा है लौटकर आवेंगे भी तो यही कहेंगे कि हम बालादवी के लिए बाहर गए थे, फिर उन्हें कायल करने और चोर सिद्ध करने के लिए क्या तरकीब हो सकती है?

भोलासिंह : ठीक ही तो है, फिर जानिए जो मुनासिब समझिएगा कीजिएगा मगर पहले जाकर देखिए तो सही कि कौन गायब है और उस खजाने को भी एक नजर देख लीजिएगा कि बनिस्बत कल के कुछ और भी कम हुआ है या नहीं। जरूर कम हुआ होगा क्योंकि मैंने अपनी आँखों से उन लोगों की कार्रवाई देखी है।

''खैर मैं जाता हूँ'' इतना कहकर भूतनाथ घाटी के अन्दर चला गया, सबके पहिले उसने खजाने को देखना मुनासिब समझा और पहिले उसी तरफ गया जिधर खजाने वाली गुफा थी।

गुफा के अन्दर घुसकर और खजाने वाली कोठरी का दरवाजा खोल जब भूतनाथ और अन्दर गया और रोशनी करके गौर से उन हंडों को देखा तो मालूम हुआ कि और भी कई हंडे खाली हो गये हैं, भोलासिंह को लेकर जिस समय वह इस कोठरी में आया था उस समय जिन हंडों या देगों में भोलासिंह ने अशर्फियाँ देखी थीं और भूतनाथ ने भी देखी थीं उनमें से चार हंडे इस समय बिलकुल खाली दिखाई दे रहे थे। भूतनाथ ने मन में सोचा कि 'भोलासिंह का कहना बहुत ठीक है, जरूर हमारे आदमियों ने रात को चोरी की है, खैर अब मैं इन हरामखोरों से जरूर समझूँगा। मगर मामला बड़ा कठिन आ पड़ा है, अगर इन शैतानों को यहाँ से निकाल दूँ तब भी काम नहीं चल सकता है क्योंकि यहाँ का रास्ता इन लोगों का देखा हुआ है। अब तो कुछ डरते भी हैं, फिर दुश्मनी की नियत से यहाँ छिपकर आया करेंगे, और यदि मैं खुद इस घाटी को छोड़ दूँ और बचा हुआ खजाना लेकर दूसरी जगह जा रहूँ तो बाबाजी से मुलाकात करनी है। फिर इन सभों को निकाल देने से मैं निश्चित नहीं हो सकता क्योंकि ये सब दुश्मन हो जाएँगे और दुश्मनों से जा मिलेंगे, इससे यही बेहतर है इन सभों को जान से मारकर बखेड़ा तै किया जाय!''

इसी तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ अपने डेरे की तरफ गया जहाँ प्रभाकर सिंह को कैद रखा था। वहाँ पहुँच कर देखा तो प्रभाकर सिंह भी गायब है।

क्रोध के मारे भूतनाथ की आँखें लाल हो गईं, उसे विश्वास हो गया कि यह काम भी उसके आदमियों का ही है।

भूतनाथ ने अपनी गुफा के बाहर निकलकर इशारे की जफील बुलाई जिसके सुनते ही सब शागिर्द और ऐयार उसके पास आकर इकट्ठे हो गए जो इस समय वहाँ मौजूद थे। ये लोग गिनती में बारह थे जिनमें चार आदमी कुछ रात रहते ही बालादवी के लिए चले गए थे और बाकी आठ आदमी मौजूद थे जो इस समय भूतनाथ के सामने आये। कौन-कौन आदमी बाहर गया हुआ है यह पूछने के बाद भूतनाथ ने कहा

भूतनाथ : (सभों की तरफ देखकर) बड़े ताज्जुब की बात है कि प्रभाकर सिंह इस गुफा के अन्दर से गायब हो गये!

एक : यह तो आप ही जानिए, क्योंकि रात को आप ही उनके पहरे पर थे, हम लोगों में से तो कोई यहाँ था नहीं!

भूतनाथ : सो तो ठीक है मगर तुम्हीं सोचो कि यकायक यहाँ से उनका गायब हो जाना कैसी बात है!

दूसरा : बेशक् ताज्जुब की बात है।

भूतनाथ : इसके अतिरिक्त और भी एक बात सुनने लायक है (उँगली से बता के) इस गुफा के अन्दर हमारा खजाना रहता है, उसमें से भी आज लाखों रुपये की जमा चोरी हो गई है, इसके पहिले भी एक दफा चोरी हो चुकी है।

एक : यह तो आप ताज्जुब की बात सुनाते हैं! भला यहाँ चोर क्योंकर आ सकता है? इसके सिवाय उस गुफा में पचासों दफे हम लोग गए हैं मगर वहाँ खजाना वगैरह तो कभी नहीं देखा, न आप ही ने हम लोगों से कहा कि वहाँ खजाना रख आये हैं।

भूतनाथ : उस गुफा के भीतर एक दरवाजा है और उसके अन्दर जो कोठरी है उसी में खजाना था। उस दिन जो साधु महाशय आए थे उन्हीं का वह खजाना था और वे ही मुझ दे गए थे तथा वे उस कोठरी को खोलने-बंद करने की तरकीब भी बता गए थे, मगर अब हम जो देखते हैं तो वह खजाना आधा भी नहीं रह गया।

तीसरा : अब ये सब बातें तो आप जानिए, हमें तो कभी आपने इनकी इत्तिला नहीं दी थी इसलिए हम लोगों को उस तरफ कुछ खयाल भी नहीं था।

भूतनाथ : तो क्या हम झूठ कहते हैं?

चौथा : यह तो हम लोग नहीं कर सकते मगर इसके जिम्मेदार भी हम लोग नहीं हैं।

भूतनाथ : फिर कौन इसका जिम्मेदार है?

चौथा : आप जिम्मेदार हैं या फिर जो चुरा ले गया है वह जिम्मेदार है! आप तो हम लोगों से इस तरह पूछते हैं जैसे कोई लौंडी या गुलाम से आँख दिखाकर पूछता है। हम लोग आपके पास शागिर्दी का काम करते हैं, ऐयारी सीखते हैं, आपके लिए दिन-रात दौड़ते परेशान होते हैं और हरदम हथेली पर जान लिए रहते हैं, मरने की भी परवाह नहीं करते, तिस पर आप हम लोगों को चोर समझते हैं और ऐसा बर्त्ताव करते हैं! यह हम लोगों के लिए एक नई बात है, आज के पहिले कभी आप ऐसे बेरुख नहीं हुए थे।

भूतनाथ : हाँ, बेशक् आज के पहिले हम तुम लोगों को ईमानदार समझते थे, यह तो आज मालूम हुआ कि तुम लोग ऐयार नहीं बल्कि चोर और बेईमान हो।

पाँचवाँ : देखिए जुबान सम्हालिए, हम लोगों को ऐसी बातें सुनने की आदत नहीं है।

भूतनाथ : अगर आदत नहीं होती तो ऐसा काम नहीं करते।

छठा : (क्रोध में भर कर) सीधी तरह से यह क्यों नहीं कह देते कि यहाँ से चले जाओ। इस तरह इज्जत लेने और देने की जरूरत ही क्या है?

भूतनाथ : वाह-वाह, क्या अच्छी बात कही है। तमाम खजाना उठाकर हजम कर जाओ और इसके बदले में हम बस इतना ही कहकर रह जाएँ कि चले जाओ।

इस तरह की बातें हो रही थीं कि वे बाकी के चार आदमी भी आ गये जो बालादवी के लिए कुछ रात रहते घाटी के बाहर निकल गये थे। भूतनाथ ने उन सभों से भी इसी तरह की बातें कीं और अच्छी तरह डाँट बताई। उन लोगों ने भी इसकी जानकारी से इनकार किया और कहा कि हम लोगों को कुछ भी नहीं मालूम कि कहाँ आपका खजाना रहता है, कब कौन उठाकर ले गया तथा प्रभाकर सिंह को किसने यहाँ से भगा दिया।

भूतनाथ बड़ा ही लालची आदमी था, रुपये-पैसे के लिए वह बहुत जल्द बेमुरौवत बन जाता था और खोटे-से-खोटा काम करने के लिए तैयार हो जाता था। बात तो यह है कि रुपये-पैसे के विषय में वह किसी का एतबार ही नहीं करता था। आज उसकी बहुत बड़ी रकम गायब हो गई थी और मारे क्रोध के वह जल-भुन कर खाक हो गया था। अपने आदमियों पर उसने इतने ज्यादे सख्ती की और ऐसे बुरे शब्दों का प्रयोग किया कि वे सब एकदम बिगड़ खड़े हुए क्योंकि ऐयार लोग इस तरह की बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर सकते।

इन आदमियों या शागिर्दों के अतिरिक्त भूतनाथ के पास और भी कई आदमी थे जो दूसरी जगह रहते थे तथा और कामों पर मुकर्रर कर दिए गए थे मगर इस घाटी के अन्दर आजकल ये ही बारह आदमी रहते थे जो आज भूतनाथ की बातों से नाराज होकर बेदिल हो गए थे मगर भूतनाथ ने उन्हें सीधी तरह जाने भी नहीं दिया बल्कि तलवार खेंचकर सभों को सजा देने के लिए तैयार किया गया।

भूतनाथ की कमर में वही अनूठी तलवार थी जो उसने प्रभाकर सिंह से पाई थी, इस तलवार को वह बहुत प्यार करता था और उसे अपनी फतहमंदी का सितारा समझता था। उसके आदमियों को इस बात की कुछ भी खबर न थी कि इस तलवार में कौन-सा गुण हैं। अस्तु लाचार हो वे लोग भी खंजर और तलवारें खींच मुकाबला करने के लिए तैयार हो गये।

भूतनाथ अकेला ही सभों से लड़ने के लिए तैयार हो गया बल्कि बहुत देर तक लड़ा। भूतनाथ के बदन पर छोटे-छोटे कई जख्म लगे मगर भूतनाथ के हाथ की तलवार का जिसको जरा-सा भी चरका लगा वह बेकार हो गया और तुरन्त बेहोश होकर जमीन पर गिर गया। यह देख उन लोगों को बड़ा ही ताज्जुब हो रहा था। थोड़ी ही देर में कुल आदमी

जख्मी होने के कारण बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े और भूतनाथ ने सभों की मुश्कें बाँधकर एक गुफा में कैद कर लिया।

इसके बाद भूतनाथ घाटी के बाहर निकला और भोलासिंह की खोज में चारों तरफ घूमने लगा मगर तमाम दिन बीत जाने पर भी भोलासिंह का कहीं पता न लगा।

संध्या होने पर भूतनाथ पुनः लौटकर अपनी घाटी में आया और यह देखने के लिए उस गुफा के अन्दर गया जिसमें अपने शागिर्दों को कैद किया था कि उन सभों की बेहोशी अभी दूर हुई या नहीं, मगर अफसोस, भूतनाथ ने वह तमाशा देखा जो कभी उसके खयाल में भी नहीं आ सकता था, अर्थात् उसके कैदी शागिर्दों में से वहाँ एक भी मौजूद न था, हाँ उनके बदले वह सब सामान वहाँ जमीन पर जमा दिखाई दे रहा था जिससे उनके हाथ-पैर बेकार कर दिये गये थे या उनकी मुश्कें बाँधी गई थी।

अपने शागिर्दों को कैदखाने में न देखकर भूतनाथ को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वह सोचने लगा कि वे सब कैदखाने में से निकलकर किस तरह भाग गये! मैं इनके हाथ-पैर बड़ी मजबूती के साथ बाँध गया था जो बिना किसी की मदद के किसी तरह भी खुल नहीं सकते थे फिर ये लोग क्योंकर निकल गये? मालूम होता है कि उनका कोई-न-कोई मददगार यहाँ जरूर आया चाहे वह मेरे शागिर्दों का दोस्त हो या मेरा दुश्मन। इधर कई दिनों से ऐसी बातें हो रही हैं कि मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता है। क्या संभव है कि इन लोगों ने होश में आने के बाद आपस में मिल-जुलकर किसी तरह अपने हाथ-पैर खोल लिए हों? हाँ हो भी सकता है! अस्तु अब मुझे मानना पड़ेगा कि मेरे दुश्मनों की गिनती बढ़ गई क्योंकि वे लोग भी अब मेरे साथ जरूर दुश्मनी की गिनती बढ़ाना अच्छा नहीं, मगर अफसोस तो यह है कि अब मैं अकेला क्या करूँगा? दो-चार साथी अगर और है भी तो अब उनका क्या भरोसा? ये लोग अब जरूर उनको भी भड़कावेंगे और उन लोगों को जब यह मालूम हो जाएगा कि मैं अपने शागिर्दों को इस तरह सजा दिया करता हूँ तो वे लोग भी मेरा साथ छोड़ देंगे, बल्कि ताज्जुब नहीं कि भविष्य में कोई भी मेरा साथी बनना पसन्द न करे, आह मैं मुफ्त परेशान उठा रहा हूँ, व्यर्थ का दुःख भोग रहा हूँ! अगर अपने मालिक के पास चुपचाप बैठा रहता तो, कहो क्या इस तरद्दुद में पड़ता, मगर अब तो मैं वहाँ भी जाना पसन्द नहीं करता क्योंकि दयाराम की दोनों स्त्रियाँ वहाँ मुझे और भी विशेष कष्ट देंगी। अफसोस, यह बात रणधीरसिंह जी ने मुझसे व्यर्थ ही छिपाई और कह दिया कि दयाराम की दोनों स्त्रियों का देहान्त हो गया। मगर जहाँ तक मैं खयाल करता हूँ इसमें उनका कसूर कुछ भी नहीं जान पड़ता, संभव है कि मेरी तरह से वे भी धोखे में डाल दिए गए हों और अभी तक उन्हें इस बात की खबर भी न हो कि जमुना और सरस्वती जीती हैं। मगर अब मुझे क्या करना चाहिए वह सोचने की बात है। मैं तो ऐसा गायब हो सकता हूँ कि हवा को भी मेरी खबर न लगे मगर इस घाटी को छोड़ना जरा कठिन हो रहा है क्योंकि अगर मैं यहाँ से चला जाऊँगा तो फिर साधु महाशय से मुलाकात न होगी और मैं उस दौलत को न पा सकूँगा जो उनकी बदौलत मिलने वाली है, मगर यहाँ पर रहना भी अब कठिन हो रहा है। अच्छा कुछ दिन के लिए उस स्थान को अब छोड़ ही देना चाहिए और जो कुछ बचा हुआ खजाना है उसे निकाल ले जाना चाहिए।

इस तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ उस गुफा की तरह रवाना हुआ जिसमें उसका खजाना था। जब गुफा के अन्दर जाने के बाद रोशनी लिए हुए खजाने वाली कोठरी में पहुँचा तो देखा कि अब उन हंडों में एक भी अशर्फी बाकी नहीं है, सब-की-सब गायब हो गईं, बल्कि वे हंडे तक भी अब नहीं दिखाई देते जिनमें अशर्फियाँ रखी गई थीं। भूतनाथ का दिमाग हिल गया और वह अपना सिर पीट कर उसी जगह बैठ गया।

थोड़ी देर बाद भूतनाथ उठा और मोमबत्ती की रोशनी में उसने उस कोठरी को अच्छी तरह देखा, इसके बाद दरवाजा बंद करके निकल आया और गुफा की जमीन को बड़े गौर से देखता तथा यह सोचता हुआ पहाड़ी के नीचे उतर गया कि "अब यहाँ रहना उचित नहीं है।"

दोपहर का समय है मगर सूर्यदेव नहीं दिखाई देते। आसमान गहरे बादलों से भरा हुआ है। ठंडी-ठंडी हवा चल रही है और जान पड़ता है कि मूसलाधार पानी बरसा ही चाहता है।

भूतनाथ अपनी घाटी के बाहर निकल कर अकेला ही तैयार और जंगल की सैर कर रहा है। उसके दिल में हर तरह की बातें उठ रही हैं, तरह-तरह के विचार पैदा हो और मिट रहे हैं। कभी वह अटक कर इस तरह चारों तरफ देखने लग जाता है जैसे किसी के आने की आहट लेता हो और कभी अफील बजाकर उसके जवाब का इंतजार करता है।

इसी तरह वह बहुत देर तक घूमता रहा, आखिर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और कुछ सोचने लगा। थोड़ी देर बाद उसने पुनः जफील बुलाई और उसी समय उसका जवाब भी पाया। भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और उसी तरफ रवाना हुआ जिधर से जफील की आवाज आई थी। थोड़ी दूर जाने पर उसने अपने एक शागिर्द को देखा जिसका नाम रामदास था। इसे भूतनाथ बहुत ही प्यार करता और अपने लड़के के समान मानता था वास्तव में रामदास बहुत चालाक और धूर्त था भी। यद्यपि उसकी उमर बीस साल के ऊपर होगी मगर देखने में वह बारह या तेरह वर्ष से ज्यादे का नहीं मालूम होता था। उसकी रेख बिलकुल ही नहीं आई थी और उसकी सूरत में कुदरती तौर पर जनानापन मालूम होता और हाव-भाव में भी उससे किसी तरह की त्रुटि नहीं होती थी। इस समय उनकी पीठ पर एक गठरी लदी हुई थी जिसे देख भूतनाथ को आश्चर्य हुआ और उसने आगे बढ़कर पूछा, ''कहो रामदास, खैरियत तो है? यह तुम किसे लाद लाये हो? मालूम होता है कोई अच्छा शिकार किया है?''

रामदास : (कानी आँख से प्रणाम करके) हाँ, चाचा, मैं बहुत अच्छा शिकार कर लाया हूँ!

भूतनाथ : (प्रसन्न होकर) अच्छा-अच्छा आओ इस पत्थर की चट्टान पर बैठ जाओ, देखो तुम्हारा शिकार कैसा है?

भूतनाथ ने गठरी उतारने में उसे मदद दी और दोनों आदमी एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गये। भूतनाथ ने गठरी खोल कर देखा तो एक बेहोश औरत पर निगाह पड़ी। उसने पूछा, ''यह कौन है?''

रामदास : यह जमना और सरस्वती की लौंडी है।

भूतनाथ : अच्छा, तुमने इसे कहाँ पाया?

रामदास : उसी घाटी के बाहर जिसमें वे दोनों रहती हैं। यह किसी काम के लिए बाहर आई थी और मैं आपकी आज्ञानुसार उसी जगह छिपकर पहरा दे रहा था, मौका मिलने पर मैंने इसे गिरफ्तार कर लिया और जबर्दस्ती बेहोश करके एक गुफा के अन्दर छिपा आया जहाँ किसी को यकायक पता नहीं लग सकता था। इसके बाद मैं इसी की सूरत बनकर उस सुरंग के पास चला आया जो उस घाटी के अन्दर जाने का रास्ता है और जहाँ मैंने इसे गिरफ्तार किया था। मेरी यह प्रबल इच्छा थी कि उस घाटी के अन्दर जाऊँ मगर इस बात की कुछ भी खबर न थी कि यह औरत जिसे मैंने गिरफ्तार किया है किस दर्जे की है या किस काम पर मुकर्रर है और इसका नाम क्या है, अस्तु इसके जानने के लिए मुझे कुछ पाखंड रचना पड़ा जिसमें एक दिन की देर तो हुई मगर ईश्वर की कृपा से मेरा काम बखूबी चल गया। मैंने सूरत बदलने के बाद इस लौंडी के कपड़े तो पहिर ही लिए थे जिस पर भी मैं चुटीला बनकर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और इंतजार करने लगा कि घाटी के अन्दर से कोई आवे तो मैं उसके साथ भीतर पहुँच जाऊँ। थोड़ी देर बाद जमना और सरस्वती स्वयं घाटी के बाहर आईं, उस समय मुझे यह नहीं मूलम हुआ कि यह जमना और सरस्वती हैं मगर जब घाटी के अन्दर चला गया और तरह-तरह की बातें सुनने में आईं तब मालूम हुआ कि यही जमना और सरस्वती हैं। यद्यपि ये दोनों कला और बिमला नाम से पुकारी जाती थीं मगर यह तो मैं आपसे सुन ही चुका था कि इन्होंने अपना नाम कला और बिमला रखा हुआ है इसलिए मुझे असल बात जानने में कोई कठिनता न हुई। खैर जब सुरंग के बाहर मुझे कला और बिमला ने देखा तो पूछा, ''अरी हरदेई, अभी तक इसी जगह बैठी हुई है?'' मैंने धीरे से

इसका जवाब दिया, "मैं पहाड़ी के ऊपर से गिरकर बहुत चुटीली हो रही हूँ, मुझमें दस कदम चलने की भी ताकत नहीं है बल्कि बात करने में भी तकलीफ मालूम होती है।" इसके बाद मैंने कई जगह छिले और कटे हुए जख्म दिखाए जो कि अपने हाथों से बनाये थे। मेरी अवस्था पर उन दोनों को बहुत अफसोस हुआ और वे दोनों मदद देकर मुझे अपनी घाटी के अंदर ले गईं और दवा-इलाज करने लगीं। दो दिन तक मैं चारपाई पर पड़ा रहा और इस बीच मुझे बहुत-सी बात मालूम हो गई जिन्हें मैं बहुत ही संक्षेप के साथ इस समय बयान करूँगा। दो दिन के बाद मैं चंगा हो गया और उन सभों के साथ मिल-जुलकर काम करने लगा क्योंकि इस बीच में मतलब की सभी बातें मुझे मालूम हो चुकी थीं।

भूतनाथ : निःसन्देह तुमने बड़ी हिम्मत का काम किया, अच्छा तो कौन-कौन बातें वहाँ तुम्हें मालूम हुईं?

रामदास : पहिली बात तो यह मालूम हुई कि बेचारा भोलासिंह उन दोनों के हाथ से मारा गया। खुद कला और बिमला ने उसे मारा था, यद्यपि यह नहीं मालूम हुआ कि कब किस ठिकाने और किस तरह से उसे मारा मगर इसे कई सप्ताह हो गये।

भूतनाथ : (आश्चर्य से) क्या वह मारा गया?

रामदास : निःसन्देह मारा गया।

भूतनाथ : अभी तो कल-परसों वह मेरे साथ था!

रामदास : वह कोई दूसरा होगा जिसने भोलासिंह बनकर आपको धोखा दिया।

भूतनाथ : (कुछ सोचकर) बेशक् वह कोई दूसरा ही था, अब जो सोचता हूँ तो तुम्हारा कहना ठीक मालूम होता है। हाय मुझसे बड़ी भूल हो गई और मैंने अपने को बर्बाद कर दिया। मेरे साथी-शागिर्द लोग बेचारे अपने दिल में क्या कहते होंगे! वे लोग अगर मेरे साथ दुश्मनी करें तो इसमें उनका कोई कसूर नहीं।

रामदास : यह क्या बात हुई, भला कुछ मैं भी सुनूँ।

भूतनाथ : तुमसे कुछ छिपा न रहेगा, मैं सब कुछ तुमसे बयान करूँगा, पहले तुम अपना किस्सा कह जाओ।

रामदास : नहीं-नहीं, पहिले मैं आपका यह हाल सुन लूँगा तब कुछ कहूँगा।

रामदास ने इस बात पर बहुत जिद्द किया, आखिर लाचार होकर भूतनाथ को अपना सब हाल बयान करना ही पड़ा जिसे सुनकर रामदास को बड़ा ही दुःख हुआ।

भूतनाथ : अच्छा और क्या तुम्हें मालूम हुआ?

रामदास : और यह मालूम हुआ कि जिस साधु महाशय का अभी-अभी आपने जिक्र किया है, जिन्होंने आपको खजाना दिया, वह कला और बिमला के पक्षपाती हैं। जो रंग-ढंग आपने उनके अभी बयान किये हैं ठीक उसी सूरत-शक्ल में मैंने उन्हें वहाँ देखा और यह कहते अपने कानों से सुना था कि 'भूतनाथ को मैंने खूब ही लालच में फँसा लिया है, अब वह इस घाटी को कदापि न छोड़ेगा और प्रभाकर सिंह को भी इसी जगह ले आवेगा, तब हम लोग उन्हें सहज ही में छुड़ा लेंगे'। इसके अतिरिक्त मुझे यह भी निश्चय हो गया कि वह साधु अपनी असली सूरत में नहीं है बल्कि कोई ऐयार है। मेरे सामने ही उसने बिमला से कहा था कि "अब मैं इसी सूरत में आया करूँगा।"

भूतनाथ : बेशक् वह कोई ऐयार था, मगर अशर्फियाँ किस तरह निकल गईं इसका भी पता कुछ लगा?

रामदास : इस विषय में तो मैं कुछ भी नहीं कह सकता।

भूतनाथ : खैर इस बारे में फिर सोचेंगे, अच्छा और क्या देखा-सुना?

रामदास : और यह भी मालूम हुआ कि गुलाबसिंह आपकी शिकायत लेकर दलीपशाह के पास गये थे, उस समय भी उस बुड्ढे साधु को मैंने उन दोनों के साथ देखा था।

भूतनाथ : खैर तो अब मालूम हुआ कि दलीपशाह के सिर में भी खुजलाहट होने लगी।

रामदास : बात तो ऐसी ही है, यह आपका बगली दुश्मन ठीक नहीं। उससे होशियार रहना चाहिए।

भूतनाथ : बेशक् वह बड़ा ही दुष्ट है, आश्चर्य नहीं कि वही भोलासिंह बनकर मेरे पास आया हो।

रामदास : हो सकता है वही आया हो।

भूतनाथ : खैर उससे समझ लिया जाएगा। अच्छा यह बताओ कि कुछ इन्द्रदेव का हाल भी तुम्हें मालूम हुआ या नहीं? मुझे शक होता है कि इन्द्रदेव उन दोनों की मदद पर हैं, ताज्जुब नहीं कि वहाँ वे भी जाते हों।

रामदास : इन्द्रदेव को तो मैंने वहाँ नहीं देखा और न उनके विषय में कुछ सुना मगर वे तो आपके मित्र हैं फिर आपके विरुद्ध क्यों कोई कार्रवाई करेंगे?

भूतनाथ : हाँ, मैं भी यही खयाल करता हूँ, खैर अब और बताओ क्या-क्या...

रामदास : प्रभाकर सिंह मेरे सामने ही वहाँ पहुँचे गये थे मगर मैं उनके विषय में कुछ विशेष हाल न जान सका क्योंकि और ज्यादे दिन वहाँ रहने की हिम्मत न पड़ी। मुझे मालूम हो गया कि अब अगर और यहाँ रहूँगा तो मेरा भेद खुल जाएगा क्योंकि दलीपशाह ने दो-तीन दफे मुझे जाँच की निगाह से देखा, अस्तु लाचार हो मैं बहाना करके एक लौंडी के साथ जो सुरंग का दरवाजा खोलना और बंद करना जानती थी, घाटी के बाहर निकल आया।

भूतनाथ : तुम्हें सुरंग का दरवाजा खोलने और बंद करने की तरकीब मालूम हुई या नहीं?

रामदास : नहीं, लेकिन अगर दो-चार दिन और वहाँ रहता तो शायद मालूम हो जाती। इतने ही में पानी बरसने लगा और हवा में भी तेजी आ गई।

रामदास : अब यहाँ से उठना चाहिए।

भूतनाथ : हाँ, चलो किसी आड़ की जगह में चलकर आराम करें। मेरी राय में तो अब इस घाटी में रहना मुनासिब न होगा, और साथ ही अब भविष्य के लिए बचे हुए आदमियों को आपस में कोई इशारा कायम कर लेना चाहिए जिसे मुलाकात होने पर हम लोग जाँच के खयाल से बरता करें। जिसमें फिर कभी ऐसा धोखा न हो जैसा भोलासिंह के विषय में हुआ है। तुम्हारा इशारा अर्थात् एक आँख बंद करके प्रणाम करना तो बहुत ठीक है, तुम्हारे विषय में किसी तरह धोखा नहीं हो सकता।

रामदास : बहुत मुनासिब होगा, अब यह सोचना चाहिए कि हम लोग अपना डेरा कहाँ कायम करेंगे?

भूतनाथ : तुम ही बताओ।

रामदास : मेरी राय में तो लामाघाटी उत्तम होगी।

भूतनाथ : खूब कहा, इस राय को मैं पसन्द करता हूँ!

इतना कह के भूतनाथ ने पुनः उस औरत की गठरी बाँधी जिसे रामदास ले आया था और अपनी पीठ पर लाद वहाँ से रवाना हुआ। रामदास भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।

11

भूतनाथ के हाथ से छुटकारा पाकर प्रभाकर सिंह अपनी स्त्री से मिलने के लिये उस घाटी में चले गये जिसमें कला और बिमला रहती थीं। संध्या का समय था जब वे उस घाटी में पहुँचकर कला, बिमला और इंदुमति से मिले। उस समय वे तीनों बँगले के सुन्दर मैदान में पत्थर की चट्टानों पर बैठी आपस में बातें कर रही थीं। प्रभाकर सिंह को देखकर वे तीनों बहुत प्रसन्न हुई, कई कदम आगे बढ़कर उनका इस्तकबाल किया तथा उसी जगह लाकर अपने पास बैठाया जहाँ वे सब बैठी हुई थीं।

बिमला : मैं भूतनाथ के हाथ से छुट्टी मिलने पर आपको मुबारकबाद देती हूँ। वास्तव में इन्द्रदेव जी ने इस विषय में बड़ी चालाकी की, नहीं तो हम लोगों से गहरी भूल हो गई थी कि भूतनाथ की घाटी का रास्ता बंद कर दिया था। उन्होंने साधु बनकर भूतनाथ को ऐसा धोखा दिया कि वह जन्म-भर याद रक्खेगा।

प्रभाकर सिंह : बेशक् ऐसी ही बात है, मुझे अभी थोड़ी देर हुई है यहाँ आते समय इन्द्रदेव जी रास्ते में मिले थे जो तुम्हारे पास होकर जा रहे थे, उन्होंने सब हाल मुझसे कहा था और उस समय भी वे उसी तरह साधु महात्मा बने हुए थे।

बिमला : जी हाँ, अब वे बराबर उसी सूरत में यहाँ आया करेंगे, उनका खयाल है कि असली सूरत में आने-जाने से कभी भूतनाथ को जरूर पता लग जाएगा और भूतनाथ उनसे खटक जाएगा क्योंकि वह बड़ा ही चांगला है।

प्रभाकर सिंह : उनका खयाल बहुत ही ठीक है, मुझसे भी ऐसा ही कहते थे। उन्होंने मुझसे यह भी पूछा था कि अब तुम्हारा क्या इरादा है, भूतनाथ का पीछा करोगे या नहीं? इसके जवाब में मैंने कहा कि भूतनाथ का पीछा करने की बनिस्बत मैं नौगढ़ के राजा से मिलकर चुनारगढ़ पर चढ़ाई करना अच्छा समझता हूँ क्योंकि राजा शिवदत्त से बदला लिए बिना मेरा जी ठिकाने न होगा और इस काम को मैं सबसे बढ़कर समझता हूँ। इन्द्रदेव जी ने मेरी यह बात स्वीकार कर ली और इस विषय में जो-जो बातें मैंने सोची थी उन्हें भी पसन्द किया।

इंदुमति : तो क्या अब आप नौगढ़ जाकर चुनार की लड़ाई में शरीक होंगे।

प्रभाकर सिंह : हाँ मैं जरूर ऐसा ही करूँगा, आजकल कुमारी चन्द्रकान्ता की बदौलत बीरेन्द्रसिंह से और शिवदत्त से खूब खिंचाखिंची हो रही है, मेरे लिए इससे बढ़कर और कौन-सा मौका मिलेगा!

बिमला : आप स्वयं फौज तैयार करके चुनार पर चढ़ाई कर सकते हैं। इस काम में मैं आपकी मदद करूँगी वे सब अशर्फियाँ जो भूतनाथ को दिखाई गई थीं और पुनः ले ली गईं मैं आपको दे सकती हूँ क्योंकि इन्द्रदेव जी ने सब मुझे दे दी हैं। आप जानते ही हैं कि उस घाटी में जाने के लिए कई रास्ते हैं, इसी तरह उस खजाने वाली कोठरी में भी जाने के लिए एक रास्ता यहाँ से है और इसी रास्ते से हम लोग उन अशर्फियों को उठा लाये थे।

प्रभाकर सिंह : मुझे मालूम है, यह हाल इन्द्रदेव जी से सुन चुका हूँ। मगर चुनार के विषय में मैं इस राय को पसन्द नहीं करता और न इस मामले में किसी से विशेष मदद ही लूँगा। हाँ मेरे दोस्त गुलाबसिंह जरूर मेरा साथ देंगे मगर सुना है कि वे इस समय दलीपशाह के साथ कहीं गये हैं और दलीपशाह भी सुबह-शाम में यहाँ आने वाले हैं।

बिमला : भोलासिंह की सूरत बनाकर दलीपशाह जब से गए हैं तब से पुनः मुझसें नहीं मिले।

प्रभाकर सिंह : क्या हुआ अगर नहीं मिले तो, इन्द्रदेव जी जब से गए हैं तब से पुनः मुझसे नहीं मिले।

बिमला : मालूम होता है कि आपने इन्द्रदेव जी से अपने बारे में सब बातें तै कर ली हैं!

प्रभाकर सिंह : हाँ जो कुछ मुझे करना है कम-से-कम उसके विषय में तो मैंने सभी बातें तै कर ली हैं।

विमला : तो आप जरूर नौगढ़ जाएँगे? प्रभाकर सिंह : जरूर।

विमला : दूसरे ढंग से वदला नहीं लेंगे? प्रभाकर सिंह : नहीं।

इंदुमति : तब मैं कहाँ रहूँगी?

प्रभाकर सिंह : तुम्हारे वारे में यह निश्चय हुआ है कि तुम्हें मैं तब तक के लिए जमानिया में राजा साहव के यहाँ रख दूँ, क्योंकि इस समय वे ही मेरे बड़े और बुजुर्ग जो कुछ हैं सो हैं।

विमला : (चौंककर) मगर ऐसा करने से तो मेरा भेद खुल जाएगा।

प्रभाकर सिंह : तुम्हारा भेद क्यों खुलेगा? मैं इन्द्रदेव जी से वादा कर चुका हूँ कि इन सब बातों का वहाँ कभी जिक्र तक न करूँगा, मेरी जुवानी तुम्हारा हाल उन्हें कभी मालूम न होगा, इंदु को भी मैं ऐसा ही करने के लिए ताकीद करूँगा और तुम भी अच्छी तरह समझा देना। क्या मैं नहीं समझता कि तुम्हारा भेद खुल जाने से आपस में कई आदमियों की खटपट हो जाएगी और वेदाग दोस्ती तथा मुहव्वत में वट्टा लग जाएगा।

विमला : अगर भूतनाथ किसी तरह इंदु को वहाँ देख ले तो क्या होगा, क्योंकि वह अकसर जमानिया जाया करता है?

प्रभाकर सिंह : तब क्या होगा? भूतनाथ अपने मुँह से इन सब बातों का जिक्र कदापि न करेगा।

विमला : मगर दुश्मनी तो जरूर करेगा, क्योंकि इस बात का डर हो जाएगा कि कहीं इंदु इन सब बातों का भेद किसी से खोल न दे।

प्रभाकर सिंह : एक तो वह जमानिया विशेष जाता ही नहीं है दूसरे अगर कभी गया भी तो महल के अन्दर उसकी गुजर नहीं होगी, तीसरे अगर वह किसी तरह इंदु को देख भी लेगा तो वहाँ कुछ गड़बड़ी करने की उसकी हिम्मत ही नहीं पड़ेगी। फिर इसके अतिरिक्त और मैं कर ही क्या सकता हूँ, मेरे लिए दूसरा कौन-सा घर है? हाँ अपने साथ नौगढ़ ले चलूँ तो हो सकता है, वहाँ भूतनाथ के जाने का डर नहीं है।

इंदुमति : मेरा खयाल तो यही है कि जमानिया की बनिस्वत नौगढ़ में मैं ज्यादा निडर रहूँगी।

विमला : तो आप इन्हें इसी जगह हमारे पास क्यों नहीं छोड़ जाते?

प्रभाकर सिंह : यहाँ तुम लोग स्वयं ही तरद्दुद में पड़ी हुई हो, इसके सबब से और भी...

विमला : नहीं नहीं, इनके सबव से किसी तरह की तकलीफ मुझे नहीं हो सकती है, और फिर अगर मैं ज्यादे बखेड़ा देखूँगी तो इन्हें इन्द्रदेव जी के सुपुर्द कर दूँगी वे अपने घर ले जाएँगे।

प्रभाकर सिंह : यह सवसे ठीक है, इन्द्रदेव जी का घर हमारे लिए सबसे अच्छा है और उन्होंने ऐसा कहा भी था कि अगर तुम्हारी राय हो तो इंदु को मेरे घर पर रख सकते हो।

विमला : तो वस यही ठीक रखिए और इन्हें मेरे पास छोड़ जाइए।

प्रभाकर सिंह और कला, बिमला तथा इंदुमति में इस विषय पर बड़ी देर तक बहस होती रही और अंत में लाचार होकर प्रभाकर सिंह को बिमला की बात माननी पड़ी अर्थात् इंदुमति को बिमला ही के पास छोड़ देना पड़ा।

रात-भर प्रभाकर सिंह वहाँ रहे और प्रातःकाल सभों से मिल-जुलकर नौगढ़ की तरफ रवाना हुए।

गुलाबसिंह को साथ लेकर प्रभाकर सिंह नौगढ़ चले गये। वहाँ उन्हें फौज में एक ऊँचे दर्जे की नौकरी मिल गई और चुनार पर चढ़ाई होने से उन्होंने दिल का हौंसला खूब ही निकाला। वे मुद्दत तक लौटकर इंदुमति के पास न आये और न इस तरफ का कुछ हाल ही उन्हें मालूम हुआ।

जब चुनारगढ़ फतह हो गया, राजा शिवदत्त उदासीन होकर भाग गए, चन्द्रकान्ता की शादी हो गई और चुनार की गद्दी पर राजा बीरेन्द्रसिंह बैठ गये तब बहुत दिनों के बाद प्रभाकर सिंह को इस बात का मौका मिला कि वे जाकर इंदुमति से मुलाकात करें।

प्रभाकर सिंह के दिल में तरह-तरह का खुटका पैदा हो रहा था और यह जानने के लिए वे बहुत-ही उत्सुक हो रहे थे कि उनके पीछे कला, बिमला और इंदुमति पर क्या-क्या बीती, अस्तु वे गुलाबसिंह को साथ लिए हुए बहुत तेजी के साथ कूच और मुकाम करते एक दिन दोपहर के समय उस पहाड़ी के पास पहुँचे जिसके अन्दर वह सुन्दर घाटी थी जिसमें कला और बिमला रहती थी। सोच रहे थे कि अब थोड़ी ही देर में उन लोगों से मुलाकात हुआ चाहती है जिनसे मिलने के लिए जी बेचैन हो रहा है।

आज कई वर्ष के बाद प्रभाकर सिंह इस घाटी के अन्दर पैर रखेंगे। आज पहिले की तरह गर्मी या बरसात का मौसम नहीं है, बल्कि जाड़े के दिनों में प्रभाकर सिंह उस घाटी के अन्दर जा रहे हैं, देखना चाहिए वहाँ का मौसम कैसा दिखाई देता है।

सुरंग का दरवाजा खोलना और बंद करना उन्हें बखूबी मालूम था, बल्कि इस घाटी के विषय में वे और भी बहुत-कुछ जान चुके थे अस्तु गुलाबसिंह को बाहर ही छोड़कर वे सुरंग के अन्दर घुसे और दरवाजा खोलते और बंद करते हुए उस घाटी के अन्दर चले गये। मगर उन्हें पहुँचने के साथ ही वहाँ कुछ उदासी-सी मालूम हुई। ताज्जुब के साथ चारों तरफ देखते हुए बँगले के अंदर गये और वहाँ बिलकुल ही सन्नाटा पाया। जिस बँगले को ये पहिले सजा हुआ देख चुके थे और जिसके अन्दर पहिले तरह-तरह के सामान मौजूद थे आज वह बँगला बिलकुल ही खाली दिखाई दे रहा है। घबराहट की बात तो दूर रही वहाँ एक चटाई बैठने के लिये और एक लुटिया पानी पीने के लिए भी मौजूद न थी। यही हाल वहाँ की आलमारियों का भी था जिनमें से एक भी पहिले खाली नहीं दिखाई देती थी। आज वहाँ हर तरह से सन्नाटा छाया हुआ है और ऐसा मालूम होता है कि वर्षों से इस बँगले के अन्दर किसी आदमी ने पैर नहीं रखा।

इस बँगले में से एक रास्ता उस मकान के अन्दर जाने के लिए था जिसमें कला और बिमला खासतौर पर रहती थीं अथवा जिस प्रकार में पहिले-पहल इंदुमति की बेहोशी दूर हुई थी। प्रभाकर सिंह हैरान और परेशान उस मकान में पहुँचे मगर देखा कि वहाँ की उदासी उस बँगले से भी ज्यादे बढ़ी-चढ़ी है और एक तिनका भी वहाँ दिखाई न देता।

"यह क्या मामला है, यहाँ ऐसा सन्नाटा क्यों छाया हुआ है? कला, बिमला और इंदुमति कहाँ चली गईं? अगर कहीं किसी आपस वाले के घर में चली गईं तो यहाँ इस तरह उजाड़कर जाने की क्या जरूरत थी? कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि वे तीनों भूतनाथ के कब्जे में पड़ गई हों और भूतनाथ ने ही इस मकान को ऐसा उजाड़ बना दिया हो!" इन सब बातों को सोचते हुए प्रभाकर सिंह उदास और दुखित चित्त से बहुत देर तक चारों तरफ घूमते रहे और तब यह निश्चय कर वहाँ से चल पड़े कि अब भूतनाथ की घाटी का हाल मालूम करना चाहिए और देखना चाहिए कि वह किस अवस्था में है।

पहिले प्रभाकर सिंह उस सुरंग में घुसे जिसमें से उन्होंने पहिले दिन भूतनाथ की घाटी में इंदुमति को एक अपनी ही सूरत वाले के साथ ठगे जाते हुए देखा था। सुरंग के अंत में पहुँच सूराख की राह से उन्होंने देखा कि भूतनाथ की घाटी में भी बिलकुल सन्नाटा छाया हुआ है अर्थात् यह नहीं जान पड़ता कि इसमें कोई आदमी रहता है। कुछ देर तक देखने और गौर करने के बाद प्रभाकर सिंह सुरंग के बाहर निकल आये। तब उनकी हिम्मत न पड़ी कि एक सायत के लिए भी उस

घाटी के अन्दर ठहरें। उदास और दुखित चित्त से सोचते और गौर करते हुए वे वहाँ से रवाना हुए और सुरंग की राह से कहीं निकलकर संध्या होने के पहिले ही उस ठिकाने पहुँचे जहाँ गुलाबसिंह को छोड़ गये थे। दूर ही से प्रभाकर सिंह की सूरत और चाल देखकर गुलाबसिंह समझ गए कि कुछ दाल में काला है, रंग अच्छा नहीं दिखाई देता। जब गुलाबसिंह के पास प्रभाकर सिंह पहुँचे तो सब हाल बयान किया और उदास होकर उनके पास बैठ गए। गुलाबसिंह को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वे सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

प्रभाकर सिंह के दिल पर क्या गुजरी होगी इसे पाठक स्वयं समझ सकते हैं। उनके लिए दुनिया ही उजाड़ हो गई थी और चुनारगढ़ की लड़ाई में जो कुछ बहादुरी कर आये थे वह सब व्यर्थ ही जान पड़ती थी। दोनों बहादुरों ने मुश्किल से उस जंगल में रात बिताई और सवेरा होने पर अच्छी तरह निश्चय करने के लिए भूतनाथ की घाटी में जाने का इरादा किया। दोनों आदमी वहाँ से रवाना हुए और कुछ देर के बाद उस सुरंग के मुहाने पर जा पहुँचे जिस राह से भूतनाथ अपनी घाटी में आया-जाया करता था। रास्ते तथा दरवाजे का हाल प्रभाकर सिंह से कुछ छिपा न था अस्तु वे दोनों शीघ्र ही घाटी के अन्दर जा पहुँचे और देखा कि वास्तव में यहाँ भी सब उजाड़ पड़ा हुआ है और लक्षणों से जान जाता था कि यहाँ वर्षो से कोई नहीं आया और न कोई रहता है। अब कहाँ चलना चाहिए!

तरह-तरह की बातें सोचते-विचारते प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह घाटी के बाहर निकल आये और एक पेड़ के नीचे बैठकर इस तरह बातचीत करने लगे

गुलाबसिंह : आश्चर्य की बात तो यह है कि दोनों घाटियाँ एकदम से खाली हो गईं। अब रणधीरसिंह के यहाँ चलकर पता लगाना चाहिए कि भूतनाथ का क्या हाल है, क्योंकि असल में भूतनाथ ही इस बखेड़े की जड़ है और ताज्जुब नहीं कि वे तीनों औरतें भूतनाथ के कब्जे में आ गई हों। वहाँ चलने से कुछ-न-कुछ पता जरूर लग जाएगा।

प्रभाकर सिंह : रणधीरसिंह जी के यहाँ तो मैं किसी तरह नहीं जा सकता। यद्यपि वे मेरे रिश्तेदार हैं मगर इस समय मैं उनके दामाद (शिवदत्त) से लड़कर आ रहा हूँ, इसलिए मुझे देखते ही वे आग ही जाएँगे क्योंकि उन्हें अपने दामाद और अपनी लड़की की अवस्था पर बहुत दुःख हो रहा होगा।

गुलाबसिंह : ठीक है, ऐसा जरूर होगा, मगर मैं यह तो नहीं कहता कि आप सीधे रणधीरसिंह के पास चले चलिए, मेरा मतलब यह है कि हम लोग सौदागरों की सूरत में वहाँ जाकर किसी सराय में डेरा डालें तथा ऊपर-ही-ऊपर लोगों से मिल-जुलकर भूतनाथ का पता लगावें और जो कुछ हाल हो मालूम करें।

प्रभाकर सिंह : हाँ यह हो सकता है। अच्छा तो अब यहाँ ठहरना व्यर्थ है, चलो उठो, मैं समझता हूँ कि इन्द्रदेव जी से मुलाकात किये बिना दिल को तसल्ली न होगी।

गुलाबसिंह : जरूर, वहाँ भी चलना ही होगा, मगर पहिले भूतनाथ की खबर लेनी चाहिए।

इतना कहकर गुलाबसिंह उठ खड़े हुए, प्रभाकर सिंह ने भी उसका साथ दिया और दोनों आदमी मिर्जापुर की तरफ रवाना हुए, इस बात का कुछ भी खयाल न किया कि समय कौन है और रास्ता कैसा कठिन है।

13

प्रेमी पाठक महाशय, अभी तक भूतनाथ के विषय में जो कुछ हम लिख आये हैं उसे आप भूतनाथ के जीवनी की भूमिका ही समझें, भूतनाथ का मजेदार हाल जो अद्भुत घटनाओं से भरा हुआ है पढ़ने के लिए अभी आप थोड़ा-सा और सब्र कीजिए, अब उसका अनूठा किस्सा आया ही चाहता है, यद्यपि चन्द्रकान्ता सन्तति में प्रभाकर सिंह और इंदुमति का नाम नहीं आया है मगर भूतनाथ की जीवनी का इन दोनों व्यक्तियों से बहुत ही घना संबंध है और भूतनाथ की बराबरी या ढिठाई का जमाना शुरू होने से बहुत दिन पहिले ही से भूतनाथ का इन दोनों से वास्ता पड़ चुका था और इन्हीं दोनों के सबब से इन्द्रदेव और दलीपशाह के ऊपर भी भूतनाथ की निगाह पड़ चुकी थी इसलिए हमें सबसे पहिले प्रभाकर सिंह और इंदुमति का परिचय देना पड़ा, तथापि आपको आगे चलकर प्रभाकर सिंह और इंदुमति की अवस्था पर आश्चर्य करना पड़ेगा।

यद्यपि इंदुमति का पता न लगने से प्रभाकर सिंह को बहुत दुःख हुआ परंतु इन्द्रदेव का खयाल उन्हें ढाँढस दे रहा था। वे समझते थे कि इंदुमति अपनी दोनों बहिनों के साथ जरूर इन्द्रदेव के यहाँ चली गई होगी, अस्तु सबसे पहिले इन्द्रदेव के यहाँ चलकर उसका पता लगाना चाहिए, इस बात का निश्चय कर गुलाबसिंह को साथ लिए हुए प्रभाकर सिंह इन्द्रदेव से मिलने के लिए रवाना हुए।

जमना और सरस्वती की जुबानी प्रभाकर सिंह को मालूम हो चुका था कि इन्द्रदेव वास्तव में किसी तिलिस्म के दारोगा हैं परंतु इन्द्रदेव ने अपने को ऐसा मशहूर नहीं किया था और न साधारण लोगों को उनके विषय में ऐसा खयाल ही था। उसके मुलाकातियों में से भी बहुत कम आदमियों को यह बात मालूम थी कि इन्द्रदेव किसी तिलिस्म के दारोगा हैं और यदि कोई इस बात को जानता भी था तो उसे तिलिस्म के विषय में कुछ ज्ञान ही न था। अगर कोई इन्द्रदेव से तिलिस्म के विषय में कुछ पूछता भी तो इन्द्रदेव समझा देते कि यह सब दिल्लगी की बातें हैं। हाँ, दो-चार आदमियों को इस बात का पूरा-पूरा विश्वास था कि इन्द्रदेव किसी भारी तिलिस्म के दारोगा हैं, मगर अपनी जुबान से उन्हें भी पूरा-पूरा पता नहीं लगने देते थे। इसके अतिरिक्त इन्द्रदेव का रहन-सहन ऐसा था कि किसी को उनके विषय में जानने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी और न वे विशेष दुनियादारी के मामले में ही पड़ते थे, वह वास्तव में साधु और महात्मा की तरह अपनी जिंदगी बिताते थे मगर ढंग उनका अमीराना था। मतलब यह है कि सर्वसाधारण को इन्द्रदेव के विषय में पूरा-पूरा ज्ञान नहीं था, हाँ इतना जरूर मशहूर था कि इन्द्रदेव ऊँचे दर्जे के ऐयार हैं और उनके बुजुर्गों ने ऐयारी के फन में बहुत दौलत पैदा की है जिसकी बदौलत आज तक इन्द्रदेव बहुत रईस और अमीर बने हुए हैं।

यह सब कुछ था सही परंतु इन्द्रदेव के दो-चार दोस्त ऐसे भी थे जिन्हें इन्द्रदेव का पूरा-पूरा हाल मालूम था। मगर इन्द्रदेव की तरह वे लोग भी इस बात को मंत्र की भाँति छिपाए रहते थे।

इन्द्रदेव का रहने का स्थान कैसा था और वहाँ जाने के लिए कैसी-कैसी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती थीं इसका हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है यहाँ पुनः लिखने की आवश्यकता नहीं है, हाँ इतना कह देना आवश्यक जान पड़ता है कि जिन दिनों का हाल इस जगह लिखा जा रहा है उन दिनों इन्द्रदेव निश्चित रूप से उस तिलिस्मी घटी में नहीं रहा करते थे बल्कि अपने लिए उन्होंने एक मकान तिलिस्मी घाटी के बाहर उसके पास ही एक पहाड़ी पर बनवाया हुआ था जिसका नाम "कैलाश" रखा था और इसी मकान मे वह ज्यादा रहा करते थे, हाँ, जब जमाने के हाथों से वह ज्यादे सताए गये और उन्होंने उदास होकर दुनिया ही को तुच्छ समझ लिया तब उन्होंने बाहर का रहना एकदम से बंद कर दिया जैसा कि चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है।

प्रभाकर सिंह जब इन्द्रदेव से मिलने गये तब उस "कैलाश भवन" में मुलाकात हुई। उन दिनों इन्द्रदेव बीमार थे, यद्यपि उनकी बीमारी ऐसी न थी कि चारपाई पर पड़े रहते परन्तु घर के बाहर निकलने योग्य भी वह न थे।

प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह से मिलकर इन्द्रदेव ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और बड़ी खातिरदारी से इन दोनों को अपने यहाँ रखा। प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह ने भी इन्द्रदेव की बीमारी पर खेद प्रकट किया और इसी के साथ अपने आने

का सबब भी प्रभाकर सिंह ने बयान किया जिसे सुनकर इन्द्रदेव की आँखें डबडबा आईं और एकांत होने पर उन दोनों में से इस तरह बातचीत होने लगी, इस बातचीत में गुलाबसिंह शरीक नहीं थे।

इन्द्रदेव : प्रभाकर सिंह, तुम्हें यह सुनकर बहुत दुःख होगा कि तुम्हारी स्त्री इंदुमति हमारे यहाँ नहीं है तथा जमना और सरस्वती का भी कुछ पता नहीं लगता कि वे दोनों कहाँ गायब हो गईं। अफसोस, उन दोनों ने मेरी शिक्षा पर कुछ ध्यान नहीं दिया और अपनी बेवकूफी से अपने को थोड़े ही दिनों में जाहिर कर दिया। अगर वे मेरी आज्ञानुसार अपने को छिपाए रहतीं और धीरे-धीरे कार्य करतीं तो धोखा न उठातीं।

प्रभाकर सिंह : (दुखित चित्त से) निःसन्देह ऐसा ही है, उस घाटी में पहिले जब मुझसे मुलाकात हुई थी तब उन्होंने कहा था कि ऐसे स्थान में रहकर भी हम लोग अपने को हर वक्त छिपाए रहती हैं, यहाँ तक कि अपनी लौंडियों को भी अपनी असली सूरत नहीं दिखातीं...

इन्द्रदेव : (दुखित चित्त से) बेशक् ऐसी ही बात थी और मैंने ऐसा ही प्रबंध कर दिया था कि उनके साथ रहने वाली लौंडियों को भी इस बात का ज्ञान न था कि ये दोनों वास्तव में जमना-सरस्वती हैं। वे सब उन दोनों को कला और बिमला ही जानती थीं मगर इस बात को जमना ने बहुत जल्द चौपट कर दिया और लौंडियों पर भरोसा करके शीघ्र ही अपने को प्रकट कर दिया। अगर लौंडियों को यह भेद मालूम न हो गया होता तो भूतनाथ की समझ में खाक न आता कि वे दोनों कौन हैं और क्या चाहती हैं।

प्रभाकर सिंह : आपका कहना बहुत ठीक है।

इन्द्रदेव : बड़ों ने सच कहा है कि स्त्रियों के विचार में स्थिरता नहीं होती और वे किसी भेद को ज्याद दिनों तक छिपा नहीं सकतीं, कइयों का कथन तो यह है कि स्त्रियों की बद्धि प्रलय करने वाली होती है। और मैं भी इसी बात का पक्षपाती हूँ।

प्रभाकर सिंह : अफसोस करने के सिवाय और में क्या कहूँ, इन बखेड़ों में मैं तो व्यर्थ ही पीसा गया, मेरे हौंसले सब मटियामेट हो गये और मैं कहीं का भी न रहा। मैं क्या कहूँ कि कैसी उम्मीदें अपने साथ लेकर आपके पास आया था, मगर...

इन्द्रदेव : प्रभाकर सिंह, तुम एकदम से हताश न हो जाओ और उद्योग का पल्ला मत छोड़ो क्या कहूँ, मैं बहुत दिनों से बीमार पड़ा हुआ हूँ और इस योग्य नहीं कि स्वयं कुछ कर सकूँ तथापि मैंने अपने कई आदमी उन सभों की खोज में दौड़ा रखे हैं। दलीपशाह का भी बहुत दिनों से पता नहीं है, वे भी उन सभों के साथ ही गायब हैं।

प्रभाकर सिंह : और भूतनाथ?

इन्द्रदेव : भूतनाथ अपने मालिक के यहाँ स्थिर भाव से बैठा हुआ है। मुद्दत से वह कहीं आता-जाता नहीं है, रणधीरसिंह जी की जो कुछ उसकी तरफ से रंज हो गया था उसे भी भूतनाथ ने ठीक कर लिया। अब तो ऐसा मालूम होता है कि मानो भूतनाथ ने कभी रंग बदला ही न था। इधर साल-भर में चार-पाँच दफे भूतनाथ मुझसे मिलने के लिए आया था मगर जमना और सरस्वती के विषय में न तो मैंने ही कुछ जिक्र किया और न उसने ही कुछ छेड़ा, यद्यपि मालूम होता है कि भूतनाथ उसी विषय में छेड़छाड़ करने के लिए आया था मगर मैंने कुछ चर्चा उठाना मुनासिब न समझा।

प्रभाकर सिंह : अस्तु अब क्या करना चाहिए सो कहिए। मैं तो आपका बहुत भरोसा रख के यहाँ आया था परन्तु यह जानकर मुझे आश्चर्य हुआ कि आपने जमना, सरस्वती के लिए कुछ भी नहीं किया।

इन्द्रदेव : ऐसा मत कहो, मैंने उन सभों के लिए बहुत उद्योग किया मगर लाचार हूँ कि उद्योग का कोई अच्छा नतीजा न निकला, हाँ यह जरूर मानना पड़ेगा कि मैं स्वयं अपने हाथ-पैर से कुछ न कर सका, इसका सबसे बड़ा सबब तो यह है

कि मैं इस मामले में अपने को प्रकट करना उचित नहीं समझता। दूसरे बीमारी से भी लाचार हो रहा हूँ। खैर जो होना था सो तो हो गया। अब तुम आ गये हो तो उद्योग करो। ईश्वर तुम्हारी सहायता करेगा और मैं भी हर तरह से तुम्हारी मदद के लिए तैयार हूँ। मेरी यह प्रवल इच्छा है कि किसी तरह उन तीनों का पता लगे। यदि मुझे इस बात का निश्चय हो जाएगा कि उन तीनों से भूतनाथ ने कोई अनुचित व्यवहार किया है तो मैं निःसन्देह भूतनाथ से वदला लूँगा मगर जब तक इस बात का निश्चय न होगा मैं कदापि भूतनाथ से संवंध न तोडूँगा, हाँ, तुम्हें हर तरह से मदद बराबर देता रहूँगा।

प्रभाकर सिंह : अच्छा तो फिर मुझे शीघ्रता बताइए कि अब क्या करना चाहिए, अब मुझमें बैठे रहने की सामर्थ्य नहीं है।

इन्द्रदेव : जल्दी न करो, मैं सोच-विचारकर कल तुमसे कहूँगा कि अब क्या करना चाहिए, एक दिन के लिए और सब्र करो।

प्रभाकर सिंह : जो आज्ञा, परन्तु...

लाचार होकर प्रभाकर सिंह को इन्द्रदेव की बात माननी पड़ी परन्तु इस बात का उनको आश्चर्य बना ही रहा कि इन्द्रदेव ने जमना और सरस्वती के लिए इतनी सुस्ती क्यों की और वास्तव में जमना और सरस्वती गायब हो गई हैं या इसमें भी कोई भेद है।

अब हम कुछ हाल जमना, सरस्वती और इंदुमति का बयान करना उचित समझते हैं। जब महाराज शिवदत्त से बदला लेने का का विचार करके प्रभाकर सिंह नौगढ़ की तरफ रवाना हो गये तो उनके चले जाने के बाद बहुत दिनों तक जमना और सरस्वती के कोई भी ऐसा मौका हाथ न आया कि भूतनाथ से कुछ छेड़छाड़ करें और न भूतनाथ ही ने उनके साथ कोई बदसलूकी की, हाँ यह जरूर होता रहा कि जमना और सरस्वती भूतनाथ की घाटी में ताक-झाँक करके इस बात की बराबर टोह लगाती रहीं कि भूतनाथ क्या करता है अथवा किस धुन में है।

थोड़े ही दिनों में उन दोनों को मालूम हो गया कि भूतनाथ अब इस घाटी में नहीं रहता, न-मालूम वह कहीं चला गया उसने जगह बदल दी। बहुत दिनों तक उनकी लौंडियाँ और ऐयार इस विषय का पता लगाने के लिए इधर-उधर दौड़ती रहीं मगर सफल-मनोरथ न हो सकीं। कुछ दिन बीत जाने के बाद यह मालूम हुआ कि भूतनाथ अपने मालिक रणधीरसिंह के यहाँ चला गया तथा बराबर एक चित्त से उन्हीं का काम किया करता है और उन्हीं के यहाँ स्थिर भाव से रहता है। यह बात इन दोनों को अच्छी नहीं मालूम हुई और इन दोनों ने समझा कि अब भूतनाथ से बदला लेना कठिन हो गया तथा अब बिना प्रकट भये काम नहीं चलेगा। कई दफे उन दोनों ने सोचा कि रणधीरसिंह के यहाँ चली जाए और जो कुछ मामला हो चुका है उसे साफ कह के भूतनाथ को सजा दिलावें, परन्तु इन्द्रदेव ने ऐसा करने से मना किया और समझाया कि अगर तुम वहाँ चली जाओगी तो रणधीरसिंह मुझसे इस बात के लिए रंज हो जाएँगे कि मैंने इतने दिनों तक तुम दोनों को छिपा रखा और झूठ ही मशहूर कर दिया कि जमना और सरस्वती मर गयीं, साथ ही इसके हमसे और भूतनाथ से भी खुल्लम-खुल्ला लड़ायी हो जाएगी। केवल इतना ही नहीं, यह भी सोच रखना चाहिए कि रणधीरसिंह भूतनाथ का कुछ बिगाड़ न सकेंगे, सिवाय इसके कि उसे अपने यहाँ से निकाल दें बल्कि ताज्जुब नहीं कि भूतनाथ रणधीरसिंह से रंज होकर उन्हें भी किसी तरह की तकलीफ पहुँचावे।

इन्द्रदेव का यह विचार भी बहुत ठीक था, इसलिए दोनों बहुत दिनों तक चुपचाप बैठी रह गयी और रणधीरसिंह के यहाँ भी न गई।

इसी तरह सोचते-विचारते और समय का इंतजार करते वर्षों बीत गये और इस बीच में जमना, सरस्वती और इंदुमति प्रायः घूमने-फिरने के लिए इस घाटी से बाहर निकलती रहीं।

एक दिन माघ के महीने में दोपहर के समय अपनी कई लौंडियों को साथ लिए हुए वे तीनों भेष बदले हुए उस घाटी के बाहर निकलीं और जंगल में चारों तरफ घूम-फिरकर दिल बहलाने लगीं। यकायक उनकी निगाह एक मरे हुए घोड़े पर पड़ी जिस पर अभी तक चारजामा कसा हुआ था। वे सब ताज्जुब में आकर उसके पास गईं और गौर से देखने लगीं। यह घोड़ा कई जगह से जख्मी हो रहा था जिससे गुमान होता था कि किसी लड़ाई में इसके सवार ने बहादुरी दिखाई और अंत में किसी सबब से यह भाग निकला है, संभव है कि इसका सवार लड़ाई में गिर गया हो। मगर इस बात पर भी बिमला का विचार नहीं जमा, वह यही सोचती थी कि जरूर यह अपने सवार को लेकर भागा है, अस्तु बिमला आँख फैलाकर चारों तरफ इस खयाल से देखने लगी कि शायद इस घोड़े की तरह गिरा हुआ कोई आदमी भी कहीं दिखाई दे जाय।

बिमला, कला और इंदुमति घूम-घूमकर इसका पता लगाने लगीं और आखिर थोड़ी देर में एक आदमी पर उनकी निगाह पड़ी। ये सब तेजी के साथ घबराई हुई उसके पास गईं और देखा कि प्रभाकर सिंह बेहोश पड़े हुए हैं, उनका कपड़ा खून से तरबतर हो रहा है, और उनके बदन में कई जगह तलवार के जख्म लगे हुए हैं तथा सर में भी एक भारी जख्म लगा हुआ है जिससे निकले हुए खून के छींटे चेहरे पर अच्छी तरह पड़े हुए हैं। लड़ाई के समय जो तलवार उनके हाथ में थी इस समय भी उसका कब्जा उनके हाथ ही में है।

प्रभाकर सिंह को इस अवस्था में देखते ही इंदुमति एक दफे चिल्ला उठी और उसकी आँखों में आँसू भर आए, परन्तु तुरन्त ही उसने अपने दिल को संभाल लिया तथा जमना और सरस्वती की तरफ देखा जिनकी आँखों में आँसू की धारा

वह रही थी और खैर जो बड़े गौर से प्रभाकर सिंह के चेहरे पर निगाह जमाए हुए थी।

इंदुमति : (जमना से) बहिन, तुम इनके चेहरे की तरफ क्या देख रही हो? जो बातें देखने लायक हैं पहिले उन्हें देखो इसके बाद रोने-धोने का खयाल करना।

जमनाः (ताज्जुब से) सो क्या है?

इंदुमति : पहिले तो यह देखो कि इनके पीठ में भी कोई जख्म लगा है या नहीं जिससे यह मालूम हो सके कि इन्होंने लड़ाई में पीठ तो नहीं दिखाई है, इसके बाद इस बात की जाँच करो कि इनमें कुछ दम है या नहीं। अगर इन्होंने लड़ाई में वीरता दिखाई और बहादुरी के साथ प्राण-त्याग किया है तो कोई चिंता नहीं, मैं बड़ी प्रसन्नता से इनके साथ सती होकर कर्त्तव्य पूरा करूँगी, और इनके हाथ की तलवार मुझे पूरा विश्वास दिलाती है कि उन्होंने लड़ाई में पीठ नहीं दिखाई।

जमनाः मेरा भी यही खयाल है, और वीर पत्नियों के लिए रोना कैसा? उन्हें तो हरदम अपने पति के साथ जाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

सरस्वती : (प्रभाकर सिंह की नाक पर हाथ रख कर) जीते हैं! जख्मी होने के सबब से बेहोश हो गये हैं!!

सरस्वती की बात सुनकर जमना और इंदुमति ने भी उन्हें अच्छी तरह देखा और निश्चय कर लिया कि प्रभाकर सिंह मरे नहीं हैं और इलाज करने से बहुत जल्द अच्छे हो जाएँगे। अब पुनः इंदुमति की आँखों से आँसू की धारा बहने लगी तथा जमना और सरस्वती ने उसे समझाया और दिलासा दिया। इसके बाद सब कोई मिल-जुलकर प्रभाकर सिंह को उठाकर घाटी के अन्दर ले गईं और बँगले के बाहर दालान में एक सुन्दर चारपाई पर लेटाकर उन्हें होश में लाने का उद्योग करने लगीं।

मुँह पर केवड़ा और बेदमुश्क छिड़कने तथा लखलखा सुँघाने से थोड़ी ही देर में प्रभाकर सिंह चैतन्य हो गए और जमना की तरफ देखकर बोले, "मैं कहाँ हूँ?"

जमनाः आप घाटी में हैं जहाँ हम दोनों बहिनों तथा इंदुमति से मुलाकात हुई थी।

प्रभाकर सिंह : (चारों तरफ देखकर) ठीक है, मगर मैं यहाँ कैसे आया?

जमनाः पहिले ये बताइए कि आपकी तबीयत कैसी है?

प्रभाकर सिंह : अब मैं अच्छा हूँ, होश में हूँ और सब कुछ समझ सकता हूँ। मगर आश्चर्य में हूँ कि यहाँ कैसे आया!

जमनाः हम लोग घाटी के बाहर घूमने के लिए गई हुई थी जहाँ आपको बेहोश पड़े हुए देखकर उठा लाईं। उस जगह एक घोड़ा भी मरा हुआ दिखाई दिया, कदाचित् वह आप ही का घोड़ा हो।

प्रभाकर सिंह : बेशक् वह मेरा ही घोड़ा होगा, जानवर होकर भी उसने मेरी बड़ी सहायता की और आश्चर्य है कि इतनी दूर तक उड़ाए हुए ले आया।

इंदुमति : क्या वह घोड़ा लड़ाई में से आपको भगा लाया था?

प्रभाकर सिंह : हाँ, लड़ाई ऐसी गहरी हो गई थी कि संध्या हो जाने पर भी दोनों तरफ की फौजें बराबर दिल तोड़कर उड़ती ही रह गईं यहाँ तक कि आधी रात हो जाने पर मैं और महाराज सुरेन्द्रसिंह का सेनापति तथा कुँअर बीरेन्द्रसिंह लड़ते हुए दुश्मन की फौज में घुस गए और मारते हुए उस जगह पहुँचे जहाँ कमबख्त शिवदत्त खड़ा हुआ अपने

सिपाहियों को लड़ने के लिए ललकार रहा था। चाँद की रोशनी खूब फैली हुई थी और बहुत से माहताब भी जल रहे थे इसलिए एक-दूसरे के पहिचानने में किसी तरह तकलीफ नहीं मालूम हो सकती थी। महाराज शिवदत्त मुझे अपने सामने देखकर झिझका और घोड़ा घुमाकर भागने लगा, मगर मैंने उसे भागने की मोहलत नहीं दी और एक हाथ तलवार का उसके सर पर ऐसा मारा कि वह घोड़े की पीठ पर से लुढ़क कर जमीन पर आ रहा। मुझे उस समय बहुत जख्म लग चुके थे और मैं सुबह से उस समय तक बराबर लड़ते रहने के कारण बहुत ही सुस्त हो रहा था, जिस पर महाराज शिवदत्त के गिरते ही बहुत-से दुश्मनों ने एक साथ मुझ पर हमला किया और चारों तरफ से घेरकर मारने लगे गर मैं हताश न हुआ, दुश्मनों के वार को रोकता और तलवार चलाता हुआ उस मंडली को चीरकर बाहर निकला। उस समय मेरा सर घूमने लगा और मैं दोनों हाथों से घोड़े का गला थाम उससे चिपट गया। फिर मुझे कुछ भी खबर न रही, मैं नहीं कह सकता कि इसके आगे क्या हुआ!

इंदुमति : (प्रसन्न होकर) बेशक् आपने बड़ी बहादुरी की। घोड़ा भी उस समय समझ गया कि अब आप बेहोश हो गए हैं और इसलिए आपको यहाँ से ले भागा।

प्रभाकर सिंह : बेशक् ऐसा ही हुआ होगा।

जमना : अब आप आज्ञा दीजिए तो कपड़े उतार कर आपके जख्म धोए जाएँ।

प्रभाकर सिंह : जरा और ठहर जाओ क्योंकि मैं उठकर मैदान जाने का इरादा कर रहा हूँ। जख्म मुझे बहुत गहरे नहीं लगे हैं, इन पर कुछ दवा लगाने की जरूरत न पड़ेगी, केवल धोकर साफ कर देना ही काफी होगा! मेरे लिए एक धोती और गमछे का बंदोबस्त करो और दो आदमी सहारा देकर उठाओ तथा मैदान की तरफ ले चलो।

जमना : बहुत अच्छा, ऐसा ही होगा।

इतना कहकर जमना ने एक लौंडी की तरफ देखा। वह सामान दुरुस्त करने के लिए वहाँ से चली गई और दूसरी लौंडी ने बाहर जाने के लिए जल का लोटा भरकर अलग रख दिया। प्रभाकर सिंह ने उठने का इरादा किया, जमना, सरस्वती और इंदु ने सहारा देकर उन्हें उठाया बल्कि खड़ा कर दिया। जमना और इंदु का हाथ थामे हुए प्रभाकर सिंह धीरे-धीरे वहाँ से मैदान की तरफ रवाना हुए तथा पीछे कई लौंडियाँ भी जाने लगीं। उस समय वहाँ हरदेई लौंडी भी मौजूद थी जिसका हाल ऊपर के बयान में लिख आए हैं। हरदेई ने जल से भरा हुआ लोटा उठा लिया और प्रभाकर सिंह के साथ जाने लगी।

कुछ दूर आगे जाने पर प्रभाकर सिंह ने कहा, ''इस तरह चलने और घूमने से तबीयत साफ हो जाती है, तुम लोग अब ठहर जाओ मैं अब सिर्फ एक लौंडी के हाथ का सहारा लेकर और आगे जाऊँगा।'' इतना कहकर प्रभाकर सिंह ने हरदेई की तरफ देखा और जमना तथा इंदु का साथ छोड़ दिया। हरदेई जल का लोटा लिए आगे बढ़ आई और अपने दूसरे हाथ से प्रभाकर सिंह का हाथ थाम कर धीरे-धीरे आगे की तरफ बढ़ी।

जमना, सरस्वती और इंदुमति वहाँ से पीछे हटकर एक सुन्दर चट्टान पर बैठ गईं और इंतजार करने लगी कि प्रभाकर सिंह मैदान में होकर लौटें और चश्मे पर जाएँ तो हम लोग भी उनके पास चलें मगर ऐसा न हो सका क्योंकि घंटे-भर से भी कम देर में सब कामों से छुट्टी पाकर हरदेई के हाथ का सहारा लिए हुए प्रभाकर सिंह धीरे-धीरे चलते हुए उस जगह आ पहुँचे जहाँ जमना, सरस्वती और इंदुमति बैठी हुई उनका इंतजार कर रही थीं। जख्मों के विषय में सवाल करने पर प्रभाकर सिंह ने उत्तर दिया कि नहर के जल से मैं सब जख्मों को साफ कर चुका हूँ अब उनके विषय में चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है।

प्रभाकर सिंह भी उन तीनों के पास बैठ गये और लड़ाई के विषय में तरह-तरह की बातें करने लगे। जब संध्या होने में थोड़ी देर रह गई और हवा में सर्दी बढ़ने लगी तब सब कोई वहाँ से उठ कर बँगले के अन्दर चले गये। एक कमरे के अन्दर जाकर प्रभाकर सिंह चारपाई पर लेट रहे। थोड़ी देर तक वहाँ सन्नाटा रहा क्योंकि जरूरी कामों से छुट्टी पाने तथा

भोजन की तैयारी करने के लिए जमना और सरस्वती वहाँ से चली गईं और केवल चारपाई की पाटी पकड़े हुए इंदुमति तथा पैर दबाती हुई हरदेई वहाँ रह गई।

कुछ देर तक प्रभाकर सिंह और इंदुमति में मामूली ढंग पर धीरे-धीरे बातचीत होती रही इसके बाद प्रभाकर सिंह ने यह कहकर इंदुमति को विदा किया कि 'मैं भूख से बहुत दुखी हो रहा हूँ। जो कुछ तैयार हो थोड़ा-बहुत खाने के लिए जल्द लाओ'।

आज्ञानुसार इंदुमति वहाँ से उठकर कमरे के बाहर चली गई और तब प्रभाकर सिंह और हरदेई में धीरे-धीरे इस तरह की बातचीत होने लगी

प्रभाकर सिंह : हाँ तुम्हें दरवाजा खोलने का ढंग अच्छी तरह मालूम हो चुका है?

हरदेई : जी हाँ, उसके लिए कोई चिंता न करें।

प्रभाकर सिंह : मैं तो इसी फिक्र में लगा हुआ था कि पहले किसी तरह दरवाजा खोलने की तरकीब मालूम कर लूँ तब दूसरा काम करूँ।

हरदेई : नहीं, अब आप अपनी कार्रवाई कीजिए, सुरंग का दरवाजा खोलना और बन्द करना अब मेरे लिए कोई कठिन काम नहीं है।

प्रभाकरसिंह : (अपने जेब में से एक पुड़िया निकाल कर और हरदेई के हाथ में दे कर) अच्छा तो अब तुम इस दवा को भोजन के किसी पदार्थ में मिला देने का उद्योग करो, फिर मैं समझ लूँगा।

हरदेई : अब इंदुमति आ जाएँ तो मैं जाऊँ।

प्रभाकर सिंह : हाँ मेरी भी यही राय है।

थोड़ी देर बाद चाँदी की रकाबी में कुछ मेवा लिए हुए इंदुमति वहाँ आ पहुँची। उसके साथ एक लौंडी चाँदी के लोटे में जल और एक गिलास लिए हुए थी।

प्रभाकर सिंह ने मेवा खाकर जल पीया और इसी बीच में हरदेई किसी काम के बहाने से उठकर कमरे के बाहर चली गई।

15

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है। बँगले के अन्दर जितने आदमी हैं सभी बेहोशी की नींद सो रहे हैं क्योंकि हरदेई ने जो बेहोशी की दवा खाने की वस्तुओं में मिला दी थी उसके सबब से सभी आदमी (उस अन्न के खाने से) बेहोश हो रहे हैं। हरदेई एक विश्वासी लौंडी थी और जमना तथा सरस्वती उसे जी-जान से मानती थीं इसलिए कोई आदमी उस पर शक नहीं कर सकता था, परन्तु इस समय हमारे पाठक बखूबी समझ गये होंगे कि यह हरदेई नहीं है बल्कि जिस तरह भूतनाथ प्रभाकर सिंह का रूप धारण किये हैं उसी तरह भूतनाथ का शागिर्द रामदास हरदेई की सूरत में काम कर रहा है, असली हरदेई को तो वह गिरफ्तार करके ले गया था। और सभों की तरह नकली प्रभाकर सिंह भी अपनी चारपाई पर बेहोश पड़े हुए हैं। हरदेई ने आकर प्रभाकर सिंह को लखलखा सुँघाया और जब वे होश में आ गए तो उनसे कहा, ''अब उठिए, काम करने का समय आ गया।''

प्रभाकर सिंह : कितनी रात जा चुकी है? हरदेई : आधी से ज्यादे।

प्रभाकर सिंह : सभों के साथ मुझे भी वही अन्न खाना पड़ा, यद्यपि मैंने बहुत कम भोजन किया था तथापि बेहोशी का असर ज्यादे रहा।

इतना कह प्रभाकर सिंह उठ खड़े हुए और सब तरफ घूम कर देखने लगे कि कहाँ कौन सोया हुआ है। जमना, सरस्वती, और इंदुमति तो उसी कमरे में फर्श के ऊपर सोई हुई थीं जिसमें प्रभाकर सिंह थे और बाकी की सब लौडियाँ एक ऐयार दूसरे कमरे में पड़े हुए थे।

प्रभाकर सिंह ने जमना और सरस्वती की तरफ देखकर हरदेई से कहा, ''पहिले तो मुझे यह देखना है कि इन लोगों ने किस ढंग पर अपना चेहरा रंगा हुआ है।''

हरदेई : मैं आपसे कह चुका हूँ कि इन लोगों ने एक प्रकार की झिल्ली चेहरे पर चढ़ाई हुई है जिस पर पानी का असर नहीं होता।

प्रभाकर सिंह : (जमना और सरस्वती के चेहरे पर से झिल्ली उतारकर) बेशक् यह अनूठी चीज है, इसे मैं अपने पस रखूँगा।

हरदेई : (अथवा रामदास) बेशक् यह चीज रखने योग्य है।

प्रभाकर सिंह : इन लोगों ने भी बड़ा ही उत्पात मचा रखा था, आज इनकी चालबाजियों का अंत हुआ। अब उन्हें शीघ्र ही दुनिया से उठा देना चाहिए नहीं तो एक-न-एक दिन इन दोनों की बदौलत बड़ा ही अनर्थ हो जाएगा और मैं किसी को अपना मुँह दिखाने लायक न रहूँगा। (कुछ सोचकर) मगर मुसे इनके गले पर छुरी न चलाई जाएगी, यद्यपि मैं इनकी जान लेने के लिए तैयार हूँ मगर लाचारी से।

हरदेई : यदि दया आती हो तो इन्हें किसी कुएँ में ढकेल कर निश्चिन्त हो जाइए। इस जंगल के पीछे की तरफ पहाड़ी के कुछ ऊपर चढ़ के एक कुआँ है जो इस काम के लिए बहुत ही मुनासिब होगा। मैं अच्छी तरह जाँच कर चुका हूँ कि वह बहुत गहरा और अँधेरा है, उसमें गया हुआ आदमी फिर नहीं निकल सकता।

प्रभाकर सिंह : अच्छी बात है, दोनों को ले चलकर उसी कुएँ में डाल दो, मगर इंदुमति को मैं अपने घर अर्थात् लामाघाटी में ले जाऊँगा क्योंकि इसकी जुबानी बहुत-सी बातों का पता लगाना है।

हरदेई : मैं इस राय को पसन्द नहीं करता, मैं इंदुमति को भी उसी कुएँ में पहुँचाना मुनासिब समझता हूँ।

प्रभाकर सिंह : (कुछ सोचकर) अच्छा खैर इसे भी उसी में दाखिल करो।

इतना कह कर नकली प्रभाकर सिंह ने जमना को और रामदास ने सरस्वती को उठाकर पीठ पर लाद दिया और उस कुएँ पर चले गये जिसका पता रामदास ने दिया था।

यह कुआँ बँगले के पश्चिम तरफ पहाड़ी के कुछ ऊपर चढ़कर पड़ता था। कुआँ बहुत प्रशस्त और गहरा था मगर इसका मुँह इतना छोटा था कि वहाँ के रहने वालों ने एक मामूली पत्थर की चट्टान से उसे ढाँक रखा था। कदाचित् रामदास को इसका पता अच्छी तरह लग चुका था इसलिए वह नकली प्रभाकर सिंह को लिए हुए बहुत जल्द वहाँ जा पहुँचा। जमना और सरस्वती को जमीन पर रख दोनों ने मिलकर उस कुएँ का मुँह खोला और फिर उन दोनों औरतों को एक-एक करके उसके अन्दर फेंक दिया। अफसोस! अफसोस! अफसोस! भूतनाथ को इस दुष्कर्म का क्या नतीजा भोगना पड़ेगा इस पर उसने कुछ भी ध्यान न दिया!

दोनों बेचारियों को कुएँ में ढकेल कर भूतनाथ ने ध्यान देकर और कान लगा कर सुना कि नीचे गिरने की आवाज आती है या नहीं, मगर किसी तरह भी आवाज उसके कान में न गई जिससे उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ।

उन दोनों को कुएँ में ढकेलने के बाद रामदास दौड़ा हुआ गया और इंदुमति को उठा लाया। भूतनाथ ने उसे भी कुएँ के अन्दर ढकेल दिया और फिर पत्थर से उसका मुँह उसी तरह ढाँक दिया जैसा पहिले था।

इस काम से छुट्टी पाकर भूतनाथ और रामदास ने यह सोचा कि अब बाकी की औरतें जो इस घाटी में मौजूद हैं उन्हें भी मार कर बखेड़ा तय कर देना चाहिए क्योंकि इनमें से अगर एक भी जीती रह जाएगी तो भंडा फूटने का डर लगा ही रह जाएगा, अस्तु यह निश्चय किया गया कि उन सभों के लिए कोई दूसरा कुआँ खोजना चाहिए, क्योंकि जिस कुएँ में जमना और सरस्वती तथा इंदु को डाला है उसके अन्दर घुसकर देखना उचित है कि उसमें पानी है कि नहीं अथवा उसके अन्दर का क्या हाल है।

आखिर ऐसा ही हुआ। उस कुएँ से थोड़ी दूर पहाड़ के ऊपर चढ़कर एक कुआँ और था जिसका मुँह बहुत चौड़ा था। भूतनाथ और रामदास दोनों आदमी सब बेहोश लौंडियों को बँगले के अन्दर और बाहर से उठा लाए और एक-एक करके उस कुएँ के अन्दर डाल दिया। आह, भूतनाथ का कैसा कड़ा कलेजा था और यह कैसा घृणित काम उसने किया! अब उस घाटी के अन्दर कोई भी न रहा जो इन दोनों की खबर ले।

अब सवेरा हो गया बल्कि सूर्य भगवान भी उदयाचल से निकलकर अपनी आँखों से भूतनाथ और रामदास के कुकर्म देखने लगे।

भूतनाथ और रामदास उस कुएँ पर आये जिसमें जमना, सरस्वती और इंदुमति को ढकेल दिया था। भूतनाथ ने रामदास से कहा कि तू कमन्द के सहारे इस कुएँ के अन्दर उतर जा और देख कि इसमें पानी है या नहीं।

भूतनाथ की आज्ञानुसार रामदास कमन्द थामकर उसके अन्दर उतर गया। कमन्द का दूसरा सिरा भूतनाथ ने एक पत्थर से मजबूती के साथ अड़ा दिया था। रामदास ने नीचे आकर आवाज दी "गुरुजी, यह कुआँ इस लायक नहीं था कि इसके अन्दर दुश्मनों को डाला जाता बल्कि यह तो स्वर्ग से भी बढ़ कर सुख देने वाला है। लीजिए अब कमन्द को छोड़ता हूँ खैंच लीजिए, क्योंकि अब मैं बाहर आने की इच्छा नहीं करता।"

रामदास की बात सुनकर भूतनाथ को बड़ा आश्चर्य हुआ और जब उसने कमन्द खैंच कर देखा तो वास्तव में उसे ढीला पाया।

धीरे-धीरे बिलकुल कमन्द खिंचकर भूतनाथ के हाथ में आ गया और तब वह बड़ी ही बेचैनी के साथ कुएँ के अन्दर झाँककर देखने लगा मगर अँधकार के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं दिया।

रामदास भूतनाथ का बहुत ही प्यारा शागिर्द था और साथ ही इसके भूतनाथ को उस पर विश्वास भी परले सिरे का था। इस मौके पर हरदेई की सूरत में जो यह होनहार शागिर्द निःसन्देह किसी दिन मेरा ही स्वरूप हो जाएगा केवल इतना ही नहीं, जिस तरह भूतनाथ उसे लड़के के समान मानता था उसी तरह रामदास भी भूतनाथ को पिता-तुल्य मानता था, अस्तु ऐसे रामदास का इस तरह कुएँ के अन्दर जाकर बेमुरौवत हो जाना कोई मामूली बात न थी। इससे भूतनाथ को बड़ा ही सदमा हुआ और उसने ऐसा समझा कि मानो पला-पलाया और दुनिया में नाम पैदा करने वाला बराबर का लड़का जिसे निधिरूप समझता था हाथ से निकला जा रहा है। भूतनाथ इस सदमे को बर्दाश्त नहीं कर सकता था और उससे यह नहीं हो सकता था कि रामदास को ऐसी अवस्था में छोड़कर वहाँ से चला जाय।

कुछ देर तक सोचने और विचारने के बाद भूतनाथ ने कमन्द का एक सिरा पत्थर के साथ अड़ाया और तब खुद भी उसी के सहारे नीचे उतर गया।

भूतनाथ को विश्वास था कि कुएँ के नीचे या तो पानी होगा या बिलकुल सूखे में कला, विमला और इंदुमति की लाश पावेगा और वहीं अपने प्यारे शागिर्द रामदास को भी देखेगा मगर ये सब कुछ भी बातें न थीं। न तो वह कुआँ सूखा था और न उसमें पानी ही दिखाई दिया। इसी तरह कला, विमला, इंदुमति और रामदास का भी वहाँ नामोनिशान न था। कमर बराबर मुलायम और गुदगुदी घास कुएँ की तह में जमी हुई थी जिस पर खड़े होकर भूतनाथ ने सोचा कि कोई आदमी ऊपर से इस घास पर गिरकर चुटीला नहीं हो सकता, अतएव निश्चय है कि कला, विमला और इंदुमति मरी न होगी, मगर आश्चर्य है कि यहाँ उनमें से एक भी नजर नहीं आती और न रामदास ही का कुछ पता है।

उस कुएँ की तह में बिलकुल ही अँधकार था इसलिए अच्छी तरह देखने-ढूँढ़ने और जाँच करने के लिए भूतनाथ नले अपने ऐयारी के बटुए में से मोमबत्ती निकाल कर रोशनी की और बड़े गौर से चारों तरफ देखने लगा।

अन्दर से वह कुआँ बहुत चौड़ा था और उसकी दीवारें संगीन थीं। जब कोई आदमी वहाँ नजर न आया तब भूतनाथ ने उस घास के अंदर टटोलना और ढूँढ़ना शुरू किया मगर इससे भी कोई काम न चला। हाँ, दो बातें जरूर ताज्जुब की वहाँ दिखाई पड़ीं। एक तो उस कुएँ की दीवार में से (चारों तरफ) थोड़ा-थोड़ा पानी टपक कर तह में आ रहा था जिससे सिर्फ वहाँ की घास जो एक अजीब किस्म की थी बराबर तर और ताजा बनी रहती थी, दूसरे छोटे-छोटे दो दरवाजे भी दीवार में दिखाई दिये जो एक-दूसरे के मुकाबले में थे। भूतनाथ बड़े ही आश्चर्य से उन दरवाजों को देख रहा था क्योंकि जब कुएँ में इधर-उधर घूमता तो कभी कोई दरवाजा (उन दोनों में से) बंद हो जाता और कोई खुल जाता। मगर जब वह कुछ देर तक एक ही ढंग पर कायम रह जाते अर्थात् जो खुल जाता वह खुला ही रह जाता और जो बंद होता वह बंद ही रह जाता। अस्तु भूतनाथ ने समझा कि इन दरवाजों के खुलने और बंद होने के लिए वहाँ की जमीन ही में कदाचित् कोई कमानी लगी हुई है वह बहुत देर तक इधर-उधर घूम कर इन दरवाजों के खुलने और बंद होने का तमाशा देखता रहा।

इसी बीच में एकाएक गाने की सुरीली आवाज भूतनाथ के कानों में पड़ी जो किसी औरत की मालूम पड़ रही थी और उन्हें दोनों में से एक दरवाजे के अन्दर से आ रही थी तथा थोड़ी देर बाद ही पखावज तथा कई पाजेबों के बजने की आवाज आई जो सम और ताल से खाली न थी। कभी-कभी गाने की आवाज एक-दम बंद हो जाती और केवल पाजेब की आवाज सुनाई देती जिससे भास होता कि वे सब औरतें (यों जो कोई हों) पखावज की गत के साथ मिलकर नाच रही हैं।

अब भूतनाथ से ज्यादे देर तक ठहरा न गया और वह हाथ में मोमबत्ती लिए हुए उस दरवाजे के अन्दर घुस गया जिसके

अन्दर से गाने तथा घुँघरू के बजने की आवाज आ रही थी।

दरवाजे के अन्दर पैर रखते ही भूतनाथ को मालूम हो गया कि यहाँ तो खासी लंबी-चौड़ी इमारत बनी हुई है और ताज्जुब नहीं कि कुछ और आगे बढ़ने से बड़े-बड़े दालान और कमरे भी दिखाई पड़े। वास्तव में बात भी ऐसी ही थी।

कुछ दूर आगे बढ़ते ही भूतनाथ ने उजाला पाया और देखा कि एक सुन्दर दालान में चार-पाँच औरतें हाथ में मशाल लिए खड़ी हैं और कई औरतें गा-बजा तथा कई नाच रही हैं। यद्यपि भूतनाथ के दिल में आगे बढ़कर देखने और उन लोगों को पहिचानने का उत्साह भरा हुआ था मगर साथ ही इसके वह डरता भी था कि आगे बढ़ने से कहीं मुझ पर कोई आफत न आवे।

भूतनाथ ने मोमवत्ती बुझाकर बटुए में रख ली और हाथ में खंजर लेकर दबे कदम धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। ओफ! यह क्या भूतनाथ के लिए कोई कम आश्चर्य की बात है कि उन औरतों में भूतनाथ ने अपने प्यारे शागिर्द रामदास को भी नाचते हुए देखा और मालूम किया कि वह अपनी धुन में ऐसा मस्त हो रहा है कि उसे किसी बात की मानो परवाह ही नहीं है। सबसे ज्यादे आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह (रामदास) भूतनाथ को देखकर बहुत रंज हुआ और कड़े शब्दों की बौछार करते हुए उसने भूतनाथ को निकल जाने के लिए कहा।

भूतनाथ

तीसरा भाग

बाबू देवकीनन्दन खत्री

भूतनाथ

तीसरा भाग

बाबू देवकीनन्दन खत्री

bpb
भारत पुस्तक भण्डार

www.bharatpustak.com
bharatpustak.bhandar@gmail.com

तीसरा भाग

1

काशी शहर के बाहर उत्तर तरफ लाट भैरव का एक प्रसिद्ध स्थान है, पास ही में एक पक्का तालाब है और स्थान के इर्द-गिर्द कई पक्के कुएँ भी हैं। वही पक्का तालाब कपालमोचन तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। काशी खंड में वहाँ स्नान करने का बड़ा ही महात्म्य लिखा है। इस तालाब के कोने पर **(कुछ हट के)** एक कुआँ है जिससकी जगत बहुत ऊँची है और ऊपर बैठने का स्थान भी बहुत प्रशस्त है तथा सीढ़ी के दोनों तरफ छोटे-छोटे दो दालान भी बने हैं जिनसे मुसाफिरों और यात्रियों का बहुत उपकार होता है तथा काशी के मनचले और आशिक-मिजाज लोगों को सैर-सपाटे के समय **(यदि बरसात का मौसम हो तो)** रोटी-बाटी बनाने में भी अच्छी सहायता मिलती है।

इस तालाब या कुएँ के पास में सिवाय जंगल-मैदान के किसी गृहस्थ का कोई कच्चा या पक्का मकान नहीं। अगर यहाँ दस-पाँच आदमी आपस में लड़-भिड़ जाएँ तो पास के किसी अड़ोसी-पड़ोसी की सहायता भी नहीं मिल सकती।

इसी कुएँ पर संध्या होने से कुछ पहिले हम काशी के पाँच-सात खुशमिजाज आदमियों को बैठे हँसी-दिल्लगी करते तथा भंग-बूटी के इंतजाम में व्यस्त देख रहे हैं। कोई भंग धो रहा है, कोई पसीने का चिकना पत्थर धोकर जगह साफ करने की धुन में है, कोई टिकिया सुलगा रहा है और कोई गौरैया **(मिट्टी के हुक्के)** में पानी भर रहा है, इत्यादि तरह-तरह के काम में सब लगे हुए हैं और साथ-ही-साथ अपनी बनारसी अधकचरी तथा अक्खड़ भाषा में हँसी-दिल्लगी भी करते जाते हैं। उनकी बातें भी सुनने के ही लायक हैं। यद्यपि इससे किसी तरह का उपकार तो नहीं हो सकता परन्तु मन-बहलाव जरूर है और इस प्रकार की जानकारी भी हो सकती है अस्तु सुनिए तो सही।

एक : **(जो भंग धो रहा था)** यार, देखो सारे दुकानदार ने मुफ्त ही चार पैसे ले लिए, हमें तो यह भंग दो पैसे की भी जमा नहीं दिखाई देती। यह देखो निचोड़ने पर मुट्ठी-भर के भी नहीं होती!

दूसरा : **(उचक के देख के)** हाँ यार, यह तो कुछ भी नहीं है। तू हूँ निरे गौखे ही रह्यो, पहिले काहे नहीं कहा, सारे की टोपी उतार लेते और ऐसे गड्डो देते कि जनम-भर याद रखता।

तीसरा : ऐसे ही तो जमा मार के सरवा मुटा गया है। तोंद कैसी निकली हुई है सारे की!

चौथा : अच्छा अब कल समझेंगे चोंधर से।

पाँचवाँ : कल आती दफे धीरे-से उसकी दौरी ही उलट देंगे, ज्यादे बोलेगा तो लड़ जाएँगे और गुल करेंगे कि चार आना पैसा तो ले लिहिस है मगर भाँग देता ही नहीं।

छठा : **(जो भला आदमी और कुछ पैसे वाला ही मालूम होता है क्योंकि उसके गले में सोने की सिकरी पड़ी हुई थी)** नहीं-नहीं ऐसा न करना, कोई जान-पहिचान का देख लेगा और जाकर कह देगा तो मुफ्त की झाड़ सुननी पड़ेगी।

दूसरा : अरे रहो बाबू साहब, हम लोगन के साथ आया करो तो ऐसी भलमानसी घर छोड़ आया करो, हम लोग ऐसे दबा करें तो दिन-दुपहरिया लुट जाएँ!

(लेखक : कंगाल बाँकड़े भी खूब ही लुटा करते होंगे!)

सातवाँ : **(सुलग गई हुई टिकिया हाथ में हिलाते हुए)** अरे यारो, ये बाबू साहब ठहरे महाजन आदमी, भला ई लोग लड़ना-भिड़ना का **(क्या)** जानें, चाहे कोई धोती उतार के ले जाय। ई **(यह)** हम ही लोगन **(लोगों)** के काम हो कि कोई

आँख दिखावे तो कान उपार **(उखाड़)** लेई। हमीं लोगन की बदौलत बाबू साहब बचत भी जात हैं, नहीं तो गुदड़ सफरदा सरवा ऐसा रंग बाँधे लगा था कि बस कुछ पूछा ही नहीं, ओ रोज **(उस दिन)** चिथड़ू न होते तो गले की सिकरिए उतार लिए होता।

छठा : **(अर्थात् बाबू साहब)** हाँ यह बात तो ठीक है और जी में तो उसी रोज आ गया था कि अब आज से इस रास्ते को छोड़ दें और रंडी-मुंडी का नाम भी न लें बल्कि कसम खाने लिए भी तैयार हो गया था मगर क्या करें, 'नागर' की मुहब्बत ने ऐसा करने नहीं दिया, वह बेशक मुझे प्यार करती है और मुझ पर आशिक है।

सातवाँ : **(मुसकुराते हुए)** बल्कि तुम पर मरती है! एक दिन हमसे कहती थी कि बाबू साहब हमें छोड़ देंगे तो हम जहर खा लेंगे!!

इसी तरह ये लोग बेतुकी और अक्खड़पन लिए हुए मिश्रित भाषा में बातचीत कर रहे थे कि यकायक विचित्र ढंग का एक नया मुसाफिर वहाँ आ पहुँचा और उसने कुएँ के ऊपर चढ़ते हुए इस सातवें आदमी की आखिरी बात बखूबी सुन ली। इस आदमी की उम्र का पता लगाना जरा कठिन है, तथापि बाबू साहब की निगाह में वह पैंतीस वर्ष का मालूम पड़ता था। कद जरा लंबा और चेहरा रोआबदार था, कपड़े की तरफ ध्यान देकर कोई नहीं कह सकता था कि यह किस देश का रहने वाला है। भीतर चाहे जैसी पोशाक हो मगर ऊपर एक स्याह अबा डाले हुए था और एक छोटी-सी गठरी हाथ में थी।

पहिले से जो लोग उस कुएँ पर बैठे हँसी-दिल्लगी कर रहे थे उनके दिल में आया कि इस नये मुसाफिर से कुछ छेड़छाड़ करें और यहाँ से भगा दें क्योंकि वास्तव में काशी के रहने वाले अक्खड़ मिजाज लोगों की आदत ही ऐसी होती है, जहाँ इस मिजाज के चार-पाँच आदमी इकट्ठे होते हैं वहाँ वे लोग अपने आगे किसी को कुछ समझते ही नहीं और दूसरे लोगों से बिना दिल्लगी किये नहीं रहते।

एक : **(नये मुसाफिर से)** कहाँ रहते हो साहब?

मुसाफिर : गयाजी।

दूसरा : यहाँ कब आये?

मुसाफिर : आज ही तो आये हैं।

दूसरा : तभी आप इस कुएँ पर आए हैं, अगर कोई जानकार होता तो यहाँ कभी न आता।

मुसाफिर : सो क्यों?

चौथा : यहाँ शैतान और जिन्न लोग रहते हैं, जो कोई नया मुसाफिर आता है उसे चपत लगाए बिना नहीं रहते।

मुसाफिर : ठीक है, तो तुम लोगों को भी उन्होंने चपत लगाया होगा?

दूसरा : **(चिढ़कर, जोर से)** हम लोगों से वे लोग नहीं बोल सकते क्योंकि हम लोग यहाँ के रहने वाले हैं और उन सभों के दोस्त हैं!

मुसाफिर : बेशक शैतान के दोस्त शैतान ही होते हैं!

चौथा : क्यों बे, मुँह सम्हाल के नहीं बोलता!

मुसाफिर : अबे-तबे करोगे बच्चा तो ठीक करके रख देंगे! हमें कोई मामूली मुसाफिर न समझना!!

पाँचवाँ : **(ललकार कर)** मार सारे के, बे अड्या चपत।

इतना कहकर पाँचवाँ आदमी उठा और मुक्का तान कर उस मुसाफिर की तरफ झपटा। मारना ही चाहता था कि मुसाफिर ने हाथ पकड़ लिया और ऐसा झटका दिया कि वह कुएँ के नीचे जा गिरा और बहुत चुटीला हो गया। यह कैफियत देखते ही बाबू साहब तो डर के मारे कुएँ के नीचे उतर गए और किसी झाड़ी में जा जाकर छिप रहे मगर बाकी के सब आदमी उस मुसाफिर पर जा टूटे और एक ने अपनी कमर से एक छुरी भी निकाल ली। मगर मुसाफिर ने उन सभों की कुछ भी परवाह न की। बात-की-बात में उसने और तीन आदमियों को कुएँ के नीचे ढकेल दिया और उसके बाद कमर से खंजर निकालकर मुकाबिले को तैयार हो गया। खंजर की चमक देखते ही सभों का मिजाज ठंडा हो गया और मेल-माकफत के ढंग की बातचीत करने लगे, मगर मुसाफिर का गुस्सा कम न हुआ और उसने लात तथा मुक्कों से खूब सभी की मरम्मत की, इसके बाद एक किनारे हटकर खड़ा हो गया और बोला, "कहो अब क्या इरादा है?"

मुसाफिर की हिम्मत और मर्दानगी देखकर सभों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उनको इस बात का गुमान भी नहीं हो सकता था कि यह अकेला आदमी हम लोगों को इस तरह नीचा दिखा देगा। सभों ने समझा कि यह जरूरी कोई राक्षस या जिन्न है जो आदमी का रूप धर के हम लोगों को छकाने के लिए आया है, अस्तु किसी ने भी उसकी बातों का जवाब नहीं दिया बल्कि डरते हुए अपना सामान और कपड़ा-लत्ता उठा कर भागने के लिए तैयार हो गये मगर मुसाफिर ने उन्हें ऐसा करने से रोका और कहा, "देखो तुम लोगों ने जान-बूझकर मुझसे छेड़खानी की और तकलीफ उठायी अस्तु अब शान्त होकर बैठो और अपना-अपना काम करो। तुम्हारे कई साथियों को सख्त चोट आ गई है सो उसे धोकर पट्टी बाँधो और कुछ देर आराम लेने दो, और हाँ यह तो बताओ कि तुम्हारे वह सुन्दर-सलोने बाबू साहब कहाँ चले गये जिन पर बीबी नागर आशिक हो गई हैं?"

एक : न-मालूम कहाँ चला गया, ऐसा भग्गू आदमी..

दूसरा : जाने दो, अगर भाग गया तो जहन्नुम में जाय, उसी के सबब से तो हम लोग तकलीफ उठाते हैं।

मुसाफिर : नहीं-नहीं, भागो मत, अपने साथी को आने दो बल्कि खोजो कि वह कहाँ चला गया है। यह कोई भलमनसी की बात नहीं है कि उसे इस तरह छोड़कर सब कोई चले जाओ, हम तुम लोगों को भी कभी न जाने देंगे और खास करके तुम्हारे सुन्दर सलोने से तो जरूर ही बातचीत करेंगे।

मुसाफिर की बातों ने उन लोगों को और भी परेशान कर दिया। उसका रोब इन सभों पर ऐसा छा गया था कि उसकी तरफ आँख उठाकर देख नहीं सकते थे और उसे आदमी नहीं बल्कि देवता या राक्षस समझने लग गये थे, अस्तु उसका रोकना इन लोगों को और भी बुरा मालूम हुआ और सभों ने डरते हुए हाथ जोड़ कर कहा, "बस अब कृपा कीजिए और हम लोगों को जाने दीजिए।"

मुसाफिर :नहीं-नहीं, यह कभी न होगा, पहले तुम अपने साथी को तो खोजो..

एक : अब हम उसे कहाँ खोजें?

मुसाफिर : चलो हम भी तुम लोगों के साथ मिलकर उसे खोजें। वह कहीं दूर न गया होगा, इसी जगह किसी झाड़ी में छिपा होगा। तुम लोग डरो मत, अब हमारी तरफ से तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न पहुँचेगी।

यद्यपि मुसाफिर ने उन लोगों को बहुत दिलासा दिया और समझाया मगर उन लोगों का जी ठिकाने न हुआ और डर उनके दिल से न गया बल्कि इस बात का खयाल हुआ कि यह मुसाफिर बाबू साहब को खोजने के बाद जिद्द करता है तो इसमें कोई भेद जरूर है, बेशक् बाबू साहब को खोज कर उन्हें तकलीफ देगा। मगर जो हो उन सभों को खोजना ही

पड़ा।

उधर बाबू साहब उस कुएँ के पास ही एक झाड़ी में छिपे हुए सब देख-सुन रहे थे और डर के मारे उनका तमाम बदन काँप रहा था। जब उन्होंने देखा कि वह राक्षस सभों के लिए हुए उनकी खोज में कुएँ के नीचे नीचे उतरा है तब तो वह एकदम घबड़ा उठे और उनके मुँह से हजार कोशिश करके रोकने पर भी एक चीख की आवाज निकल ही पड़ी। आवाज सुनते ही वह मुसाफिर समझ गया कि इसी झाड़ी के अन्दर बाबू साहब छिपे हुए हैं, झपटकर वहाँ जा पहुँचा और झाड़ी के अन्दर से हाथ पकड़ के बाबू साहब को बाहर निकाला। मालूम होता था कि बाबू साहब को इस समय जड़ैया बुखार चढ़ आया है। उनका तमाम बदन तेजी के साथ काँप रहा था। बाबू साहब जल्दी से मुसाफिर के पैरों पर गिर पड़े और आँसू बहाते हुए बोले, "ईश्वर के लिए मुझे माफ करो, मैं बड़ा ही गरीब हूँ किसी के भले-बुरे से मुझे कुछ सरोकार नही, मैंने आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ा है!"

मुसाफिर : डरो मत, मैंने तुम्हें किसी बुरी नीयत से नहीं ढूँढ़ा है, ये लोग तुम्हें वहाँ जंगल में छोड़कर भागे जाते थे, इसीलिए मैंने सभी को रोक लिया और कहा कि अपने साथी को खोज कर अपने साथ लिए जाओ। अब तुम बेखौफ होकर अपने दोस्तों के साथ अपनी प्यारी नागर के पास चले जाओ, मुझसे बिलकुल मत डरो।

मुसाफिर की बातों से बाबू साहब को कुछ ढाँढस हुई, वे सम्हल कर उठ खड़े हुए और मुसाफिर से कुछ कहा ही चाहते थे कि पास की दूसरी झाड़ी में से एक दूसरा आदमी निकलकर झपटता हुआ उन सभों के पास आ पहुँचा और मुसाफिर की तरफ देख के बोला, "तुम क्यों इस बेचारे सीधे और डरपोक आदमी को तंग कर रहे हो, नहीं जानते कि तुम्हारा गुरु चन्द्रशेखर इसी जगह छिपा हुआ तुम्हारी शैतानी का तमाशा देख रहा है!"

उस आदमी की सूरत-शक्ल का अंदाजा नहीं मिल सकता था क्योंकि उसका तमाम बदन स्याह कपड़े से छिपा हुआ था और चेहरे पर भी स्याह नकाब पड़ी हुई थी, मगर वह मुसाफिर उसकी बात सुन कर बड़े गौर में पड़ गया और आश्चर्य के साथ उसकी तरफ देखने लगा।

मुसाफिर : तुम कौन हो, पहिले अपना परिचय दो तब मैं तुमसे कुछ बात करूँ।

नया आदमी :तुम्हारा मुँह इस योग्य नहीं है कि मुझ से बात करो और परिचय के लिए यही काफी है कि मेरा नाम चन्द्रशेखर है। लेकिन अगर इससे भी विशेष कुछ जानने की इच्छा हो तो मैं और भी कुछ कहने के लिए तैयार हूँ! आह, वह धोखा देने वाली चाँदनी रात! बात की बात में चन्द्रमा बादलों में छिप गया और अँधकार हो जाने के कारण तरह-तरह की भयानक सूरतें दिखाई देने लगीं। उसी समय पहिले एक स्याह रंग का ऊँट दिखाई दिया जिसके सिर पर लंबे-लंबे सींघ बिजली की तरह चमक रहे थे।

मुसाफिर : **(डर के मारे काँपता और पीछे की तरफ हटता हुआ)** बस! बस! मैं समझ गया कि तुम कौन हो!!

चन्द्रशेखर : उसके बाद एक सफेद रंग का हाथी दिखाई दिया जिसके ऊपर नागर और मनोरमा मशाल लिए हुई थीं और जोर-जोर से श्यामलाल को पुकार रही थीं क्योंकि वे चाहती थीं कि किसी तरह खून से लिखी हुई किताब उनके हाथ लगे।

मुसाफिर : **(हाथ जोड़ कर)** मैं कह चुका और फिर भी कहता हूँ कि बस करो, माफ करो, दया करो, मैं तुम्हें पहिचान गया, अगर तुम्हें कुछ कहना ही हो तो किनारे चलकर कहो जिसमें कोई तीसरा न सुनने पावे।

चन्द्रशेखर : नहीं-नहीं, मैं इसी जगह सबके सामने ही कहूँगा क्योंकि इन बाबू साब का इस मामले से बहुत ही घना संबंध है तथा इसके साथी लोग भी इसी जगह आकर इकट्ठे हो गये हैं और आश्चर्य भरी निगाहों से हम दोनों का तमाशा देख रहे हैं। हाँ तो मैं क्या कह रहा था? अच्छा, अब याद आया, उसी अँधेरी रात में एक बिल्ली भी आ पहुँची जो अपने मुँह से लंबी गर्दन वाला स्याह रंग का ऊँट दबाए हुए थी और ऊँट के माथे पर लिखा हुआ था

"सर्वगुण सम्पन्न चांचला सेठ"

"बस बस बस!" कहता हुआ मुसाफिर पीछे की तरफ हटा और काँपता हुआ जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गया।

इस नए आए हुए व्यक्ति तथा इस मुसाफिर की बातचीत से सभी को आश्चर्य तो हुआ ही था परन्तु मुसाफिर की अन्तिम अवस्था देखकर सभों को बड़ा विस्मय और आनन्द भी हुआ। इसके बाद जब मुसाफिर खौफ से बेहोश हो गया और नये आदमी अर्थात् चन्द्रशेखर ने बाबू साहब तथा उनके साथियों को बहुत जल्द वहाँ से चले जाने के लिए कहा तब वे लोग इस तरह वहाँ से भागे जैसे बाज के झपट्टे से बची हुई चिड़ियाएँ भागती हैं, जब वे लोग तेजी के साथ चलकर घने मुहल्ले में पहुँचे तब उन लोगों का जी ठिकाने हुआ और उन्होंने समझा कि जान बची।

2

पाठक महाशय, अब हम कुछ हाल जमानिया का लिखना मुनासिब समझते हैं और उस समय का हाल लिखते हैं जब राजा गोपालसिंह की कम्बख्ती का जमाना शुरू हो चुका था और जमानिया में तरह-तरह की घटनाएं होने लग गई थीं।

जमानिया तथा दारोगा और जैपाल वगैरह के संबंध की बातें जो चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखी जा चुकी हैं उन्हें हम इस ग्रंथ में बिना कारण लिखना उचित नहीं समझते, उनके अतिरिक्त और जो बातें हुई हैं उन्हें लिखने की इच्छा है, हां यदि मजबूरी से कोई जरूरत आ ही पड़ेगी तो बेशक पिछली बातें संक्षेप के साथ दोहराई जाएँगी और राजा गोपालसिंह की शादी के पहिले का कुछ हाल लिखा जाएगा। इसका कारण यही है कि यह भूतनाथ चन्द्रकान्ता सन्तति का परिशिष्ट भाग समझा जाता है।

अपने संगी-साथियों को साथ लिए हुए बाबू साहब जो भागे तो सीधे अपने घर की तरफ नहीं गये बल्कि नागर रंडी के मकान पर चले गये क्योंकि बनिस्बत अपने घर के उन्हें उसी का घर प्यारा था और उसी को वे अपना हमदर्द और दोस्त समझते थे, जिस समय वे उस जगह पहुँचे तो सुना कि नागर अभी तक बैठी हुई उनका इंतजार कर रही है। बाबू साहब को देखते ही नागर उठ खड़ी हुई और बड़ी खातिरदारी के साथ उनका हाथ पकड़कर अपने पास एक ऊँची गद्दी पर बैठाया और मामूल के खिलाफ आज देर हो जाने का सबब पूछा, मगर बाबू साहब ऐसे बदहवास हो रहे थे कि उनके मुँह से कोई बात न निकलती थी। उनकी ऐसी अवस्था देख नागर को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और उसने लाचार होकर उनके साथियों से उनकी परेशानी और बदहवासी का कारण पूछा।

बाबू साहब कौन हैं और उनका नाम क्या है इसका पता अभी तक नहीं मालूम हुआ। खैर इसके जानने की विशेष आवश्यकता भी नहीं जान पड़ती इसलिए अभी उन्हें बाबू साहब के नाम ही से संबोधित करने दीजिए, आगे चल कर देखा जाएगा।

बाबू साहब ने अपनी जुबान से अपनी परेशानी का हाल यद्यपि नागर से कुछ भी नहीं कहा मगर उनके साथियों की जुबानी उनका कुछ हाल नागर को मालूम हो गया और तब नागर ने दिलासा देते हुए बाबू साहब से कहा, "यह तो मामूली घटना थी।"

बाबू साहब : जी हाँ, मामूली घटना थी! अगर उस समय आप वहाँ होतीं तो मालूम हो जाता कि मामूली घटना कैसी होती है!

नागर : **(मुसकुराती हुई)** खैर किसी तरह मुँह से बोले तो सही!

बाबू साहब : पहिले यह तो बताओ कि नीचे का दरवाजा तो बंद है? कहीं कोई आ न जाय और हम लोगों की बातें न सुन लें।

नागर : आप जानते हैं कि आपके आने के साथ ही लौंडियाँ फाटक बंद कर दिया करती हैं। हमारे यहाँ सिवाय आपके दूसरे किसी ऐसे सरदार का आना-जाना तो है ही नहीं कि जिससे मुझे किसी तरह का लगाव या मुहब्बत हो, हाँ बाजार में बैठा करती हूं इसलिए कभी-कभी कोई मारा पीटा आ ही जाया करता है, सो भी जब आप आते हैं तो उसी वक्त फाटक बंद कर दिया जाता है।

बाबू साहब इसका कुछ जवाब दिया ही चाहते थे कि एक आदमी यह कहता हुआ कमरे के अन्दर दाखिल हुआ, "झूठ भी बोलना तो मुँह पर!"

इस आदमी की सूरत देखते ही बाबू साहब चौंक पड़े और घबराहट के साथ बोल उठे, "यही तो है!"

यह वही आदमी था जिसे बाबू साहब और उनके संगी-साथियों ने कपालमोचन के कुएँ पर देखा था और जिसके डर से अभी तक बाबू साहब की जान पर सदमा हो रहा था।

बाबू साहब की ऐसी हालत देखकर उस आदमी ने जो अभी-अभी आया था कहा, "डरो मत, मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूँ बल्कि दोस्त हूँ!" इतना कह उस आदमी ने अपने हाथ की गठरी एक किनारे रख दी और मामूली कपड़े उतार कर इस तरह खूँटियों पर सजा दिये कि जैसे यह उसी का घर हो या इस घर पर उसका बहुत बड़ा अधिकार हो और नित्य ही वह यहाँ आता-जाता हो।

यह आदमी असल में भूतनाथ **(गदाधरसिंह)** था जिससे नागर की गहरी दोस्ती थी मगर बाबू साहब को इसकी कुछ भी खबर न थी और न कभी ऐसा ही इत्तिफाक हुआ था कि इस जगह पर इन दोनों का सामना हुआ हो। हाँ बाबू साहब ने गदाधरसिंह का नाम जरूर सुना था और यह भी सुना था कि वह मामूली आदमी नहीं है।

नागर ने जिस खातिरदारी और आवाभगत के साथ भूतनाथ का सम्मान किया और प्रेम दिखाया उसने बाबू साहब को मालूम हो गया कि नागर बनिस्बत मेरे इस आदमी को बहुत प्यार करती है।

खूँटियों पर कपड़े रखकर भूतनाथ बाबू साहब के पास बैठ गया और बोला, "भला मैंने आपको क्या तकलीफ दी है जो आप मुझसे इतना डरते हैं? एक ऐयाश और खुशदिल आदमी को इतना डरपोक न होना चाहिए। आप मुझे शायद पहिचानते नहीं, मेरा नाम गदाधरसिंह है, आपने अगर मुझे देखा नहीं तो नाम जरूर ही सुना होगा।"

बाबू साहब : **(आश्चर्य और डर के साथ)** हाँ, मैंने आपका नाम सुना है और अच्छी तरह सुना है।

नागर : **(मुसकुराती हुई, बाबू साहब से)** आपके तो अब ये गहरे रिश्तेदार हो गये हैं फिर भी आप इन्हें न पहिचानेंगे।

बाबू साहब : **(कुछ शरमाते हुए)** हाँ-हाँ, मैं बखूबी जानता हूँ मगर पहिचानता नहीं था, अफसोस की बात है कि इतने दिनों तक इनसे कभी मुलाकात नहीं हुई।

नागर : **(बाबू साहब से)** आपसे इनसे कुछ नातेदारी भी तो है?

बाबू साहब : हाँ, मेरी मौसेरी बहिन रामदेई1 इनके साथ ब्याही है। आज अगर मुझे इस बात की खबर होती कि आप ही मेरे बहनोई हैं तो मैं उस कुएँ पर इतना परेशान न होता बल्कि खुशी के साथ मुलाकात होती। **(भूतनाथ से)** हाँ, यह तो बताइए कि वह चन्द्रशेखर कौन था जिसके खौफ से आप परेशान हो गये थे!

गदाधरसिंह : **(कुछ डर और संकोच के साथ)** वह मेरा बहुत पुराना दुश्मन है। मेरे हाथ से कई दफे जक उठा चुका और नीचा देख चुका है, अब वह मुझसे बदला लेने की धुन में लगा हुआ है। आज बड़े बेमौके मिल गया था क्योंकि मैं बेफिक्र था और वह हर तरह का सामान लेकर मेरी खोज में निकला था।

बाबू साहब : आखिर हम लोगों के चले आने के बाबद क्या हुआ? आप से और उससे कैसी निपटी?

गदाधरसिंह : मैं इस मौके को बचा गया और लड़ता हुआ धोखा देकर निकल भागा! खैर फिर कभी देखा जाएगा, अबकी दफे उस साले को ऐसा छकाऊँगा कि वह भी याद करेगा।

चन्द्रशेखर का नाम सुनकर नागर चौंक पड़ी और उसके चेहरे की रंगत बदल गई। मालूम होता था कि वह भूतनाथ से कुछ पूछने के लिए उतावली हो रही है मगर बाबू साहब के खयाल से चुप है और चाहती है कि किसी तरह बाबू साहब यहाँ से चले जाएँ तो बात करे।

बाबू साहब : **(भूतनाथ से)** ठीक है वह बेशक आपका दुश्मन है आज आठ-दस दिन हुए होंगे कि मुझसे बरना2 के

किनारे एकान्त में मिला था। उस समय उसके साथ तीन-चार औरतें भी थीं जिनमें से एक का नाम विमला था।

गदाधरसिंह : **(चौंककर)** विमला?

बाबू साहब : हाँ विमला, और एक मर्द भी उसके साथ था जिसे उसने एक दफे प्रभाकर सिंह के नाम से संबोधन किया था।

गदाधरसिंह : **(घबड़ाकर)** क्या तमु उस समय उसके सामने मौजूद थे?

बाबू साहब : जी नहीं, मै उन सभों को वहाँ आते देख एक झाड़ी में छिप गया था।

गदाधरसिंह : तब तो तुमने और भी बहुत-सी बातें सुनी होंगी।

बाबू साहब : नहीं मैं कुछ विशेष बातें न सुन सका, हाँ इतना जरूर मालूम हुआ कि वह मनोरमा से और जमानिया के राजा से मिलने का उद्योग कर रहा है।

गदाधरसिंह : **(कुछ सोच कर और बाबू साहब की तरफ खिसक कर)** बेशक आपने और भी बहुत-सी बातें सुनी होंगी, और यह भी मालूम किया होगा कि वे औरतें वास्तव में कौन थीं।

बाबू साहब : सो मैं कुछ भी न जान सका कि वे औरतें कौन थीं या वहाँ पहुँचने से उन लोगों का क्या मतलब था।

गदाधरसिंह : खैर मैं थोड़ी देर के लिए आपकी बातें मान लेता हूँ।

नागर : **(बाबू साहब से)** मगर मैंने तो सुना था कि आपका और उन लोगों का सामना हो गया था और आप उसी समय उनके साथ कहीं चले भी गये थे।

बाबू साहब : **(घबड़ाने से होकर)** नहीं-नहीं, मेरा-उनका सामना बिलकुल नहीं हुआ बल्कि मैं उन लोगों को उसी जगह छोड़कर छिपता हुआ किसी तरह निकल भागा और अपने घर चला आया क्योंकि मुझे उन लोगों की बातों से कोई संबंध नहीं था, फिर मुझे जरूरत ही क्या थी कि छिपकर उन लोगों की बात सुनता या उन लोगों के साथ कहीं जाता।

नागर : शायद ऐसा ही हो, मगर जिसने मुझे यह खबर दी थी उसे झूठ बोलने की आदत नहीं है।

बाबू साहब : तो उसने धोखा खाया होगा। अथवा किसी दूसरे को मौके पर देखा होगा।

नागर ने इस मौके पर जो कुछ बाबू साहब से कहा वह केवल धोखा देने की नियत से था और वह चाहती थी कि बातों के हेर-फेर में डालकर बाबू साहब से कुछ और पता लगा ले, अस्तु जो कुछ हो मगर इस खबर ने भूतनाथ को बहुत ही परेशान कर दिया और वह सर नीचा कर तरह-तरह की बातें सोचने लगा। उसे इस बात का निश्चय हो गया कि बाबू साहब ने जो कुछ कहा है वह बहुत कम है अथवा जान-बूझकर वे असल बातों को छिपा रहे हैं।

कुछ देर तक सिर झुकाकर सोचते-सोचते भूतनाथ को क्रोध चढ़ आया और उसने कुछ तीखी आवाज में बाबू साहब से कहा

गदाधरसिंह : सुनिए रामलाल जी[1], इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप मेरे नातेदार हैं और इस खयाल से मुझे आपका मुलाहिजा करना चाहिए मगर ऐसी अवस्था में जब कि आप मुझसे झूठ बोलने और मुझे धोखा देने की कोशिश करते हैं अथवा यों कह सकते हैं कि आप मेरे दुश्मन से मिलकर उसके मददगार बनते हैं तो मैं आपका मुलाहिजा कुछ भी न करूँगा। हाँ यदि आप मुझसे सब-कुछ साफ-साफ कह दें तो फिर मैं भी..

रामलाल : **(अर्थात् बाबू साहब)** ठीक है अब मुझे मालूम हो गया कि उन औरतों से और प्रभाकर सिंह से आप डरते हैं, यदि यह बात सच है तो डरपोक और कमजोर होने पर भी मैं आपसे डरना पसन्द नहीं करता..

रामलाल ने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि सीढ़ियों पर से जिसका दरवाजा इन लोगों के सामने ही था तेज़ी के साथ एक नकाबपोश आया और एक लिफाफा भूतनाथ के सामने फेंककर यह कहता हुआ वहाँ से निकल गया "बेशक् डरने की कोई जरूरत नहीं है, और खासकर ऐसे आदमी से जो पूरा नमक हराम और बेईमान है तथा जिसने अपने मालिक और दोस्त दयाराम को अपने हाथ से जख्मी किया था, ईश्वर की कृपा थी कि वह बेचारा बच गया और जमानिया में बैठा हुआ भूतनाथ के इस्तकबाल की कोशिश कर रहा है।"

इस आवाज ने भूतनाथ को एकदम परेशान कर दिया। उसने लिफाफा खोल कर चिट्ठी पढ़ने का इंतजार न किया और खंजर के कब्जे पर हाथ रखता हुआ तेजी के साथ दरवाजे पर और फिर सीढ़ियों पर जा पहुँचा मगर किसी आदमी की सूरत उसे दिखाई न पड़ी। वह धड़धड़ाता हुआ सीढ़ियों के नीचे उतर आया और फाटक के बाहर निकलने पर उस नकाबपोश को कुछ ही दूरी पर जाते हुए देखा। भूतनाथ ने उसका पीछा किया मगर वह गलियों में घूम-फिरकर ऐसा गायब हुआ कि भूतनाथ को उसकी गंध तक न मिली और अंत में वह लाचार होकर नागर के मकान में लौट आया। आने पर उसने देखा कि बाबू साहब नहीं हैं, कहीं चले गये। तब उसने उस लिफाफे की खोज की जो नकाबपोश उसके सामने फेंक गया था और देखना चाहा कि उसमें क्या लिखा हुआ है।

लिफाफा वहाँ मौजूद न देखकर भूतनाथ ने नागर से पूछा, "क्या वह लिफाफा तुम्हारे पास है?"

नागर : हाँ, तुमको उस नकाबपोश के पीछे जाते देख मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे सीढ़ियाँ उतरकर फाटक तक चली गई थी। जब तुम दूर निकल गये तब मैं वापस लौट आई और देखा कि बाबू साहब उस लिफाफे को खोलकर चिट्ठी पढ़ रहे हैं, मुझको उसकी ऐसी नालायकी पर क्रोध चढ़ आया और मैंने उसके हाथ से वह चिट्ठी छीनकर बहुत-कुछ बुरा-भला कहा जिस पर वह नाराज होकर यहाँ से चला गया।

भूतनाथ : यह बहुत बुरा हुआ कि यह चिट्ठी उसने पढ़ ली। फिर तुमने उसे जाने क्यों दिया? मैं उसे बिना ठीक किये कभी न रहता और बता देता कि इस तरह की बदमाशी का क्या नतीजा होता है।

नागर : खैर अगर भाग भी गया तो क्या हर्ज है, जब तुम उसे मजा देने पर तैयार ही हो जाओगे तो क्या वह तुम्हारे हाथ न आवेगा?

भूतनाथ : खैर वह चिट्ठी कहाँ है जरा दिखाओ तो सही।

नागर : **(खुला हुआ लिफाफा भूतनाथ के हाथ में देकर)** लो यह चिट्ठी है।

भूतनाथ : **(चिट्ठी पढ़कर)** क्या तुमने यह चिट्ठी पढ़ी है?

नागर : नहीं, मगर यह सुनने की इच्छा है कि इसमें क्या लिखा है?

भूतनाथ : **(पुनः उस चिट्ठी को अच्छी तरह पढ़ के और लिफाफे को गौर से देख कर)** अंदाज से मालूम होता है कि इस लिफाफे में केवल यही एक चिट्ठी नहीं बल्कि और भी कोई कागज था।

नागर : शायद ऐसा ही हो और बाबू साहब ने कोई कागज निकाल लिया हो तो मैं नहीं कह सकता।

भूतनाथ : खैर देखा जाएगा, मेरा द्रोही मुझसे बच के कहाँ जा सकता है। फिर भी आज मैं जिस नियत से तुम्हारे पास आया था वह न हो सका, अच्छा अब मैं जाता हूँ।

नागर : नहीं-नहीं, मैं तुम्हें इस समय जाने न दूँगी, मुझे बहुत-सी बातें तुमसे पूछनी और कहनी हैं, मुझे इस बात का दिन-रात खुटका बना रहता है कि कहीं तुम अपने दुश्मनों के फेर में न पड़ जाओ क्योंकि केवल तुम्हारे ही तक मेरी जिंदगी है, मुझे सिवाय तुम्हारे इस दुनिया में और किसी का भी भरोसा नहीं है, और तुम्हारे दुश्मनों की गिनती दिन पर दिन बढ़ती ही जाती है।

भूतनाथ : हाँ ठीक है। **(कुछ सोच कर)** मगर इस समय मैं यहाँ पर नहीं रह सकता और..

नागर : कल मनोरमा जी भी तो तुमसे मिलने के लिए यहाँ आने वाली है।

भूतनाथ : खैर देखा जाएगा, बन पड़ेगा तो मैं कल फिर आ जाऊँगा।

इतना कहकर भूतनाथ खड़ा हुआ और सीढ़ियों के नीचे उतर कर देखते-देखते नजरों से गायब हो गया।

भूतनाथ के चले जाने के बाद नागर आधे घंटे तक चुपचाप बैठी रही, इसके बाद उसने उठकर अपनी लौंडियों को बुलाया और कुछ बातचीत करने के बाद एक लौंडी के साथ लिए हुए सीढ़ियों के नीचे उतरी।

चन्द्रकान्ता सन्तति में नागर के जिस मकान का हाल हम लिख आये हैं वह मकान इस समय नागर के कब्जे में नहीं है क्योंकि अभी तक जमानिया राज्य की वह हालत नहीं हुई थी और न इस इज्जत को अभी नागर पहुँची थी। इस समय नागर रंडियों की-सी अवस्था में है और उसके कब्जे में एक मामूली छोटा-सा मकान है, फिर भी मकान सुन्दर और मजबूत है तथा उसके सामने एक छोटा-सा नजरबाग भी है। यद्यपि अभी तक कम उम्र नागर की हैसियत बढ़ी नहीं है फिर भी उसकी चालाकियों का जाल अच्छी तरह फैल चुका है जिसका एक सिरा जमानिया राजधानी में जा पहुँचा है क्योंकि उस मनोरमा से इसकी दोस्ती अच्छी तरह हो चुकी है जिसने जमानिया की खराबी में सबसे बड़ा हिस्सा लिया हुआ था।

नागर सीढ़ियों से नीचे उतर कर नजरबाग में होती हुई सदर फाटक पर पहुँची और उसे बंद करके एक मजबूत ताला उसकी कुंडी में लगा दिया। इसके बाद लौटकर मकान की सीढ़ियों पर चढ़ने वाला दरवाजा भी अच्छी तरह बंद करके अपने कमरे में चली आई।

लौंडी को कमरे का फर्श साफ करने की आज्ञा देकर नागर ऊपर छत पर चढ़ गई जहाँ एक बँगला था और इस समय उसके बाहर ताला लगा हुआ था जिसे खोलकर नागर बँगले के अन्दर चली गई।

यह बँगला बहुत खुलासा और मामूली ढंग पर सजा हुआ था। जमीन पर साफ-सुथरा फर्श बिछा हुआ था, एक तरफ सुन्दर मसहरी थी तथा छोटे-बड़े कई तकिए फर्श पर पड़े थे। मगर यह कमरा खाली न था, इसमें इस समय मनोरमा बैठी हुई थी और जमानिया राजधानी का बेईमान दारोगा **(बिजली)** भी उसके साथ था। नागर भी उन दोनों के पास जाकर बैठ गई।

8

अब हम अपने पाठकों को पुनः उस घाटी में ले चलते हैं जिसमें कला और विमला रहती थीं और जिसमें भूतनाथ ने पहुँचकर बड़ी ही संगदिली का काम किया था अर्थात् कला, बिमला और इंदुमति के साथ-साथ कई लौंडियों को भी कुएँ में ढकेलकर अपनी जिंदगी का आईना गंदला किया था।

भूतनाथ यद्यपि अपने शागिर्द रामदास की मदद से उस घाटी में पहुँच गया था और अपनी इच्छानुसार उसने सब कुछ करके अपने दिल का गुबार निकाल लिया था मगर घाटी के बीच वाले उस बँगले के सिवाय वह वहाँ का और कोई स्थान नहीं देख सका जिसमें कला और विमला रहती थीं जहाँ जख्मी इंदुमति का इलाज किया गया था, और न वहाँ का कोई भेद ही भूतनाथ को मालूम हुआ। वह केवल अपने दुश्मनों को मारकर उस घाटी के बाहर निकल आया और फिर कभी उसके अन्दर नहीं गया। मगर प्रभाकर सिंह को उस घाटी का बहुत ज्यादा हाल मालूम हो गया था। कुछ तो उन्होंने बीच वाले बँगले की तलाशी लेते समय कई तरह के कागजों-पुर्जों और किताबों को देखकर मालूम कर लिया था और कुछ कला, विमला ने बताया था और बाकी का भेद इन्द्रदेव ने बताकर प्रभाकर सिंह को खूब पक्का कर दिया था।

आज प्रातःकाल सूर्योदय के समय हम उस घाटी में प्रभाकर सिंह को एक पत्थर की चट्टान पर बैठे हुए देखते हैं। उनके बगल में ऐयारी का बटुआ लटक रहा है और हाथ में एक छोटी-सी किताब है जिसे वे बड़े गौर से देख रहे हैं। यह किताब हाथ की लिखी हुई है और इसके अक्षर बहुत ही बारीक हैं तथा इसमें कई तरह के नक्शे भी दिखाई दे रहे हैं जिन्हें वे बार-बार उलट कर देखते हैं और फिर कोई दूसरा मजमून पढ़ने लगते हैं।

इस काम में उन्हें कई घंटे बीत गये। जब धूप की तेजी ने उन्हें परेशान कर दिया तब वे वहाँ से उठ खड़े हुए तथा बड़े गौर से दक्षिण और पश्चिम कोण की तरफ देखने लगे और कुछ देर तक देखने के बाद उसी तरफ चल निकले। नीचे उतर कर मैदान खत्म करने के बाद जब दक्षिण और पश्चिम कोण वाली पहाड़ी के नीचे पहुँचे तब इधर-उधर बड़े गौर से देखकर उन्होंने एक पगडंडी का पता लगाया और उसी सीध पर चलते हुए पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे। करीब-करीब साठ कदम चले जाने के बाद उन्हें एक छोटी-सी गुफा मिली और वे लापरवाही के साथ उस गुफा के अन्दर चले गये।

यह गुफा बहुत बड़ी न थी और इसमें केवल दो आदमी एक साथ मिलकर चल सकते थे, फिर भी ऊँचाई इसकी ऐसी कम न थी कि इसके अन्दर जाने वाले का सिर छत के साथ टकराए, अस्तु प्रभाकर सिंह धीरे-धीरे टटोलते हुए इसके अन्दर जाने लगे। जब लगभग दो सौ कदम चले गये तब उन्हें एक छोटी-सी कोठरी मिली जिसके अन्दर जाने के लिए दरवाजे की किस्म से किसी तरह की रुकावट न थी सिर्फ एक चौखट लाँघने ही के सबब से कह सकते हैं कि वे उस कोठरी के अन्दर जा पहुँचे। अंधकार के सबब से प्रभाकर सिंह को कुछ दिखाई नहीं देता था इसलिए वे बैठकर वहाँ की जमीन हाथ से इस तरह टटोलने लगे मानो किसी खास चीज को ढूँढ़ रहे हैं।

एक छोटा-सा चबूतरा कोठरी के बीचोंबीच मिला जो हाथ-भर चौड़ा और इसी कदर लंबा था। उसके बीच में किसी तरह का खटका था जिसे प्रभाकर सिंह ने दबाया और साथ ही इसके चबूतरे के ऊपर वाला किवाड़ के पल्ले की तरह खुल गया, मानो वह पत्थर का नहीं बल्कि किसी धातु या लकड़ी का बना हो।

अब प्रभाकर सिंह ने अपने बटुए में से मोमबत्ती निकाली और इसके बाद चकमक पत्थर निकालकर रोशनी की। प्रभाकर सिंह ने देखा कि ऊपर का भाग खुल जाने से उस चबूतरे के अन्दर नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ लगीं दिखाई देती हैं। प्रभाकर सिंह ने रोशनी में उस कोठरी को बड़े गौर से देखा। वहाँ चारों तरफ दीवार में चार आले **(ताक)** थे जिनमें से सिर्फ सामने वाले एक आले में गुलाब का बनावटी एक पेड़ बना हुआ था जिसमें बेहिसाब कलियाँ लगी हुई थीं और सिर्फ चार फूल खिले हुए थे। बाकी के तीनों आले खाली थे।

प्रभाकर सिंह ने उस गुलाब के पेड़ और फूलों को बड़े गौर से देखा और यह जानने के लिए वह पेड़ किस चीज का बना

हुआ है उसे हाथ से अच्छी तरह टटोला। मालूम हुआ कि यह पत्थर या किसी और मजबूत चीज का बना हुआ है।

प्रभाकर सिंह उन खिले हुए चार फूलों को देखकर बहुत ही खुश हुए और इस तरह धीरे-धीरे बुदबुदाने लगे जैसे कोई अपने मन से दिल खोलकर बातें करता हो। उन्होंने ताज्जुब के साथ कहा, "हैं यह चार फूल कैसे! खैर मेरा परिश्रम तो सफल हुआ चाहता है। इन्द्रदेव जी का खयाल ठीक निकला कि वे तीनों औरतें **(जमना, सरस्वती और इंदु)** जरूर उस तिलिस्म के अन्दर चली गई होंगी। अब इन खिले फूलों को देखकर मुझे भी विश्वास होता है कि उन तीनों से तिलिस्म में मुलाकात होगी और मैं उन्हें खोज निकालूँगा, मगर इन्द्रदेव जी ने कहा था कि जितने आदमी इस तिलिस्म में जाएँगे इस पेड़ के उतने ही फूल खिले दिखाई देंगे इसके अतिरिक्त उस कागज में भी ऐसा ही लिखा है अस्तु, यह चौथा आदमी इस तिलिस्म में कौन जा पहुँचा? इस बात का मुझे विश्वास नहीं होता कि किसी लौंडी को भी वे तीनों अपने साथ ले गई होंगी? क्योंकि ऐसा करने के लिए इन्द्रदेव जी ने उन्हें सख्त मनाही कर दी थी। यह संभव है कि विशेष कारण से वे किसी लौंडी को अपने साथ ले भी गई हों, खैर जो होगा देखा जाएगा मगर ऐसा किया तो यह काम उन्होंने अच्छा नहीं किया।

इस तरह बहुत-सी बातें वे देर तक सोचते रहे, साथ ही इसके इस बात पर भी गौर करते रहे कि उन तीनों को तिलिस्म के अन्दर जाने की जरूरत ही क्या पड़ी।

प्रभाकर सिंह बेखटके उन सीढ़ियों के नीचे उतर गये। नीचे उतर जाने के बाद उन्हें पुनः एक सुरंग मिली जिसमें तीस या चालीस हाथ से ज्यादे जाना न पड़ा, जब वे उस सुरंग को खत्म कर चुके तब उन्हें रोशनी दिखाई दी तथा सुरंग के बाहर निकलने पर एक छोटा-सा बाग और कुछ इमारतों पर उनकी निगाह पड़ी। आसमान पर निगाह करने से खयाल हुआ कि दोपहर ढल चुकी है और दिन का तीसरा पहर बीत रहा है।

इस बाग में मकान, बारहदरी, कमरे, दालान, चबूतरे या इसी तरह की इमारतों के अतिरिक्त और कुछ भी न था अर्थात् फूल के अच्छे दरख्त दिखाई नहीं देते थे या अगर कुछ थे भी तो केवल जंगली पेड़ जो कि यहाँ बहते हुए चश्मे के सबब से कदाचित् बराबर ही हरे-भरे बने रहते थे, हाँ केले के दरख्त यहाँ बहुतायत से दिखाई दे रहे थे और उनमें फल भी बहुत लगे हुए थे।

प्रभाकर सिंह थक गये थे इसलिए कुछ आराम करने की नीयत से नहर के किनारे एक चबूतरे पर बैठ गये और वहाँ की इमारतों को बड़े गौर से देखने लगे। कुछ देर बद उन्होंने अपने बटुए में से मेवा निकाला और उसे खाकर चश्मे का बिल्लौर की तरह साफ बहता हुआ जल पीकर संतोष किया।

प्रभाकर सिंह सिपाही और बहादुर आदमी थे, कोई ऐयार न थे, मगर आज हम इनके बगल में ऐयरी का बटुआ लटका हुआ देख रहे हैं इससे मालूम होता है कि इन्होंने समयानुकूल चलने के लिए कुछ ऐयारी जरूर सीखी है, मगर इनका उस्ताद कौन है सो अभी मालूम नहीं हुआ।

हम कह चुके हैं कि वह बाग नाममात्र को बाग था मगर इसमें इमारतों का हिस्सा बहुत ज्यादे था। बाग के बीचोंबीच में एक गोल गुंबद था जिसके चारों तरफ छोटी-छोटी पाँच कोठरियाँ थीं और वह गुंबद इस समय प्रभाकर सिंह की आँखों के सामने था जिसे वह बड़े गौर से देख रहे थे। बाग के चारों तरफ चार बड़ी-बड़ी बारहदरियाँ थीं और उनके ऊपर उतने ही खूबसूरत कमरे बने हुए थे जिसके दरवाजे इस समय बंद थे, सिर्फ पूरब तरफ वाले कमरे के दरवाजे में से एक दरवाजा खुला हुआ था और प्रभाकर सिंह को अच्छी तरह दिखाई दे रहा था।

प्रभाकर सिंह और कमरों तथा दालानों को छोड़ कर उसी बीच वाले गुंबद को बड़े गौर से देख रहे थे जिसके चारों तरफ वाली कोठरियों के दरवाजे बंद मालूम होते थे। कुछ देर बाद प्रभाकर सिंह उठे और उस गुंबद के पास चले गये। एक कोठरी के दरवाजे को हाथ से हटाया तो यह खुल गया अस्तु वह कोठरी के अन्दर चले गये। इस कोठरी की जमीन संगमरमर की थी और बीच में स्याह पत्थर का एक सिंहासन था जिस पर हाथ रखते ही प्रभाकर सिंह का शरीर काँपा और वे चक्कर खाकर जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गये तथा उसी समय उस कोठरी का दरवाजा भी बंद हो

गया।

दिन बीत गया। आधी रात का समय था जब प्रभाकर सिंह की आँख खुली। अँधेरी रात होने के कारण वे कुछ स्थिर नहीं कर सकते थे कि वे कहाँ पर हैं, घबराहट में उन्होंने पहिले अपने हर्बों को टटोला और फिर ऐयारी का बटुआ खोला, ईश्वर को धन्यवाद दिया कि ये सब चीजें उनके पास मौजूद थीं। इसके बाद वे विचारने लगे कि यह स्थान कैसा है तथा हमको अब क्या करना चाहिए। बहुत देर के बाद उन्हें मालूम हुआ कि वे किसी छोटे दालान में हैं और उनके सामने एक घना जंगल है। इस अँधकार के समय में उनकी हिम्मत न पड़ी कि उठकर तिलिस्म में इधर-उधर घूमें या किसी बात का पता लगावें। अस्तु उन्होंने चुपचाप उसी दालान में पड़े रह कर रात बिता दी।

रात बीत गई और सूर्य भगवान का पेशखेमा आसमान पर अच्छी तरह बन गया। प्रभाकर सिंह उठ खड़े हुए और यह जानने के लिए उस दालान में घूमने और दरोदीवार को अच्छी तरह देखने लगे कि वे क्योंकर इस स्थान में पहुँचे तथा उनके यहाँ आने का जरिया क्या है, परन्तु इस बात को उन्हें कुछ भी पता न लगा। उस दालान के सामने जो जंगल था वह वास्तव में बहुत घना था और सिर्फ देखने से इस बात का पता नहीं लगता था कि वह कितना बड़ा है तथा उसके बाद किसी तरह की इमारत है या कोई पहाड़, साथ ही इसके उन्हें इस बात की फिक्र भी थी कि अगर कोई पानी का चश्मा दिखाई दे तो स्नान इत्यादि का काम चले।

जंगल में घूमकर क्या करें और किसको ढूँढें इस विचार में वे बहुत देर तक सोचते और इधर-उधर घूमते रह गये, यहाँ तक कि सूर्य भगवान ने चौथाई आसमान का सफर तै कर लिया और धूप में कुछ गर्मी मालूम होने लगी। उसी समय प्रभाकर सिंह के कान में यह आवाज आई, "हाय, बहुत ही बुरे फँसे, यह मेरे कर्मों का फल है, ईश्वर न करे किसी..." बस इसके आगे की आवाज इतनी बारीक हो गई थी कि प्रभाकर सिंह उसे अच्छी तरह समझ न सके।

इस आवाज ने प्रभाकर सिंह को परेशान कर दिया और खुटके में डाल दिया। आवाज जंगल के बीच में से आई थी अतएव उसी आवाज की सीध पर चल पड़े और उस घने जंगल में ढूँढ़ने लगे कि वह दुखिया कौन और कहाँ है जिसके मुँह से ऐसी आवाज आई है।

प्रभाकर सिंह को ज्यादा ढूँढ़ना न पड़ा। उस जंगल में थोड़ी ही दूर जाने पर उन्हें पानी का एक सुन्दर चश्मा दिखाई दिया और उसी चश्मे के किनारे उन्होंने एक औरत को देखा जो बदहवास और परेशान जमीन पर पड़ी हुई थी और न-मालूम किस तरह की तकलीफ की करवटें बदल रही थी। प्रभाकर सिंह बड़े गौर से उस औरत को देखने लगे क्योंकि वह कुछ जानी-पहचानी-सी मालूम पड़ी थी। उस औरत ने प्रभाकर सिंह को देख के हाथ जोड़ा और कहा, "मेरी जान बचाइए, मैं बेतरह इस आफत में फँस गई हूँ। मुझे उम्मीद थी कि अब कुछ ही देर में इस दुनिया से कूच कर जाऊँगी, परन्तु आपको देखने से विश्वास हो गया कि अभी थोड़ी जिंदगी बाकी है। आप बड़े गौर से देख रहे हैं, मालूम होता है कि आपने मुझे पहिचाना नहीं। मैं आपकी तावेदार लौंडी हरदेई हूँ, आपकी स्त्री और सालियों की बहुत दिनों तक खिदमत कर चुकी हूँ।"

प्रभाकर सिंह : हाँ, अब मैंने तुझे पहिचाना, कला और बिमला के साथ मैंने तुझे देखा था मगर सामना बहुत कम हुआ इसलिए पहचानने में जरा कठिनाई हुई, अच्छा यह तो बता कि तीनों कहाँ हैं?

हरदेई : मैं उन्हीं की सताई होने पर भी उनकी ही खोज में यहाँ आई थी, एक दफे वे तीनों दिखाई देकर पुनः गायब हो गईं आह अब मुझसे बोला नहीं जाता।

प्रभाकर सिंह : तुझे किस बात की तकलीफ है?

हरदेई : मैं भूख से परेशान हो रही हूँ। आज कई दिन से मुझे कुछ भी खाने को नहीं मिला...बस...अब...प्राण निकला ही..

प्रभाकर सिंह : तुझे यहाँ आये कितने दिन हुए?

हरदेई : आज से सात..

बस इससे ज्यादे हरदेई कुछ भी न बोल सकी अस्तु प्रभाकर सिंह ने अपने बटुए में से कुछ मेवा निकाल कर खाने के लिए दिया और हाथ का सहारा देकर उसे बैठाया। मेवा देखकर हरदेई खुश हो गई, भोजन किया और नहर का जल पीकर सम्हल बैठी और बोली, "अब मेरा जी ठिकाने हुआ, अब मैं बखूबी बातचीत कर सकती हूँ।"

प्रभाकर सिंह : **(उसके पास बैठकर)** अच्छा अब बता कि तुझे यहाँ आये कितने दिन हुए और तूने कला, बिमला तथा इंदु को कहाँ और किस अवस्था में देखा तथा क्योंकर उनका साथ छूटा। क्या तू भी उन तीनों के साथ ही इस तिलिस्म में आई थी?

हरदेई : नहीं, मैं तो बेसबब और बिना कसूर के मारी गई। मैंने आज तक अपने मालिकों के साथ कोई बुराई नहीं कि मगर न मालूम उन्होंने क्यों मुझे इस तरह की सजा दी! यद्यपि उन्होंने अपना धर्म बिगाड़ दिया था और जिस तरह सती-साध्वियों को चलना चाहिए उस तरह नहीं चलती थीं, अपनी सफेद और साफ चादर में बदनामी के कई धब्बे लगा चुकी थीं, मगर मैंने आपसे भी इस बात की कभी शिकायत नहीं की और उनका भेद किसी तरह प्रकट होने न दिया, फिर भी अंत में मैं ही कसूरवार समझी गई और मुझी को प्राणदंड दिया गया, परन्तु ईश्वर की कृपा से मैं जीती बच गई। अब मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूँ और जो कुछ कहने को बातें हैं वह आपसे..

प्रभाकर सिंह : **(कुछ घबराकर)** तू क्या कह रही है! क्या कला और बिमला के सतीत्व में धब्बा लग चुका है? और क्या उन दोनों ने अपनी चाल-चलन खराब कर डाली है?

हरदेई : बेशक् ऐसी बात है। आज से नहीं बल्कि आपसे मुलाकात होने के पहिले ही से वे दोनों बिगड़ी हुई है और दो आदमियों से अनुचित प्रेम करके अपने धर्म को बिगाड़ चुकी हैं, बड़े अफसोस की बात है कि इंदुमति को भी उन्होंने अपनी पंक्ति में मिला लिया है। ईश्वर ने इसी पाप का फल उन्हें दिया है। मेरी तरह वे भी इस तिलिस्म में कैद कर दी गई हैं और आश्चर्य नहीं कि वे भी इसी तरह की तकलीफें उठा रही हो। बस इससे ज्यादे और कुछ भी नहीं कहूँगी क्योंकि..

प्रभाकर सिंह : नहीं-नहीं, रुक मत। जो कुछ तू जानती है बेशक् कहे जा, मैं खुशी से सुनने के लिए तैयार हूँ।

हरदेई : अगर मैं ऐसा करूँगी तो फिर मेरी क्या दशा होगी, यही मैं सोच रही हूँ।

हरदेई की बातों ने प्रभाकर सिंह के दिल में एक तरह का दर्द पैदा कर दिया। 'कला और बिमला बदकार हैं और उन्होंने इंदु को भी खराब कर दिया', यह सुन कर उनका क्या हाल हुआ सो वे ही जानते होंगे। नेक और पतिव्रता इंदु की कोई बदनामी करे यह बात प्रभाकर सिंह के दिल में नहीं जम सकती थी मगर कला और बिमला पर उन्हें पहले भी एक दफे शक हो चुका था। जब वे उस घाटी में थे तभी उनकी स्वतंत्रता देख कर उनका मन आशंकित हो गया था मगर जाँच करने पर उनका दिल साफ हो गया था। आज हरदेई ने उन्हें फिर उसी चिंता में डाल दिया, और साथ ही इसके इंदु का भी आँचल गंदला सुनकर उनका कलेजा काँप उठा तथा वे सोचने लगे कि क्या यह बात सच हो सकती है?

केवल इतना ही नहीं, प्रभाकर सिंह के चित्त में चिंता और घृणा के साथ-ही-साथ क्रोध की भी उत्पत्ति हो गई और बहुत विचार करने के बाद उन्होंने सोचा कि यदि वास्तव में हरदेई का कहना सच है तो मुझे फिर उन दुष्टाओं के लिए परिश्रम करने की आवश्यकता ही क्या है, परन्तु सत्य की जाँच तो आवश्यक है इत्यादि सोचते हुए फिर उन्होंने हरदेई से पूछा

प्रभाकर सिंह : हाँ तो जो कुछ असल मामला है तू बेखौफ होकर कहे जा, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तेरी रक्षा करूँगा और

तुझे इस आफत से बचाऊँगा।

हरदेई : यदि आप वास्तव में प्रतिज्ञा करते हैं तो फिर मैं सब बातें साफ-साफ कह दूँगी।

प्रभाकर सिंह : बेशक् मैं प्रतिज्ञा करता हूँ मगर साथ ही इसके यह भी कहता हूँ कि अगर तेरी बात झूठ निकली तो तेरे लिए सबसे बुरी मौत का ढंग तजवीज करूँगा।

हरदेई : बेशक् मैं इसे मंजूर करती हूँ।

प्रभाकर सिंह : अच्छा तो जो कुछ ठीक-ठीक मामला है तू कह जा और बता कि वह सब कहाँ गई और क्या हुई और क्योंकर इस दशा को पहुंची।

हरदेई : अच्छा तो मैं कहती हूँ, सुनिए। कला और बिमला की चालचलन अच्छी नहीं है। आप स्वयं सोच सकते हैं कि जिन्हें ऐसी नौजवानी में इस तरह की स्वतंत्रता मिल गई हो और रहने तथा आनन्द करने के लिए ऐसा स्वर्ग-तुल्य स्थान मिल गया हो तथा दौलत की भी किसी तरह कमी न हो तो वे कहाँ तक अपने चित्त को रोक सकती हैं? खैर जो कुछ हो, कला और बिमला दोनों ही ने अपने लिए दो प्रेमी खोज निकाले और दोनों को औरतों के भेष में ठीक करके अपने यहाँ रख छोड़ा तथा नित्य नया आनन्द करने लगी, मगर साथ ही इसके भूतनाथ से बदला लेने का भी ध्यान उनके दिल में बना रहा और उन दोनों मर्दों से भी इस काम में बराबर मदद माँगती रहीं। वे दोनों मर्द कुछ दिन तक इस घाटी में रह आनन्द करते और फिर कुछ दिनों के लिए कहीं चले जाया करते थे।

प्रभाकर सिंह : **(बात काट कर)** उन दोनों का नाम क्या था?

हरदेई : सो मैं नहीं कह सकती क्योंकि कला और बिमला ने बड़ी कारीगरी से उन दोनों का भेष बदल दिया, कभी-कभी मरदाने भेष में रहने पर भी उसकी सूरत दिखाई नहीं देती थी, इसलिए मैं उनके नाम और ग्राम के विषय में ठीक तौर पर कुछ भी नहीं कह सकती, हाँ इतना जरूर है कि अगर मुझे कुछ मदद मिले तो मैं उन दोनों का पता जरूर लगा सकती हूँ क्योंकि एकांत की अवस्था में छिप-लुक कर इन लोगों की बहुत-सी बातें सुन चुकी हूँ जिसका..

प्रभाकर सिंह : खैर इस बात को जाने दे फिर देखा जाएगा, अच्छा तब क्या हुआ?

हरदेई : बहुत दिनों तक कला और बिमला ने दोनों से संबंध रखा मगर जब इंदु इस घाटी में लाई गई और आपका आना भी यहाँ हुआ तब वे दोनों कुछ दिन के लिए गायब कर दिये गये। मैं ठीक नहीं कह सकती कि वे कहाँ चले गये या क्या हुए। मैं इस किस्से को बहुत मुख्तसर में बयान करती हूँ। फिर जब आप विजयगढ़ और चुनार की लड़ाई में चले गये और बहुत दिनों तक आपके आने की उम्मीद न रही तब पुनः वे दोनों इस घाटी में दिखाई देने लगे। संग और कुसंग का असर मनुष्य के ऊपर अवश्य पड़ा करता है। कुछ ही दिनों के बाद इंदुमति को मैंने उन दोनों में से एक के साथ मुहब्बत करते देखा और इसी कारण से कला, बिमला और इंदुमति में अन्दर-अन्दर कुछ खिंचाव भी आ गया था।

मैं समझती हूँ कि भूतनाथ को इस विषय का हाल जरूर मालूम होगा जिसने उन दोनों को रिश्वत देकर अपने साथ मिला लिया और उस घाटी में आने-जाने का रास्ता देख लिया। इसी बीच में मैंने आपको उस घाटी में देखा। पहिले तो मुझे विश्वास हो गया कि वास्तव में प्रभाकर सिंह ही लड़ाई में नामवरी हासिल करके यहाँ आ गये हैं परन्तु कुछ दिन के बाद मेरा खयाल जाता रहा और निश्चय हो गया कि असल में आपकी सूरत बनाकर यहाँ आने वाला कोई दूसरा ही था।

मैं इस विषय में कला और बिमला को बार-बार टोका करती थी और कहा करती थी कि तुम लोगों के रहन-सहन का यह ढंग अच्छा नहीं है, एक-न-एक दिन इसका नतीजा बहुत ही बुरा निकलेगा, मगर वे दोनों इस बात का कुछ खयाल नहीं करती थी और मुझे यह कहकर टाल दिया करती थीं कि खैर जो कुछ भी हुआ सो हुआ अब ऐसा न होगा। मगर

मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि मेरे रोक-टोक करने से उसके दिल में रंज बैठता जाता है। मैंने अपने काम में और भी कई लोंडियों को शरीक कर लिया मगर इसका नतीजा मेरे लिए अच्छा न निकला।

एक दिन वह आदमी जो आपकी सूरत बना हुआ था जब उस घाटी में आया तो उसके साथ और भी दस-बारह आदमी आये। जब वे लोग कला, विमला और इंदुमति से मिले तो उनका रंग-ढंग देखकर मैं डर गई और एक किनारे हट कर उनका तमाशा देखने लगी। थोड़ी देर के बाद जब संध्या हुई तब कला, विमला और इंदुमति उन सभों को साथ लिए हुए बँगले के अन्दर चली गईं अस्तु इसके बाद क्या-क्या हुआ सो मैं कुछ भी न जान सकी, लाचार मैं अपनी हमजोलियों के साथ जा मिली और भोजन इत्यादि की सामग्री जुटाने के काम में लगी।

पहर रात बीत जने के बाद जब भोजन तैयार हुआ तब सभों ने मिल-जुल कर भोजन किया, तत्पश्चात् हम लोगों ने भी खाना खाया मगर भोजन करने के थोड़ी देर बाद हम लोगों का सिर घूमने लगा जिससे निश्चय हो गया कि आज के भोजन में बेहोशी की दवा मिलाई गई है। खैर जो हो, आधी रात जाते-जाते तक हम सब-की-सब बेहोश होकर दीन-दुनिया को भूल गईं। प्रातःकाल जब मेरी आँख खुली तो मैंने अपने-आपको इसी स्थान पर पड़े हुए पाया। घबड़ाकर उठ बैठी और आश्चर्य के साथ चारों तरफ देखने लगी, उस समय मेरे सिर में बेहिसाब दर्द हो रहा था।

तीन दिन और रात मैं घबड़ाई हुई इस जंगल में और **(हाथ का इशारा करके)** इस पास वाली इमारत और दालान में घूमती रही मगर न तो किसी से मुलाकात हुई और न यहाँ से निकल भागने के लिए कोई रास्ता ही दिखाई दिया। चौथे दिन भूख से बेचैन होकर मैं इसी जंगल में घूम रही थी कि यकायक इंदुमति कुछ दूरी पर दिखाई पड़ी जो कि आपके गले में हाथ डाले हुए धीरे-धीरे पूरब की तरफ जा रही थी। मैं नहीं कह सकती कि वह वास्तव में आप ही के गले में हाथ डाले हुए थी या किसी दूसरे ऐयार के गले में जो आपकी सूरत बना हुआ था।

उसी के पीछे मैंने कला और विमला जी को जाते हुए देखा। मैं खुशी-खुशी लपकती उनकी तरफ बढ़ी मगर नतीजा कुछ भी न निकला। देखते-ही-देखते इसी जंगल और झाड़ियों में घूम-फिर वे सब-की-सब न जाने कहाँ गायब हो गईं, तब से आज तक कई दिन हुए मैं उनकी खोज में परेशान हूँ, अंत में भूख के मारे बदहवास होकर इसी जगह गिर पड़ी और कई पहर तक तन-बदन की भी सुध न रही, जब होश में आई तब आपसे मुलाकात हुई। बस यही तो मुख्तसर हाल है।

हरदेई की बात सुनकर प्रभाकर सिंह के तो होश उड़ गये। वे ऐसे बेसुध हो गये कि उन्हें तनोबदन की सुध बिलकुल ही जाती रही। थोड़ी देर तक तो ऐसा मालूम होता रहा कि वे प्रभाकर सिंह नहीं बल्कि कोई पत्थर की मूरत हैं, इसके बाद उन्होंने एक लंबी साँस ली और बड़े गौर से हरदेई के चेहरे की तरफ देखने लगे। कई क्षण बाद उन्होंने सिर नीचा कर लिया और किसी गहरे चिंता-सागर में डुबकियाँ लगाने लगे। हरदेई मन-ही-मन प्रसन्न होकर उनके चेहरे की तरफ देखने लगी जिसका रंग थोड़ी-थोड़ी देर पर गिरगिट के रंग की तरह बराबर बदल रहा था।

प्रभाकर सिंह के चेहरे पर कभी तो क्रोध, कभी दुःख, कभी चिंता, कभी घबराहट और कभी घृणा की निशानी दिखाई देने लगी। आह, प्रभाकर सिंह के जिस हृदय में इंदुमति का अगाध प्रेम भरा हुआ था उसमें इस समय भयानक रस का संचार हो रहा था। जो वीर हृदय सदैव करुण रस से परिपूरित रहता था वह क्षण मात्र के लिए अद्भुत रस का स्वाद लेकर रौद्र और तत्पश्चात् वीभत्स रस की इच्छा कर रहा है! जिस हृदय में इंदुमति पर निगाह पड़ते ही शृंगार रस की लहरें उठने लगती थीं वह अपनी भविष्य जीवनी पर हास्य करता हुआ अब सदैव के लिए शान्त हुआ चाहता है। आह, इंदुमति के विषय में स्वप्न में भी ऐसे शब्दों के सुनने की क्या प्रभाकर सिंह को आशा हो सकती थी? कदापि नहीं। यह प्रभाकर सिंह की भूल है कि हरदेई की जुबान से विष-भरी अघटित घटना को सुन अनुचित चिंता करने लग गये हैं। वह नहीं जानते कि यह हरदेई वास्तव में हरदेई नहीं है बल्कि कोई ऐयार है। परन्तु हमारे प्रेमी पाठक इस बात को जरूर समझ रहे होंगे कि यह भूतनाथ का शागिर्द रामदास है जिसकी मदद से भूतनाथ ने उस घाटी में पहुँचकर बड़ा ही अनुचित और घृणित व्यवहार किया था। निःसन्देह भूतनाथ ने जमना, सरस्वती और इंदुमति के साथ जो कुछ किया वह ऐयारी के नियम के बिलकुल ही बाहर था। ऐयारी का यह मतलब नहीं है कि वह बेकसूरों के खून से अपने जीवन के

पवित्र चादर में धब्बा लगाए। यदि प्रभाकर सिंह उसकी कार्रवाई का हाल सच्चा-सच्चा सुनते तो न-मालूम उनकी क्या अवस्था हो जाती; परन्तु इस समय रामदास ने उन्हें बड़ा ही धोखा दिया और ऐसी बेढंगी बातें सुनाईं कि उनका पवित्र हृदय काँप उठा और इंदुमति तथा कला और बिमला की तरफ से उन्हें एकदम घृणा उत्पन्न हो गई। तब क्या प्रभाकर सिंह ऐसे बेवकूफ थे कि एक मामूली ऐयार अथवा लौंडी के मुँह से ऐसी अनहोनी बात सुनकर उन्होंने उस पर कुछ विचार न किया और उसे सच्चा मान कर अपने आप से बाहर हो गये? नहीं, प्रभाकर सिंह तो ऐसे न थे परन्तु प्रेम ने उनका हृदय ऐसा बना दिया था कि इंदु के विषय में ऐसी बातें सुन कर वे अपने चित्त को सम्हाल नहीं सकते थे। प्रेम का अगाध समुद्र थोड़ी ही-सी आँच लगने से सूख सकता है, और प्रेमी का मन-मुकुर जरा ही से ठेस लगने से चकनाचूर हो जाता है। अस्तु जो हो प्रभाकर सिंह के दिल की उस समय क्या अवस्था थी वे ही ठीक जानते होंगे या उनको देखकर रामदास कुछ-कुछ समझता होगा क्योंकि वह उनके सामने बैठा हुआ उनके चेहरे की तरफ बड़े गौर से देख रहा था।

नकली हरदेई अर्थात् रामदास के दिल की अवस्था भी अच्छी न थी। वह कहने के लिए तो सब कुछ कह गया परन्तु इसका परिणाम क्या होगा यह सोचकर उसका दिल डाँवाँडोल होने लगा। यद्यपि इस तिलिस्म में फँसकर वह बर्बाद हो चुका था बल्कि थोड़ी देर पहिले तो मौत की भयानक सूरत अपनी आँखों के सामने देख रहा था परन्तु प्रभाकर सिंह पर निगाह पड़ते ही उसकी कायापलट हो गई और उसे विश्वास हो गया कि अब किसी-न-किसी तरह उसकी जान बच जाएगी। परन्तु इंदुमति को बदनाम करके उसका चित्त भी शान्त न रहा और थोड़ी ही देर बाद सोचने लगा कि मैंने यह काम अच्छा नहीं किया। यदि मैं कोई दूसरा ढंग निकालता तो कदाचित् यहाँ से छुटकारा मिल जाता परन्तु अब जल्दी छुटकारा मिलना मुश्किल है क्योंकि मेरी बात का निर्णय किये बिना प्रभाकर सिंह मुझे यहाँ से बाहर नहीं जाने देंगे। अफसोस भूतनाथ को मदद पहुँचाने के खयाल से मैंने व्यर्थ ही इंदु को बदनाम किया। इंदुमति निःसन्देह सती और साध्वी है, उस पर कलंक लगाने का नतीजा मुझे अच्छा न मिलेगा। अफसोस, खैर अब क्या करना चाहिए, जबान से जो बात निकल गई वह तो लौट नहीं सकती। तब? मुझे अपने बचाव के लिए शीघ्र ही कोई तरकीब सोचनी चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि इंदुमति, कला और बिमला घूमती-फिरती इस समय यहाँ आ पहुँचे। यदि ऐसा हुआ तो बहुत ही बुरा होगा, मेरी कलई खुल जाएगी और मैं तुरन्त ही मारा जाऊँगा। यदि मैं उन सभी को बदनाम न किये होता तो इतना डर न था।

इसी तरह की बातें सोचते हुए रामदास का दिल बड़ी तेजी के साथ उछल रहा था। वह बड़ी बेचैनी से प्रभाकर सिंह की सूरत देख रहा था।

बहुत देर तक तरह-तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकर सिंह ने पुनः नकली हरदेई से सवाल किया

प्रभाकर सिंह : अच्छा यह तो बता कि कला और बिमला किसी विषय में किसी दिन तुझसे रंज भी हुई थीं?

हरदेई : **(मन में)** इस सवाल का क्या मतलब? **(प्रकट)** नहीं अगर कभी कुछ रंज हुई थीं तो केवल उसी विषय में जो आपसे बयान कर चुकी हूँ।

इस जवाब को सुनकर प्रभाकर सिंह चुप हो गये और फिर कुछ गौर करके बोले, "खैर कोई बात नहीं देखा जाएगा, यह जगत ही कर्म-प्रधान है, जो जैसा करेगा वैसा फल भोगेगा। यदि वे तीनों इस तिलिस्म के अन्दर हैं तो मैं उन्हें जरूर खोज निकालूँगा, तू सब्र कर और मेरे साथ-साथ रह।"

इतना कहकर प्रभाकर सिंह ने फिर वही छोटी किताब निकाली और पढ़ने लगे जिसे इस तिलिस्म के अन्दर घुसने के पहिले एक दफे पढ़ चुके थे।

प्रभाकर सिंह घंटे भर से ज्यादे देर तक वह किताब पढ़ते रहे और तब तक रामदास बराबर उनके चेहरे की तरफ गौर से देखता रहा। जब वे उस किताब में अपने मतलब की बात अच्छी तरह देख चुके तब यह कहते हुए उठ खड़े हुए कि 'कोई चिंता नहीं, यहाँ हमारे लिए खाने-पीने का सामान बहुत कुछ मिल जाएगा और हम उन सभी को जल्द ही खोज

निकालेंगे। **(नकली हरदेई से)** आ तू भी हमारे साथ चली आ'।

रामदास उस किताब के पढ़ने और इन शब्दों के कहने से समझ गया कि उस किताब में जरूर इस तिलिस्म का ही हाल लिखा हुआ है, अगर किसी तरह वह किताब मेरे हाथ लग जाय तो सहज ही में यहाँ से निकल भागूँ बल्कि और भी बहुत-सा काम निकालूँ।

रामदास अर्थात् नकली हरदेई को साथ लिए हुए प्रभाकर सिंह उसी जंगल में घुस गये और दक्षिण झुकते हुए पूरब की तरफ चल निकले। आधे घंटे तक बराबर चले जाने के बाद उन्हें एक बहुत ऊँची दीवार मिली जिसकी लंबाई का वे कुछ अंदाज नहीं कर सकते थे और न इसकी जाँच करने की उन्हें कोई जरूरत ही थी। इस दीवार में बहुत दूर तक ढूँढ़ने के बाद उन्हें एक छोटा-सा दरवाजा दिखाई दिया। वह दरवाजा लोहे का बना हुआ था मगर उसमें ताला या जंजीर वगैरह का कुछ निशान नहीं दिखाई देता था। रामदास का ध्यान किसी दूसरी तरफ था तथापि वह जानना चाहता था कि यह दरवाजा क्योंकर खुलता है, परन्तु प्रभाकर सिंह ने उसे खोलने के लिए जो कुछ कार्रवाई की वह देख न सका। यकायक दरवाजा खुल गया और प्रभाकर सिंह ने उसके अन्दर कदम रखा तो रामदास को भी अपने साथ आने के लिए कहा।

प्रभाकर सिंह और रामदास दरवाजे के अन्दर जाकर कुछ ही दूर आगे बढ़े होंगे कि दरवाजा पुनः ज्यों-का-त्यों बंद हो गया। प्रभाकर सिंह एक ऐसे बाग में पहुँचे जहाँ केले और अनार के पेड़ बहुतायत के साथ लगे हुए थे और पानी का एक सुन्दर चश्मा भी बड़ी खूबसूरती के साथ चारों तरफ बह रहा था। इस बाग के अन्दर एक छोटा-सा बंगला भी बना हुआ था, जिसमें कई कोठरियाँ थीं और इस बंगले के चारों तरफ संगमरमर के चार चबूतरे बने हुए थे। बस इस बाग में इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था। प्रभाकर सिंह ने वहाँ के पके हुए स्वादिष्ट केले और अनार से पेट भरा और चश्मे का जल पीकर कुछ शान्त हुए तथा नकली हरदेई से भी ऐसा ही करने के लिए कहा।

जब आदमी की तबीयत परेशान होती है तो थोड़ी-सी भी मेहनत बुरी मालूम होती है और वह बहुत जल्द थक जाता है। प्रभाकर सिंह का चित्त बहुत ही व्यग्र हो रहा था और चिंता ने उदास और हताश भी कर दिया था अतएव आज थोड़ी ही मेहनत से थककर वे संगमरमर के चबूतरे पर आराम करने की नियत से लेट गये और साथ ही निद्रादेवी ने भी उन पर अपना अधिकार जमा लिया।

यहाँ प्रभाकर सिंह ने बहुत ही बुरा धोखा खाया। नकली हरदेई की बातों ने उन्हें अधमरा कर ही दिया था और इस दुनिया से वे एक तौर पर विरक्त हो चुके थे, कारण यही था कि उन्होंने नकली हरदेई को पहचाना न था, अगर इन बातों के हो जाने के बाद भी वे जाँच कर लेते तो कदाचित् सम्हल जाते परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया और नकली हरदेई को वास्तव में हरदेई मानकर अपने भाग्य का सब दोष समझ लिया, यही सबब था कि यहाँ पर भी वे रामदास की तरफ से बिलकुल ही बेफिक्र बने रहे और चबूतरे पर लेटकर बेफिक्री के साथ खुर्राटे लेने लगे।

प्रभाकर सिंह को निद्रा के वशीभूत देखकर रामदास चौकन्ना हो गया। उसने ऐयारी के बटुए में से जिसे वह बड़ी सावधानी से छिपाए हुए था, बेहोशी की दवा निकाली और होशियारी से प्रभाकर सिंह को सुँघाया। जब उसे विश्वास हो गया कि अब ये बेहोश हो गये तब उनकी जेब में से वह किताब निकाल ली जिसमें इस तिलिस्म का हाल लिखा हुआ था और जिसे प्रभाकर सिंह दो दफे पढ़ चुके थे।

किताब निकालकर उसने बड़े गौर से थोड़ा-सा पढ़ा तब बड़ी प्रसन्नता के साथ सिर हिलाकर उठ खड़ा हुआ और दिल्लगी के ढंग पर बेहोश प्रभाकर सिंह को झुककर सलाम करता हुआ एक तरफ को चला गया।

बेहोशी का असर दूर हो जाने पर जब प्रभाकर सिंह की आँखें खुलीं तो वे घबड़ाकर उठ बैठे और बेचैनी से चारों तरफ देखने लगे। आसमान की तरफ निगाह दौड़ाई तो मालूम हुआ कि सूर्य भगवान का रथ अस्तांचल को प्राप्त कर चुका है परन्तु अभी अँधकार को मुँह दिखाने की हिम्मत नहीं पड़ती, वह केवल दूर ही से ताक-झाँक रहा है। हरदेई को जब देखना चाहा तो निगाहों की दौड़-धूप से उसका कुछ भी पता न लगा। तब वे लाचार होकर उठ बैठे और उसे इधर-उधर ढूँढ़ने लगे, परन्तु बहुत परिश्रम करने पर भी उसका पता न लगा। आखिर वे पुनः उस चबूतरे पर बैठकर तरह-तरह की

बातें सोचने लगे।

"हरदेई कहाँ चली गई। इस बाग में जहाँ तक संभव था अच्छी तरह खोज चुका मगर उसका कुछ भी पता न लगा। तब वह गई कहाँ? इस बाग के बाहर हो जाना तो उसके लिए बिलकुल ही असंभव है, तो क्या उसे किसी तरह की मदद मिल गई? मगर मदद भी मिली होती या कोई उसका दोस्त यहाँ आया होता तो भी बिना मेरी आज्ञा के यहाँ से चले जाना मुनासिब न था **(अपना सर पकड़ के)** ओफ, सर में बेहिसाब दर्द हो रहा है। मालूम होता है कि जैसे किसी ने बेहोशी की दवा का मुझ पर प्रयोग किया हो। ठीक है, बेशक यह सरदर्द उसी ढंग का है। तो यह हरदेई की सूरत में वह कोई ऐयार तो नहीं था जिसने मुझे धोखा दिया हो। **(घबराहट के साथ जेब टटोल के)** आह वह किताब तो जेब में है ही नहीं! क्या कोई ले गया? या हरदेई ले गई? **(पुनः उस किताब को अच्छी तरह खोज कर)** हैं, वह किताब निःसन्देह गायब हो गई और ताज्जुब नहीं कि वही किताब लेने की नियत से उसे ऐयार ने मुझे बेहोशी की दवा दी हो और इसी किताब की मद पाकर यहाँ से चला गया हो। अगर वास्तव में ऐसा हुआ तो बहुत ही बुरा हुआ और मैंने बेढ़ब धोखा खाया। लेकिन अगर वह वास्तव में कोई ऐयार था तो कला, बिमला और इंदुमति वाली बात भी उसने झूठ ही कही होगी। ऐसी अवस्था में मैं उसका पता लगाए बिना नहीं रह सकता और इस काम में सुस्ती करना अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाड़ी मारना है।"

इत्यादि बातों को सोच कर प्रभाकर सिंह पुनः उठ खड़े हुए नकली हरदेई को खोजने लगे। अबकी दफे उनका खोजना बड़ी सावधानी के साथ था यहाँ तक कि एक-एक पेड़ के नीचे और खोज-खोज कर वे उसकी टोह लेने लगे। यकायक केलों के झुरमुट में उन्हें कोई कपड़ा दिखाई दिया, जब उसके पास गये और अच्छी तरह देखा तो मालूम हुआ कि वह हरदेई का कपड़ा है। मुलाकात होने के समय वह यही कपड़ा पहिने हुए थी। और भी अच्छी तरह देखने पर मालूम हुआ कि वह साड़ी का एक भाग है और खून से तर हो रहा है। वहाँ जमीन और पेड़ों के निचले हिस्से पर भी खून के छींटे दिखाई दिये।

अब प्रभाकर सिंह का खयाल बदल गया और वह सोचने लगा कि क्या यहाँ कोई हमारा दुश्मन आ पहुँचा और हरदेई उसके हाथ से मारी गई या जख्मी हुई! ताज्जुब नहीं कि वह हरदेई को गिरफ्तार भी कर ले गया हो। परन्तु यहाँ दूसरे आदमी का आना बिलकुल ही असंभव है? हाँ हो सकता है कि कला, बिमला और इंदु यहाँ आ पहुँची हों और उन्होंने हरदेई को दुश्मन समझ के उसका काम तमाम कर दिया हो? ईश्वर ही जाने क्या मामला है, पर वह तिलिस्मी किताब मेरे कब्जे से निकल गई, यह बहुत ही बुरा हुआ।

इत्यादि बातें सोचते हुए प्रभाकर सिंह बहुत ही परेशान हो गये। वे और भी घूम-फिरकर हरदेई के विषय में कुछ पता लगाने का उद्योग करते परन्तु रात की अंधेरी घिर आने के कारण कुछ भी न कर सके। साथ ही इसके सर्दी भी मालूम होने लगी और आराम करने के लिए वे आड़ की जगह तलाश करने लगे।

आज की रात प्रभाकर सिंह ने उसी बाग के बीच वाले बँगले में बिताई और तरह-तरह की चिंता में रात-भर जागते रहे। तिलिस्मी किताब के चले जाने का दुःख तो उन्हें था ही परन्तु इस बात का खयाल उन्हें बहुत ज्यादे था कि अगर वह किताब किसी दुश्मन के हाथ में पड़ गई होगी तो वह इस तिलिस्म में पहुँचकर बहुत कुछ नुकसान पहुँचा सकेगा और यहाँ की बहुत-सी अनमोल चीजें भी ले जाएगा।

यद्यपि वह किताब इस तिलिस्म की चाभी न थी और न उसमें यहाँ का पूरा-पूरा हाल ही लिखा हुआ था तथापि वह यहाँ के मुख्तसर हाल का गुटका जरूर थी और उसमें की बहुत-सी बातें इन्द्रदेव ने जरूरी समझ कर नोट करा दी थीं। प्रभाकर सिंह उसे कई दफे पढ़ चुके थे परन्तु फिर भी उसके पढ़ने की जरूरत थी। इस समय अपनी भूल से वे शर्मिन्दा हो रहे थे और सोचते थे कि इस विषय में इन्द्रदेव के सामने मुझे बेवकूफ बनाना पड़ेगा।

ज्यों-त्यों करके रात बीत गई। सवेरा होते ही प्रभाकर सिंह बँगले के बाहर निकले। मामूली कामों से छुट्टी पाकर चश्मे के जल से स्नान किया और संध्या-पूजा करके पुनः बँगले के अन्दर चले गये। कई कोठरियों में घूमते-फिरते वे एक ऐसी

कोठरी में पहुँचे जिसकी लंबाई-चौड़ाई यहाँ की सब कोठरियों से ज्यादे थी। यहाँ चारों तरफ की दीवारों में बड़ी-बड़ी अलमारियाँ बनी हुई थीं और उन सभी के ऊपर नंबर लगे थे। सात नंबर की अलमारी उन्होंने किसी गुप्त रीति से खोली और उसके अन्दर चले गये। नीचे उतर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं अस्तु उसी राह से प्रभाकर सिंह नीचे उतर गये और एक दालान में पहुँचे। बटुए में से मोमबत्ती निकालकर रोशनी की तो मालूम हुआ कि वह दालान लंबा-चौड़ा है और यहाँ की जमीन में बहुत-सी लोहे की नालियाँ बनी हुई हैं जो सड़क का काम देने वाली हैं तथा उन पर छोटे-छोटे बहुत-सी गाड़ियाँ रखी हुई हैं जिन पर सिर्फ एक आदमी के बैठने की जगह है। दालान के चारों तरफ दीवारों में बहुत-से रास्ते बने हुए हैं जिनमें से होकर वे लोहे की सड़कें न-मालूम कहाँ तक चली गई हैं।

गौर से देखने पर प्रभाकर सिंह को मालूम हुआ कि उन छोटी-छोटी गाड़ियों पर पीठ की तरफ नंबर लगे हुए हैं और उन नंबरों के नीचे कुछ लिखा हुआ भी है। प्रभाकर सिंह बड़ी उत्कंठा से पढ़ने लगे। एक गाड़ी पर लिखा हुआ था 'जमानिया दुर्ग' दूसरी पर लिखा हुआ था 'खास बाग' तीसरी पर लिखा हुआ था 'चुनार विक्रमी केंद्र' चौथी पर लिखा हुआ था 'केंद्र' इसी तरह किसी पर 'मुकुट' किसी पर 'सूर्य' और किसी पर 'सभा-मंडप' लिखा हुआ था, मतलब यह है कि सभी गाड़ियों पर कुछ-न-कुछ लिखा हुआ था। सवार होने के साथ ही वह गाड़ी चलने लगी। दालान के बाहर हो जाने पर मालूम हुआ कि वह किसी सुरंग के अन्दर जा रही है। जैसे-जैसे वह गाड़ी आगे बढ़ती जाती थी वैसे-वैसे उसकी चाल भी तेज होती जाती थी और हवा के झपेटे में भी अच्छी तरह लग रहे थे, यहाँ तक कि उनके हाथ की मोमबत्ती बुझ गई और हवा के झपेटों से मजबूर होकर उन्होंने अपनी दोनों आँखें बंद कर लीं।

आधे घंटे तक तेजी के साथ चले जाने के बाद गाड़ी एक ठिकाने पहुँचकर रुक गई। प्रभाकर सिंह ने आँखें खोलकर देखा तो उजाला मालूम हुआ। वे गाड़ी से नीचे उतर पड़े और गौर से चारों तरफ देखने लगे। वह स्थान ठीक उसी तरह का था जैसा कि कला और बिमला के रहने का स्थान था और उसे देखते ही प्रभाकर सिंह को शक हो गया कि हम पुनः उसी ठिकाने पहुँच गये जहाँ कला और बिमला और इंदु मुलाकात हुई थी परन्तु वहाँ की जमीन पर पहुँचकर उनका खयाल बदल गया और वे पुनः दूसरी निगाह से उस स्थान को देखने लगे।

यहाँ भी ठीक उसी ढंग का बँगला बना हुआ था। जैसा कि कला और बिमला के रहने वाली घाटी में था मगर इसके पास मौलसिरी (मालश्री) के पेड़ न थे। दक्षिण तरफ पहाड़ के ऊपर चढ़ जाने के लिए सीढ़ियाँ दिखाई दे रही थीं और जहाँ पर वह सीढ़ियाँ खत्म हुई थीं वहाँ एक सुन्दर मंदिर बना हुआ था जिसके ऊपर का सुनहरा शिखर ध्वजा और त्रिशूल सूर्य की रोशनी पड़ने से बड़ी तेजी के साथ चमक रहा था।

जब प्रभाकर सिंह गाड़ी से नीचे उतर पड़े तो वह गाड़ी पीछे की तरफ से तेजी के साथ चली गई जिस तेजी के साथ यहाँ आई थी। प्रभाकर सिंह चारों तरफ अच्छी तरह देखने के बाद दक्षिण तरफ वाली पहाड़ी के नीचे चले गये और सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। जब तमाम सीढ़ियाँ खतम कर चुके तब उस मंदिर के अन्दर जाने वाला फाटक मिला अस्तु प्रभाकर सिंह उस फाटक के अन्दर चले गये।

इस पहाड़ी के ऊपर चढ़ने वाला इस मंदिर के अन्दर जाने के सिवाय और कहीं भी नहीं जा सकता था क्योंकि मंदिर के चारों तरफ बहुत दूर तक फैली हुई ऊँची-ऊँची जालीदार चारदीवारी थी जिसके उत्तर तरफ सिर्फ एक फाटक था जो इन सीढ़ियों के साथ मिला हुआ था अर्थात् इस सिलसिले की कई सीढ़ियाँ फाटक के अन्दर तक चली गई थीं। सीढ़ियों के अगल-बगल से भी कोई रास्ता या मौका ऐसा न था जिसे लाँघ या कूदकर आदमी दूसरी तरफ निकल जा सके। यह पहाड़ बहुत बड़ा और ऊपर से प्रशस्त था बल्कि यह कह सकते हैं कि ऊपर से कोसों तक चौड़ा था परन्तु इस मंदिर में से न तो कोई उस तरफ जा सकता था और न उस तरफ से कोई इस मंदिर के अन्दर आ सकता था।

प्रभाकर सिंह ने उस मंदिर और चारदीवारी को बड़े गौर से देखा। मंदिर के अन्दर किसी देवता की मूर्ति न थी, केवल एक फव्वारा बीचोंबीच बना हुआ था और दीवारों पर तरह-तरह की सुन्दर तस्वीरें लिखी हुई थीं। मंदिर के आगे सभामंडप में लोहे के बड़े-बड़े सन्दूक रखे हुए थे मगर उनमें ताले का स्थान बिलकुल खाली था अर्थात् यह नहीं जाना जाता था कि इसमें ताला लगाने की भी कोई जगह है या नहीं।

उन लोहे के सन्दूकों को भी अच्छी तरह देखते प्रभाकर सिंह मंदिर के बाहर निकले और खड़े होकर कुछ सोच ही रहे थे कि उस जालीदार चारदीवारी के बाहर मैदान में मंदिर की तरफ आती हुई कई औरतों पर निगाह पड़ी। प्रभाकर सिंह घबरा कर दीवार के पास चले गए और इसके सूराखों में से उन औरतों को देखने लगे। इस दीवार के सूराख बहुत बड़े-बड़े थे, यहाँ तक कि आदमी का हाथ बखूबी उन सूराखों के अन्दर जा सकता था।

प्रभाकर सिंह ने देखा कि कला, विमला और इंदुमति धीरे-धीरे इसी मंदिर की तरफ चली आ रही हैं और उन तीनों के चेहरे से हद दरजे की उदासी और परेशानी टपक रही है। उस समय प्रभाकर सिंह को हरदेई वाली बात भी याद आ गई मगर क्रोध आ जाने पर भी उनका दिल उन तीनों के पास गये बिना बहुत बेचैन होने लगा। तथा वे दीवार के पार जाकर उन सभों से मिल नहीं सकते थे तथापि सोचने लगे कि अब इन लोगों के साथ कैसा बर्त्ताव करना चाहिए? हरदेई की जुबानी जो कुछ सुना है उसे साफ-साफ कह देना चाहिए या धीरे-धीरे सवाल करके उन बातों की जाँच करनी चाहिए।

धीरे-धीरे चलकर वे तीनों औरतें भी मंदिर की दीवार के पास आ पहुँची और एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगीं।

इंदुमति : **(कला से)** बहिन, अभी तक समझ में नहीं आया कि हम लोग किस तरह इस तिलिस्म के अन्दर आकर फँस गई।

कला : मेरी बुद्धि भी किसी बात पर नहीं जमती और न खयाल ही को आगे बढ़ने का मौका मिलता है। अगर कोई दुश्मन भी हमारी घाटी में आ पहुँचा होता तो समझते कि यह सब उसी की कार्रवाई है मगर..

विमला : भला यह कैसे कह सकते हैं कि कोई दुश्मन वहाँ नहीं आया? अगर नहीं आया तो यह मुसीबत किसके साथ आई? हाँ यह जरूर कहेंगे कि प्रकट में सिवाय प्रभाकर सिंह जी के और कोई आया हुआ मालूम नहीं हुआ और न इसी बात का पता लगा कि हमारी लौंडियों में से किसी की नीयत खराब हुई या नहीं।

इंदुमति : **(लंबी साँस लेकर)** हाय! इस बात का भी कुछ पता नहीं लगा कि उन पर **(प्रभाकर सिंह)** क्या बीती? एक तो लड़ाई में जख्मी होकर वे स्वयं कमजोर हो रहे थे, दूसरे यह नई आफत और आ पहुँची! ईश्वर ही कुशल करे!

विमला : हाँ बहिन, मुझे भी जीजाजी के विषय में बड़ी चिंता लगी हुई है परन्तु साथ ही इसके मेरे दिल में इस बात का भी बड़ा ही खटका लगा हुआ है कि उन्होंने बदन खोलकर अपने जख्म जो घोर संग्राम में लगे थे हम लोगों को क्यों नहीं देखने दिये! इसके अतिरिक्त हम लोगों के भोजन में बेहोशी की दवा देने वाला कौन था? इस बात को जब मैं विचारती हूँ...**(चौंककर)** इस चारदीवारी के अन्दर कौन है?

कला : अरे, यह तो जीजाजी मालूम पड़ते हैं!

बात करते-करते विमला की निगाह मंदिर की चारदीवारी के अन्दर जा पड़ी जहाँ प्रभाकर सिंह खड़े थे और नजदीक होने के कारण इन सभों की बातें सुन रहे थे। दीवार के जालीदार सूराख बहुत बड़े होने के कारण इनका चेहरा विमला को अच्छी तरह दिखाई दे गया था।

कला, विमला और इंदु लपक कर प्रभाकर सिंह के पास आ गईं। प्रभाकर सिंह भी अपने दिल का भाव छिपाकर इन लोगों से बातचीत करने लगे।

प्रभाकर सिंह : तुम तीनों यहाँ पर किस तरह आ पहुँचीं? मैं तुम लोगों की खोज में बहुत दिनों से बेतरह परेशान हो रहा हूँ। लड़ाई से लौटकर जब मैं तुम्हारी घाटी में गया तो उसे बिलकुल ही उजाड़ देखकर मैं हैरान रह गया।

इंदुमति : यही बात मैं आपसे पूछने वाली थी मगर..

बिमला : ताज्जुब की बात है कि आप कहते हैं कि लड़ाई से लौटकर जब उस घाटी में आये तो उसे बिलकुल उजाड़ पाया। क्या लड़ाई से लौटने के बाद आप हम लोगों से नहीं मिले? और आपको घायल देखकर हम लोगों ने इलाज नहीं करना चाहा? या यह कहिए कि आपका जख्मी घोड़ा आपको लड़ाई में से बचाकर भागता हुआ क्या हमारी घाटी के बाहर तक नहीं आया था!

प्रभाकर सिंह : नमालूम तुम क्या कह रही हो? मैं लड़ाई से भाग कर नहीं आया बल्कि प्रसन्नता के साथ महाराज सुरेन्द्रसिंह से विदा होकर तुम्हारी तरफ आया था।

इंदुमति : **(ऊँची साँस लेकर)** हाय, बड़ा ही अनर्थ हुआ! हम लोग बेढ़ब धोखे में डाले गये? हाय, आपका जख्मों को छिपाना हमें खुटके में डाल चुका था, परन्तु प्रेम! तेरा बुरा हो! तूने ही मुझे सम्हलने नहीं दिया।

प्रभाकर सिंह : **(मन में)** मालूम होता है कि हरदेई का कहना ठीक है और कोई दूसरा गैर आदमी मेरी सूरत बन कर इन लोगों के पास जरूर आया था, परन्तु इंदु के भाव से यह नहीं जाना जाता कि इसने जान-बूझकर उसके साथ..अस्तु जो हो, संभव है कि यह अपने बचाव के लिए मुझे बनावटी भाव दिखा रही हो, हाँ यह निश्चय हो गया कि हरदेई एकदम झूठी नहीं है, कुछ-न-कुछ दाल में काला अवश्य है। **(प्रकट)** मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कर रही हो, खुलासा कहते तो मालूम हो और विचार किया जाय कि मामला क्या है? क्या तुम्हारे कहने का वास्तव में यही मतलब है कि मैं लड़ाई से लौटकर तुम लोगों से मिल चुका हूँ?

इंदुमति : बेशक्! आपका जख्मी घोड़ा आपके शरीर को बचाता हुआ वहाँ तक ले आया था और हम लोग आपको जबकि आप बिलकुल बेहोश थे उठा कर घाटी के अन्दर ले आए थे।

प्रभाकर सिंह : मगर ऐसा नहीं हुआ। हरदेई ने तुम लोगों का पर्दा खोलते समय यह भी कहा था कि कोई गैर आदमी प्रभाकर सिंह बन कर इस घाटी में आया था और बहुत दिनों तक इंदुमति ने उनके साथ..

इंदुमति : **(बात काट कर)** क्या यह बात हरदेई ने आपसे कही थी?

प्रभाकर सिंह : हाँ बेशक्! साथ ही इसके **(बिमला की तरफ देख के)** तुम लोगों के गुप्त प्रेम का हाल भी हरदेई ने मुझसे कह दिया था।

इंदुमति : हाय! अब मैं क्या करूँ? **(आसमान की तरफ देख के)** हे सर्वशक्तिमान जगदीश! तू ही मेरा न्याय करने वाला है!

इतना कहते-कहते इंदुमति की आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी।

बिमला : मालूम होता है कि हरदेई ने मेरे साथ दुश्मनी की।

प्रभाकर सिंह : बेशक्।

बिमला : और उसी ने घाटी में आपसे मिल कर..

प्रभाकर सिंह : **(बात काट कर)** नहीं, वह मुझसे घाटी में नहीं मिली बल्कि तुम लोगों की सताई हुई हरदेई इसी तिलिस्म के अन्दर मुझसे मिली थी। बेशक् उसने तुम लोगों का भंडा फोड़ के, तुम लोगों के साथ बड़ी दुश्मनी की, मगर वह ऐसा क्यों न करती? तुम लोगों ने भी तो उसके साथ बड़ी बेदर्दी का बर्त्ताव किया था।

प्रभाकर सिंह के मुँह से इतना सुनते ही कला, विमला और इंदुमति ने अपना माथा ठोंका और इसके बाद इंदुमति ने एक लंबी साँस लेकर प्रभाकर सिंह से कहा। "अगर मुझमें सामर्थ्य होती तो मैं जरूर अपना कलेजा फाड़कर आपको दिखाती, हाँ जरूरी दिखाती, नहीं-नहीं दिखाऊँगी, मेरे में इतनी सामर्थ्य है, परन्तु अफसोस! हम लोगों के पास इस समय कोई हर्वा नहीं है, और आप ऐसी जगह खड़े हैं जहाँ..

विमला : अच्छा कोई चिंता नहीं जिसने धर्म को नहीं छोड़ा है ईश्वर आपका मददगार है! आप पहिले हम लोगों के पास आइए फिर जो कुछ होगा देखा जाएगा।

प्रभाकर सिंह : मैं भी यही चाहता हूँ परन्तु क्योंकर तुम लोगों के पास आ सकता हूँ, यह विचारने की बात है।

बिमला : आप यदि उस सामने वाली पहाड़ी के ऊपर चढ़ते तो ऊपर-ही-ऊपर यहाँ तक आ जाते जहाँ मैं खड़ी हूँ और अब भी आप ऐसा कर सकते हैं, या आज्ञा कीजिए तो हम लोग स्वयं उस राह से घूमकर आपके पास..

विमला और कुछ कहना ही चाहती थी कि राक्षस की तरह की भयानक सूरत का एक आदमी हाथ में नंगी तलवार लिए हुए कला, विमला और इंदुमति की तरफ आता प्रभाकर सिंह को दिखाई पड़ा क्योंकि वह तीनों के पीछे की तरफ से आ रहा था जिधर प्रभाकर सिंह का सामना पड़ता था।

प्रभाकर सिंह : **(ताज्जुब के साथ)** विमला, क्या बता सकती हो कि वह आदमी कौन है जो तुम लोगों की तरफ आ रहा है?

विमला, कला और इंदुमति ने घबड़ाकर पीछे की तरफ देखा और तीनों एकदम चिल्ला उठीं। बिमला ने चिल्लाते हुए आँसू गिराते हुए प्रभाकर सिंह से कहा। "बचाइए बचाइए, आप जल्दी यहाँ आकर हम लोगों की रक्षा कीजिए, यही दुष्ट हम लोगों के खून का प्यासा है।"

इतना कहकर वे वहाँ से भागने की चेष्टा करने लगीं परन्तु भागकर जा ही कहाँ सकती थीं। बात-की-बात में वह दुष्ट इन तीनों के पास आ पहुँचा और अपनी जलती हुई क्रोध से भरी आँखों से विमला की तरफ देख कर बोला : "क्यों कम्बख्त! अब बता कि तू मेरे हाथ से बचकर कहाँ जा सकती है? आज मैं तुम लोगों के खून से अपनी प्यासी तलवार को संतुष्ट करूँगा और..."

बस इससे ज्यादे उसने क्या कहा सो प्रभाकर सिंह सुन न सके और न सुनने के लिए वे वहाँ खड़े रह सके। इस पहाड़ी के नीचे उतरकर और सामने वाले पहाड़ पर चढ़कर ऊपर उन लोगों के पास पहुँचने की नीयत से प्रभाकर सिंह दौड़े और तेजी के साथ सीढ़ियाँ उतरने लगे।

प्रभाकर सिंह का मन इस समय बहुत ही व्यग्र हो रहा था और वे सोचते जाते थे कि क्या वहाँ पहुँचते-पहुँचते तक मैं उन तीनों को जीती पाऊँगा और क्या वे दुष्ट मेरा मुकाबला करने के लिए वहाँ मुझे तैयार मिलेगा!

4

अब देखना चाहिए कि नागर से विदा होकर भूतनाथ कहाँ गया और उसने क्या कार्रवाई की।

नागर के मकान से उतरकर भूतनाथ सीधे दक्खिन की तरफ रवाना हुआ और रात-भर बराबर चलता गया। सुबह होते-होते तक वह एक पहाड़ के दालान में पहुँचा जिसके पास एक सुन्दर तालाब था। उस तालाब पर भूतनाथ ठहर गया और कुछ देर आराम करने के बाद जरूरी कामों से निपटने के फेर में पड़ा। जब स्नान-संध्या इत्यादि से छुट्टी पा चुका तो बटुए में से मेवा निकाल कर खाया, जल पिया और इसके बाद पहाड़ पर चढ़ने लगा।

यहाँ से पहाड़ों का सिलसिला बराबर बहुत दूर तक चला गया। भूतनाथ पहाड़ के ऊपर चढ़कर दोपहर दिन चढ़े तक बराबर चलता गया। इसी बीच में उसने कई बड़े-बड़े और भयानक जंगल पार किये और अंत में वह एक गुफा के मुहाने पर पहुँचा जहाँ साखू और शीशम के बड़े-बड़े पेड़ों से अँधकार हो रहा था। भूतनाथ वहाँ एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और किसी का इंतजार करने लगा।

भूतनाथ को वहाँ बैठे हुए घंटे-भर से कुछ ज्यादे देर हुई होगी कि उसका एक शागिर्द वहाँ आ पहुँचा जो इस समय एक देहाती जमींदार की सूरत बना हुआ था। उसने भूतनाथ को, जो इस समय अपनी असली सूरत में था, देखते ही प्रणाम किया और बोला, "मैं श्यामदास हूँ, आपको खोजने के लिए काशी गया हुआ था।"

भूतनाथ सिंहः आओ हमारे पास बैठ जाओ और बोलो कि वहाँ तुमने क्या-क्या देखा और किन-किन बातों का पता लगाया।

श्यामदास : वहाँ बहुत कुछ टोह लेने पर मुझे मालूम हुआ कि प्रभाकर सिंह सही-सलामत लड़ाई पर से लौट आये और जब वे उस घाटी में गये तो जमना, सरस्वती और इंदुमति को न पाकर बहुत ही परेशान हुए। इसके बाद वे इन्द्रदेव के पास गये और अपने दोस्त गुलाबसिंह के साथ कई दिनों तक वहाँ मेहमान रहे।

भूतनाथ सिंहः ठीक है यह खबर मुझे भी वहाँ लगी थी, मैं इन्द्रदेव को देखने के लिए वहाँ गया था क्योंकि आजकल वे बीमार पड़े हुए हैं। अच्छा तब क्या हुआ?

श्यामदास : इसके बाद मैं जमानिया गया, वहाँ मालूम हुआ कि कुँअर गोपाल सिंह की शादी के बारे में तरह-तरह की खिचड़ी पक रही है जिसका खुलासा हाल मैं फिर किसी समय आपसे बयान करूँगा। इसके अतिरिक्त आज पन्द्रह दिन से भैया राजा **(गोपालसिंह के चाचा)** कहीं गायब हो गये हैं। बाबाजी **(दारोगा)** वगैरह उनकी खोज में लगे हुए हैं, बहुत-से जासूस भी चारों तरफ भेजे गये हैं, मगर अभी तक उनका पता नहीं लगा।

भूतनाथ : ऐसी अवस्था में कुँअर गोपालसिंह तो बहुत ही परेशान और दुखी हो रहे होंगे!

श्यामदास : होना तो ऐसा ही चाहिए था मगर उनके चेहरे पर उदासी और तरददुद की कोई निशानी मालूम नहीं पड़ती और इस बात से लोगों को बड़ा ही ताज्जुब हो रहा है। आज तीन-चार दिन हुए होंगे कि कुँअर गोपालसिंह इन्द्रदेव से मिलने के लिए 'कैलाश' गये थे, दोपहर तक रहकर वह पुनः जमानिया लौट गये। सुनते हैं कि इन्द्रदेव भी दो-चार दिन में जमानिया जाने वाले हैं।

भूतनाथ : इन्द्रदेव के बारे में जो कुछ सुना करो उसका निश्चय मत माना करो, वह बड़े विचित्र आदमी हैं और यद्यपि मुझे विश्वास है कि वह मेरे साथ कभी कोई बुराई न करेंगे मगर फिर भी मैं उनसे डरता हूँ। दूसरी बातों को जाने दो उनके चेहरे से इस बात का भी शक नहीं लगता कि आज वह खुश हैं या नाखुश।

श्यामदास : इन्द्रदेव जी चाहे आपके दोस्त हों मगर इस बात का शक जरूर है कि वे जमना और सरस्वती को मदद दे

रहे हैं।

भूतनाथ : शक क्या मुझे तो इस बात का यकीन-सा हो रहा है परन्तु हजार कोशिश करने पर भी इसका मुझे कोई पक्का सबूत नहीं मिला। अभी तक मैं इस विषय का भेद जानने के लिए बराबर कोशिश कर रहा हूं।

श्यामदास : ठीक है परन्तु मैं इसी बात को एक बहुत बड़ा सबूत समझता हूं कि जमना और सरस्वती उस अद्भुत घाटी में रहती हैं जो एक छोटा-सा तिलिस्म समझा जा सकता है, क्या इन्द्रदेव के अतिरिक्त किसी दूसरे आदमी ने उन्हें ऐसी सुन्दर घाटी दी होगी? मुझे तो ऐसा विश्वास नहीं होता।

भूतनाथ : जो हो, मगर फिर भी यह एक अनुमान है, प्रमाण नहीं। खैर इस विषय पर इस समय बहस करने की कोई जरूरत नहीं, मैं आज किसी दूसरे ही तरद्दुद में पड़ा हुआ हूं जिसके सबब से मेरी तबीयत भी बेचैन हो रही है।

श्यामदास : वह क्या?

भूतनाथ : तुम जानते हो कि तुम्हारा भाई रामदास की मदद से मैं जमना, सरस्वती, इंदुमति तथा उनकी लौंडियों को घाटी में एक कुएं के अन्दर ढकेल कर जहन्नुम में पहुंचा चुका हूं।

श्यामदास : जी हाँ, उसी में मेरा भाई भी तो...

भूतनाथ : बेशक् मुझे रामदास के लिए बड़ी चिंता लगी हुई है मगर जिस अवस्था में मैं रामदास को देख कर लौटा हूं उसे विचारने से खयाल होता है कि जमना, सरस्वती और इंदुमति जीती बच गई हों तो कोई ताज्जुब नहीं।

श्यामदास : संभव है कि ऐसा ही हुआ हो, परन्तु जीती बच जाने पर भी मैं समझता हूं कि वे सब कुछ दिन बाद भूख और प्यास की तकलीफ से मर गई होंगी।

भूतनाथ : नहीं ऐसा नहीं हुआ, अभी कल ही मैंने काशी में सुना है कि वे तीनों प्रभाकर सिंह के साथ वरुना नदी के किनारे घूमती-फिरती देखी गई हैं।

श्यामदास : **(चौंक कर)** हैं! अगर ऐसी बात है तो उन लोगों की तरह मेरा भाई भी बच कर निकल भागा होगा!!

भूतनाथ : होना तो ऐसा ही चाहिए था मगर रामदास अभी तक मुझसे नहीं मिला।

श्यामदास : तो आपको किसी जुबानी ऐसा सुना था?

इसके जवाब में भूतनाथ ने बाबू साहब, नागर तथा चन्द्रशेखर का कुछ हाल बयान किया और कहा

भूतनाथ : जमना, सरस्वती और इंदुमति के विषय में मेरा खयाल है कि रामलाल **(बाबू साहब)** भी कुछ जानता होगा, मगी उस समय डाँट-डपट बताने पर भी उसने मुझे कुछ नहीं कहा।

श्यामदास : अगर आप आज्ञा दें और बुरा न मानें क्योंकि वह आपका साला है तो मैं उसे अपने फंदे में फंसाकर असल भेद का पता लगा लूँ। मुझे विश्वास है कि अगर जमना और सरस्वती छूटकर आ गई हैं तो मेरा भाई भी उस आफत से जरूर बच गया होगा।

इतने में भूतनाथ की निगाह मैदान की तरफ जा पड़ी। एक आदमी को अपनी तरफ आते देखकर वह चौंका और बोला

भूतनाथ : देखो-देखो, वह कौन आ रहा है!!

श्यामदास : **(मैदान की तरफ देखकर)** हाँ कोई आ रहा है! ईश्वर करे मेरा भाई रामदास ही हो!

भूतनाथ : मेरे पक्षपाती के सिवाय दूसरा कोई यहाँ कब आ सकता है?

देखते-ही-देखते वह आदमी भूतनाथ के पास आ पहुँचा और झुककर सलाम करने के बाद बोला,"मेरा नाम रामदास है, पहिचान के लिए मैं 'चंचल' शब्द का परिचय देता हूँ। ईश्वर की कृपा से मेरी जान बच गई और मैं राजी-खुशी आप की खिदमत में हाजिर हो गया, खाली हाथ नहीं बल्कि अपने साथ एक ऐसी चीज लाया हूँ जिसे देखकर आप फड़क उठेंगे और बार-बार मेरी पीठ ठोकेंगे।"

भूतनाथ : **(प्रसन्न होकर)** वाह, वाह! तुम जो तारीफ काम करो वह थोड़ा है! तुम्हारे जैसा नेक, ईमानदार और धूर्त शागिर्द पाकर मैं दुनिया में अपने को धन्य मानता हूँ। आओ मेरे पास बैठ जाओ और कहो कि किस तरह तुम्हारी जान बची और मेरे लिए क्या तोहफा लाए हो?

रामदास परिचय लेने के बाद अपने भाई श्यामदास के गले मिला और भूतनाथ के पास बैठकर इस तरह बातचीत करने लगा

रामदास : मेरी जान ऐसी दिल्लगी के साथ और ऐसे ढंग से बची है कि उसे याद करके मैं बार-बार खुश हुआ करता हूँ।

श्यामदास : मैंने अभी-अभी ओस्ताद जी से यही बात कही थी कि अगर जमना, सरस्वती और इंदु बचकर निकल आई हैं तो मेरा भाई भी जरूर बचकर निकल आया होगा।

रामदास : **(ताज्जुब के ढंग पर)** सो क्या! जमना, सरस्वती और इंदुमति छूट कर कैसे निकल आई?

भूतनाथ : कैसे छूट कर निकल आई सो तो मैं नहीं जानता इतना सुना है कि तीनों प्रभाकर सिंह के साथ काशी में वरना नदी के किनारे टहलती हुई देखी गई!

रामदास : कब देखी गई हैं?

भूतनाथ : आज आठ-दस दिन हुए होंगे।

रामदास : और उन्हें देखा किसने?

भूतनाथ : मेरे साले रामलाल ने।

रामदास : झूठ, बिलकुल झूठ! अगर आपने स्वयं अपनी आँखों से देखा होता तब भी मैं न मानता।

भूतनाथ : सो क्यों?

रामदास : अभी चौबीस घंटे भी नहीं हुए होंगे कि मैं उन्हें तिलिस्म के अन्दर फँसी हुई छोड़कर आया हूँ।

भूतनाथ: किस तिलिस्म में?

रामदास : उसी तिलिस्म में, जिस कुएँ में आपने उन तीनों को फेंक दिया था। वह उसी घाटी वाले तिलिस्म का एक रास्ता है। उसके अन्दर गया हुआ आदमी मरता नहीं बल्कि तिलिस्म के अन्दर फँस जाता है, यही सबब है कि उन लोगों के साथ ही मैं भी उस तिलिस्म में जा फँसा। कुछ दिन बाद प्रभाकर सिंह उन तीनों की खोज में उस तिलिस्म के अन्दर गये और वहाँ यकायक मुझसे मुलाकात हो गई। मुझे देखकर वे धोखे में पड़ गये क्योंकि ईश्वर की प्रेरणा से मैं

उस समय भी हरदेई की सूरत में था। प्रभाकर सिंह ने मुझसे कई तरह के सवाल किए और मैंने उन्हें खूब ही धोखे में डाला। उनके पास एक छोटी-सी किताब थी जिसमें उस तिलिस्म का हाल लिखा हुआ था। उसी किताब की मदद से वे तिलिस्म के अन्दर गए थे। मैंने धोखा देकर यह किताब उनकी जेब में से निकाल ली और उसी की मदद से मुझे छुटकारा मिला। तिलिस्म के निकलने ही मैं सीधा आपसे मिलने के लिए इस तरफ रवाना हुआ और उन सभी को तिलिस्म के अन्दर ही छोड़ दिया। **(बटुए में से किताब निकाल और भूतनाथ के हाथ में देकर)** देखिए यही वह तिलिस्मी किताब है, अब आप इसकी मदद से बखूबी उस तिलिस्म के अन्दर जा सकते हैं।

भूतनाथ : **(किताब देखकर और दो-चार पन्ने उलट-पुलट कर रामदास की पीठ ठोंकता हुआ)** शाबाश, तुमने वह काम किया जो आज मेरे किए भी कदाचित् नहीं हो सकता था! वाह वाह वाह! अब मेरे बराबर कौन हो सकता है? अच्छा अब तुम हमारे साथ इस खोह के अन्दर चलो और कुछ खा-पीकर निश्चिन्त होने के बाद मुझसे खुलासे-तौर पर कहो कि उस कुएँ में जाने के बाद क्या हुआ! निःसंदेह तुमने बड़ा काम किया, तुम्हारी जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है! अच्छा यह तो बताओ कि यह तिलिस्मी किताब प्रभाकर सिंह को कहाँ से मिली, क्या इस बात का भी कुछ पता लगा?

रामदास : इसके विषय में मैं कुछ भी नहीं जानता।

भूतनाथ : खैर इसके जाँच करने की कुछ विशेष जरूरत भी नहीं है।

रामदास : मैं समझता हूँ कि आप उस तिलिस्म के अन्दर जरूर जाएँगे और जमना, सरस्वती तथा इंदुमति को अपने कब्जे में करेंगे।

भूतनाथ : जरूर, क्या इसमें भी कोई शक है। अभी घंटे-डेढ़-घंटे में हम और तुम यहाँ से रवाना हो जाएँगे और आधी रात बीतने के पहिले ही वहाँ जा पहुँचेंगे। अब तो हम लोग पास आ गये हैं सिर्फ तीन-चार घंटे का ही रास्ता है। आज के पहिले जमना और सरस्वती का इतना डर न था जितना अब है। अब उनके खयाल से मैं काँप उठता हूँ क्योंकि पहिले तो सिवाय दयाराम के मारने के और किसी तरह का इल्जाम वे मुझ पर नहीं लगा सकती थीं और उस बात का सबूत मिल भी नहीं सकता था क्योंकि मैंने ऐसा किया ही नहीं, परन्तु अब तो वे लोग कई तरह के इल्जाम मुझ पर लगा सकती हैं और बेशक् इधर मैंने उन सभी के साथ बड़ी-बड़ी बुराइयाँ भी की हैं, ऐसी अवस्था में उनका बच जाना मेरे लिए बड़ा ही अनर्थकारक होगा। अस्तु जिस तरह हो सकेगा मैं जमना, सरस्वती, इंदुमति, प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह को भी जान से मारकर बखेड़ा तै करूँगा। हाँ, गुलाबसिंह का पता है, वह कहाँ है और क्या कर रहा है? क्योंकि तुम्हारी जुबानी जो कुछ सुना है उससे मालूम होता है कि वह प्रभाकर सिंह के साथ तिलिस्म के अन्दर नहीं गया।

रामदास : हाँ ठीक है, पर गुलाबसिंह का हाल मुझे कुछ भी मालूम नहीं हुआ। अच्छा मैं एक बात आपसे पूछना चाहता हूँ।

भूतनाथ : वह क्या?

रामदास : आपने अभी जो अपना हाल बयान किया है उसमें चन्द्रशेखर का हाल सुनने से मुझे बड़ा ही ताज्जुब हो रहा है। कृपा कर यह बताइए कि वह चन्द्रशेखर कौन है और आप उससे इतना क्यों डरते हैं? क्या उसे अपने कब्जे में करने की सामर्थ्य आप में नहीं है?

भूतनाथ : **(उसकी याद से काँप कर)** इस दुनिया में मेरा सबसे बड़ा दुश्मन वही है, ताज्जुब नहीं एक दिन उसी की बदौलत जीते-जागते रहने पर भी मुझे यह दुनिया छोड़नी पड़े, वह बड़ा ही बेढब आदमी है, बड़ा ही भयानक आदमी है, तथा ऐयारी में वह कई दफे मुझे जक दे चुका है! आश्चर्य होता है कि उसके बदन पर कोई हर्बा असर नहीं करता! नमालूम उसने किसी तरह का कवच पहिर रखा है या ईश्वर ने उसका बदन ही ऐसा बनाया है! उसके बदन पर मेरी दो तलवारें टूट चुकी हैं। उसकी तो सूरत ही देखकर मैं बदहवास हो जाता हूँ।

रामदास : **(आश्चर्य के साथ)** आखिर वह है कौन?

भूतनाथ : **(कुछ सोच कर)** अच्छा फिर कभी उसका हाल तुमसे कहेंगे, इस समय जो कुछ बातें दिमाग में पैदा हो रही हैं उन्हें पूरा करना चाहिए अर्थात् जमना सरस्वती और इंदुमति के बखेड़े से तो छुट्टी पा लें फिर चन्द्रशेखर को भी देख लिया जाएगा, आखिर वह अमृत पीकर थोड़े ही आया होगा।

इतना कहकर भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और अपने दोनों शागिर्दों को साथ लिए हुए खोह के अन्दर चला गया। इस समय रात घंटे भर से कुछ ज्यादे जा चुकी थी।

5

दूसरी पहाड़ी पर चढ़कर ऊपर-ही-ऊपर जमना, सरस्वती और इंदुमति के पास पहुँचने पर जल्दी करने पर भी प्रभाकर सिंह को आधे घंटे से ज्यादे देर लग गई। "क्या इतनी देर तक दुश्मन ठहर सकता है? क्या इतनी देर तक वे नाजुक औरतें ऐसे भयानक दुश्मन के हाथ से अपने को बचा सकती हैं? क्या इस निर्जन स्थान में कोई उन औरतों का मददगार पहुंच सकता है? नहीं, ऐसी बात तो नहीं हो सकती!" यही सब कुछ सोचते हुए प्रभाकर सिंह बड़ी तेजी के साथ रास्ता तै करके वहाँ पहुँचे जहाँ जमना, सरस्वती और इंदुमति को छोड़ गये थे। उन्हें यह आशा न थी कि उन तीनों से मुलाकात होगी, मगर नहीं, ईश्वर बड़ा ही कारसाज है, उसने इस निर्जन स्थान में भी उन औरतों के लिए एक बहुत बड़ा मददगार भेज दिया जिसकी बदौलत प्रभाकर सिंह के पहुँचने तक वे तीनों दुश्मन के हाथ से बची रह गईं।

प्रभाकर सिंह ने वहाँ पहुँचकर देखा कि जमना, सरस्वती और इंदुमति दुश्मन के खौफ से बदहवास होकर मैदान की तरफ भागी जा रही हैं और एक नौजवान बहादुर आदमी जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है तलवार से उस दुश्मन का मुकाबला कर रहा है जो उन तीनों औरतों को मारने के लिए यहाँ आया था। यह तमाशा देख प्रभाकर सिंह तरद्दुद में पड़ गये और सोचने लगे कि हम उन भागती हुई औरतों को ढाँढस देकर लौटा लावें या पहिले इस बहादुर की मदद करें जो इस समय हमारे दुश्मन का मुकाबला बड़ी बहादुरी के साथ कर रहा है। उन दोनों बहादुरों की अद्भुत लड़ाई को देखकर प्रभाकर सिंह प्रसन्न हो गये। थोड़ी देर के लिए उनके दिल से तमाम कुलफत जाती रही, और वे एकटक उन दोनों की लड़ाई का तमाशा देखने लगे। शैतान जो जमना इत्यादि को मारने आया था यद्यपि बहादुर था और लड़ाई में अपनी तमाम कारीगरी खर्च कर रहा था। मगर उस नकाबपोश के मुकाबले वह बहुत दबा हुआ मालूम पड़ने लगा, यहाँ तक कि उसका दम फूलने लगा और नकाबपोश के मोढ़े पर बैठकर उसकी तलवार दो टुकड़े हो गई।

कुछ देर के लिए लड़ाई रुक गई और दोनों बहादुर हटकर खड़े हो गये। उस शैतान दुश्मन को जिसका नाम इस मौके के लिए हम बेताल रख देते हैं, विश्वास था कि तलवार टूट जाने पर नकाबपोश उस पर जरूर हमला करेगा, मगर नकाबपोश ने ऐसा न किया। वह हटकर खड़ा हो गया और बेताल से बोला, "कहो अब किस चीज से लड़ोगे? मैं उस आदमी पर हर्बा चलाना उचित नहीं समझता जिसका हाथ हथियार से खाली हो।"

इसका जवाब बेताल ने कुछ न दिया, उसी समय नकाबपोश में प्रभाकर सिंह की तरफ देखा और कहा, "मुझे तुम्हारी मदद की कोई जरूरत नहीं है, तुम **(हाथ का इशारा करके)** उन औरतों को सम्हालो और ढाढ़स दो जो इस शैतान के डर से बदहवास होकर भागी जा रही हैं या दुश्मन का मुकाबला करो तो मैं उन्हें जाकर समझाऊँ और यहाँ लौटा न ले आऊँ।"

प्रभाकर सिंह के लिए में यह खयाल बिजली की तरह दौड़ गया कि मैं उन औरतों की तरफ जाता हूँ तो नकाबपोश मुझे नामर्द समझेगा और अगर स्वयं दुश्मन का मुकाबला करके नकाबपोश को औरतों की तरफ जाने के लिए कहता हूँ तो क्या जाने यह भी उन सभी का दुश्मन ही हो और उन औरतों के पास जाकर कोई बुराई का काम कर बैठे। इस खयाल से क्षणमात्र के लिए प्रभाकर सिंह को चुप कर दिया, इसके बाद प्रभाकर सिंह ने कहा, "जो तुम कहो वही करूं।"

नकाबपोश :बेहतर होगा कि तुम उन्हीं औरतों की तरफ जाओ!

"बहुत अच्छा" कह प्रभाकर सिंह बड़ी तेजी के साथ उनकी तरफ लपक पड़े जो भागती हुई अब कुछ-कुछ आँखों की ओट हो चली थीं। वे भागती चली जाती थीं और पीछे की तरफ फिर-फिर कर देखती जाती थीं। दौड़ते-दौड़ते वे एक ऐसे स्थान पर पहुँचीं जिसके आगे एक दरवाजा बना हुआ था जो इस समय खुला था। इन औरतों को इतनी फुर्सत कहाँ कि दीवार की लंबाई-चौड़ाई की जाँच करतीं या दूसरी तरफ भागने की कोशिश करतीं? वे सीधी उस दरवाजे के अन्दर घुस गईं, खास करके इस खयाल से भी कि अगर इसके अन्दर दरवाजा बंद कर लेंगी तो दुश्मन से बचाव हो जाएगा।

उसी समय प्रभाकर सिंह भी नजदीक पहुँच गये और इंदुमति की निगाह प्रभाकर सिंह के ऊपर जा पड़ी। प्रभाकर सिंह ने हाथ के इशारे से उसे रुक जाने के लिए कहा परन्तु उसी समय वह दरवाजा बंद हो गया जिसके अन्दर जमना, सरस्वती और इंदुमति घुस गई थी। प्रभाकर सिंह को यह चिंता उत्पन्न हुई कि यह दरवाजा खुद बंद हो गया या इंदुमति ने जान-बूझकर बंद कर दिया।

थोड़ी ही देर में प्रभाकर सिंह उस दरवाजे के पास पहुँचे और धक्का देकर उसे खोलना चाहा मगर दरवाजा न खुला। प्रभाकर सिंह ने चाहा कि आगे बढ़कर देखें कि यह दीवार कहाँ तक गई है परन्तु उसी समय सरस्वती की आवाज कान में पड़ने से वे रुक गए और ध्यान देकर सुनने लगे। यह आवाज उस दरवाजे के पास दीवार के अन्दर से आ रही थी मानो सरस्वती किसी दूसरे आदमी से बातचीत कर रही है, जैसा कि नीचे लिखा जाता है

सरस्वती : हाय, यहाँ भी दुष्टों से हम लोगों का पिंड न छूटेगा! ये लोग इस तिलिस्म के अन्दर आ क्योंकर गये यही ताज्जुब है!

जवाब : **(जो किसी जानकार आदमी के मुँह से निकली हुई आवाज मालूम पड़ती थी)** खैर अब तो आ ही गये, अब तुम लोगों के निकाले हम लोग नहीं निकल सकते और अब तुम लोग जान बचा ही कर क्या करोगी क्योंकि प्रभाकर सिंह की निगाह में तुम लोगों की कुछ भी इज्जत न रही, उन्हीं की नहीं बल्कि मुझे भी वह सब हाल मालूम हो गया। इस समय तुम लोग उसी पाप का फल भोग रहे हो! अफसोस, मुझे तुम लोगों से ऐसी आशा कदापि न थी! अगर मैं ऐसा जानता तो इस पवित्र घाटी को तुम लोगों के पापमय शरीर से कभी अपवित्र होने न देता।

प्रभाकर सिंह : **(ताज्जुब से मन में)** हैं? क्या यह आवाज इन्द्रदेव की है!

सरस्वती : मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कह रहे हो! क्या किसी दुष्ट ने हम लोगों को बदनाम किया है? क्या किसी कमीने ने हम लोगों पर कलंक का धब्बा लगाना चाहा है? नहीं कदापि नहीं, स्वप्न में भी ऐसा नहीं हो सकता! हम लोगों के पवित्र मनों को डावाँडोल करने वाला इस संसार में कोई भी नहीं है! मैं इसके लिए खुले दिल से कसम खा सकती हूँ।

जवाबः दुनिया में जितने बदकार आदमी होते हैं वे कसम खाने में बहुत तेज होते हैं! मुझसे तुम लोगों की यह चालाकी नहीं चल सकती। जो कुछ मैं इस समय कह रहा हूँ वह केवल किसी से सुनी-सुनाई बातों के कारण नहीं है बल्कि मुझे इस बात का बहुत ही पक्का सबूत मिल चुका है जिससे तुम कदापि इनकार नहीं कर सकती।

प्रभाकरसिंह : **(मन में)** बेशक् वह बात ठीक मालूम होती है जो हरदेई ने मुझ से कही थी।

सरस्वती : कैसा सबूत और कैसी बदनामी? भला मैं भी तो उसे सुनूँ।

जवाबः तुम तो जरूर ही सुनोगी, अभी नहीं तो और घंटे भर में सही। प्रभाकर सिंह के सामने ही मैं इस बात को खोलूँगा और इस कहावत को चरितार्थ करके दिखा दूँगा कि 'छिपत न दुष्कर पाप, कोटि जतन कीजे तऊ'।

सरस्वती : कोई चिंता नहीं, मैं भी अच्छी तरह उस आदमी का मुँह काला करूँगी जिसने हम लोगों को बदनाम किया है और अपने को अच्छी तरह निर्दोष साबित कर दिखाऊँगी।

आवाज : अगर तुम्हारे किये हो सकेगा तो जरूर ऐसा करना।

सरस्वती : हाँ-हाँ जरूर ही ऐसा करूँगी। मेरा दिल उसी समय खटका था जब प्रभाकर सिंह ने कुछ व्यंग्य के साथ बातें की थीं। मैं उस समय उनका मतलब कुछ नहीं समझ सकी थी मगर अब मालूम हो गया कि कोई महापुरुष हम लोगों को बदनाम करके अपना काम निकालना चाहते हैं।

जवाब: इस तरह की बातें तुम प्रभाकर सिंह को समझाना, मुझ पर इसका कुछ भी असर नहीं हो सकता, यदि मैं तुम्हारा नातेदार न होता तो मुझे इतना कहने की कुछ जरूरत भी न थी, मैं तुम लोगों का मुँह भी न देखता और अब भी ऐसा ही करूँगा। मैं नहीं चाहता कि अपना हाथ औरतों के खून से नापाक करूँ। तथापि एक दफे प्रभाकर सिंह के सामने इन बातों को साबित जरूर करूँगा जिसमें कोई यह न कहे कि जमना, सरस्वती और इंदुमति पर किसी ने व्यर्थ ही कलंक लगा! अच्छा अब मैं जाता हूँ, फिर मिलूँगा।

सरस्वती : अच्छा-अच्छा देखा जाएगा, इन चालबाजियों से काम नहीं चलेगा।

बस इसके बाद किसी तरह की आवाज न आई, अस्तु कुछ देर तक और कान लगा कर ध्यान देने के बाद प्रभाकर सिंह पुनः उस दीवार के अन्दर जाने का उद्योग करने लगे। इस खयाल से कि देखें यह दीवार कहाँ पर खतम हुई है वे दीवार के साथ-ही-साथ पूरब तरफ रवाना हुए। दीवार बहुत दूर तक नहीं गई थी, केवल चार या पाँच बिगहे के बाद मुड़ गई थी, अस्तु प्रभाकर सिंह भी घूमकर दूसरी तरफ चल पड़े। बीस-पच्चीस कदम आगे जाने के बाद उन्हें एक खुला दरवाजा मिला। प्रभाकर सिंह उस दरवाजे के अन्दर चले गए और दूर से जमना, सरस्वती और इंदुमति को एक पेड़ के नीचे बैठे देखा जो नीचे की तरफ सिर हुए आँखों से गरम-गरम आँसू गिरा रही थी। क्रोध में भरे हुए प्रभाकर सिंह उन तीनों के पास चले गये और सरस्वती की तरफ देखकर बोले, "वह कौन आदमी था जो अभी तुमसे बातें कर रहा था?"

सरस्वती : मुझे नहीं मालूम कि वह कौन था।

प्रभाकर सिंह : फिर तुमसे इस तरह की बात करने की उसे जरूरत ही क्या थी?

सरस्वती : सो भी मैं कुछ कह नहीं सकती।

प्रभाकर सिंह : हाँ ठीक है, मुझसे कहने की तुम्हें जरूरत ही क्या है! खैर जाने दो, मुझे भी विशेष सुनने की आवश्यकता नहीं है, तो मैं पहिले ही हरदेई की जुबानी तुम लोगों की बदकारियों का हाल सुनकर अपना दिल ठंडा कर चुका था, अब इस आदमी की बातें सुनकर और भी रहा-सहा शक जाता रहा, यद्यपि तुम लोग इस योग्य थीं कि इस दुनिया से उठा दी जातीं और यह पृथ्वी तुम्हारे असह्य बोझ से हल्की कर दी जाती, परन्तु नहीं, उस आदमी की तरह जो अभी तुमसे बातें कर रहा था मैं भी तुम लोगों के खून से अपना हाथ अपवित्र नहीं करना चाहता। खैर तुम दोनों बहिनों से तो मुझे कुछ विशेष कहना नहीं है, रही इंदुमति सो इसे मैं इस समय से सदैव के लिए त्याग करता हूँ। शास्त्र में लिखा हुआ है कि किसी का त्याग कर देना मार डालने के ही बराबर है।

इंदुमति : (रोती हुई हाथ जोड़कर) प्राणनाथ! क्या तुम दुश्मनों की जुबानी गढ़ी-गढ़ाई बातें सुन कर मुझे त्याग कर दोगे!!

प्रभाकर : हाँ त्याग कर दूँगा, क्योंकि जो कुछ बातें तुम्हारे विषय में मैंने सुनी हैं उन्हें यह दूसरा सबूत मिल जाने के कारण मैं सत्य मानता हूँ। केवल इतना ही नहीं, तुम्हारी ही जुबान से उन बातों की पुष्टि हो चुकी है। अब इसकी भी कोई जरूरत नहीं कि तुम लोगों को इस तिलिस्म के बाहर ले जाने का उद्योग करूँ, अस्तु अब मैं जाता हूँ। **(छाती पर हाथ रख कर)** मैं इस वज्र की चोट को इसी छाती पर सहन करूँगा और फिर जो कुछ ईश्वर दिखावेगा देखूँगा, मुझे विश्वास हो गया कि बस मेरे लिए दुनिया इतनी ही थी।

इतना कहकर प्रभाकर सिंह वहाँ से रवाना हो गए। इंदुमति रो-रोकर पुकारती ही रह गई मगर उन्होंने उसकी कुछ भी न सुनी। जिस खिड़की की राह वे इस दीवार के अन्दर गये थे उसी राह से वे बाहर चले आये और उस तरफ रवाना हुए जहाँ नकाबपोश और बेताल को लड़ते हुए छोड़ आये थे।

वहाँ पहुँचकर प्रभाकर सिंह ने दोनों में से एक को भी न पाया, न तो बेताल ही पर निगाह पड़ी और न नकाबपोश ही की सूरत दिखाई दी। ताज्जुब के साथ प्रभाकर सिंह चारों तरफ देखने और सोचने लगे कि कहीं मैं जगह तो नहीं भूल

गया या वे दोनों ही तो आपस में फैसला करके कहीं नहीं चले गये।

कुछ देर तक इधर-उधर ढूंढ़ने के बाद प्रभाकर सिंह एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गये और झुकी हुई गर्दन को हाथ का सहारा देकर तरह-तरह की बातें सोचने लगे। इन्हें इंदुमति को त्याग देने का बहुत ही रंज था और वे अपनी जल्दबाजी पर कुछ देर के बाद पछताने लग गये थे। वे अपने दिल में कहने लगे कि अफसोस, मैंने इस काम में जल्दबाजी की। यद्यपि इंदुमति की बदकारी का हाल सुनकर मेरे सिर से पैर तक आग लग गई थी। मगर मुझे उसका कुछ सबूत भी तो ढूंढ़ लेना चाहिए था। संभव है कि हरदेई इन सभों की दुश्मन बन गई हो और उसने हम लोगों को रंज पहुँचाने के खयाल से ऐसी मनगढंत कहानी कहकर और इंदुमति पर इलजाम लगाकर अपना कलेजा ठंडा किया हो। अगर वास्तव में यही बात हो तो कोई ताज्जुब नहीं क्योंकि हरदेई का इन तीनों के साथ न रहकर अलग ही तिलिस्म के अन्दर दिखाई देना कोई मामूली बात नहीं है बल्कि इसका कोई खास सबब जरूर है। अच्छा तो वह दूसरा आदमी कौन हो सकता है जिसने उस दीवार के अन्दर सरस्वती से बातचीत की थी? संभव है कि बेताल की तरह वह भी इंदुमति, जमना और सरस्वती का दुश्मन हो और मुझे सुनाने और धोखे में डालने के लिए उसने यह ढंग रचा हो। हो सकता है, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। साथ ही इसके यह भी तो सोचना चाहिए कि अगर जमना, सरस्वती का ऐसा ही बुरा काम करना होता तो वे मुझे और इंदुमति को अपने घर क्यों लातीं और मेरे साथ ऐसा अच्छा सलूक क्यों करतीं? नहीं-नहीं, इंदुमति से मुझे ऐसी आशा नहीं हो सकती। वह इंदुमति जो लड़कपन से आज तक अपने विशुद्ध आचरण के कारण बराबर अच्छी और नेक गिनी गई है आज ऐसा कर्म करे यह कब संभव है? और हो भी तो क्या आश्चर्य है,आदमी के दिल को बदलते क्या देर लगती है? जो हो मगर मुझे ऐसी जल्दी न करनी चाहिए थी। और कुछ नहीं तो इंदुमति से हरदेई वाली बात खुलासे-तौर पर कहकर उसका जवाब भी तो सुन लेना उचित था। आह, मैंने जो कुछ किया वह कर्त्तव्य के विरुद्ध था। हरदेई ने जरूर मुझे धोखे में डाला, वह दगाबाज थी, अगर ऐसा न होता तो मेरे जेब से तिलिस्मी किताब चुराकर क्यों भाग जाती? परन्तु उसके भाग जाने का भी तो कोई सबूत नहीं है। उसका खून से भरा हुआ कपड़ा केलों के झुरमुट में मिला था जिससे ख़याल हो सकता है कि वह दुश्मनों के हाथ पड़ गई। लेकिन अगर ऐसा ही था और दुश्मन उसके सर पर आ गया था तो उसने चिल्लाकर मुझे जगा क्यों न दिया! संभव है कि वह ख़ून से भरा हुआ कपड़ा हरदेई ही के हाथ का रखा हो।

इस तरह की बातें थोड़ी देर तक प्रभाकर सिंह सोचते और दिल में तरह-तरह की बातें पैदा होने से बेचैन होते रहे, परन्तु इस बात का ठीक निश्चय नहीं कर सकते थे कि उन्होंने जो कुछ बर्त्ताव इंदुमति के साथ किया वह उचित था या अनुचित।

इस तरह की चिंता करते-करते संध्या हो गई। सूर्य भगवान इस दुनिया को छोड़ किसी दूसरी दुनिया को अपनी चमक-दमक से प्रफुल्लित करने के लिए चले गये। यह बात औरों को चाहे बुरी मालूम हो परन्तु खुले दिल से मुँह दिखाने वालों से आसमान के सितारों को बहुत भली मालूम हुई। अस्तु वे दुनिया के विचित्र मामले को लापरवाही के साथ देखने के लिए निकल आये और औरों के साथ ही प्रभाकर सिंह की अवस्था पर अफसोस करने लगे। प्रभाकर सिंह अपने विचारों में ऐसे डूबे हुए थे कि उनको इस बात की कुछ खबर ही न थी।

जब रात कुछ ज्यादे बीत गई और सर्दी लगने लगी तब प्रभाकर सिंह चैतन्य हुए और आसमान की तरफ देखकर आश्चर्य करने लगे तथा अपने ही आप बोल उठे, "ओह बहुत देर हो गई। मैंने इस तरफ कुछ ध्यान ही नहीं दिया और न अपने लिए कुछ बंदोबस्त ही किया। अस्तु अब तो रात इसी जंगल मैदान में बिता देनी पड़ेगी।"

अपनी चिंता में निमग्न प्रभाकर सिंह को खाने-पीने की तथा और किसी जरूरी काम की फिक्र न रही वे पुनः उसी तरह सिर नीचा करके सोचने लग गये। ऐसी अवस्था में निद्रादेवी ने भी उनका साथ छोड़ दिया और उन्हें अपने ख़याल में डूबे रहने दिया।

आधी रात बीत जाने के बाद अपनी बाईं तरफ कुछ उजाला देख प्रभाकर सिंह चौंक पड़े और उजाले की तरफ देखने लगे। यह रोशनी उसी दीवार के अन्दर से आ रही थी जिसके अन्दर जाकर प्रभाकर सिंह ने जमना, सरस्वती और

इंदुमति से मुलाकात की थी और अनुचित अवस्था में उनका तिरस्कार किया था।

यह रोशनी मामली नहीं थी बल्कि बहुत ज्यादे और दिल में खुटका पैदा करने वाली थी। मालूम होता था कि कई मन लकड़ियाँ बटोरकर उसमें किसी ने आग लगा दी हो। प्रभाकर सिंह का दिल धड़कने लगा और वे घबराहट के साथ उस पल-पल में बढ़ती हुई रोशनी को बड़े गौर से देखते हुए उठ खड़े हुए।

प्रभाकर सिंह के दिल की इस समय क्या अवस्था थी इसका कहना बड़ा ही कठिन है। यद्यपि वे उस दीवार के अन्दर जाकर उस रोशनी का कारण जानने के लिए उत्कंठित हो रहे थे परन्तु दिल की परेशानी और घबराहट ने मानो उनकी ताकत छीन ली थी और पैर उठाना भारी हो गया था। तथापि उन्होंने बड़ी कठिनता से अपने दिल को सम्हाला और धीरे-धीरे कदम उठाकर उसी दीवार की तरफ आने लगे। जब उस दीवार के पास पहुँचे तो उसी खिड़की की राह उसके अन्दर घुसे जिस राह से पहिले गये थे। इस समय वह रोशनी जो एक दफे बड़ी तेजी के साथ बढ़ चुकी थी धीरे-धीरे कम होने लगी थी।

जहाँ पर जमना, सरस्वती और इंदुमति से मुलाकात हुई थी वहाँ पहुँचकर प्रभाकर सिंह ने देखा कि एक बहुत बड़ी चिता सुलग रही है और बहुत ध्यान देने पर मालूम होता है कि उसके अन्दर कोई लाश भी जल रही है जो अब अन्तिम अवस्था को पहुँचकर भस्म हुआ ही चाहती है। धुएँ में बदबू होने से भी इस बात की पुष्टि होती थी।

प्रभाकर सिंह का दिल बड़ी तेजी के साथ उछल रहा था और वे बेचैनी और घबराहट के साथ उस चिता को देख रहे थे कि यकायक उनकी आँखें डबडबा आईं और गरम-गरम आँसू उनके गुलाबी गालों पर मोतियों की तरह लुढ़कने लगे। इससे भी उनके दिल की हालत न सम्हली और वे बड़े जोर से पुकार उठे, "हाय इन्दे! क्या यह धधकती हुई अग्नि के अन्दर तू ही तो नहीं है? इतना कहकर प्रभाकर सिंह जमीन पर बैठ गए और सिर पर हाथ रखकर अपने दिल को काबू में लाने की कोशिश करने लगे।

घंटे भर तक अपने को सम्हालने का उद्योग करने पर भी वे कृतकार्य न हुए और फिर उठ कर बड़ी बेदिली के साथ पुनः उसी चिता की तरफ देखने लगे जो अब लगभग निर्धूम हो रही थी परन्तु उसकी रोशनी दूर-दूर तक फैल रही थी।

यकायक प्रभाकर सिंह की निगाह किसी चीज पर पड़ी जो उस चिता से कुछ दूरी पर थी परन्तु आग की रोशनी के कारण अच्छी तरह दिखाई दे रही थी। प्रभाकर सिंह उसके पास चले गये और बिना कुछ सोचे-विचारे उसे उठाकर बड़े गौर से देखने लगे। यह कपड़े का एक टुकड़ा था जो हाथ भर से कुछ ज्यादे बड़ा था। प्रभाकर सिंह ने पहिचाना कि यह इंदुमति की उसी साड़ी में का टुकड़ा है जिसे पहिरे हुए उसे आज उन्होंने उस जगह पर देखा था। इस टुकड़े ने उनके दिल को चकनाचूर कर दिया और उस समय तो उनकी अजीब हालत हो गई जब उसे टुकड़े के एक कोने में कुछ बँधा हुआ उन्होंने देखा। खोलने पर मालूम हुआ कि वह एक चिट्ठी है जिसकी लिखावट ठीक इंदुमति के हाथ की लिखावट की-सी है, परन्तु अफसोस कि इस रोशनी में तो वह पढ़ी ही नहीं जाती और चिता की आँच अपने पास आने की इजाजत नहीं देती। अब उस चिता में इतनी रोशनी भी नहीं रह गई थी कि दूर ही से इस लिखावट को पढ़ सकें।

इस समय कोई दुश्मन भी प्रभाकर सिंह की बेचैनी को देखता तो कदाचित् उनके साथ हमदर्दी का बर्ताव करता।

धीरे-धीरे चिता ठंडी हो गई मगर प्रभाकर सिंह ने उसका पीछा न छोड़ा, उस के पास ही बैठकर रात बिता दी। हाथ में वह कागज लिए हुए कई घंटे तक प्रभाकर सिंह सुबह की सुफेदी का इंतजार करते रहे और जब पत्र पढ़ने योग्य चाँदना हो गया तब उसे बड़ी बेचैनी के साथ पढ़ने लगे। यह लिखा हुआ था

"प्राणनाथ! बस हो चुका, दुनिया इतनी ही थी। मैं अब जाती हूँ और तुम्हें दयामय परमात्मा के सुपुर्द करती हूँ। मैं जब तक इस दुनिया में रही बहुत ही सुखी रही, तरह-तरह के दुःख भोगने पर भी मुझे विशेष कष्ट न हुआ क्योंकि तुम्हारे प्रेम का सहारा हरदम मेरे साथ था। इसे अतिरिक्त आशालता की हरियाली जिसका सब कुछ संबंध तुम्हारे ही शरीर के साथ था, मुझे सदैव प्रसन्न रखती थी, परन्तु अब इस दुनिया में मेरे लिए कुछ नहीं रहा और मेरी वह आशालता भी

बिलकुल ही सूख गई। तुम्हारे अतिरिक्त यदि और कुछ इस दुनिया में मुझे देना होता तो मैं अवश्य जीती रहती परन्तु नहीं, जब तुम्हीं ने मुझे त्याग दिया तो अब क्यों और किसके लिए जीऊँ? मैं इसी विचार से बहुत संतुष्ट हूँ कि तुम्हारे मेरे लिए दुःख न होगा क्योंकि किसी दुष्ट की कृपा से तुम मुझसे रुष्ट हो चुके हो इसलिए तुमने मुझे त्याग दिया और तुम्हें मेरे मरने का कुछ भी दुःखी न होगा, परन्तु यदि कदाचित् किसी समय इस जालसाजी का भंडा फूट जाय और तुम्हारे विचार से मैं बेकसूर समझी जाऊँ तो यही प्रार्थना है कि तुम मेरे लिए कदापि दुखी न होना, बस..."

इस पत्र को पढ़कर प्रभाकर सिंह बहुत बेचैन हुए। मालूम होता था कि किसी ने अन्दर घुस और हाथ से पकड़ के उनका कलेजा ऐंठ दिया है। यद्यपि उन्होंने इंदुमति का तिरस्कार कर दिया था परन्तु इस समय उनके दिल ने गवाही दे दी कि 'हाय, तूने व्यर्थ इंदुमति को त्याग दिया! वह वास्तव में निर्दोष थी इसी कारण तेरे उन शब्दों को बर्दाश्त न कर सकी जो उसके सतीत्व में धब्बा लगाने के लिए तूने कहे थे! हाय इन्दे! अब मुझे मालूम हो गया कि तू वास्तव में निर्दोष थी, आज नहीं तो कल इस बात का पता लग ही जाएगा।' इतना कहकर प्रभाकर सिंह ने पुनः उस चिता की तरफ देखा और कुछ सोचने के बाद गरम-गरम आँसू बहाते हुए वहाँ से रवाना हुए मगर उनकी भृकुटी, उनके फड़कते हुए होंठ और उनकी लाल-लाल आँखों से जाना जाता है कि इस समय किसी से बदला लेने का ध्यान उनके दिल में जोश मार रहा था।

उस दीवार के बाहर हो जाने के बाद प्रभाकर सिंह को यकायक यह खयाल पैदा हुआ कि इंदुमति का हाल तो जो हुआ मालूम हो गया, परन्तु जमना और सरस्वती के विषय में कुछ मालूम न हुआ, संभव है कि वहाँ उन लोगों ने भी इसी तरह कुछ लिखकर रख दिया हो मुलाकात हो गई तो उनकी जुबानी इंदुमति की अन्तिम अवस्था का ठीक-ठाक हाल मालूम हो जाएगा। यह सोचकर प्रभाकर सिंह पुनः पलट पड़े और उस चिता के पास जाकर इधर-उधर देखने लगे परन्तु और किसी बात का पता न लगा, लाचार प्रभाकर सिंह लौटकर उस दीवार के बाहर निकल आये।

अब दिन घंटे-भर से ज्यादे चढ़ चुका था। दीवार के बाहर निकलकर प्रभाकर सिंह कुछ सोचने लगे और इधर-उधर देखने के बाद कुछ सोच कर एक पेड़ के ऊपर चढ़ गये और दूर तक निगाह दौड़ा कर देखने लगे। यकायक उनकी निगाह हरदेई के ऊपर पड़ी जो उसी दीवार की तरफ बढ़ी जा रही थी जिकसे अन्दर जमना, सरस्वती और इंदुमति को प्रभाकर सिंह ने छोड़ा था। हरदेई को देखते ही प्रभाकर सिंह पेड़ के नीचे उतरे और बड़ी तेजी के साथ उसी तरफ जाने लगे।

यह हरदेई वही नकली हरदेई थी जो एक दफे प्रभाकर सिंह को धोखे में डाल चुकी थी अर्थात् भूतनाथ का शागिर्द रामदास इस समय भी हरदेई की सूरत बना हुआ भूतनाथ के साथ ही इस तिलिस्म के अन्दर आया हुआ था और पुनः जमना, सरस्वती, इंदुमति और प्रभाकर सिंह को धोखे में डालकर अपना या अपने ओस्ताद का कुछ काम निकालना चाहता था, मगर इस समय उसे यह खबर न थी कि प्रभाकर सिंह मुझे देख रहे हैं और न प्रभाकर सिंह से मिला ही चाहता था।

रामदास ने जब आशा के विरुद्ध प्रभाकर सिंह को अपनी तरफ आते देखा तो ताज्जुब में आकर चौंक पड़ा तथा भाग जाना मुनासिब समझकर खड़ा हो गया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए।

प्रभाकर सिंह : **(नकली हरदेई के पास पहुँचकर)** हरदेई, तू यहाँ कैसे आई?

हरदेई : मेरी किस्मत मुझे यहाँ ले आई। मैं तो उसी समय अपनी जान से हाथ धो चुकी थी जिस समय आपसे अलग हुई थी, मगर मेरी किस्मत में अभी कुछ और जीना बदा था इसलिए एक महापुरुष की मदद से बच गई।

प्रभाकर सिंह : आखिर तुम पर क्या आफत आई थी सो तो सुनूँ?

हरदेई : आप जब थकावट मिटाने के लिए चबूतरे पर लेट गये तो उसी समय आपकी आँख लग गई, मैं बड़ी देर तक चुपचाप बैठी-बैठी घबड़ा गई थी इसलिए उठ कर इधर-उधर टहलने लगी। घूमती-फिरती मैं कुछ दूर निकल गई, उसी

समय यकायक पत्तों के झुरमुट में से एक आदमी निकल आया जो स्याह कपड़े और नकाब से अपने बदन और चेहरे को छिपाए हुए था। मैं उसे देखकर घबड़ा गई और दौड़ कर आपकी तरफ आने लगी मगर उसने झपटकर मुझे पकड़ लिया और एक मुक्का मेरी पीठ पर इस जोर से मारा कि मैं तिलमिला कर बैठ गई। उसने मुझे जबरदस्ती कोई दवा सूँघ दी जिससे मैं बेहोश हो गई और तनोबदन की सुधि जाती रही। दूसरे दिन जब मैं होश में आई तो अपने को मैदान और जंगल में पड़े हुए पाया, तब से मैं आपको बराबर खोज रही हूँ।

प्रभाकर सिंह : **(हरदेई की बेतुकी बातों को ताज्जुब से सुनकर)** आखिर उसने तुझे इस तरह सता कर क्या फायदा उठाया?

हरदेई : **(कुछ घबड़ानी सी होकर)** सो तो मैं कुछ भी नहीं जानती।

प्रभाकर सिंह : उसने छुरी या खंजर से तुझे जख्मी तो नहीं किया?

हरदेई : जी नहीं।

प्रभाकर सिंह : मैं जब सोकर उठा तो तुझे ढूँढ़ने लगा। एक जगह केले के झुरमुट में तेरे कपड़े का टुकड़ा खून से भरा हुआ देखा था जिससे मुझे खयाल हुआ कि हरदेई को किसी ने खंजर या छुरी से जखमी किया है।

हरदेई : जी नहीं, मुझे तो इस बात की कुछ भी खबर नहीं।

प्रभाकर सिंह : और वह महात्मा पुरुष कौन थे जिन्होंने तुझे बचाया? अभी-अभी तो तू कह चुकी है कि 'बेहोशी के बाद जब मैं होश में आई तो अपने को मैदान और जंगल में पड़े हुए पाया' अस्तु कैसे समझा जा कि किसी महापुरुष ने तुझे बचाया?

नकली हरदेई के चेहरे पर घबराहट की निशानी छा गई और वह इस भाव को छिपाने के लिए मुड़ कर पीछे की तरफ देखने लगी मगर प्रभाकर सिंह इस ढंग को अच्छी तरह समझ गए और जरा तीखी आवाज में बोले, "बस मुझे ज्यादे देर तक ठहरने की फुरसत नहीं है, मेरी बात का जवाब जल्दी-जल्दी देती जा!"

हरदेई : जी हाँ, जब मैं खुलासे-तौर पर अपना हाल कहूँगी तब आपको मालूम हो जाएगा कि वह महात्मा कौन था और अब कहाँ हैं जिसने मुझे बचाया था, मैंने संक्षेप में ही अपना हाल आपसे कहा था।

प्रभाकर सिंह : खैर तो वह खुलासा हाल कहने में देर क्या है! अच्छा जाने दे खुलासा हाल मैं भी सुन लूँगा, पहिले तेरी तलाशी लिया चाहता हूँ।

हरदेई : **(घबड़ाकर)** तलाशी कैसी और क्यों?

प्रभाकर सिंह : इसका जवाब मैं तलाशी लेने के बाद दूँगा।

हरदेई : आखिर मुझ पर आपको किस तरह का शक हुआ?

प्रभाकर सिंह : मुझे कई बातों का शक हुआ जो मैं अभी कहना नहीं चाहता। इतना कहते ही कहते प्रभाकर सिंह ने हरदेई का हाथ पकड़ लिया क्योंकि उसने रंग-ढंग से मालूम होता था कि वह भागना चाहती है। हरदेई ने पहिले तो चाहा कि झटका देकर अपने को प्रभाकर सिंह के कब्जे से छुड़ा ले मगर ऐसा न हो सका। प्रभाकर सिंह ने जब देखा कि यह धोखा देकर भाग जाने की फिक्र में है तब उन्हें बेहिसाब क्रोध चढ़ आया और एक मुक्का उसकी गरदन पर मार कर जबरदस्ती उन्होंने उसके ऊपर का कपड़े खैंच लिया।

रामदास यद्यपि ऐयार था मगर उसमें इतनी ताकत न थी कि वह प्रभाकर सिंह का मुकाबला कर सकता। प्रभाकर सिंह के हाथ का मुक्का खाकर वह बेचैन हो गया और उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया, और फिर उसकी हिम्मत न पड़ी कि वह भाग जाने के लिए उद्योग करे। प्रभाकर सिंह को भी विश्वास हो गया कि यह हरदेई नहीं बल्कि कोई ऐयार है। मामूली कपड़ा उतार लेने के साथ ही प्रभाकर सिंह का बचा-बचाया शक भी जाता रहा, साथ ही इसके उन्होंने यह भी निश्चय कर लिया कि हमारी तिलिस्मी किताब जरूर इसी ऐयार ने चुराई है।

तिलिस्मी किताब पा जाने की उम्मीद में प्रभाकर सिंह ने जहाँ तक हो सका बड़ी होशियारी के साथ उसकी तलाशी ली और उसके ऐयारी के बटुए में भी, जिसे वह छिपाकर रखे हुए था, देखा मगर किताब हाथ न लगी। तलाशी में केवल ऐयारी का बटुआ, खंजर और एक कटार उसके पास से मिला जिसे प्रभाकर सिंह ने अपने कब्जे में कर लिया और पूछा,"बस अब तो तेरा भेद अच्छी तरह खुल गया। और यह बता कि तेरा क्या नाम है और मेरे साथ तूने इस तरह की दगाबाजी क्यों की?"

रामदास : क्या जो कुछ मैं बताऊँगा उस पर आप विश्वास कर लेंगे?

प्रभाकर : नहीं।

रामदास : फिर इसे पूछने से फायदा क्या?

प्रभाकर सिंह ने क्रोध-भरी आँखों से सिर से पैर तक उसे देखा और कहा, "बेशक् कोई फायदा नहीं मगर तूने मेरे साथ बड़ी दगाबाजी की और व्यर्थ ही बेचारी इंदुमति पर झूठा कलंक लगाकर उसे और साथ-ही-साथ इसके मुझे भी बर्बाद कर दिया।"

रामदास : बेशक् मैंने किया तो बहुत बुरा मगर मैं तो ऐयार हूँ, मालिक की भलाई के लिए उद्योग करना मेरा धर्म है। जो कुछ मुझसे बन पड़ा किया, अब आपके कब्जे में हूँ जो उचित और धर्म समझिए कीजिए।

प्रभाकरसिंह :**(क्रोध को दबाते हुए)** तू किसका ऐयार है?

रामदास : मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि मेरी बातों पर आपको विश्वास न होगा, फिर इन सब बातों को पूछने से फायदा क्या है?

प्रभाकर सिंह का दिल पहिले ही से जख्मी हो रहा था, अब जो मालूम हुआ कि हरदेई वास्तव में हरदेई नहीं है बल्कि कोई ऐयार है और इसने धोखा देकर अपना काम निकालने के लिए इंदुमति, जमना और सरस्वती को बदनाम किया था तो उनके दुःख और क्रोध की सीमा न रही, तिस पर रामदास की ढिठाई ने उसकी क्रोधाग्नि को और भड़का दिया, अस्तु वे उचित-अनुचित का कुछ भी विचार न कर सके। उन्होंने रामदास की कमर में एक लात ऐसी मारी कि वह सम्हल न सका और जमीन पर गिर पड़ा, इसके बाद लात और जूते ने उसकी ऐसी खातिरदारी की कि वह बेहोश हो गया और उसके मुँह से खून भी बहने लगा। इतने पर भी प्रभाकर सिंह का क्रोध शान्त न हुआ और उसे कुछ और सजा दिया चाहते थे कि सामने से आवाज आई, "हाँ, हाँ, बस जाने दो, हो चुका, बहुत हुआ।"

प्रभाकर सिंह ने आँख उठाकर सामने की तरफ देखा तो एक वृद्ध महात्मा पर उनकी निगाह पड़ी जो तेजी के साथ प्रभाकर सिंह की तरफ बढ़े आ रहे थे।

6

वृद्ध महात्मा का ठाठ कुछ अजब ही ढंग का था, सिर से पैर तक तमाम बदन में भस्म लगे रहने के कारण इनके रंग का बयान करना चाहे कठिन हो परन्तु फिर भी इतना जरूर कहेंगे कि लगभग सत्तर वर्ष की अवस्था हो जाने पर भी उनके खूबसूरत और सुडौल बदन में अभी तक कहीं झुर्री नहीं पड़ी थी और न उनके सीधेपन में कोई झुकाव आया था। बड़ी-बड़ी आँखों में अभी तक गुलाबी डोरियाँ दिखाई दे रही थीं और उनके कटाक्ष से जाना जाता था कि अभी तक उनकी रोशनी और ताकत में किसी तरह की कमी नहीं हुई है। रोआबदार चेहरा, चौड़ी छाती तथा मजबूत और गठीले हाथ-पैरों की तरफ ध्यान देने से यही कहने को जी चाहता है कि यह शरीर तो छत्र और मुकुट धारण करने योग्य है न कि जटा और कंबल की कफनी के योग्य।

महात्मा के सिर पर लंबी जटा थी जो खुली हुई पीठ की तरफ लहरा रही थी। मोटे और मुलायम कंबल का झगा बदन में और लोहे का एक डंडा हाथ में था, बस इसके अतिरिक्त उनके पास और कुछ भी दिखाई नहीं देता था।

महात्मा को देखते ही प्रभाकर सिंह ने झुक के प्रणाम किया, बाबाजी ने भी पास आकर आशीर्वाद दिया और कहा, "प्रभाकर सिंह, बस जाने दो, बहादुर लोग ऐयारों को जान से नहीं मारते और ऐयार भी जान से मारने योग्य नहीं होते बल्कि कैद करने के योग्य होते हैं। तुम इस समय यद्यपि इस योग्य नहीं हो कि इसे कैद करके कहीं रख सको तथापि यदि कहो तो हम इसका प्रबंध कर दें क्योंकि यह तिलिस्म के अन्दर हम इस बात को बखूबी कर सकते हैं।"

प्रभाकर सिंह : **(बात काटकर)** आपकी आज्ञा के विरुद्ध मैं कदापि न करूँगा। आप बड़े हैं, मेरा दिल गवाही देता है और कहता है कि यदि आप वास्तव में साधु न भी हों तो भी मेरे पूज्य और बड़े हैं। जो कुछ आज्ञा कीजिए मैं करने को तैयार हूँ, पर आपको कदाचित् यह न मालूम हुआ होगा कि इसने मुझे कैसी-कैसी तकलीफें दी हैं और किस तरह मेरा सर्वनाश किया है, और इस समय भी यह कैसी ढिठाई के साथ बातें कर रहा है, अपना नाम तक नहीं बताता।

बाबा : मैं सब कुछ जानता हूँ, तुमने स्वयं भूलकर अपने को इसके हाथ फँसा दिया है, अगर वह किताब जिसमें इस तिलिस्म का कुछ थोड़ा-सा हाल लिखा हुआ था और जो इन्द्रदेव ने तुमको दी थी, इसने तुम्हारी जेब से न निकाल ली होती तो यह कदापि यहाँ तक पहुँच सकता, मगर अफसोस, तुमने पूरा धोखा खाया और यह किताब की भी बखूबी हिफाजत न कर सके।

प्रभाकरसिंह : बेशक् ऐसा ही है, मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई। अभी तक मुझे इस बात का पता न लगा कि वास्तव में यह कौन है।

बाबा : हाँ तुम इसे नहीं जानते, हरदेई समझकर तुम इसके हाथ से बर्बाद हो गए, यह असल में गदाधरसिंह का शागिर्द रामदास है। इसी ने असली हरदेई को धोखा देकर गिरफ्तार कर लिया और स्वयं हरदेई की सूरत बन जमना और सरस्वती को धोखे में डाला, यह तिलिस्मी घाटी का रास्ता देख लिया और भूतनाथ को इस घाटी के अन्दर लाकर जमना, सरस्वती और इंदुमति को आफत में फँसा दिया। भूतनाथ ने अपने हिसाब से तो उन तीनों को मार डाला था परन्तु ईश्वर ने उन्हें बचा लिया, सुनो हम इसका खुलासा हाल तुमसे बयान करते हैं।

इतना कहकर बाबाजी ने भूतनाथ और रामदास का पूरा-पूरा हाल जो हम ऊपर के बयानों में लिख आए हैं कह सुनाया अर्थात् जिस तरह रामदास ने हरदेई को गिरफ्तार किया, स्वयं हरदेई की सूरत बनकर कई दिनों तक जमना, सरस्वती के साथ रहा, घाटी में आने-जाने का रास्ता देखकर भूतनाथ को बताया, प्रभाकर सिंह की सूरत बनकर जिस तरह भूतनाथ इस घाटी के अन्दर आया और जमना, सरस्वती, और इंदुमति तथा और लौंडियों को भी कुएँ के अन्दर फेंककर बखेड़ा तै किया और अन्त में रामदास स्वयं जिस तरह कुएँ के अन्दर जाकर खुद भी उसमें फँस गया आदि-आदि रत्ती-रत्ती हाल बयान किया, जिसे सुन कर प्रभाकर सिंह हैरान हो गये और ताज्जुब करने लगे।

प्रभाकरसिंह : **(आश्चर्य से)** यह सब हाल आपको कैसे मालूम हुआ?

बाबा : इसके पूछने की कोई जरूरत नहीं, जब हमको तुम पहिचान जाओगे तब स्वयं तुम्हें इसका सबब मालूम हो जाएगा। **(रामदास की तरफ देख के)** क्यों रामदास, जो कुछ हमने कहा यह सब सच है या नहीं?

रामदास : बेशक् आपने जो कुछ कहा सब सच है।

बाबा : **(रामदास से)** अब तो बताओ कि तुम्हारा गुरु भूतनाथ कहाँ है?

रामदास : मुझे नहीं मालूम।

बाबा : **(हँसकर)** अगर तुम्हें मालूम नहीं है तो मुझे जरूर मालूम है! **(प्रभाकर सिंह से)** अच्छा अब हम जाते हैं, जरूरत होगी तो फिर मुलाकात करेंगे। केवल इसीलिए तुम्हारे पास आए थे कि इस रामदास और भूतनाथ की चालबाजी से तुम्हें होशियार कर दें, जिसमें इन लोगों के बहकाने में पड़कर तुम जमना, सरस्वती और इंदुमति के साथ किसी तरह की बेमुरौवती न कर जाओ। मगर अफसोस हमारे पहुँचने के पहिले ही तुमने इन लोगों को धोखे में पड़ कर इंदुमति और साथ ही उसके जमना-सरस्वती का तिरस्कार कर दिया और उन लोगों के साथ ऐसा बर्ताव किया जो तुम्हारे ऐसे बुद्धिमान के योग्य न था।

प्रभाकर सिंह : **(डबडबाई हुई आँखों से और एक लंबी साँस लेकर)** बेशक मैंने बहुत बुरा धोखा खाया, मेरी किस्मत ने मुझे डुबा दिया और कहीं का न रखा! **(आसमान की तरफ देखकर)** हे सर्वशक्तिमान जगदीश्वर! क्या मैं इसीलिए इस दुनिया में आया था कि तरह-तरह की तकलीफें उठाऊँ? जबसे मैंने होश संभाला तब से आज तक साल-भर सुख से बैठना नसीब न हुआ। किस-किस दुःख को रोऊँ और किस-किस को याद करूँ! हाय, माता-पिता की अवस्था पर ध्यान देता हूँ तो कलेजा मुँह को आता है, अपनी दुर्दशा पर विचार करता हूँ तो दुनिया अँधकारमय दिखाई पड़ती है। तो फिर क्या मैं ऐसा ही बदकिस्मत बनाया गया हूँ? क्या यह मेरे कर्मों का फल है! कदाचित् ऐसा भी हो तो फिर दुनिया में जितने आदमी हैं सभी तो अपने-अपने कर्म का फल भोग रहे हैं। फिर मुझमें और अन्य अभागों में भेद ही किस बात का ठहरा? और जब अपने ही कर्मों का फल भोगना ही ठहरा तो तुम्हारा भरोसा ही करके क्या किया? अगर यह कहो कि इस भरोसे का फल किसी और समय मिलेगा तो यह भी कोई बात न ठहरी, जब मेरे समय पर तुम्हारा भरोसा काम न आया तो खेत सूखे पर वर्षा वाली कहावत सिद्ध हुई।

बाबाजी : **(बात काटकर)** बेटा, घबराओ मत और परमेश्वर का भरोसा मत छोड़ो, वह तुम्हारे सभी दुःखों को दूर करेगा। उसकी कृपा के आगे कोई बात कठिन नहीं है। यदि वह दयालु होगा तो तुम्हें तुम्हारे माता-पिता से भी मिला देगा और तुम्हारी स्त्री इंदुमति भी पुनः तुम्हारी सेवा में दिखाई दे जाएगी। बस अब मैं जाता हूँ, ईश्वर तुम्हारा भला करे।

प्रभाकर सिंह : **(बाबाजी को रोककर)** कृपा कर और भी मेरी दो-एक बातों का जवाब देते जाइए।

बाबाजी : पूछो क्या पूछना चाहते हो!

प्रभाकर सिंह :जिस मनुष्य के विषय में यह कहा जा सकता है कि वह पंच तत्व में मिल गया भला उससे पुनः क्योंकर मुलाकात हो सकती है!

बाबाजी : ईश्वर की माया बड़ी प्रबल है, मैं यह नहीं कह सकता कि ऐसा अवश्य ही होगा परन्तु यह जरूर कहूँगा कि ईश्वर पर भरोसा रखने वाले के लिए कोई भी बात असंभव नहीं। अच्छा पूछो और क्या पूछते हो।

प्रभाकर सिंह : मैं यह जानना चाहता हूँ कि आज के बाद मैं आपसे मिलना चाहूँ तो क्योंकर मिल सकता हूँ?

बाबाजी : तुम अपनी इच्छानुसार मुझसे नहीं मिल सकते।

प्रभाकर सिंह : आपका परिचय जान सकता हूँ?

बाबाजी : नहीं।

इतना कहकर बाबाजी वहाँ से रवाना हो गये और देखते-देखते प्रभाकर सिंह की नजरों से गायब हो गये।

बाबाजी के चले जाने के बाद कुछ देर तक प्रभाकर सिंह खड़े कुछ सोचते रहे, इसके बाद क्रोध भरी आँखों से रामदास की तरफ देखा और कहा, "रामदास, यद्यपि लोग कहते हैं कि गँवारों को मारना न चाहिए बल्कि कैद कर रखना चाहिए परन्तु यह काम गँवारों का और राजा लोगों का है। मैं न तो गँवार हूँ और न राजा ही हूँ, इसके अतिरिक्त मेरे पास कोई ऐसी जगह भी नहीं है जहाँ तुझे कैद करके रखूँ अतएव मैं तुझ पर किसी तरह का रहम नहीं कर सकता। **(रामदास का खंजर उसके आगे फेंक कर)** ले अपना खंजर उठा ले और मेरा मुकाबला कर क्योंकि मैं उस आदमी पर वार करना पसन्द नहीं करता जिसके हाथ में किसी तरह का हर्बा नहीं है, साथ ही तूने मुझ पर जो जुल्म किया है मैं किसी तरह भी माफी पाने लायक नहीं?

रामदास : **(खंजर उठाकर)** तो क्या मैं किसी तरह भी माफी पाने लायक नहीं?

प्रभाकर सिंह : नहीं, अगर इंदुमति इस दुनिया से उठ न गई होती तो कदाचित् मैं तेरा अपराध क्षमा कर सकता, मगर इंदुमति का वियोग, जो केवल तेरी ही दुष्टता के कारण हुआ, मैं सह नहीं सकता।

रामदास : अगर तुम्हारी इंदुमति को तुमसे मिला दूँ तो?

प्रभाकर सिंह : अरे दुष्ट! क्या अब भी तू मुझे धोखा दे सकेगा? जिसकी चिता मैं अपनी आँखों से देख चुका हूँ उसके विषय में तू इस तरह की बातें करता है मानों ब्रह्मा तू ही है।

रामदास : नहीं-नहीं, आपने मेरा मतलब नहीं समझा।

प्रभाकर सिंह : तेरा मतलब मैं खूब समझ चुका, अब समझाने की जरूरत नहीं है, बस अब सम्हल जा और अपनी हिफाजत कर।

इतना कहकर प्रभाकर सिंह ने म्यान से तलवार खींच ली और रामदास को ललकारा। रामदास ने जब देखा कि अब वह भाग कर भी अपने को प्रभाकर सिंह के हाथ से नहीं बचा सकता तब उसने खंजर सम्हाल कर प्रभाकर सिंह का मुकाबला किया। प्रभाकर सिंह ऐसे बहादुर आदमी से मुकाबला करना रामदास का काम न था, दो ही चार हाथ के लेने-देने के बाद प्रभाकर सिंह की तलवार से रामदास दो टुकड़े होकर जमीन पर गिर पड़ा और वहाँ की मिट्टी से अपनी तलवार साफ कर के प्रभाकर सिंह पुनः उसी दीवार की तरफ रवाना हुए जिसके अन्दर इंदुमति की सुलगती हुई चिता देख चुके थे।

तरह-तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकर सिंह धीरे-धीरे चलकर उसी चिता के पास पहुँचे जो अभी तक निर्धूम हो जाने पर भी बड़े अँगारों के कारण धधक् रही थी और जिसके बीच-बीच में हड्डियों के छोटे-छोटे टुकड़े दिखाई दे रहे थे।

7

यद्यपि सूर्य भगवान अभी उदय नहीं हुए थे तथापि उनके आने का समय निकट जान अँधकार ने पहिले ही से अपना दखल छोड़ना आरम्भ कर दिया था और धीरे-धीरे भाग कर पहाड़ की कंदराओं और गुफाओं में अपने शरीर को सिकोड़ता या समेटता हुआ घुसा चला जा रहा था।

एक छोटे मैदान में जिसे चारों तरफ से ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों ने घेर रखा है हम एक विचित्र तमाशा देख रहे हैं। वह मैदान चार या पाँच बिगहे से ज्यादा न होगा जिसके बीचोंबीच में स्याह पत्थर का पुरसे भर ऊँचा बहुत बड़ा और खूबसूरत चबूतरा बना हुआ था, जिसके ऊपर जाने के लिए चारों तरफ सीढ़ियाँ बनी थीं। चबूतरे के ऊपर चढ़ जाने पर देखा कि एक बहुत ही सुन्दर हौज बना हुआ है जिसमें बिल्लौर की तरह साफ-सुथरा जल भरा हुआ था और उतरने के लिए संगमरमर की छोटी-छोटी सीढ़ियाँ बनी हुई थीं।

हौज के चारों कोनों पर चार हंस इस कारीगरी से बनाए और बैठाए हुए थे कि जिन्हें देखकर कोई भी न कह सकेगा कि ये हंस असली नहीं बल्कि नकली हैं। देखने वाला जब तक उन्हें अच्छी तरह टटोल न लेगा तब तक उसके दिल से असली हंस होने का शक न मिटेगा। इसी तरह हौज के अन्दर उतरने वाली सीढ़ियों पर भी मोर और सारस इत्यादि कई जानवर दिखाई दे रहे थे और ये भी उन्हीं हंसों की तरह नकली, किसी धातु के बने हुए थे, मगर देखने में ठीक असली जान पड़ते थे। इनके अतिरिक्त उसी हौज के अन्दर संगमरमर की सीढ़ी पर एक निहायत हसीन और खूबसूरत औरत भी बेहोश पड़ी हुई दिखाई दे रही थी जिसके खुले हुए बाल सुफेद पत्थर की चट्टान पर बिखरे हुए थे बल्कि बालों का कुछ भाग जल की हलकी लहरों के कारण हिलता हुआ बहुत ही भला मालूम होता था। पहिले तो मेरे दिल में आया कि मैं और जानवरों की तरह इस औरत को भी नकली और बनावटी समझूँ मगर उसकी खूबसूरती और नजाकत को देखकर सहम गया। आह, क्या ही खूबसूरत चेहरा, बड़ी-बड़ी मगर इस समय पलकों से ढकी हुई आँखें, चौड़ी पेशानी में सिंदूर की केवल एक बिंदी कैसी अच्छी मालूम होती थी कि हजार रोकने पर भी मुँह से निकल ही पड़ा कि 'यह जरूर स्वर्ग की देवी है।' चाहे उसके हाथों में सिवाय दस-बारह पतली स्याह चूड़ियों के और कुछ भी न हो। किसी अंग में किसी तरह का कोई भी गहना दिखाई देता न हो, परन्तु उसकी खूबसूरती किसी गहने की मुहताज न थी।

मैं खड़ा यही सोच रहा था कि यह औरत असली है या बनावटी और यह इरादा भी हो चुका था कि जिस तरह ऊपर वाले हंस को टटोल कर देख चुका हूँ उसी तरह नीचे की सीढ़ियों पर बैठे हुए जानवरों के साथ-ही-साथ इस औरत को भी टटोल कर देखूँ और निश्चय करूँ कि असली है या नकली कि इतने ही में उस औरत ने गर्दन हिलाई और अपना चेहरा जल की तरफ से घुमाकर सीढ़ी की तरफ कर दिया। बस फिर क्या था, मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहा, मुझे विश्वास हो गया कि और जानवरों की तरह यह औरत बनावटी नहीं है। फिर मैं सोचने लगा कि इसे किसी तरह जागना चाहिए अस्तु मैंने जोर से कई तालियाँ बजाई मगर इसका असर कुछ भी न हुआ। उस समय मुझे पुनः उसकी सच्चाई पर शक हुआ और मैं यह जाँचने के लिए कि देखूँ इस औरत की साँस चलती है या नहीं उसके पेट की तरफ गौर से देखने लगा जिसके आधे भाग का कपड़ा खिसक जाने के कारण खुला हुआ था, मगर साँस चलने की आहट मालूम न हुई! इतने ही में हवा का एक बहुत बड़ा झपेटा आया, मैंने तो समझा कि इस झपेटे के लगते ही वह जाग जाएगी और उसके बदन का कपड़ा भी जो लापरवाही के साथ हर तरह से ढीला पड़ा हुआ है जरूर खिसक जाएगा और उसका सुन्दर तथा सुडौल बदन मुझे अच्छी तरह देखने का मौका मिलेगा मगर अफसोस, ऐसा न हुआ। न तो उसकी निद्रा ही भंग हुई और न उसके बदन पर से कपड़ा ही खिसका।

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और अंत में मैंने निश्चय कर लिया कि स्वयं हौज के अन्दर उतरकर उस औरत की निद्रा भंग करूँगा, क्योंकि उसकी खूबसूरती और उसके अंग की सुडौली मेरे दिल को बेतरह मसोस रही थी।

मैं दिल कड़ा करके हौज के अन्दर उतरने लगी। एक सीढ़ी उतरा, दूसरी सीढ़ी उतरा, तीसरी सीढ़ी पर पैर रखा ही था कि मैं डर कर चौंक उठा और मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। क्योंकि यकायक वे चारों हंस जो हौज के ऊपर खड़े थे और जिन्हें मैं अच्छी तरह देखभाल चुका था कि वे असली नहीं, बनावटी हैं, अपनी जगह छोड़ और गरदन ऊँची

कर इधर-उधर और बड़ी बेचैनी के साथ मेरी तरफ देखने लगे मानो मेरा हौज के अन्दर उतरना उन्हें बहुत बुरा मालूम हुआ। यह बात सिर्फ दस-बारह सायत तक रही, इसके बाद वे अपने बड़े-बड़े परों को फैलाकर बेतरह मुझ पर टूट पड़े जिसे देख मैं डर गया और अपना दाहिना हाथ **(जिसमें खंजर था)** आगे की तरफ बढ़ाए हुए पीछे हटकर चौथी सीढ़ी पर उतर गया।

हौज के अन्दर चौथी सीढ़ी पर उतर जाना तो मेरे लिए बड़ा ही भयानक हुआ। हौज के अन्दर सीढ़ियों पर जो बहुत-से बनावटी जानवर **(परिन्दे)** थे, वे भी ऊपर वाले हंस की तरह अपनी क्रोध वाली अवस्था दिखाते हुए फैलाकर इस तरह मुझ पर झपट पड़े मानो ये सब बात-की-बात में मुझे नोच कर खा जाएँगे। केवल इतना ही नहीं वह औरत भी उठ कर बैठ गई और गरदन ऊँची करके क्रोध-भरी आँखों से मेरी तरफ देखने लगी।

वह दृश्य बड़ा ही भयंकर था, जानवरों की बेतरह झपट पड़ने से मैं कदापि न डरता यदि वह वास्तव में सच्चे होते और मैं उन्हें अपने खंजर से काट सकता परन्तु मैं तो अच्छी तरह जाँच कर समझ चुका था कि वे सब असली नहीं है फिर भी जब उन्होंने हमला किया तब मैंने अपने खंजर से उन्हें रोकना चाहा, परन्तु खंजर ने भी उनके बदन पर कुछ असर न किया मानो उनका बदन फौलाद का बना हुआ हो। ऐसी अवस्था में उन सभों का एक साथ मिलकर हमला करना मुझे जरूर नुकसान पहुँचा सकता था अस्तु आश्चर्य के साथ-ही-साथ भय ने भी मुझ पर अपना असर जमा लिया। इसके अतिरिक्त उस औरत का एक अजीब ढंग से मेरी तरफ देखना और भी घबराहट पैदा करने लगा।

पहिले तो मैंने चाहा कि जिस तरह हो सके इस बावली के बाहर निकल जाऊँ मगर ऐसा न हो सका, लाचार पीछे की तरफ हट मैं और भी दो सीढ़ी नीचे उतर गया मगर वहाँ भी ठहरने की हिम्मत न पड़ी क्योंकि उन जानवरों का हमला और भी तेज हो गया तथा वह औरत भी इतनी जोर से चिल्ला उठी कि मैं घबरा गया तथा और भी कई सीढ़ी नीचे उतरकर उस औरत के पास जा पहुँचा। बस उसी समय औरत ने मेरा पैर पकड़ लिया और एक ऐसा झटका दिया कि मैं जल के अन्दर जा पड़ा और बेहोश हो गया। इसके बाद क्या हुआ इसकी मुझे कुछ भी खबर नहीं है। छोटी-छोटी चार पहाड़ियों के अन्दर एक खुशनुमा बाग है। इसमें सुन्दर-सुन्दर बहुत-सी क्यारियाँ बनी हुई हैं, हर तरफ छोटी-छोटी नहरें जारी हैं और पेड़ों के ऊपर बैठकर बोलने वाली तरह-तरह की चिड़ियों की सुरीली आवाजों से वह सुबह का सुहावना समय और भी मजेदार मालूम हो रहा है।

इस बाग के पूरब तरफ बहुत बड़ी इमारत है जिसमें सैकड़ों आदमियों का खुशी से गुजारा हो सकता है, यह इमारत तिमंजिली है, नीचे के हिस्से में एक बहुत बड़ा दीवानखाना है और दीवानखाने के दोनों तरफ बारहदरियाँ हैं। ऊपर की मंजिलों में छोटे-बड़े बहुत-से खूबसूरत दरवाजे दिखाई दे रहे हैं, उसके अन्दर क्या है सो तो इस समय नहीं कह सकते मगर अंदाज से मालूम होता है कि ऊपर भी कई कमरे, कोठरियाँ, दालान,. शहनशीन और बारहदरियाँ जरूर होंगी।

नीचे वाला दीवानाना मामूली नहीं बल्कि शाही ढंग का बना हुआ है। छः पहले चालीस खंभों पर इसकी छत कायम है। खंबे स्याह पत्थर के हैं और उन पर सोने से पच्चीकारी का काम किया हुआ है। बाहर के रुख पर बड़े-बड़े पाँच महराब हैं और उन महराबों पर भी निहायत खूबसूरत पच्चीकारी का काम किया हुआ है। अन्दर की तरफ अर्थात् पिछली दीवार पर भी जहाँ एक जड़ाऊ, सिंहासन रखा है जड़ाऊ तथा मीनाकारी का काम बना हुआ है जिसमें कारीगर ने जंगली सीन और शिकारगाह की तस्वीरों पर कुछ ऐसा मसाला चढ़ाया हुआ है जिससे मालूम होता है कि ये दोनों दीवारें बिल्लौरी शीशे की बनी हुई हैं। सिंहासन पिछली दीवार के साथ मध्य में रखा हुआ है और उस सिंहासन से चार हाथ ऊपर एक खूबसूरत दरीची **(खिड़की)** है जिसमें एक नफीस चिक पड़ी हुई है और उस चिक के अन्दर कदाचित् कोई औरत बैठी हुई है, और आवाज से यही जान पड़ता है कि बेशक वह औरत ही है। सिंहासन के ऊपर एक खूबसूरत और बहादुर नौजवान खड़ा चिक की तरफ गरदन ऊँची करके ऊपर लिखी बातें बयान कर रहा है अर्थात् जो कुछ हम इस बयान में ऊपर लिख आए हैं यह सब इसी नौजवान के ऊपर खिड़की की तरफ मुँह करके ऊपर लिखी बातें बयान कर रहा है अर्थात् जो कुछ हम इस बयान में ऊपर लिख आए हैं यह सब इसी नौजवान ने ऊपर खिड़की की तरफ मुँह करके बयान किया है। जब उस जवान ने यह कहा कि 'इसके बाद क्या हुआ इसकी मुझे कुछ भी खबर नहीं, तब उस चिक के अन्दर से यह बारीक आवाज आई "आखिर तुम यहाँ तक क्योंकर पहुँचे?"

नौजवान : जब मेरी आँखें खुली और मैं होश में आया तो अपने को इसी बाग में एक रविश के ऊपर पड़े हुए पाया। उस समय वहाँ कई औरतें मौजूद थीं जिन्होंने मुझसे तरह-तरह के सवाल किए और इसके बाद मुझे इस दीवानखाने में पहुँचाकर वह सब न-मालूम कहाँ चली गई।

चिक के अन्दर से : अच्छा अब तुम क्या चाहते हो सो बताओ?

नौजवान : पहिले तो मैं यहाँ के मालिक का परिचय लिया चाहता हूँ।

चिक के अन्दर से : समझ लो कि यहाँ की मालिक मैं ही हूँ!

नौजवान : मगर यह मालूम होना चाहिए कि आप कौन हैं?

चिक के अन्दर से : मैं एक स्वतंत्र औरत हूँ, यहाँ की रानी कह कर मुझे संबोधन करते हैं।

नौजवान : आपका कोई मालिक या अफसर भी यहाँ नहीं है?

चिक के अन्दर से : मैं एक राजा की लड़की हूँ, मेरा बाप मौजूद है और अपनी रियासत में है, मुझे उसमें इस तिलिस्म के अन्दर कैद कर रखा है मगर मैं अपने को यहाँ स्वतंत्र समझती हूँ और खुश हूँ, दुःख इतना ही है कि इस तिलिस्म के बाहर मैं नहीं जा सकती।

नौजवान : आपके पिता ने आपको कैद कर रखा है?

चिक के अंदर से : इसलिए कि मैं शादी करना मंजूर नहीं करती और इसमें वह अपनी बेइज्जती समझता है।

नौजवान : क्या आपका और आपके पिता का नाम मैं सुन सकता हूँ?

चिक के अन्दर से : नहीं, पहिले मैं आपका नाम सुनना चाहती हूँ।

नौजवान : मेरा नाम प्रभाकर सिंह है।

चिक के अन्दर से : है, क्या आप सच कहते हैं? मुझे विश्वास नहीं होता!!

प्रभाकरसिंह :बेशक् मैं सच कहता हूँ, झूठ बोलने की मुझे जरूरत ही क्या है?

चिक के अन्दर से : और आपके पिता का नाम क्या है?

प्रभाकरसिंह :दिवाकरसिंह जी।

चिक के अन्दर से : आह, क्या यह संभव है! फिर भी मैं कहती हूँ कि मुझे विश्वास नहीं होता!!

प्रभाकरसिंह :अगर आपको मेरी बातों पर विश्वास नहीं होता तो लाचारी है। मुझे कोई ऐसी तरकीब नहीं सूझती जिससे मैं आपको विश्वास दिला सकूँ।

चिक के अन्दर से : हाँ मुझे एक तरकीब याद आई है।

प्रभाकरसिंह :वह क्या!

चिक के अन्दर से : लड़कपन में गेंद खेलते समय आपको जो चोट लगी थी उसे मैं देखूँगी तो जरूर विश्वास कर लूँगी।

प्रभाकरसिंह :**(आश्चर्य से)** यह बात आपको कैसे मालूम हुई!

चिक के अन्दर से : सो मैं पीछे बताऊँगी।

इतना सुनते ही प्रभाकर सिंह ने अपना कपड़ा उतार दिया और दाहिने मोंढ़े के नीचे पीठ पर एक बड़े जख्म का निशान चिक की तरफ दिखाकर कहा, "यही वह निशान है।"

इसके जवाब में चिक का परदा उठ गया और एक बहुत ही हसीन औरत उस खिड़की में बैठी हुई प्रभाकर सिंह को दिखाई दी, उसे देखने के साथ ही प्रभाकर सिंह बदहवास से हो गये और उनके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा।

8

अब हम थोड़ा हाल जमना, सरस्वती और इंदुमति का बयान करते हैं नकली हरदेई अर्थात् रामदास ने जमना, सरस्वती और इंदुमति की तरफ से प्रभाकर सिंह का दिल जिस तरह खट्टा कर दिया था उसे हमारे प्रेमी पाठक अच्छी तरह पढ़ ही चुके हैं, इसके बाद बाबाजी ने जब रामदास का असली भेद खोल कर सच्चा हाल प्रभाकर सिंह को बता दिया तब प्रभाकर सिंह चैतन्य हो गये और समझ गए कि जमना, सरस्वती और इंदुमति वास्तव में निर्दोष हैं और उनके बारे में जो कुछ हमने सोचा-समझा और किया वह सब अनुचित था अस्तु प्रभाकर सिंह को अपनी कार्रवाई पर बड़ा खेद हुआ। यह सब कुछ था परन्तु जमना, सरस्वती और इंदुमति के दिल पर जो गहरी चोट बैठ चुकी थी उसकी तकलीफ किसी तरह कम न हुई और न उन तीनों को इस बात का पता ही लगा कि किसी बाबाजी ने पहुँचकर हमारी तरफ से प्रभाकर सिंह का दिल साफ कर दिया।

अपने शागिर्द की मदद से प्रभाकर सिंह वाली तिलिस्मी किताब पाकर भूतनाथ वहाँ की बहुत-सी बातों से जानकार हो चुका था जो सिर्फ काम चलाने और जरूरी कार्रवाई करने के लिए इन्द्रदेव ने तैयार करके प्रभाकर सिंह को दे दही थी, परन्तु भूतनाथ ऐसे धूर्त और शैतान के लिए वही बहुत थी, उसी की मदद से भूतनाथ ने अपने कई शागिर्दों के साथ उस तिलिस्म के अन्दर पहुँचकर जमना, सरस्वती और इंदुमति को बेतरह सताया और दुःख दिया जिसका हाल हम खुलासे-तौर पर नीचे लिखते हैं।

ग्रहदशा की सताई हुई जमना, सरस्वती और इंदुमति को जब भूतनाथ ने तिलिस्मी कूप में ढकेल दिया तो वहाँ उन्हें एक मदद से वे तिलिस्म के अन्दर किसी कार्यवश स्वतंत्रता के साथ घूम रही थीं। वह मददगार कौन था और उस कुएँ के अन्दर ढकेल देने के बाद उन लोगों की जान क्योंकर बची इसका हाल फिर किसी मौके पर बयान किया जाएगा, इस समय हम वहाँ से उन तीनों का हाल बयान करते हैं जहाँ से तिलिस्म के अन्दर प्रभाकर सिंह ने उन तीनों को देखा था।

जमना, सरस्वती और इंदुमति का जो मददगार था वह बराबर अपने चेहरे पर नकाब डाले रहता था इससे उन तीनों ने उसकी सूरत नहीं देखी थी कि उसका मददगार किस सूरत का और कैसा आदमी है, यही सबब था कि जब भूतनाथ उस तिलिस्म के अन्दर गया तो उसने भी जमना और सरस्वती के मददगार को नहीं पहिचाना, हाँ पहिचानने के लिए उद्योग बराबर करता रहा।

एक दफे जमना ने मददगार से प्रार्थना भी की थी कि अपनी सूरत दिखा दे और अपना परिचय दे, परन्तु नकाबपोश ने उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की थी, हाँ इतना जरूर कह दिया था कि तुम लोग मुझे अपने बाप के बराबर समझो और जब कभी संबोधन करने की जरूरत पड़े तो नारायण के नाम से संबोधन किया करो अस्तु अब हम भी आगे चलकर मौका पड़ने पर उसे नारायण ही के नाम से संबोधन किया करेंगे।

जब मंदिर की जालीदार दीवार के अन्दर से प्रभाकर सिंह ने जमना, सरस्वती और इंदुमति को देखा था और कुछ रूखी-सूखी बातचीत भी की थी उस समय जो आदमी उन तीनों को मारने के लिए आया था और जिसे हम बैताल के नाम से संबोधन कर चुके हैं, वास्तव में भूतनाथ ही था। प्रभाकर सिंह को तो उसे हाथ से उन तीनों की रक्षा करने के लिए वहाँ तक पहुँचने में देर लगी परन्तु नारायण ने बहुत जल्द वहाँ पहुँचकर उस शैतान के हाथ से उन तीनों को बचा लिया। नारायण जानते थे कि वह वास्तव में भूतनाथ है और जमना, सरस्वती तथा इंदुमति को भी शक हो चुका था कि वह भूतनाथ है क्योंकि उससे घंटे ही भर पहिले वह तीनों से मिल चुका था और अपना विचित्र ढंग दिखलाकर अच्छी तरह धमका चुका था। मगर उस समय उसे काम करने का मौका नहीं मिला था। यही सबब था कि उसकी सूरत देखते ही वे तीनों चिल्ला उठीं और विमला **(जमना)** ने आँसू गिराते हुए चिल्लाकर प्रभाकर सिंह से कहा था "बचाइए, आप जल्दी यहाँ आकर हम लोगों की रक्षा कीजिए, यही दुष्ट हम लोगों के खून का प्यासा है!"

इसके बाद जब प्रभाकर सिंह दूसरी पहाड़ी पर चढ़कर ऊपर-ही-ऊपर वहाँ पहुँचे तो देखा कि बैताल अर्थात् भूतनाथ से

एक नकाबपोश मुकाबला कर रहा है। यही नकाबपोश नारायण था। नारायण ने वहाँ पहुँचकर उन तीनों औरतों को भाग जाने का इशारा करके भूतनाथ का मुकाबला किया और बड़ी खूबी के साथ लड़ा। जब प्रभाकर सिंह वहाँ पहुँचे और नारायण के कहे मुताबिक जमना, सरस्वती और इंदुमति के पीछे चले तब पुनः भूतनाथ और नारायण से लड़ाई होने लगी। भूतनाथ का कोई हर्बा नारायण के बदन पर कारगर नहीं होता था बल्कि नारायण के मांढ़ पर बैठकर भूतनाथ की तलवार टूट चुकी थी, अंत में नारायण के हाथ से जख्मी होकर भूतनाथ ने मुकाबले से मुँह फेर लिया। उसे विश्वास हो गया कि अगर थोड़ी दूर तक और मुकाबला करूँगा तो बेशक् मारा जाऊँगा, अस्तु वह धोखा देकर वहाँ से भाग खड़ा हुआ और नारायण ने भी उसका पीछा किया।

नारायण यद्यपि लड़ाई में भूतनाथ से ज्यादा ताकतवर और होशियार था मगर दौड़ने में उनका मुकाबला किसी तरह नहीं कर सकता था इसलिए भूतनाथ को पकड़ न सका और वह भाग कर नारायण की आँखों की ओट हो गया।

प्रभाकर सिंह ने जमना, सरस्वती और इंदुमति का पीछा किया। वे तीनों दीवार के दूसरी तरफ चली गई मगर दरवाजा बंद हो जाने कारण प्रभाकर सिंह उसके अन्दर न जा सके। उसी समय बाहर ही खड़े-खड़े सुना कि सरस्वती से और किसी गैर आदमी से बातचीत हो रही है। गैर आदमी जमना, सरस्वती और इंदुमति को बदकार साबित किया चाहता था और उसकी बातों में प्रभाकर सिंह के दिल की खटाई और भी बढ़ गई थी। मगर वास्तव में मामला दूसरा ही था। वह आदमी जो प्रभाकर सिंह को सुना-सुना कर सरस्वती से बातें कर रहा था असल में भूतनाथ का एक शागिर्द था और उसका मतलब यही था कि अपनी बातों से प्रभाकर सिंह का दिल जमना, सरस्वती और इंदुमति की तरफ से फेर दे, साथ ही इसके उस ऐयार ने यह भी चालाकी की थी कि अपनी असली सूरत में उन औरतों के पास न जाकर उसने एक जमींदार की सूरत बनाई थी और बातचीत करने के बाद बिना किसी तरह के तकलीफ दिए जमना, सरस्वती और इंदुमति के सामने से चला गया। इसके बाद प्रभाकर सिंह स्वयं जमना, सरस्वती और इंदुमति से जाकर मिले और जिस तरह से बातचीत करके इंदु का परित्याग किया आप लोग पढ़ ही चुके हैं, अब हमें इस जगह केवल उन औरतों ही का हाल लिखना है।

जब प्रभाकर सिंह इंदुमति का त्याग कर उन तीनों के सामने से चले गए तब इंदुमति बहुत ही उदास हुई और देर तक बिलख-बिलखकर रोती रही। अंत में उसने जमना से कहा, "बहिन, अब मेरे लिए जिंदगी अपार हो गई, जब पति ने ही मुझे त्याग दिया तब इस पापमय शरीर को लेकर इस दुनिया में रहना और चारों तरफ मारे-मारे फिरना मुझे पसन्द नहीं, अस्तु मैं इस शरीर को इसी जगह त्याग कर बखेड़ा तै करूँगी।"

जमना : नहीं बहिन, तुम इस काम में जल्दी मत करो और इस तरह यकायक हताश भी मत हो जाओ। मालूम होता है कि किसी दुश्मन ने उन्हें भड़का दिया है और इसी से उनका मिजाज बदल गया है। मगर यह बात बहुत दिनों तक कायम नहीं रह सकती,धर्म हमारी सहायता करेगा और एक-न-एक दिन असल भेद खुल जाने से वे अपने किए पर पश्चात्ताप करेंगे।

इंदुमति : मगर बहिन, मैं कब तक उस दिन का इंतजार करूँगी?

जमना : इन बातों का फैसला बहुत जल्द हो जाएगा, हम लोगों को ज्यादे इंतजार न करना पड़ेगा।

इंदुमति : खैर अगर तुम्हारी बात मान ली जाय तो भी उस दुश्मन के हाथ से बचे रहने की क्या तरकीब हो सकती है जो बार-बार हम लोगों का पीछा करके भी शान्त नहीं होता। अगर नारायण की मदद न होती तो वह..

इंदुमति इसके आगे कुछ कहने ही को थी कि उसके सामने से अपने मददगार नारायण को आते देखा। इस समय नारायण की पीठ पर एक गठरी थी जिसमें कोई आदमी बँधा था।

नारायण तेजी के साथ कदम बढ़ाता हुआ जमना, सरस्वती और इंदुमति के पास आया। गठरी जमीन पर रख कर तथा अपना परिचय देकर इंदुमति से बोला, "इंदु, मुझे मालूम हो गया कि तेरे दुश्मनों ने तुझे, बल्कि जमना-सरस्वती को भी

व्यर्थ बदनाम किया है और तुम लोगों की तरफ से प्रभाकर सिंह का दिल फेर दिया है। यह काम भूतनाथ के खास ऐयार का है जिसने हरदेई की सूरत बनकर तुमको और प्रभाकर सिंह को धोखा दिया। आजकल में जरूर उसकी खबर लूँगा इस समय में तुम्हारे जिस दुश्मन से लड़ रहा था वह वास्तव में ही भूतनाथ था।"

इंदुमति : **(ताज्जुब से बात काटकर)** क्या वह भूतनाथ है? मगर इस तिलिस्म के अन्दर वह क्योंकर आ पहुँचा?

नारायण : हाँ, वह भूतनाथ ही है। इन्द्रदेव ने प्रभाकर सिंह को हाथ की लिखी हुई एक छोटी-सी किताब दी थी, उसी किताब को पढ़कर प्रभाकर सिंह इस तिलिस्म के अन्दर आये थे, भूतनाथ के उसी ऐयार ने जो हरदेई बना हुआ था धोखा देकर वह किताब प्रभाकर सिंह की जेब से निकाली और अपने गुरु भूतनाथ को दे आया। उसी किताब की मदद से भूतनाथ इस तिलिस्म के अन्दर आ पहुँचा है और तुम तीनों को तथा प्रभाकर सिंह को मारने का उद्योग कर रहा है। खैर कोई चिंता नहीं जहां तक हो सकेगा मैं तुम लोगों की मदद करूँगा। अफसोस इसी बात का है कि इस समय मैं यहाँ अकेला हूं मगर भूतनाथ अपने कई ऐयारों को साथ लेकर आया हुआ है और तुम लोगों की मदद करते हुए इस समय मुझे इतनी फुरसत नहीं है कि घर जाकर अपने आदमियों को ले आऊँ या इन्द्रदेव को ही इस मामले की खबर करूँ, अगर चार पहर की भी मोहलत मिल जाय तो मैं इन्द्रदेव को खबर पहुँचा सकता हूँ, वह अगर यहाँ आ जाएगा तो फिर किसी दुश्मन के लिए कुछ न हो सकेगा।

इंदुमति : तो हम लोगों को आप अपने साथ इन्द्रदेव के पास क्यों नहीं ले चलते?

नारायण : हाँ, तुम लोगों को मैं अपने साथ वहाँ ले जा सकता हूँ मगर प्रभाकर सिंह की मदद भी तो करनी है। अगर उन्हें इसी अवस्था में छोड़कर तुम लोगों को साथ लेकर चला जाऊँ तो भूतनाथ का ऐयार उन्हें जरूर मार डालेगा क्योंकि वह अभी तक हरदेई की सूरत में है और प्रभाकर सिंह उस पर विश्वास करते हैं।

जमना: तो उन्हें इस मामले की खबर कर देनी चाहिए।

नारायण : मैं इसी फिक्र में हूं। तुम्हारे जिस दुश्मन से मैं लड़ रहा था वह अर्थात् भूतनाथ जख्मी होकर मेरे सामने से भाग गया, मैं उसी के पीछे दौड़ा हुआ चला गया था मगर उसे पकड़ न सका क्योंकि बीच में उसका एक शागिर्द पहुँच गया और उसने मेरा मुकाबला किया। अन्त में वह मेरे हाथ से मारा गया, मैं उसी को इस गठरी में बाँधकर उठा लाया हूँ। अब इसी जगह चिता बना कर इसे फूंक दूंगा, इसके बाद तुम लोगों को यहाँ से ले चलूँगा और किसी अच्छे ठिकाने बैठाकर प्रभाकर सिंह के पास जाऊँगा। अब ज्यादे देर तक बातचीत करना मैं मुनासिब नहीं समझता क्योंकि काम बहुत करना है और समय कम है, तुम लोग मेरी मदद करो और जल्दी से लकड़ी बटोर कर चिता बनाओ।

बात-की-बात में चिता तैयार हो गई और नारायण ने उस ऐयार की लाश को चिता पर रखकर आग लगा दी। थोड़ी देर तक इंदुमति खड़ी उस चिता की तरफ देखती और कुछ सोचती रही, इसके बाद नारायण से बोली, "आपके बगल में बटुआ लटक रहा है, इससे मालूम होता है कि आप भी कोई ऐयार हैं, अगर मेरा खयाल ठीक है तो आपके पास लिखने का सामान भी जरूर होगा!"

नारायण : हाँ-हाँ, मेरे पास लिखने का सामान है, क्या तुमको चाहिए?

इंदुमति : जी हाँ, कागज का एक टुकड़ा और कलम-दवात चाहिए।

नारायण ने अपने बटुए में से कागज का टुकड़ा और सयाही से भरी हुई एक सोने की जड़ाऊ कलम निकाल कर इंदु को दी, इंदु ने उस कागज पर कुछ लिखा और अपने आँचल में से कपड़े का टुकड़ा फाड़कर उसमें उसी कागजको बाँध कर एक तरफ फेंक दिया। यही वह चिट्ठी थी जो प्रभाकर सिंह को उस चिता के पास मिली थी।

इंदुमति ने उस पुर्जे में क्या लिखा है सो इस समय इसने किसी से न बताया और न किसी से उसने पूछा है, हाँ कुछ देर

बाद उसने यह भेद कला और विमला पर खोल दिया।

जमना, सरस्वती और इंदु को साथ लिए हुए नारायण वहाँ से रवाना हुए। वे उस तरफ नहीं गए जिस तरफ दीवार थी बल्कि उसके विपरीत दूसरी तरफ रवाना हुए। थोड़ी दूर जाने के बाद उन लोगों को जंगल मिला, वे लोग उस जंगल में चले गये। क्रमशः यह जंगल घना मिलता गया यहाँ तक कि लगभग दो कोस के जाते वे लोग एक ऐसी भयानक जगह में जा पहुँचे जहाँ बारीक-बारीक सैकड़ों पगडंडियाँ थीं और उनमें से अपने मतलब का रास्ता निकाल लेना बड़ा ही कठिन था मगर तीनों औरतों को लिए हुए नारायण अपने रास्ते पर इस तरह चले जाते थे मानो उन्हें सिवाय एक रास्ते या पगडंडी के कोई दूसरी पगडंडी दिखाई देती नहीं थी।

उस भयानक जंगल में थोड़ी दूर चले जाने के बाद उन्हें ढालवीं जमीन मिली और वे लोग पहाड़ी के नीचे उतरने लगे। जंगल पता होता गया और वे लोग क्रमशः मैदान की हवा खाते हुए नीचे की तरफ जाने लगे।

लगभग आधा घंटे और चले जाने के बाद वे लोग एक खूबसूरत मकान के पास पहुँचे और बड़ी ऊँची चारदीवारी से घिरा हुआ था और अन्दर जाने के लिए सिर्फ पूरब तरफ एक बहुत बड़ा लोहे का फाटक था।

वह मकान यद्यपि बाहर से देखने में खूबसूरत और शानदार मालूम होता था मगर उसके अन्दर एक सहन और दस-बारह कमरे तथा कोठरियों के सिवाय और कुछ भी न था। मकान क्या मानो कोई महाराजी धर्मशाला था।

मकान के चारों तरफ बाग था मगर इस समय उसकी अवस्था जंगल की- सी दिखाई दे रही थी। उसके चारों तरफ ऊँची चारदीवारी थी मगर वह भी कई जगह से मरम्मत के लायक हो रही थी।

तीनों औरतों को साथ लिए नारायण उस चारदीवारी के अन्दर घुसे और इधर-उधर देखते हुए उस इमारत के अन्दर चले गये जहाँ एक कमरे के अन्दर जाकर वे जमना से बोले, "देखो जमना, यह बाग के अन्दर जाने का दरवाजा है। इस मकान में जितने कमरे हैं उन सभी को कहीं-न-कहीं जाने का रास्ता समझना चाहिए। मैं तुम लोगों को जिस स्थान में ले जाना चाहता हूँ वहाँ का रास्ता यही है। मैं इस दरवाजे का भेद तुमको दिखा और समझा देना चाहता हूँ जिसमें यहाँ से जाने-आने के लिए तुम किसी की मुहताज न रहो। भूतनाथ जिस किताब को पाकर फूल रहा है और जिसकी मदद से वह इस तिलिस्म के अन्दर चला आया है उस किताब में इस इमारत का हाल कुछ भी नहीं लिखा है इसलिए समझ रखना कि भूतनाथ इसके अन्दर आकर तुम लोगों को सता नहीं सकता। **(सामने की दीवार की तरफ इशारा करके)** देखो दीवार में जो वह अलमारी दिखाई देती है वही यहाँ से जाने का रास्ता है। इसमें एक ही पल्ला है और खेंचने के लिए एक मुट्ठा लगा हुआ है, इसी मुट्ठे को चाभी समझना चाहिए। और देखो उस अलमारी के ऊपर क्या लिखा हुआ है?" इतना कह कर नारायण ठहर गए और जमना का मुँह देखने लगे जो उन हरूफों को बड़े गौर से देख रही थी। इंदुमति आगे बढ़ गई और उसने उन अक्षरों को पढ़कर नारायण को सुनाया। यह लिखा हुआ था

"दक्षिण श्रृषि वसु वाम, पुनरपि चन्द्रादित्य इमि
पुनि इमि गनहुँ सुजान, जौलौं वेद न पूरहीं।"

नारायण : ठीक है, यही लिखा हुआ है, अच्छा बताओ इसका मतलब क्या है?

इंदुमति : मेरी समझ में तो कुछ नहीं आया, चाहे शब्दों का अर्थ कुछ निकाल सकूँ मगर यह लिखा क्या है सो आप जानिए।

नारायण : यह इस दरवाजे को खोलने के विषय में लिखा है। इसका मतलब यह है कि इस मुट्ठे को **(जो दरवाजे में लगा हुआ है)** सात दफे दाहिने, आठ दफे बायें, फिर एक दफे दाहिने और बारह दफे बाएँ घुमाओ, इस तरह चार दफे करो तो दरवाजा खुल जाएगा।

जमनाः **(कुछ दूर तक उस लेख पर गौर करके)** ठीक है, इस लेख का यही मतलब है, मगर पढ़ने वाला यह कैसे जान सकेगा कि यह लेख इसी मुट्ठे को घुमाने के विषय में लिखा है?

नारायण : यह बात होशियार आदमी अपनी अकल से समझ सकता है, तिलिस्म बनाने वाले बिलकुल साफ-साफ तो लिखेंगे नहीं।

जमना : ठीक है।

नारायण : अच्छा तो अब आगे बढ़ो और अपने हाथ से दरवाजा खोलो।

नारायण की आज्ञानुसार जमना ने ऊपर लिखे ढंग से उस मुट्ठे को घुमाया। दरवाजा खुल गया और नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ दिखाई दीं। सामने एक आला था और उसमें एक छोटा-सा पीतल का सन्दूक रखा हुआ था जिसमें किसी तरह का ताला लगा हुआ न था। नारायण न वह सन्दूक खोल कर सभों को दिखाया कि इसमें रोशनी करने का काफी सामान मौजूद है अर्थात् कई मोमबत्तियाँ और चकमक पत्थर वगैरह उसमें मौजूद हैं।

एक मोमबत्ती जलाई गई और उसी की रोशनी के सहारे दरवाजा बंद करने के बाद सब कोई नीचे उतरे। जिस तरह दरवाजा खुलता था उसी ढंग से बंद भी होता था और यह बात दरवाजे के पिछली तरफ लिखी हुई थी।

कई सीढ़ियाँ नीचे उतर जाने के बाद एक सुरंग मिली। ये चारों आदमी सुरंग के अन्दर चले गये और जब सुरंग खत्म हुई तो सब कोई एक सरसब्ज मैदान में पहुँचे जहाँ दूर तक खुशनुमा पहाड़ी गुलबूटे लगे हुए थे और एक छोटा-सा सुन्दर मकान भी मौजूद था जिसके आगे छोटा-सा झरना बह रहा था और झरने के किनारे बहुत-से केले के दरख्त लगे हुए थे जिनमें कच्चे और पक्के सभी तरह के फल मौजूद थे।

नारायण ने जमना, सरस्वती और इंदुमति से कहा, "अब दो-तीन दिन तक तुम लोग इसी मकान में रहो तब तक मैं जाकर देखता हूँ कि नकली हरदेई और प्रभाकर सिंह में क्योंकर निपटी। नकली हरदेई की तरफ से उन्हें होशियार कर देना बहुत जरूरी है। **(एक छोटी-सी किताब जमना के हाथ में देकर)** लो इस किताब को तुम तीनों अच्छी तरह पढ़ जाओ और जहाँ तक हो सके खूब याद कर लो। इसमें उससे ज्यादे हाल लिखा है जो इन्द्रदेव ने तुम्हें बताया है या उस किताब में खिला हुआ है जो प्रभाकर सिंह के हाथ से निकल कर भूतनाथ के कब्जे में चली गई है।" इतना कहकर नारायण वहाँ से चले गए।

9

जमानिया में आधी रात के समय तिलिस्मी दारोगा[1] अपने मकान में बैठा किसी विषय पर विचार कर रहा है। उसके सामने कई तरह के कागज और चीठ्ठियों के लिफाफे फैले हुए हैं, जिनमें से एक चिट्ठी को वह बार-बार उठाकर गौर से देखता और फिर जमीन पर रख कर कुछ सोचने लगता है। दारोगा के बगल में सटकर एक कमसिन खूबसूरत और हसीन औरत बैठी हुई है। उसके कपड़े और गहने के ढंग तथा भाव से मालूम होता है कि वह बाबाजी **(दारोगा)** की स्त्री या गृहस्थ औरत नहीं है बल्कि कोई वेश्या है जो कि तिलिस्मी दारोगा अर्थात् बाबाजी से कोई घना संबंध रखती है।

एक चिट्ठी पर कुछ देर तक विचार करने के बाद दारोगा ने उस औरत की तरफ देखा और कहा "बीबी मनोरमा, वास्तव में यह चिट्ठी गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई है। यह चिट्ठी को देखकर तुमने मुझ पर बड़ा अहसान किया, अब वह जरूर मेरे कब्जे में आ जाएगा। मैं उसे अपना साथी बनाने के लिए बहुत दिनों से उद्योग कर रहा हूँ पर वह मेरे कब्जे में नहीं आता था, मगर अब उसे भागने की जगह न रहेगी।

मनोरमा : **(मुसकुराती हुई)** ठीक है, मगर मैं अफसोस के साथ कहती हूँ कि इस चिट्ठी को जो गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई है बल्कि उसकी लिखी हुई और चीठ्ठियों को भी जो आपके सामने पड़ी हुई हैं और जिन्हें मैं जबर्दस्ती नागर से ले आई हूँ आज ही वापस ले जाऊँगी क्योंकि नागर से तुरन्त ही वापस कर देने का वादा करके ये चीठ्ठियाँ आपको दिखाने के लिए मैं ले आई थी।

दारोगा : **(कुछ उदास चेहरा बना के)** ऐसा करने से मेरा काम नहीं चलेगा।

मनोरमा : चाहेजोकुछ हो,आपनेभी तोतुरंत वापसकर देनेकावादाकिया था।

दारोगा : ठीक है, मगर अब जो मैं देखता हूँ तो इन चिठ्ठियों की बदौलत मेरा बहुत काम निकलता दिखाई देता है।

मनोरमा : तो क्या आप चाहते हैं कि मैं नागर से झूठी बनूँ और वह मुझे दगाबाज कह के दुश्मनी की निगाह से देखे जिसे मैं अपनी बहिन से भी ज्यादा बढ़ कर मानती हूँ।

दारोगा : नहीं-नहीं, ऐसा क्यों होने लगा, जब तुम उसे बहिन से बढ़कर मानती हो और वह भी तुम्हें ऐसा ही मानती है तो क्या वह दो-तीन चीठ्ठियाँ तुम्हारी खुशी के लिए नहीं दे सकती और तुम मेरी खुशी के लिए उन्हें मेरे पास नहीं छोड़ सकतीं?

मनोरमा : नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। गदाधरसिंह और नागर में बहुत गहरी मुहब्बत का बर्त्ताव है, क्या उसे आप मेरे ही हाथ से खराब कराना चाहते हैं?

दारोगा : नहीं नही, मैं ऐसा नहीं चाहता। अगर तुम और नागर चाहोगी तो गदाधरसिंह को इन चिट्ठियों के बारे में कुछ भी खबर न होने पावेगी और उन दोनों की मुहब्बत का सिलसिला ज्यों-का-त्यों कायम रहेगा।

मनोरमा : क्या खूब! आप भी कैसी भोली-भाली बातें करते हैं! इन्हीं चिट्ठियों को दिखाकर तो आप गदाधरसिंह को अपने कब्जे में किया चाहते हैं और फिर कहते हैं कि इन चिट्ठियों के बारे में गदाधरसिंह को कुछ भी खबर न होगी कि वे आपके कब्जे में आ गई है।

दारोगा : **(शर्मिन्दा होकर)** तुम जानती हो कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ और किस तरह तुम्हारे लिए जान तक देने को तैयार हूँ

मनोरमा : मैं खूब जानती हूँ और इसीलिए आपकी खातिर इन चिट्ठियों को थोड़ी देर के लिए नागर से माँग लाई हूँ नहीं

तो क्या गदाधरसिंह की शैतानी और उदंडता को नहीं जानती! वह बात-की-बात में बिगड़ खड़ा होगा और मुझको तथा नागर को जहन्नुम में मिला देगा, बल्कि मैं जहाँ तक समझती हूँ इन चिट्ठियों का भेद खुलने से वह आपका दुश्मन हो जाएगा।

दारोगा : नहीं, ऐसा नहीं है। इन चिट्ठियों का भेद खुलने से यद्यपि वह हम लोगों का दुश्मन हो जाएगा मगर वह हम लोगों को तब तक तकलीफ न दे सकेगा जब तक ये चिट्ठियाँ पुनः लौटकर उसके कब्जे में चली जाएँ। मगर ऐसा होना बिलकुल ही असंभव है। इन चिट्ठियों की नकल दिखाकर मैं उसे धमकाऊँगा सही मगर इन असल चिट्ठियों को ऐसी जगह रखूँगा कि उसके देवता को भी पता न लगने पावेगा।

मनोरमा : यह सब आपका खयाल है। आपने सुना नहीं कि जब बिल्ली मजबूर होती है तब कुत्ते के ऊपर हमला करती है! न-मालूम नागर के ऊपर गदाधरसिंह को कितना भरोसा है कि ये सब खबरें गदाधरसिंह ने नागर को लिखीं, नहीं तो भूतनाथ ऐसे होशियार आदमी को ऐसी भूल न करनी चाहिए थी। इन चिट्ठियों को पढ़ करके एक अदना आदमी भी समझ सकता है कि दयाराम का घातक गदाधरसिंह ही है और वही अब उनकी जमना, सरस्वती नाम की दोनों स्त्रियों को मारना चाहता है। क्या ऐसी चिट्ठी का प्रकट हो जाना गदाधरसिंह के लिए कोई साधारण बात है? और ऐसा होने पर क्या वह नागर को जीता छोड़ देगा? कदापि नहीं। इसके अतिरिक्त अभी तो चिट्ठियों का सिलसिला जारी ही है और वह जमना तथा सरस्वती को मारने के लिए तिलिस्म के अन्दर घुसा ही है, आगे चलकर देखिए कि कैसी-कैसी चिट्ठियाँ आती हैं और उनमें क्या-क्या खबरें वह लिखता है। सिर्फ इन्हीं दो-चार चिट्ठियों पर अभी आप क्यों इतना फूल रहे हैं?

दारोगा इसका जवाब कुछ दिया चाहता था कि दरवाजे की तरफ से घंटी बजने की आवाज आई। उसके जवाब में दारोगा ने भी एक घंटी बजाई जो उसके पास पहिले ही से रखी हुई थी। एक लड़का लपकता हुआ दारोगा के सामने आया और बोला, "गदाधरसिंह आए हैं, दरवाजे पर खड़े हैं।"

लड़के की बात सुनकर दारोगा ने मनोरमा की तरफ देखा और कहा, "आया तो है बड़े मौके पर!"

"मौके पर नहीं बल्कि बेमौके! इतना कहकर मनोरमा ने वे चिट्ठियाँ दारोगा के सामने से उठा लीं जो गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई थीं या जिनके बारे में बड़ी देर से बहस हो रही थी, और यह कहकर उठ खड़ी हुई कि 'मैं दूसरे कमरे में जाती हूँ, उसे बुलाइए मगर मेरे यहाँ रहने की उसे खबर न होने पावे।'

10

गदाधरसिंह को लेने के लिए दारोगा खुद दरवाजे तक गया और बड़े आवभगत के साथ अपनी बैठक में ले आया। मामूली बातचीत और कुशल-मंगल पूछने के बाद दोनों में इस तरह की बातचीत होने लगी

दारोगा : मैंने आपके घर आदमी भेजा था मगर वह मुलाकात न होने के कारण सूखा ही लौट आया और उसी की जुबानी मालूम हुआ कि आप कई दिनों से किसी कार्यवश बाहर गए हुए हैं।

गदाधरसिंह : ठीक है, मैं कई दिनों से अपने घर पर नहीं हूँ, मगर आपको आदमी भेजने की जरूरत क्यों पड़ी?

दारोगा : आप जानते हैं कि मैं जब किसी तरद्दुद में पड़ जाता हूँ तब सबसे पहिले आपको याद करता हूँ क्योंकि मेरे दोस्तों में सिवाय आपके कोई भी ऐसा लायक और हिम्मतवर नहीं है जो समय पड़ने पर मेरी मदद कर सके।

गदाधरसिंह : कहिए क्या काम है? आपके लिए हर वक्त तैयार रहता हूँ और आपसे भी बहुत उम्मीद रखता हूँ। मैं सच कहता हूँ कि आपकी दोस्ती का मुझे बहुत बड़ा घमंड है और यही सबब है कि मैं इस समय आपके पास आया हूँ क्योंकि इधर महीनों से मैं सख्त मुसीबत में गिरफ्तार हो रहा हूँ, अगर मेरी इस मुसीबत का शीघ्र अंत न होगा तो मुझे इस दुनिया से एकदम अंतर्ध्यान हो जाना पड़ेगा।

दारोगा : आपने तो बड़े ही तरद्दुद की बात सुनाई! कहिए तो सही क्या मामला है?

गदाधरसिंह : नहीं पहिले आप ही कहिए कि मुझे क्यों याद किया था?

दारोगा : अच्छा पहिले मेरी ही राम कहानी सुन लीजिए, आप जानते ही हैं कि शहर के आसपास ही में कोई कमेटी[1] है जिसके स्थान का और सभासदों का कुछ भी पता नहीं लगता।

गदाधर सिंह : हाँ मैं सुन चुका हूँ, **(मुसकराकर)** मगर मेरा तो खयाल है कि आप भी उस कमेटी के मेम्बर हैं।

दारोगा : हरे-हरे, आप अच्छी दिल्लगी करते हैं, भला जिस राजा की बदौलत मैं इस दर्जे को पहुँच रहा हूँ और इतना सुख भोग रहा हूँ उसी के विपक्ष में हुई किसी कमेटी का मेंबर हो सकता हूँ? आज भी अगर मुझे उस कमेटी का पता लग जाए और सभासदों का नाम मालूम हो जाए तो मैं एक-एक को चुन कर कुत्ते की मौत मारूँ और कलेजा ठंडा करूँ!

गदाधरसिंह : **(मुसकराता हुआ)** कदाचित् ऐसा ही हो, मगर इस विषय पर आप मुझसे बहस न कीजिए, अपना हाल कहिए। मैं उस कमेटी का हाल अच्छी तरह जानता हूँ।

दारोगा : **(जिसका चेहरा गदाधरसिंह की बातों से कुछ फीका पड़ गया था)** आप ही की तरह हमारे महाराज के छोटे भाई शंकरसिंह जी को भी उस कमेटी के विषय में मुझ पर शक पड़ गया है। उनका भी यही कथन है कि मैं उस कमेटी का मेम्बर हूँ।

गदाधरसिंह : ठीक है, शंकरसिंह जी बड़े ही होशियार और बुद्धिमान आदमी हैं, आपके महाराज की तरह बोदे और बेवकूफ नहीं हैं जिन्हें आप मदारी के बन्दर की तरह जिस तरह चाहते हैं नचाया करते हैं।

दारोगा : बेशक वे बहुत होशियार और तेज आदमी हैं मगर मुझे विश्वास हो गया है कि वे मेरी जड़ खोदने के लिए तैयार हैं। यद्यपि मैं अपने को चालाक और धूर्त लगाता हूँ मगर सच कहता हूँ कि शंकरसिंह जी का मुकाबला किसी तरह नहीं कर सकता। तिलिस्म के विषय में भी जितनी जानकारी उनको है उतनी हमारे महाराज को नहीं है। कुंवर

गोपालसिंह जी को भी वह हद से ज्यादे प्यार करते हैं। अभी थोड़े दिन का जिक्र है कि स्वयं मुझे लाल-लाल आँखें करके धमका चुके हैं और कह चुके हैं कि देख दारोगा, होशियार हो जा, अपने राजा के भरोसे पर भूला न रहियो। मैं बहुत जल्द साबित कर दूँगा कि तू उस कमेटी का मेंबर है और इसके बाद तुझे सूअर के गलीज में रखकर फुँकवा दूँगा। खबरदार, मेरे धमकाने का हाल भाई साहब से कदापि न कहियो नहीं तो दुर्दशा का दिन...'

गदाधरसिंह : इससे मालूम होता है कि आपकी उस गुप्त कमेटी का हाल उन्हें मुझसे ज्यादा मालूम हो चुका है, ऐसी अवस्था में आपको चाहिए कि उन्हें इस दुनिया से उठाकर हमेशा के लिए निश्चिन्त हो जाइए नहीं तो उनका जीते रहना आपके लिए सुखदाई न रहेगा।

दारोगा : **(कुछ देर तक आश्चर्य से भूतनाथ का मुँह देखकर)** क्या यह बात आप हमदर्दी के साथ कह रहे हैं?

गदाधरसिंह : बेशक, आपसे दिल्लगी नहीं करता।

दारोगा : अगर मैं ऐसा करने के लिए तैयार हो जाऊँ तो जरूरत पड़ने पर क्या आप मेरी मदद करेंगे?

गदाधरसिंह : जरूर मदद करूँगा मगर शर्त यह है कि आप अपना कोई भेद मुझसे छिपाया न करें।

दारोगा : मैं तो आपका कोई भेद आपसे नहीं छिपाता और भविष्य के लिए भी कहता हूँ कि न छिपाऊँगा।

गदाधरसिंह : बेशक आप छिपाते हैं।

दारोगा : नमूने के तौर पर कोई बात कहिए?

गदाधरसिंह : पहिले तो इस कमेटी के विषय में ही देख लीजिए, आज तक आपने इस विषय में मुझसे कुछ कहा?

दारोगा : **(कुछ देर तक सिर नीचा करके और सोच के)** अच्छा मैं अपनी भूल स्वीकार करता हूँ और कसम खाकर एकरार करता हूँ कि इस कमेटी का भेद और स्थान तुमको बता दूँगा।

गदाधरसिंह : मैं भी कसम खाकर एकरार करता हूँ कि हर एक काम में आपकी मदद तब तक बराबर करता रहूँगा जब तक आप मेरे साथ या मेरे दोस्त इन्द्रदेव के साथ किसी तरह की दगाबाजी न करेंगे।

दारोगा : मैं आपके इस एकरार से बहुत ही प्रसन्न हुआ, मगर आश्चर्य की बात है कि आपने अपने साथ-ही-साथ इन्द्रदेव को शरीक कर लिया! मैं खूब जानता हूँ कि आजकल इन्द्रदेव आपके साथ दोस्ती का बर्ताव नहीं करता। यद्यपि वह मेरा गुरुभाई है और मैं भी उसका भरोसा करता हूँ मगर बात तो वाजिब है वह कहने में आती है।

गदाधरसिंह : इन्द्रदेव की बातों को आप नहीं समझ सकते खास करके मेरे संबंध में, यों तो आपने जो कुछ देखा या सुना हो मगर मैं इन्द्रदेव पर भरोसा रखता हूँ। मेरी और उनकी दोस्ती का अंत सिवाय मौत के और कोई नहीं कर सकता।

दारोगा : खैर, इस बहस से कोई मतलब नहीं, आप जानिए और वह जाने, मैं तो पहिले ही कह चुका हूँ कि वह मेरा गुरुभाई है मैं उसका भरोसा रखता हूँ। ऐसी अवस्था में भला मैं उसके साथ क्या दुश्मनी कर सकता हूँ। अच्छा अब आप अपने तरद्दुद का हाल बयान करिए कि आजकल आप किस मुसीबम में फँसे हैं।

गदाधरसिंह : मेरी मुसीबत के बढ़ाने वाले भी आपके शंकरसिंह ही हैं और कुछ-कुछ इन्द्रदेव ने भी चांड़ लगा रखी है, मगर मैं इसके लिए इन्द्रदेव को बदनाम नहीं कर सकता क्योंकि जिनकी वे मदद कर रहे हैं वे उनके खास रिश्तेदार और आपस वाले लोग हैं।

दारोगा : अगर यह बात है तो आपको भी जरूर शंकरसिंह से दुश्मनी हो गई होगी?

गदाधरसिंह : निःसन्देह।

दारोगा : अच्छा खुलासा तो कहिए।

गदाधरसिंह :बात वही पुरानी है दयाराम वाली।

दारोगा : **(आश्चर्य से)** क्या यह बात प्रसिद्ध हो गई कि आप दयाराम के घातक हैं?

गदाधरसिंह : अगर प्रसिद्ध हो नहीं गई तो अब कुछ दिन बाद प्रसिद्ध हो जाने में कुछ सन्देह भी नहीं रहा, क्योंकि दयाराम की दोनों स्त्रियाँ जिन्हें तमाम जमाना मुर्दा समझे हुए था जीती-जागती पाई गई हैं और उन्हें इस बात का विश्वास है कि उनके पति को गदाधरसिंह ने मारा है यद्यपि यह बात बिलकुल निर्मूल है..

दारोगा : **(बात काट कर आश्चर्य से)** क्या वास्तव में दयाराम की दोनों स्त्रियाँ अभी तक जीती हैं? फिर उनके मरने की गप्प किसने और क्यों उड़ाई?

गदाधरसिंह : यह सब तिलिस्म इन्द्रदेव ही के बाँधे हुए हैं और अब उन दोनों की मदद भी इन्द्रदेव ही कुछ-कुछ कर रहे हैं, मगर बीच में शंकरसिंह का कूद पड़ना मेरे लिए बड़ा ही दुखदाई हो रहा है। इन्द्रदेव की मदद तो नाममात्र ही के लिए थी, मगर ये हजरत जी छोड़कर उन दोनों की मदद कर रहे हैं और मुझे जहन्नुम में मिलाने के लिए तैयार हैं। क्या करें, तिलिस्म के अन्दर की बात है नहीं तो मैं दिखा देता कि गदाधरसिंह के साथ दुश्मनी करने का नतीजा कैसा होता है।

दारोगा : यह तो बड़ा ही नाजुक मामला निकला..

इसके बाद कुछ कहता-कहता दारोगा रुक गया क्योंकि उसे यह बात याद आ गई कि मनोरमा इसी जगह दूसरी कोठरी में छिपी हुई हम लोगों की बातें सुन रही है। संभव है कि दारोगा इसके आगे की बातचीत मनोरमा से छिपाना चाहता हो, अस्तु धीरे-से गदाधरसिंह से कुछ कह आँख का इशारा करने के बाद वह उठ खड़ा हुआ और गदाधरसिंह का हाथ पकड़े हुए दूसरे कमरे में चला गया।

11

जमना, सरस्वती और इंदुमति तिलिस्म के अन्दर **(जहाँ नारायण उन्हें रख गये थे)** बैठी हुई आपस में कुछ बातें कर रही हैं। यद्यपि रात आधी से कुछ ज्यादे ढल चुकी है परन्तु चन्द्रमा की किरणों द्वारा फैली चाँदनी के कारण दूर-दूर तक की चीजें बखूबी दिखाई दे रही हैं और पहाड़ी छटा का एक अपूर्व आनन्द मिल रहा है। बातें करती हुई जमना की निगाह उस तरफ जा पड़ी जिधर से झरने का पानी बड़ी सफाई के साथ बहता हुआ जा रहा था और ऐसा मालूम होता था कि तिलिस्मी कारीगरी ने इस पानी के ऊपर भी चाँदी की कलई चढ़ा दी है। किसी आदमी की आहट पाकर जमना चौंकी और बोली, "बहिन, देखो तो सही वह क्या है? मैं तो समझती हूँ कि कोई आदमी है।"

इंदुमति मुझे भी ऐसा ही मालूम होता है।

सरस्वती : यद्यपि किसी आदमी का यहाँ तक आ पहुँचना असंभव है परन्तु मैं यह भी नहीं कह सकती कि यह आदमी नहीं कोई जानवर है।

जमनाः **(जोर देकर)** बेशक् आदमी है!!

इंदुमति : देखो इसी तरफ चला आ रहा है, कुछ उधर आ जाने से अब साफ मालूम होता है कि आदमी है, जरा रुक कर दबकता और आहट लेता हुआ आ रहा है, इससे मालूम होता है कि हमारा दोस्त नहीं बल्कि दुश्मन है। देखो वह मेरी दाहिनी आँख फड़की, ईश्वर ही कुशल करे। (रुककर) बहिन, वह देखो इसके पीछे और भी एक आदमी मालूम पड़ता है।

सरस्वती : (अच्छी तरह देखकर) हाँ ठीक तो है, दूसरा आदमी भी साफ मालूम पड़ता है, आश्चर्य नहीं कि कोई और भी दिखाई दे! बहिन, मुझे भी खुटका होता है और दिल गवाही देता ही है, अब इनके मुकाबले के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

जमना : बेशक् ऐसा ही है, अब इनके मुकाबले के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

इंदुमति : इनसे मुकाबला करना मुनासिब होगा या भाग कर अपने को छिपा लेना? लो अब तो ये लोग बहुत नजदीक आ गये और मालूम होता है कि उन्होंने हम लोगों को देख भी लिया।

जमनाः बेशक् उन लोगों ने हमें देख लिया, चलो हम लोग भाग कर मकान के अन्दर चलें और दरवाजा बंद कर लें, मुकाबला करना ठीक न होगा।

इतना कहकर जमना मकान की तरफ तेजी के साथ चल पड़ी। सरस्वती तथा इंदुमति ने भी उसका साथ दिया।

यह मकान देखने में यद्यपि बहुत छोटा था मगर इसके अन्दर गुंजाइश बहुत ज्यादे थी और बनिस्बत ऊपर से इसका बहुत बड़ा हिस्सा जमीन में अन्दर था। इसके रास्तों का पता लगाना अनजान आदमी के लिए कठिन ही नहीं बल्कि बिलकुल ही असंभव था। दो-चार आदमी तो क्या पचासों आदमी इसके अन्दर छिपकर रह सकते थे जिनका पता सिवाय जानकार के कोई दूसरा नहीं लगा सकता था। इस मकान के अन्दर कैसी-कैसी कोठरियाँ, कैसे-कैसे तहखाने और कैसी-कैसी सुरंगें या रास्ते थे इसे इस तिलिस्म से संबंध रखने वाला भी हर एक आदमी नहीं जान सकता था, परन्तु नारायण ने जो किताब जमना को दी थी उसमें वहाँ का कुल हाल अच्छी तरह लिखा हुआ था।

अब हम यह लिख सकते हैं कि वे दोनों आने वाले कौन थे जिन्हें देखकर जमना, सरस्वती और इंदुमति भागकर घर में चली गई थीं।

ये दोनों भूतनाथ और तिलिस्म दारोगा साहब थे। दारोगा भूतनाथ की मदद पर तैयार हो गया और उसने प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हें तिलिस्म के अन्दर ले चल कर जमना, सरस्वती और इंदुमति को गिरफ्तार करा दूँगा। इसी तरह भूतनाथ ने भी दारोगा से वादा किया था कि महाराज जमानिया के भाई शंकरसिंह के मारने में मैं तुम्हारी मदद करूँगा और यह कार्रवाई इस ढंग से की जाएगी कि किसी को इस बात का गुमान भी न होगा कि शंकरसिंह कब और कहाँ मारे गए या उन्हें किसने मारा इत्यादि। यही सबब था कि ये दोनों इस समय तिलिस्म के अन्दर दिखाई दिए। यहाँ का बहुत कुछ हाल दारोगा को मालूम था मगर शंकरसिंह को यह आशा न थी कि दारोगा उनके साथ यहाँ तक बुरा बर्ताव कर गुजरेगा, अस्तु वे दारोगा की तरफ से बिलकुल ही बेखबर थे।

दारोगा और भूतनाथ दोनों आदमी सूरत बदलने के अतिरिक्त चेहरे पर नकाब भी डाले हुए थे इसलिए उन्हें कोई पहिचान नहीं सकता था।

जिस समय ये तीनों औरतें भाग कर मकान के अन्दर चली गईं उसके थोड़ी ही देर बाद भूतनाथ और दारोगा मकान के दरवाजे पर आ पहुँचे। उन्होंने तीनों को भाग कर मकान के अन्दर जाते हुए देख लिया था अस्तु तिलिस्मी ढंग से दरवाजा खोलने के लिए दारोगा साहब ने हाथ बढ़ाया ही था कि पीछे से किसी ने आवाज दी "कौन है?"

दारोगा और भूतनाथ को इस बात का निश्चय नहीं था कि जमना, सरस्वती और इंदुमति तिलिस्म के अन्दर किस ठिकाने पर हैं परन्तु भूतनाथ ने अपने कई शागिर्द इस तिलिस्म के अन्दर पहुँचा दिये थे जो कि नारायण की कार्रवाई पर बराबर ध्यान रखते थे। जब भूतनाथ और दारोगा तिलिस्म के अन्दर आए तब भूतनाथ का एक शागिर्द उन्हें मिला जिसके माथे पर अपना खास निशान देखकर भूतनाथ ने पहिचान लिया और उससे वहाँ का हाल पूछा। उस शागिर्द ने बता दिया कि जमना, सरस्वती और इंदुमति को नारायण ने फलाने मकान में रखा है, उसी के दिए निशान के अंदाज पर भूतनाथ और दारोगा वहाँ आए थे और उन्होंने जमना, सरस्वती तथा इंदुमति को अपनी आँखों से मकान के अन्दर जाते देख लिया था। जब दारोगा ने मकान का दरवाजा खोलने के लिए हाथ बढ़ाया उसी समय पीछे से आवाज आई, "कौन है?" दारोगा ने अपना हाथ खैंच लिया और पीछे फिर कर देखा। एक आदमी पर निगाह पड़ी जिसने सिर से पैर तक अपने को स्याह लबादे से ढाँक रखा था। भूतनाथ हाथ में खंजर लिए हुए उस आदमी के पास चला गया और डपट कर बोला, "तू कौन है!"

उस आदमी ने भूतनाथ की बात का कुछ भी जवाब न दिया और पीछे की तरफ हटने लगा। भूतनाथ भी उसी के साथ उसकी तरफ आगे बढ़ता गया और उसने कई दफे डपटकर उस आदमी से तरह-तरह के सवाल किए और कटु वचन भी कहे परन्तु भूतनाथ कि किसी बात का भी उसने जवाब न दिया और बराबर पीछे की तरफ हटता चला गया। भूतनाथ भी उसके साथ-ही-साथ आगे बढ़ता गया, यहाँ तक कि एक झाड़ी के पास पहुँचकर वह आदमी रुक गया और उसने अपने दोनों हाथ लबादे के बाहर निकाले जिनमें से एक में ढाल और दूसरे में तलवार थी। यहाँ पर घनी झाड़ी होने के कारण चन्द्रमा की चाँदनी नहीं पहुँचती थी अस्तु अपने लिए उत्तम स्थान समझकर उस आदमी ने जबान खोली और भूतनाथ से कहा, "हाँ। अब तुझको बताना पड़ेगा कि तू कौन है और तिलिस्म के अन्दर क्योंकर आया?" पाठक, थोड़ी देर के लिए हम इस आदमी का नाम "भीम" रख देते हैं। भीम की बात सुनकर पहिले तो भूतनाथ चुप हो गया मगर फिर कुछ सोचकर बोला, "मैं तुम्हारी बात का जवाब क्योंकर दे सकता हूँ जबकि तुमने खुद मेरी बात का कुछ भी जवाब नहीं दिया?"

भीम : यद्यपि मैंने वहाँ पर तुम्हारी बातों का कुछ भी जवाब नहीं दिया परन्तु अब तुम्हारे हर एक बात का जवाब देने के लिए तैयार हूँ मगर शर्त यह है कि तुम ठीक-ठीक ईमानदारी के साथ अपना परिचय दो।

भूतनाथ : बेशक् मैं ईमानदारी के साथ अपना परिचय दूँगा, मेरा नाम रंगनाथ ऐयार है, मैं मिर्जापुर का रहने वाला हूँ।

भीम : **(खिलखिलाकर हँसने के बाद)** वाह-वाह! खूब ईमानदारी के साथ अपना परिचय दिया। रंगनाथ तो आजकल हमारे यहाँ मेहमान है, यह दूसरा रंगनाथ कहाँ से आया?

भूतनाथ : **(कुछ सकपकाना-सा होकर)** नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता अगर कोई आदमी रंगनाथ के नाम का तुम्हारे पास आया है तो बेशक उसने तुमको धोखा दिया, असल रंगनाथ मैं ही हूँ और मैं प्रभाकरसिंह को इस कैद से छुड़ाने के लिए यहाँ आया हूँ!

भीम : अगर तुम्हारा कहना सच है और रंगनाथ के नाम से किसी दूसरे आदमी ने मेरे यहाँ आकर मुझे धोखा दिया है तो तुम उसे जरूर पहिचान सकते हो, उसकी तस्वीर मेरे पास है। तुम देखो और पहिचानो। उसका कथन है कि भूतनाथ इस तिलिस्म के अन्दर आया है और कई आदमियों को धोखा दिया चाहता है।

भूतनाथ : **(बड़ी चाह के साथ)** मैं जरूर उनकी तस्वीर देखूँगा और पहिचानूँगा।

भीम ने अपनी जेब से निकाल कर एक पीतल की डिबिया भूतनाथ के हाथ में दी और कहा; "देखो हिफाजत से खोलो, इसी के अन्दर उसकी तस्वीर है।"

भूतनाथ ने भीम के हाथ से डिबिया ले ली और दो कदम बढ़कर चन्द्रमा की चाँदनी में वह डिबिया खोलने लगा। डिबिया बड़ी मजबूती के साथ बंद थी और हल्के हाथों से उसका खुलना कठिन था अस्तु गर्दन झुकाकर और दोनों हाथों से जोर लगाकर भूतनाथ ने वह डिबिया खोली। उसके अन्दर बहुत हल्की और गर्द के समान बारीक बुकनी भरी हुई थी जो झटके के साथ डिबिया खुलने के कारण उसमें से उछली और उड़कर भूतनाथ की आँख और नाक में पड़ गई। वह बहुत ही तेज बेहोशी की बुकनी थी जिसने भूतनाथ को बात करने की भी मोहलत न दी, वह तुरन्त ही चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। भीम ने झपटकर अपनी डिबिया सम्हाली और भूतनाथ के हाथ से लेकर अपनी जेब में रख ली, इसके बाद अपने लबादे में भूतनाथ की गठरी बाँधी और उसे पीठ पर लाद कर एक तरफ का रास्ता लिया।

अब उधर का हाल सुनिए। भीम के साथ जाकर भूतनाथ तो बहुत दूर निकल गया मगर दारोगा अपनी जगह से न हिला। उसने मकान का दरवाजा खोला और जमना, सरस्वती तथा इंदुमति को गिरफ्तार करने का उद्योग करने लगा दरवाजा खोलता हुआ वह एक दालान में पहुँचा, जिसके दोनों तरफ दो कोठरियाँ थीं और उन सभी कोठरियों के दरवाजे किस तरह खुलते थे, इसका पता केवल देखने से नहीं लग सकता। किसी खास तरकीब से दारोगा ने बाईं तरफ वाली कोठरी का दरवाजा खोला और हाथ में नंगी तलवार लिए हुए उसके अन्दर घुसा। यह छोटी-सी सुरंग थी जिसमें दस-बारह हाथ चल कर दारोगा एक बारहदरी में पहुँचा जहाँ बिलकुल ही अंधकार था,सिर्फ दो-तीन जगह किसी सूराख की राह से चन्द्रमा की रोशनी पड़ रही थी मगर उससे वहाँ का अँधकार दूर न हो सकता था।

दारोगा को विश्वास था कि जमना, सरस्वती और इंदुमति जरूर इसी दालान में होंगी और उनके हाथ में किसी तरह का कोई हर्बा भी जरूर होगा, इसी खयाल से उसकी हिम्मत न पड़ी कि वह इस अँधकार में आगे की तरफ बढ़े अस्तु वह चुपचाप खड़ा रहकर वहाँ की आहट लेने लगा। कुछ ही देर बाद किसी के धीरे-धीरे बोलने की आवाज उनके कान में आई और उसके बाद मालूम हुआ कि कई आदमी आपस में धीरे-धीरे बात कर रहे हैं। आवाज हल्की और नाजुक थी इसलिए दारोगा समझ गया कि जरूर यह जमना, सरस्वती और इंदुमति हैं। दारोगा ऐयार का छोटा-सा बटुआ अपने कपड़ों के अन्दर छिपाए हुआ था जिसमें से उसने टटोल कर एक छोटी डिबिया निकाली, उस डिबिया में कई तरह के खटके और पुरजे लगे हुए थे, दारोगा ने खटका दबाया जिससे वह डिबिया चमकने लगी और उसकी रोशनी ने वहाँ के अँधकार को अच्छी तरह दूर कर दिया। अब दारोगा ने देख लिया कि उसके सामने दालान में तीन औरतें हाथ में खंजर लिए खड़ी हैं।

जमना, सरस्वती और इंदुमति को दारोगा अच्छी तरह पहिचानता न था मगर सुनी-सुनाई बातों से वह अनुमान जरूर कर सकता था। इस मौके पर तो उसे यह मालूम ही था कि यहाँ पर जमना, सरस्वती और इंदुमति विराज रही हैं और ये तीनों औरतें अपनी असल सूरत में भी थीं इसलिए दारोगा को विश्वास हो गया कि जमना, सरस्वती और इंदुमति ये ही हैं। दारोगा ने उसी जगह खड़े रहकर जमना की तरफ देखा और कहा, "तुम लोग मुझसे व्यर्थ ही डर कर भाग रही हो!

मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूँ और न तुम्हारे किसी दुश्मन का भेजा हुआ हूँ।"

जमना : फिर तुम कौन हो और हम लोगों का पीछा क्यों कर रहे हो?

दारोगा : मैं इस तिलिस्म का पहरेदार हूँ और प्रभाकर सिंह का भेजा हुआ तुम लोगों के पास आया हूँ। उनका हुक्म है कि तुम लोगों को अपने साथ ले जाकर उनके पास पहुँचा दूँ!

जमना : तुम्हारी बातों को हमें क्योंकर विश्वास हो? क्या उनके हाथ की कोई चिट्ठी भी लाए हो?

दारोगा : हाँ, मैं चिट्ठी लाया हूँ। उन्होंने खुद ही खयाल करके एक चिट्ठी भी अपने हाथ से लिख कर दी है।

जमना : अगर ऐसा है तो लाओ, वह चिट्ठी मुझे दो, मैं पहिले उसे पढ़ लूँ तब तुम्हारी बातों पर विचार करूँ।

दारोगा : हाँ लो मैं चिट्ठी देता हूँ, यह रोशनी जो मेरे हाथ में है ज्यादे देर तक ठहर नहीं सकती इसलिए पहिले मैं दूसरी रोशनी का इंतजार कर लूँ तब चिट्ठी तलाश कर लूँ।

इतना कहकर दारोगा ने वह डिबिया जमीन पर रख दी और उसी की रोशनी में उसने अपना बटुआ खोलकर एक खाकी रंग की मोमबत्ती निकाली और चकमक से आग पैदा करके उससे रोशनी करने के बाद वह डिबिया बंद करके अपने बटुए में रख ली। अब दालान भर में उसी मोमवत्ती की रोशनी फैली हुई थी। वह मोमबत्ती कुछ खास तरकीब और कई दवाईयों के योग से तैयार की गई थी। उसका रंग खाकी था और बलने पर उसमें से बेहोशी पैदा करने वाला बहुत ज्यादा धुआँ निकलता था। दारोगा ने यह सोचकर कि शायद आज की कार्रवाई में इस मोमवत्ती की जरूरत पड़े। पहिले से ही अपने बचाव का बंदोबस्त कर लिया था अर्थात् किसी तरह की दवा खा या सूँघ ली थी मगर जमना, सरस्वती और इंदुमति अपने को इस धुएँ से बचा नहीं सकती थीं और न इस बात का उन्हें गुमान ही हुआ कि बेहिसाब धुआँ पैदा करने वाली इस मोमबत्ती में कोई खास बात है।

दारोगा ने मोमवत्ती बाल कर जमीन पर जमा दी और उसकी रोशनी में प्रभाकर सिंह के हाथ की चिट्ठी खोजने के बहाने से अपना बटुआ टटोलने लगा।

कभी बटुए की तलाशी लेता, कभी अपने जेबों को टटोलता और कभी कमर में देखकर बनावटी ताज्जुब से हाथ पटकता और कहता कि 'न मालूम चिट्ठी कहाँ रख दी है! मेरे जैसा बेवकूफ भी कोई न होगा। भला ऐसी जरूरी चिट्ठी को इस तरह रखना चाहिए कि समय पर जल्दी मिल न सके'!

चिट्ठी की खोज और कपड़ों की तलाशी में दारोगा ने बहुत देर लगा दी और तब तक उस मोमवत्ती का धुआँ तमाम कमरे में फैल गया। बेचारी जमना, सरस्वती और इंदुमति चिट्ठी की चाह में बड़ी उत्कंठा से दारोगा की हरकतों को खड़ी-खड़ी देख रही थीं मगर उन लोगों को यह नहीं मालूम होता था कि इस धुएँ की बदौलत हम लोगों की हालत बदलती चली जा रही है। थोड़ी देर ही में वे तीनों बेचारी औरतें बेहोश होकर जमीन पर लेट गई और अब दारोगा ने बड़ी फतहमंदी और खुशी की निगाह से उन तीनों की तरफ देखा।

12

यह नहीं मालूम होता कि कृष्णपक्ष है या शुक्लपक्ष अथवा रात है या दिन क्योंकि हम जिस समय इस स्थान पर पहुँचते हैं वहाँ चिराग या इसी तरह की किसी रोशनी के सिवाय और किसी सच्चे उजाले या चाँदने का गुजर नहीं हो सकता। हम यह भी नहीं कह सकते कि यह कोई तहखाना है या सुरंग, अँधकारमय कोई कोठरी है या बालाखाना, सिर्फ इतना ही देख रहे हैं कि एक मामूली कोठरी में जिसमें सिवाय एक मद्धिम चिराग के और किसी तरह की रोशनी नहीं है, जमना, सरस्वती और इंदुमति बैठी हुई गर्म-गर्म आँसू गिरा रही है जिसका विशेष पता उन्हीं हिचकियों से लग रहा है। उन तीनों के पैर बँधे हुए हैं और किसी मोटी रस्सी के सहारे वे एक लकड़ी के खंभे के साथ भी बँधी हुई हैं जिसमें पैर से चलना तो असंभव ही है खिसककर भी दो कदम इधर-उधर न जा सकें। उन तीनों के सामने बैठे हुए तिलिस्मी दारोगा पर निगाह पड़ने ही से विश्वास होता है कि इन तीनों पर इतनी सख्ती होने का कारण यही बेईमान दारोगा है।

पहिले क्या-क्या हो चुका है सो हम कुछ नहीं कह सकते परन्तु इस समय हम देखते हैं कि वे तीनों अपनी बेबसी और मजबूरी पर जमीन की तरफ देखती हुई गर्म-गर्म आँसू गिरा रही हैं और इस अवस्था में कभी कोई सर उठा कर दारोगा की तरफ देख भी लेती है।

कुछ देर तक सन्नाटा रहने के बाद जमना ने एक लंबी साँस ली और सर उठा कर दारोगा की तरफ देख धीमी आवाज से कहा "बहुत देर तक सोचने के बाद अब मैं आपको पहिचान गई और जान गई कि आप जमानिया राजा के कर्ता-धर्ता दारोगा साहब हैं।"

दारोगा : बेशक् मैं वही हूँ। इस समय अपने-आप को छिपाना नहीं चाहता इसलिए असली सूरत में तुम लोगों के सामने बैठा हुआ हूँ।

जमना: ठीक है, तो मैं समझती हूँ कि उस तिलिस्म के अन्दर हम लोगों को बेहोश करके यहाँ ले आने वाले भी आप ही हैं।

दारोगा : बेशक्!

जमना: आखिर इसका कारण क्या है! हम लोगों ने आपका क्या बिगाड़ा है जो आप हमारे साथ इतनी सख्ती का बर्ताव कर रहे हैं?

दारोगा : मेरा तुम लोगों ने कुछ भी नहीं बिगाड़ा मगर मेरे दोस्त भूतनाथ को तुम लोग व्यर्थ सता रही हो इसलिए मुझे मजबूर होकर तुम लोगों के साथ ऐसा बर्ताव करना पड़ा।

जमना : **(क्रोध में आकर कुछ तेजी से)** क्या भूतनाथ को हम लोग सता रही हैं! क्या वह हम लोगों को मिट्टी में मिला कर अभी तक बाज नहीं आता और बराबर जख्म लगाए नहीं जा रहा है!!

दारोगा : कदाचित् ऐसा ही हो परन्तु उसका कहना तो सही है कि तुम लोग व्यर्थ ही उसे कलंकित करके दुनिया में रहने के अयोग्य बनाने की चेष्टा कर रही हो।

जमना : आह! बड़े अफसोस की बात है कि आप अपने मुँह से ऐसे शब्द निकाल रहे हैं और अपने को उन बातों से पूरा-पूरा अनजान साबित किया चाहते हैं?

दारोगा : सो क्या? मुझे इन बातों से मतलब?

जमना : अगर कुछ संबंध नहीं है तो हम लोगों को वहाँ से क्यों कैद कर लाए?

दारोगा : केवल अपने दोस्त की मदद कर रहा हूं।

जमना : और आप इस बात को नहीं जानते कि हमारा पति इसी दुष्ट के हाथ से मारा गया है? और क्या आपकी मंडली में यह बात मशहूर नहीं है?

दारोगा : हाँ दो-चार आदमी ऐसा कहते हैं, परन्तु भूतनाथ का कथन है कि इसका कारण तुम ही हो, अर्थात् केवल तुम ही लोगों ने यह बात व्यर्थ मशहूर कर रखी है। मुझे स्वयं इस विषय में कुछ भी नहीं मालूम है।

जमना : **(ताने के ढंग पर)** बहुत सच्चे! अगर यह बात आपको मालूम नहीं है तो भूतनाथ आपका दोस्त भी नहीं है।

दारोगा : भूतनाथ मेरा दोस्त जरूर है और वह मुझसे कोई बात छिपा नहीं रखता! खैर थोड़ी देर के लिए अगर यह भी मान लिया जाय कि तुम्हारा ही कहना ठीक है तो मैं तुमसे पूछता हूं कि तुम भूतनाथ को बदनाम करके क्या फायदा उठा सकती हो? भूतनाथ इस समय स्वतंत्र है किसी रियासत का तावेदार नहीं जो उस पर नालिश कर सकोगी, फिर ऐसी अवस्था में उससे दुश्मनी करके तुम अपना ही नुकसान कर रही हो। इसके अतिरिक्त मैं खूब जानता हूं कि भूतनाथ तुम्हारे पति का सच्चा और दिली दोस्त था और तुम्हारे पिता भी उसको ऐसा ही मानते थे, ऐसी अवस्था में यह कब संभव है कि स्वयं भूतनाथ अपने ही हाथों से तुम्हारे पति को मारे। ऐसा करके वह एक फायदा उठा सकता था? क्या तुमको विश्वास है कि भूतनाथ ने तुम्हारे पति को मारा? अच्छा तुम बताओ कि ऐसा करके उसने क्या फायदा उठाया?

जमना : हम लोगों ने एक तौर पर इस दुनिया ही को छोड़ा हुआ है और बिलकुल मर्दो की हालत में पहाड़ी खोह और कंदराओं में रहकर जिंदगी के दिन बिता रही हैं। इसलिए आजकल की दुनिया का हाल मालूम नहीं है अस्तु मैं नहीं कह सकती कि उसने मेरे पति को मार कर क्या फायदा उठाया, परन्तु इतना मैं जरूर जानती हूँ कि मेरे पति की मौत भूतनाथ के ही हाथ से हुई है।

दारोगा : यह बात तुमसे किसने कही?

जमना : सो मैं तुमसे नहीं कह सकती।

दारोगा : खैर न कहो तुम्हें अख्तियार है, मगर मैं फिर भी इतना जरूर कहूँगा कि तुम्हारा खयाल गलत है। भूतनाथ ने तुम्हारे पति को कदापि नहीं मारा और कदाचित् धोखे में ऐसा हो गया हो तो धोखे की बात पर सिवाय अफसोस करने के और कुछ भी उचित नहीं है। कई दफे ऐसा होता है कि धोखे में माँ का पैर बच्चे के ऊपर पड़ जाता है, तो क्या इसका बदला बच्चे को माँ से लेना चाहिए? कभी नहीं। तुम खुद जानती हो कि भूतनाथ से, जो वास्तव में गदाधरसिंह है, तुम्हारे पति की कैसी दोस्ती थी।

जमना : बेशक मैं इस बात को जानती हूँ और यह भी मानती हूँ कि कदाचित् धोखे ही में भूतनाथ से वह काम हो गया हो, परन्तु आप ही बताइए कि क्या इस अधर्म को छिपाने के लिए भूतनाथ को हम लोगों का पीछा करना चाहिए?

दारोगा : हाँ, ये बेशक उसकी भूल है, इसके लिए मैं उसे ताड़ना दूँगा परन्तु मैं तुम्हें सच्चे दिल और हमदर्दी के साथ राय देता हूं कि तुम भूतनाथ के साथ दुश्मनी का खयाल छोड़ दो नहीं तो पछताओगी और तुम्हारा सख्त नुकसान होगा क्योंकि तुम भूतनाथ का मुकाबला नहीं कर सकती। तुम अबला और निर्बल ठहरीं और वह होशियार ऐयार। तिस पर उसके दोस्त भी बहुत गहरे लोग हैं।

जमना : मैं जानती हूँ कि उसके और हमारे बीच हाथी और चिऊंटी का-सा फर्क है और आप जैसे समर्थ लोग उसके दोस्त भी हैं, और इस बात को भी मानती हूँ कि मैं उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकती, परन्तु आप ही बताइए कि ऐसी अवस्था में वह हम अबलाओं से डरता ही क्यों है?

दारोगा : सिर्फ बदनामी के खयाल से डरता है, क्योंकि अगर यह झूठा कलंक उस पर लग जाएगा और वह दयाराम का घाती मशहूर हो जाएगा तो फिर वह दुनिया में किसी को मुँह न दिखा सकेगा; और अगर तुम उसे माफ कर दोगी तो वह खुशी से किसी रियासत में रहकर अपनी जिंदगी बिता सकेगा और जन्म-भर तुम्हारा मददगार भी बना रहेगा।

जमना : मुझे उसकी मदद की कोई जरूरत नहीं है और न मेरे दिल का बहुत बड़ा जख्म जो उसके हाथों से पहुँचा है आराम हो सकता है। समझ लीजिए कि अब चूहे और बिल्ली में दोस्ती कायम नहीं हो सकती।

दारोगा : यह समझना तुम्हारी नादानी है। मैं कह चुका हूँ कि ऐसा करने से तुम्हें सख्त तकलीफ पहुँचेगी।

जमना : बेशक् ऐसा ही है, तभी तो मैं कैद करके यहाँ लाई गई हूँ।

दारोगा : तुम खुद ही सोच लो कि यह कैसी बात है, अगर तुम मार ही डाली जाओगी तो फिर दुनिया में इसके लिए उससे बदला लेने वाला कौन रह जाएगा?

जमना : मेरे पीछे उसका पाप उससे बदला लेगा या इस बात के मशहूर हो जाने ही से वह दीन-दुनिया के लायक न रहेगा और यही उस बात का बदला समझा जाएगा। आपने उसकी मदद की है और इसलिए हम लोगों को यहाँ कैद कर लाए हैं तो बेशक् हम लोगों को मार कर अपने कलेजा ठंडा कर लीजिए, हम लोग तो खुद अपने को मुर्दा समझे हुए हैं, मगर इस बात को समझ रखिएगा कि हम लोगों के मारे जाने से उसकी बदनामी का झंडा जो बड़ी मजबूती के साथ गाड़ा जा चुका है गिर न पड़ेगा और उस झंडे के उड़ने वाले तथा उससे बदला लेने वाले कई जबर्दस्त आदमी कायम रह जाएँगे!

दारोगा : यह तुम्हारा खयाल-ही-खयाल है, जिस तरह तुम उसकी केवल इच्छा मात्र से गिरफ्तार कर ली गई हो उसी तरह उसके और दुश्मन भी बात-की-बात में गिरफ्तार हो जाएँगे।

जमना : इस बात को मैं नहीं मान सकती।

दारोगा : नहीं मानोगी तो मैं मना दूँगा। इसका काफी सबूत मेरे पास है।

जमना : हाँ, अगर मेरा दिल भर जाने के लायक कोई सबूत मिल जाएगा तो मैं जरूर मान जाऊँगी।

दारोगा : अच्छा-अच्छा, पहिले मैं तुमको इस बात का सबूत दे लूँगा तब तुमसे बात करूँगा।

इतना कहकर दारोगा अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और उस जगह गया जहाँ खंभे के साथ ये तीनों औरतें बँधी हुई थीं। उस खंभे में से जमना, सरस्वती और इंदुमति को खोला मगर उनकी हथकड़ी तथा बेड़ी नहीं उतारी, हाँ, बेड़ी की जंजीर जरा ढीली कर दी जिसमें वे धीरे-धीरे कुछ दूर तक चल सकें। इसके बाद उन तीनों को लिए सामने की दीवार के पास गया जहाँ एक छोटा-सा दरवाजा था और उसमें मजबूत ताला लगा हुआ था। दारोगा ने कमर में से ताली निकाल कर दरवाजा खोला और उन तीनों के लिए हुए उसके अन्दर घुसा। यह रास्ता सुरंग की तरह था जो कि दस-बारह कदम जाने के बाद खतम हो जाता था अस्तु उसी अँधकारमय रास्ते में उन तीनों को लिए हुए दारोगा चला गया। जब रास्ता खत्म हुआ तब उसने एक खिड़की खोली जो कि जमीन से छाती बराबर ऊँची थी। उस खिड़की के खुलने से उजाला हो गया और तब दारोगा ने उन औरतों को नीचे की तरफ झाँक कर देखने के लिए कहा।

उस समय जमना, सरस्वती और इंदुमति को मालूम हुआ कि वे तीनों जमीन के अन्दर किसी तहखाने में कैद नहीं हैं बल्कि उनका कैदखाना किसी मकान के ऊपरी हिस्से पर है।

खिड़की की राह से नीचे की तरफ झाँककर उन्होंने देखा कि एक छोटा-सा मामूली नजरबाग है जिसके चारों तरफ की दीवारें बहुत ऊँची-ऊँची हैं। उस बाग में एक टूटे पेड़ के साथ हथकड़ी-बेड़ी से मजबूर प्रभाकर सिंह बाँधे हुए हैं। उन्हें

देखते ही इंदुमति का कलेजा काँप गया और जमना तथा सरस्वती के रोंगटे खड़े हो गये। उस समय दारोगा ने जमना की तरफ देखकर कहा, "तुम लोगों ने अच्छी तरह देख लिया कि तुम्हारे प्यारे प्रभाकर सिंह, जो तुम लोगों के बाद भूतनाथ पर कलंक लगा सकते थे तुम लोगों के साथ ही गिरफ्तार कर लिए गए, बताओ अब तुम्हें किस पर भरोसा है?"

जमना : भरोसा तो हमें केवल ईश्वर पर ही है मगर फिर भी इतना ज़रूर कहूँगी, मेरे मददगार कोई और ही लोग हैं जिनका नाम तुम्हें किसी तरह भी मालूम नहीं हो सकता!

दारोगा : तुम्हारा यह कहना भी व्यर्थ है, मुझसे और भूतनाथ से कुछ भी छिपा नहीं है।

इतना कहकर दारोगा ने खिड़की बंद कर दी और वहाँ पुनः अँधकार हो गया। इसके बाद उन तीनों को लिए हुए उसी पहिले स्थान पर चला आया और उसी खंभे के साथ पुनः तीनों को बाँधकर पैर की जंजीर कस दी।

प्रभाकर सिंह को कैद की हालत में देखकर वे तीनों बहुत ही परेशान हुईं और उनके दिल में तरह-तरह की बातें पैदा होने लगीं। दारोगा ने पुनः जमना की तरफ देखकर कहा, "मैं फिर कहता हूँ कि भूतनाथ से दुश्मनी रखकर तुम लोग इस दुनिया में सुखी नहीं रह सकतीं।"

जमना : **(ऊँची साँस लेकर)** अब मेरे लिए इस दुनिया में क्या रखा है! किस सुख के लिए मैं जीवन की लालसा कर सकती हूँ, दुनिया में अगर लालसा है तो केवल इस बात की कि भूतनाथ से बदला लूँ।

दारोगा : सो हो नहीं सकता और न भूतनाथ ने वास्तव में तुम्हारा कुछ बिगाड़ा ही है। तुम खुद सोच लो और समझ लो, मैं सच कहता हूँ कि भूतनाथ अब भी तुम्हारी खिदमत करने के लिए हाजिर है। अगर तुम उसे अपना ताबेदार मान लोगी तो तीन दिनों में वह उद्योग करके तुम्हारे पति के घातक को भी खोज निकालेगा, नहीं तो अब तुम लोग उसके पंजे में आ ही चुकी हो। तुम लोग मुफ्त में अपनी जान दोगी, और अपने साथ बेकसूर इंदुमति और प्रभाकर सिंह को भी बर्बाद करोगी क्योंकि इन दोनों की जान का संबंध भी तुम्हारी जान के साथ है। मैं तुमको दो घंटे की मोहलत देता हूँ तब तक तुम अपने भले-बुरे को अच्छी तरह सोच लो। दो घंटे के बाद जब मैं आऊँगा तो भूतनाथ भी मेरे साथ होगा, उस समय या तो तुम लोग भूतनाथ को अपना सच्चा दोस्त समझकर उसके निर्दोष होने का एक पत्र उसे लिख दोगी और या फिर दूसरी अवस्था में तुम तीनों ठंड-ठंडे दूसरी दुनिया की तरफ रवाना हो जाओगी और प्रभाकर सिंह भी तुम तीनों के साथ-ही-साथ खबरदारी के लिए वहाँ रवाना कर दिये जाएँगे।

इतना कहकर दारोगा वहाँ से रवाना हो गया और जब वह बाहर हो गया तो पुनः उस ज़हन्नुमी कैदखाने का दरवाजा बंद हो गया और बाहर से भारी जंजीर की आवाज आई।